Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निराला - काव्य - कोश

श्री सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला" द्वारा रचित काव्य में प्रयुक्त शब्दों के अर्थ और संदर्भ, प्रतीक, बिम्ब, लक्षणा, व्यंजना परिवेश आदि के अनुसार सुबोध, विस्तृत व्याख्या

जयनाथ 'नलिन'
एम० ए०, पी-एच० डी०

आलोक - प्रकाशन, कुरुक्षेत्र
(हरयाणा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

rya Samaj Foundation Chennai a

c Domain. Gurukul Kangri Coll

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
पुस्तकालय

विषय संख्या 9.4 / 28
पुस्तक संख्या
आगत पञ्जिका संख्या 46,583

पुस्तक पर किसी प्रकार का निशान लगाना वर्जित है। कृपया १५ दिन से अधिक समय तक पुस्तक अपने पास न रखें।

विज्ञान महाविद्यालय, पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

विषय संख्या 9.4 / 28
आगत पंजिका संख्या 46,583

तिथि	संख्या	तिथि	संख्या

पुस्तकालय, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८६,५७२

Stock Verification-2024

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पुस्तकालय

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,हरिद्वार

पुस्तक-वितरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित ३०वें दिन तक यह पुस्तक पुस्तकालय में वापिस आ जानी चाहिए। अन्यथा ५ पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब-दण्ड लगेगा।

८६,५७२

Stock Verification-2024

Stock Verification-2024

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निराला - काव्य - कोश

श्री सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला" द्वारा रचित काव्य में प्रयुक्त शब्दों के अर्थ और संदर्भ, प्रतीक, बिम्ब, लक्षणा, व्यंजना परिवेश आदि के अनुसार सुबोध, विस्तृत व्याख्या

जयनाथ 'नलिन'

एम० ए०, पी-एच० डी०

आलोक - प्रकाशन, कुरुक्षेत्र

(हरयाणा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलोक - प्रकाशन,
कुरुक्षेत्र (हरयाणा)

CHECKED 1973
Initial

© जयनाथ 'नलिन'

प्रथम संस्करण
फ़रवरी, १९६८

मूल्य : सोलह रुपये

मुद्रक :
टी० फ़िलिप, मैनेजर,
कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी प्रेस,
कुरुक्षेत्र (हरयाणा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलोक

आधुनिक हिन्दी कवियों में श्री सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला" सर्वाधिक दुर्बोध समझे जाते हैं। एक तो इनका शब्द-भण्डार सब से अधिक सम्पन्न है दूसरे शब्द-प्रयोग भी अत्यन्त विलक्षण, विचित्र और नितान्त अभिनव और असामान्य। दूरातिरूढ़ कल्पना-निर्मित बिम्ब, उपमा, रूपक, प्रतीक आदि ने भी जहां भावाभिव्यंजना को समृद्ध किया और सही आकार दिया; वहाँ दुर्बोध भी बनाया। काव्य में शब्द वह अर्थ नहीं देता, जो कोश में होता है। संदर्भ, संसर्ग, लक्षणा, व्यंजना आदि के कारण शब्द का **"कुछ और अर्थ"** हो जाता है। यह **"कुछ और अर्थ"** ही सही अर्थ है। इसी **"कुछ और अर्थ"** की साधना निराला ने की है—इसी को पाना पाठक को इच्छित है। पाठक जब यह अभिलषित अर्थ ग्रहण नहीं कर पाता, तब काव्य में उसे न रस मिलता है, न चिन्तन के लिये प्रेरणा। काव्य उसके लिए बोझ बन जाता है।

इन्हीं बातों का ध्यान रखते हुए **"निराला-काव्य-कोश"** तैयार किया गया है। एक शब्द जिन-जिन ग्रंथों में आया है, उनकी पृष्ठ संख्या देकर, उसका अभिधार्थ या सामान्य [कोश में प्राप्त] अर्थ दिया गया है; बाद में संदर्भार्थ। संदर्भार्थ में लक्षणा, व्यंजना, प्रतीक, बिम्ब, उपमा, रूपक, प्रसंग, प्रयोग और परिवेश को परख की कसौटी माना गया है। उदाहरणार्थ—

> **पाषाण-खण्ड**—तुल, पृ० २०, ३१—[पाषाण=पत्थर, शिला, चट्टान। खण्ड=टुकड़े, भाग, हिस्सा।] पत्थरों के टुकड़े, चट्टानों या शिलाओं के समूह। संदर्भार्थ—अविवेकी या ज्ञानहीन निष्क्रिय भारतीय। पत्थरों या शिलाओं के समान जड़ और पैरों-तले कुचले हुए, विविध भीषण ऋतु रूपी अत्याचारी मुसलमान शासकों द्वारा पीड़ित, मुस्लिम शासन के दाहक सूर्य द्वारा जलाये गये भारतीय।
>
> निराला-काव्य-कोश, पृ० ११४

शब्दकोश के पश्चात दूसरे खण्ड में **"नामकोश"** दिया गया है। प्रत्येक लेखक या कवि की रचनाओं में अभिव्यंजना-समृद्धि-वर्द्धन और विषय-वस्तु या प्रयोजन के रूप में व्यक्ति, पदार्थ, नदी, पर्वत, स्थान, ग्रंथ आदि का उल्लेख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहता है। उसके भावात्मक और भौतिक स्वरूप को जाने बिना, उस विषय विचार या भाव का यथार्थ बोध नहीं हो सकता, रचयिता जिसकी बिम्बना करना चाहता है। **"पास ही देखो क्या कहता चित्तौर गढ़"** [महाराज़ शिवा जी का पत्र, परिमल, पृ० २०२] और **"आर्त भारत, जनक हूँ मैं जैमिनि-पतंजलि-व्यास ऋषियों का"** [खण्डहर के प्रति, अनामिका, पृ० ३०] इन पंक्तियों में **"चित्तौरगढ़"** और **"जैमिनि"** नाम आये हैं। जब तक **"चित्तौरगढ़"** के निर्माण और उसके लिए हुए घमासान युद्धों, राजपूती बलिदानों, क्षत्राणियों के जौहरों, आक्रमणकारियों की नृशंसताओं का पता पाठक को न चले, तब तक चित्तोरगढ़ प्रेरक शक्ति नहीं बन सकता। इसी प्रकार **जैमिनी** की दार्शनिक उपलब्धि का परिचय पाये बिना, वह भारतीय गरिमा का प्रतीक और आलम्बन नहीं बन सकता—वह उस संदर्भ में व्यर्थ हो जाता है।

निराला जी की रचनाओं में उल्लिखित व्यक्तियों, ऐतिहासिक घटनाओं, धर्मसिद्धान्तों, शास्त्र-ग्रंथों, नदी-पर्वतों आदि का परिचय **"नामकोश"** में दिया गया है। इसके लिये इतिहास, भूगोल, पुराण, धर्मग्रंथ, संदर्भग्रंथ, विश्वकोश आदि द्वारा स्वीकृत विवरण को ही प्रमाण माना गया है; किसी जन-श्रुति, नाटक, उपन्यास, काव्य आदि को नहीं। इस खण्ड में लगभग १५० विवरण दिये है।

शब्दकोश में लगभग ३५०० शब्दों का अर्थ और अनेक सामासिक पंक्तियों, उपमाओं, रूपकों, प्रतीकों बिम्बों की विस्तृत और बोधगम्य व्याख्या प्रस्तुत की गई है। जैसे—

जग-अजान-मन-शव-शिव-शक्ति महान्—गी, पृ० ४९—संसार के अनजान प्राणहीन मन रूपी शिव की तुम्हीं शक्ति हो। संसार का मन अज्ञानी और लाश के समान है और तुम इसके लिए कल्याणमयी शक्ति हो। जिस प्रकार शक्ति से रहित शिव एक शव के समान है, शक्ति से वह शिव बनता है, इसी प्रकार संसार के अज्ञानी प्राणहीन मन को तुम शक्ति प्रदान करने वाली हो, जिससे वह शिव बन जाता है।

निराला-काव्य-कोश, पृ० ६५।

स्वप्नसंस्कारागर—तुल, पृ० १८—[स्वप्न+संस्कार+आगर=स्वप्नसंस्कारागर। आगर=खान, कोश, घर, अधिक, कुशल।] सपनों के समान अस्पष्ट धुंधले संस्कारों का कोश। संदर्भार्थ—तरंगों के उठने गिरने, घात-प्रतिघात से जैसे समुद्र आतुर हो जाता है, इसी प्रकार तुलसीदास का मानस अस्पष्ट संस्कारों के जागने से चंचल हो उठा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निराला-काव्य-पुस्तकों के संक्षिप्त नामों का प्रयोग इस कोश में इस प्रकार हुआ है —अना (अनामिका), परि (परिमल), गी (गीतिका), अर्च (अर्चना), आरा (आराधना), (तुल) तुलसीदास, नप (नये पत्ते), अप (अपरा) ।

अर्थ या व्याख्या के जो तीन उदाहरण ऊपर दिये गये हैं, उनसे इस ग्रन्थ की उपयोगिता की झांकी मिल जाती है। कोश-सम्बन्धी कार्य का हमारा यह पहला प्रयास है । इस सम्बन्ध में पाठक जो उपयुक्त सुझाव देंगे और जिन त्रुटियों की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करेंगे, अगले संस्करण में उन सुझावों से अधिकतम लाभ उठाया जायगा और त्रुटियों का सुधार किया जायगा ।

डॉ० हरिश्चन्द्र वर्मा के प्रति मैं आभारी हूँ, जिन के स्नेह, सहयोग और सुझावों से मैं लाभ उठाता रहा हूँ।

विनीत
जयनाथ 'नलिन'

कुरुक्षेत्र
वसन्तपंचमी
३-२-१९६८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्द-कोश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अ

अंक—तुल, पृ० ४४—चिह्न, छपाई, लिखाई, संख्या, गोद, क्रोड़।

अंग अंग—अना, पृ० १—प्रत्येक भाग, प्रत्येक अवयव, समस्त शरीर।

अंगना-अंग—परि, पृ० १६७—रमणी का शरीर, प्रेयसी के अंग।

अंगड़ाई—परि, पृ० १४०—आलस के कारण अंगों की तोड़-मरोड़।

अंगराग—अना, पृ० ७२—शरीर पर लगाने का अनुलेप, उबटन, चन्दन, महावर, कस्तूरी, कपूर आदि।

अंगुलिघाति—गी०, पृ० ७६—अंगुलियों के आघात से।

अंगोछें—आरा, पृ० १—पोंछ दें, दूर कर दें, नष्ट कर दें।

अंजन—अना, पृ० ५, ६७—काजल, सुरमा, सिद्धांजन, नयनों की शोभा और ज्योति बढ़ाने वाला अनुलेप।

अंजन-रंजन—परि, पृ० ५३—काजल से रंगा हुआ, माया में लिपटा हुआ, अंधकार से भरा।

अंजनराग—परि, पृ० ४८—काजल, सुरमा।

अंजना रूप—अना, पृ० १५८—हनुमान जी की माता का रूप, हनुमान जी की माता अंजना की आकृति, हनुमान जी की माता का साकार रूप में प्रकट होना।

अंजलि देना—परि, पृ० २००—श्राद्ध करना, जल दान करना, भेंट चढ़ाना।

अन्त—परि, पृ० २६—समाप्त होना, नष्ट होना, सीमा, किनारा।

अन्तर—अना, पृ० २, परि, पृ० ३५—असमानता, भेद, दूरी, हृदय।

अन्तरतम—परि, पृ० ३५—भीतरी अन्तिम छोर, सर्वाधिक अन्दर।

अन्तराल—अना, पृ० ६०, तुल, पृ० २३—मध्यवर्ती स्थान या समय, बीच का भाग, अन्तर, दूरी, फासला, पृथक् करना या हटाना।

अन्तर्धान—अना, पृ० ६४—विलीन होना, छिप जाना, अदृश्य होना, तिरोहित होना।

अन्तस्तल—अना, पृ० ३५—हृदय, अन्त:करण, मन।

अन्तस्थल—परि, पृ० १४४—हृदय, मन, अन्त:करण।

अन्तहीनता—अना, पृ० ६१—असीमता, निस्सीमता, अतिशय, व्यापकता या विस्तार।

अन्त्यभाष—तुल, पृ० ६०—अन्तिम भाषण, अन्तिम बात, सर्वोत्तम कथन, सर्वश्रेष्ठ वाणी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्त्र—अना, पृ० १७६—आंत, अंतड़ी ।

अंध—तुल, पृ० २८—अंधा, अंधियाला, पथहीन, विचारहीन, अचेत, पंकिल जल ।

अंध-उर–गी, पृ० ३—[**अंध**=अंधा, नयनहीन, अंधेरे से भरा, अज्ञान । उर=हृदय, मन] अज्ञान अंधकार से भरा हुआ हृदय, वह मनुष्य जिसके हृदय की आंखें फूटी हैं ।

अंधकार—तुल, पृ० २०, २७—प्रकाश का अवरोध, अंधेरा, अज्ञान–निराशा पीड़ा–प्रसूत बाधाएँ, व्यवधान, तन मन को बेहोश करने वाला नशा ।

अंध-तम-अगम-अनर्गल-बादल—परि, पृ० १६०—घोर से घोर अंधकार में जहां पहुंचना दूभर है, निर्बाध रूप से पहुंच जाने वाला बादल, घोर अंधकार के समान पहुंच या पकड़ से बाहर और बाधा-बंधन-हीन स्वेच्छाचारी बादल ।

अंध-प्रगति-बंध—अना, पृ० १६—विचारहीनता के साथ आगे बढ़ते जाना, बिना सोचे दौड़ लगाना ।

अंधरात—तुल, पृ० ५७—अंधियाली रात, तामस निशा, अज्ञान पीड़ा और निराशा का समय ।

अन्यथा—तुल, पृ० ४५—नहीं तो, इसके अतिरिक्त, यदि ऐसा न हुआ या किया तो ।

अन्वेषण—परि पृ० १६०—खोज, तलाश, अनुसंधान ।

अंशुक-जाल—गी, पृ० ८०—किरणों का समूह, किरणों का रेशमी वस्त्र ।

अंशुमाल—आरा, पृ० ६—सूर्य–किरणों की माला, किरणों का समूह ।

अकथनीय—तुल, पृ० ४३—न कहने या वर्णन करने योग्य, जिसका वर्णन न किया जा सके, जो बात दोहराई न जा सके ।

अकपट—अर्च, पृ० १५—दुराव–छिपाव से रहित, स्पष्ट, छलहीन, सही रूप में ।

अकर—अर्च, पृ० ८६—किरणविहीन, बिना हाथ वाला, निकम्मा, कठिनता से होने वाला, कर से मुक्त ।

अकर्मण्य—गी, पृ० ५७—कर्म न करने वाला, निकम्मा, आलसी ।

अकल-कला—तुल, पृ० ५८—[**अकल**=अविछिन्न, अखण्ड, सब को संगठित करने वाली, सब को एक सूत्र में बाँधने वाली । **कला**=ढंग, युक्ति, शैली, साधन, विधान] समस्त देशवासियों को संगठन के सूत्र में बांधने वाला विधान या साधन ।

अकातर—अर्च, पृ० ८८—धीर, निर्भय, जो हतोत्साह न हो, उत्साह से भरा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकाम–अर्च, पृ० ५१—निकम्मी, किसी काम की नहीं, व्यर्थ, तुच्छ, कामनारहित।

अकिंचन—आरा, पृ० ४१—अति निर्धन, दीन हीन, जिसका कोई मूल्य या महत्त्व न हो।

अकोश—अना, पृ० १६—बिना कोश, निर्धन, सम्पत्तिहीन।

अक्सकासी– नप, पृ० ४६—फोटो खींचने का काम, अक्स उतारना, नकशा या चित्र बनाना।

अक्लम – तुल, पृ० ५०—क्लान्तिहीनता, अथक, म्लान न होने वाला, सदा जगमगाते रहने वाला।

अक्लेद—परि, पृ० २३६—पसीने से रहित, दुःख रहित, अभ्रांत, सुखशान्ति, प्रफुल्लता।

अक्षतपश्चय —आरा, पृ० १—[पश्चय=बाद का, पश्चात्, अन्तिम, अन्त। **अक्षत**=अखण्डित, समूचा] संदर्भार्थ—अनन्त, सम्पूर्ण, जो सदा अखण्डित रहे, सर्वदा समान रूप में विद्यमान रहने वाला।

अक्षम—तुल, पृ० ३० —अशक्त, असमर्थ, शक्तिहीन, अबल, विवश, अधीन, असहाय।

अक्षय—अना, पृ० १५, तुल, पृ० ४० —जिसका कभी क्षय न हो, अविनाशी, सदाबहार, अजर-अमर।

अक्षर –तुल, पृ० १४—अविनाशी, अक्षय, नित्य, परिवर्तनरहित।

अखिल—अर्च, पृ० ५५—सम्पूर्ण, सारा, जोतने-बोने योग्य धरती, बिना खिला हुआ।

अखिल उर रञ्जन—गी, पृ० २४—सब के हृदय को प्रसन्न करने वाला।

अखिल ज्योतिर्गठित छवि—गी, पृ० ४८—समस्त विश्व के अक्षय आलोक से निर्मित सौंदर्य या सौंदर्यमयी प्रतिमा।

अखिल पल के स्रोत– गी० पृ० १४—[अखिल=समस्त; सम्पूर्ण। पल=क्षण, पलक, समय का लघु भाग। स्रोत=धारा, झरना, प्रवाह।] सम्पूर्ण अविच्छिन्न काल की विभिन्न धाराएं।

अखिल-पल के स्रोत जल-जग—गी, पृ० १४—जड़ चेतन के विभिन्न रूप प्राकृतिक तत्त्व और पदार्थ तथा समस्त प्राणी, सम्पूर्ण अविच्छेद्य काल की धाराएं हैं।

अखिल पुरातन-प्रियता —गी, पृ० २६—पुरानेपन का सारा प्यार, सारे पुराने रहन-सहन, आचार-विचार, आस्था-विश्वास को चाहना या पसन्द करने का स्वभाव।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग—आरा, पृ० ६०—स्थावर, अगम्य, अजान, चलने में असमर्थ ।

अग-जग-तत्व—गो, पृ० ६५—जड़चेतन तत्व, चल और अचल पदार्थ ।

अगण्य—गी, पृ० ९२—**असंख्य**, न गिने जाने योग्य, तुच्छ ।

अगणन—अना, पृ० १४, १०३—असंख्य, जो गिना न जाय ।

अग्निप्राण—आरा, पृ० ३७—अग्नि के समान प्रज्ज्वलित प्राण, तेजस्वी और चेतनाशील हृदय ।

अग्रदूत—अना, पृ० ११८—आगे आ कर सन्देश देने वाला, भविष्य का सन्देश देने वाला, आने से पूर्व ही संवाद देने वाला ।

अचपल—तुल, पृ० ५३—शांत, अचंचल, गम्भीर, किसी निश्चित और दृढ़ संकल्प से पूर्ण ।

अचल अधर—परि, पृ० ५८—[अचल=पर्वत, स्थिर । अधर=ओठ, गाल ।] गालों के पर्वत, गाल रूपी पर्वत ।

अचपल भ्रू-विलास—गी, पृ० १३—अचंचल या स्थिर भँवों के सुकुमार संकेत, न काँपती हुई भवों की कोमल चेष्टाएं ।

अचला—परि, पृ० ८२—स्थिर, अडिग, चिरन्तन, एक रूप रहने वाली ।

अचिन्त्य—परि, पृ० १८६—जो सोचा न जा सके, जिसकी चिन्ता किसी को न हो, सब ओर से उपेक्षित ।

अचेतन—अना, पृ० २७—चेतनाहीन, प्राणहीन, जड़ ।

अच्युत—अना, पृ० १५५—निश्चल, विष्णु, ध्यानमग्न ।

अछिद्र—गी, पृ० ५६—बिना छिद्रों वाली, जिसमें छेद न हो, निर्दोष ।

अछोर—परि, पृ० १०३—जिस का सिरा न हो, अनन्त, असीम ।

अज—परि, पृ० २१९ अजन्मा, जो जन्म न लेता हो, अनादि । ब्रह्मा, विष्णु, महेश, जीवात्मा । संदर्भार्थ—ब्रह्मा ।

अजन—आरा, पृ० ७०—निर्जन, एकांत, सूना ।

अजनजन—अर्च, पृ० २७—अभक्त और भक्त ।

अजपा—अना, पृ० १५६—जिस का जप न किया जा सके, जिस को ध्यान और वाणी में न लाया जा सके ।

अजर—तुल, पृ० ३९—जो बूढ़ा न हो, जरा रहित, सदा युवा रहने वाला, क्षयरहित, परब्रह्म, देवता ।

अजान—तुल, पृ० ४७—बेजाने, बेसोचे-समझे हित-अनहित उचित-अनुचित का विचार किये बिना ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अजिर—आरा, पृ० ६०—आंगन, प्रांगण, घर, सहन।

अज्ञात—अना, पृ० ७०—अनजान, अपरिचित।

अज्ञानता—अना, पृ० ७०—अबोधता, बेसुधी, नासमझी।

अटल—तुल, पृ० २४, अना पृ० ६५—ना टाली जा सकने योग्य, अचल, अनिवार्य, निश्चित रूप में घटने वाली, अपरिवर्तनशील।

अटवी—अना, पृ ७७—वन, कानन, जंगल।

अटारी—अर्च, पृ० १८—कोठा, महल, महल के ऊपर का ऊँचा कक्ष।

अट्टालिका—अना, पृ० ८१, परि, पृ० १५६—अटारी, महल, भवन का ऊपरी कक्ष।

अट्टहास—अना, पृ० ११४—कहकहा लगा कर हँसना, तीव्र और ऊँची हँसी।

अडग—आरा, पृ० ४०—न डिगने वाला, अचल, स्थिर।

अणुक—अना, पृ० १०१—अणु के समानी सूक्ष्म।

अतः—तुल, पृ० ४०—इसलिए, इस वास्ते, इस कारण, परिणाम-स्वरूप।

अतनु में सुतनु हार—गी, पृ० ६८—सुन्दर शरीरधारी बिना शरीर वाले की हार बनी है।

अतन्द्र—गी, पृ० ४३—[अ=रहित, हीन। तन्द्रा=नींद] जो सोया हुआ न हो, जागा हुआ, जागृत। जगमगाता, उज्ज्वल, आकर्षक, निखरा हुआ।

अतल—परि, पृ० ३३—तलहीन, अत्यन्त गहरा, अगम।

अतिक्रम—अना, पृ० १६७—लाँघना, उल्लंघन करना, पार पहुँचना।

अतिपात—अना, पृ० १७१—व्यय, नष्ट करना, समाप्ति।

अतिरेक—आरा, पृ० ३३—आधिक्य, अतिशयता, अंतर।

अतिशयता—परि, पृ० ३१—अधिकता, बहुत अधिक बढ़ जाने की अवस्था।

अतीत—अना, पृ० २९—बहुत पहले बीता हुआ, प्राचीन, पुरातन।

अतुल—तुल, पृ० ४४—जिसकी तुलना या समानता न हो, जो तोला न जा सके, अद्वितीय, विपुल, बहुत अधिक, अतिशय।

अथ—अर्च, पृ० ३८—आरम्भ, आदि।

अथच—अना, पृ० ४४—और, और भी।

अथाह—तुल, पृ० १९—जिस की थाह, नाप या गहराई न हो, अतल, अमित, अपरिमित, असीम, बहुत अधिक, अतिशय।

अदमनीय—अना, पृ० ५९—जिस का दमन न किया जा सके, जो पराजित न हो सके, अजेय।

अदर्शित—अर्च, पृ० १०९—बिना दिखाई दिये हुए, अप्रकट रूप में।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अदृश्य—तुल, पृ० ३०, ३१—जो दिखाई न दे, अन्तर्धान, लोप होना, विलीन, छिप जाना।

अद्भुत—अना, पृ० २९—विचित्र, अनोखा, आश्चर्यजनक।

अध—तुल, पृ० ३६—आधा, नीचे, नीचे का लोक, पाताल।

अधम—तुल, पृ० ५०—नीच, तुच्छ, छोटा, निकृष्ट, दुष्ट, पापी, निर्लज्ज, कामी।

अधर—तुल, पृ० १५—ओठ, नीचे का होंठ। संदर्भार्थ–संसार के प्राणी, भारतवासी।

अधर—तुल पृ० ५५—आधारहीन बीच में लटकता हुआ, नीचे बसा हुआ प्राणी-संसार।

अधरचन्द्र—आरा, पृ० १३—आकाश में चमकता हुआ चन्द्रमा।

अधरधरी—अर्च, पृ० ७४ अधरों पर रखी हुई, ओठों में बसी हुई।

अधरमधुपान—परि, पृ० २३३—ओठों का मिठास पीना, मधुर चुम्बन लेना।

अधरासव—गी, पृ० ३३—ओठों की शराब, ओठों की मदिरा, शराब जैसा नशीला चुम्बन।

अधिकारीभेद—अप, पृ० १७३—पात्र की योग्यता, प्रतिभा, ग्रहणशक्ति, संस्कार आदि का अन्तर।

अधुना—तुल, पृ० ६०—नवीन, आधुनिक, अभिनव।

अध्ययन-अधीर—परि, पृ० १६२—मनन-चिन्तन के लिये आकुल या बेचैन, विद्योपार्जन का तीव्र अभिलाषी।

अनंग—अप, पृ० ६५—अंग, शरीर, या आकार से रहित, कामदेव, मदन, कामभावना।

अनन्त—परि, पृ० २९—सीमाहीन, जिसका अन्त न हो, नाशहीन, ओरछोरविहीन, सदा विद्यमान रहने वाला।

अनंतर—तुल, पृ० ५३—पश्चात्, बाद में, पीछे, समाप्ति पर, अन्त में।

अनगिनित—अना, पृ० ९५—जो गिना न जा सके, संख्या में बहुत अधिक, अनगिनती, असंख्य।

अनय—गी, पृ० ३४—अनीति, समाज या शास्त्र द्वारा निर्धारित आचार-व्यवहार, सामान्य सामाजिक नियमों के विरुद्ध।

अनयन—अर्च, पृ० २—नेत्रहीन, अंधा।

अनरुण—अर्च, पृ० ६३—जो लाल न हो, जिसकी लाली उतर गई हो, पीला या रक्तहीन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनवरोध—गी, पृ० ७०—[अन=नहीं, हीन, रहित। अवरोध=रुकावट, बाधा।] जिसमें कोई बाधा या रुकावट न हो, स्वतंत्र, मुक्त, निर्बाध।

अनर्गल—परि, पृ० १५४—निर्बाध, बंधनहीन, मुक्त, उच्छृंखल, व्यर्थ।

अनल—तुल, पृ० २३—आग, अग्नि, ज्वाला।

अनलप्रतिमा—तुल, पृ० ५४—आग की मूर्ति, आग के समान प्रज्ज्वलित रत्नावली, ज्वाला ने जैसे रत्नावली के रूप में नारी का शरीर धारण कर लिया हो।

अनवलाप—अर्च, पृ० १४—[अन्+अवलाप] चीत्कार करना, चीखना-चिल्लाना, क्रन्दन करना।

अनवसादन—गीत, पृ० ५८—[अन=अभाव, रहित, रिक्तता। अवसादन=नाश, समाप्ति, अशक्तता, उत्पीड़न, शिथिलता] नवीन सृजन, जीवन, क्रियाशीलता।

अनवसित—अर्च, पृ० १०४—समाप्त न होने वाली, जल से निरन्तर भरी हुई।

अनवद्य—अर्च, पृ० ९८—निर्दोष, अनिंद्य, प्रशंसनीय।

अनहारी—आरा, पृ० ७६—अपराजित, बिना हारी हुई।

अनाथ—अना, पृ० २५—जिस का कोई स्वामी न हो, रक्षक या माता-पिता विहीन।

अनादि—अना, पृ० ३१—जिस का आदि या आरम्भ न हो, अजन्मा।

अनामिका—अना, पृ० २१—नामहीन, बिना नाम वाली, जिसे कोई नाम न दिया जाय।

अनायास—गी, पृ० ३४—सहसा, अपने आप, सरलता से, बिना परिश्रम के।

अनाहत—अर्च, पृ० ८८—बाधा रहित, चोट खाये बिना, निरंतर आगे बढ़ती हुई।

अनाहतनाद—अना, पृ० १००—निरन्तर ध्वनित शब्द, आनन्द-विस्मृत करने वाला अनहद शब्द, जो संतों, योगियों आदि को सुनाई देता है।

अनाहूत—तुल, पृ० ५३—बिना बुलाये, बिना निमंत्रण पाये।

अनियारे—अर्च, पृ० १०२—नुकीले, तीर या शूल के समान चुभीले।

अनिन्द्य—अना, पृ० २३—जिसकी निन्दा न की जाय, निर्दोष, श्रेष्ठ, प्रशंसनीय।

अनिमेष—अना, पृ० ७—बिना पलक मारे, जागरूक, विकसित, एकटक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनिर्वात—अप, पृ० १७१—[अ=नहीं, रहित। निः=रहित, नहीं। वात=वायु, पवन। निर्वात=बिना पवन, वायु से रक्षित, शांत, जहां हवा न चलती हो।] पवन से पूर्ण, अशांत, जहां सर्वदा वायु बहती हो।

अनिर्वार—अर्च, पृ० ४०—बाधारहित, बिना रोके हुए, जो रोका न जा सके।

अनिल—अना, पृ० ७, आरा पृ० ५६—वायु, पवन, हवा।

अनिलवाह—तुल, पृ० २७—[अनिल=हवा, पवन, वायु। वाह=बहना, प्रवाहित होना।] वायु के समान बहने वाली, अस्थिर।

अनीड़—अर्च, पृ० ५२—अशरीरी, आश्रयहीन।

अनुकूल—तुल, पृ० ३६—सहायक, पक्ष में, अनुसार। अनुकूल युक्ति—ऐसा तर्क युक्ति या प्रमाण जो किसी तथ्य या विचार को सत्य प्रमाणित करदे या करने में सहायक हो।

अनुकूल—अना, पृ० ६६—अनुग्रह या कृपा से पूर्ण।

अनुकूलें—परि, पृ० ७४—अनुकूल हों। कृपा करें, सहायक बनें।

अनुचर—अना, पृ० ८७—सेवक, दास, नौकर।

अनुचरी—परि, पृ० २२३—सेविका, दासी, नौकरानी।

अनुत्कण्ठित—आरा, पृ० ३—जिसे कोई उत्कण्ठा, आकुलता या प्रतीक्षा न हो। शान्त, मंद, धीमी।

अनुभव—अना, पृ० ६५—प्रत्यक्ष ज्ञान, मन से जानना, संवेदन, सुख-दुख रूप में उपलब्धि।

अनुरागिनियां—अना, पृ० ३३, परि, पृ० १४६—प्रेमिकाएँ, प्रेम करने वाली।

अनुसरण—परि, पृ० ५४—पीछे पीछे घूमना, पीछे जाना, साथ रहना।

अनृत—गी, पृ० ३४, अर्च, पृ० २१—असत्य, झूठ, अन्यथा, उल्टा।

अपण—आरा, पृ० ८२—न बेचना, बेमोल, धनहीन, प्रतिज्ञाहीन।

अपढ़कर—आरा, पृ० १७—बेपढ़ा-लिखा, अशिक्षित।

अपनाव—परि, पृ० ६३—अपनाना, अपनापन, आत्मीयता।

अपर—तुल, पृ० ४३—गैर, पराये, नीच, छोटे, तुच्छ, नगण्य।

अपर दिनकर—गी, पृ० ४—दूसरा सूर्य, सूर्य के समान मुख, मुख जो दूसरा सूर्य मालूम होता है।

अपराजेय—अना, पृ० १५२—जो पराजित न हो, सर्वाधिक भीषण और विशाल, जिसकी तुलना न हो सके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपरिचित पुष्प—तुल, पृ० ४०—अनजान या अनजाना पुष्प, अदृश्य फूल, कामदेव के पुष्प-वाण, जो दिखाई नहीं देते; पर आघात गहरा करते हैं।

अपर्ण-अशना—गी, पृ० १६—[अपर्ण=पत्तों से रहित, बिना पत्तों का। अशन=भोजन खाना।] जिसने पत्तों का भोजन भी छोड़ दिया है—पार्वती। पत्तों के द्वारा प्राप्त भोजन भी छोड़ देने वाली—बिना पत्तों–फूलों की डाल।

अपल—अना, पृ० ३, १२४—अपलक, टकटकी लगाये।

अपलक मन गी, पृ० ७४—एकटक ध्यानमग्न, निरन्तर मनन-चिन्तन में लीन।

अपवर्ग—अर्च, पृ० ५३—मोक्ष, त्याग, दान, विशेष नियम, अपवाद।

अपवाद—परि, पृ० ५७, १६१, आरा, पृ० ६१—निंदा, लांछन, प्रतिवाद, आदेश, कलंक-कथा, जुगली, चवाई।

अपसारित—गी, पृ० १०५—हटाकर, दूर करके, नष्ट करके।

अपहृतश्री—तुल, पृ० ४६—[अपहृत=अपहरण हो गया है जिस का, हर ली गई, छीन ली गई, चुरा ली गई, नष्ट हो गई। श्री=शोभा, सुन्दरता, वैभव, आभा।] शोभा-सुन्दरता विहीन, लुटी हुई सुन्दरता वाला, कुरूप, मुरझाये रूप-रंग वाली।

अपांगशरहत—गी, पृ० १५—कटाक्ष के तीरों से घायल, चितवन के तीरों से जिसका हृदय घायल हो गया है।

अपार—तुल, पृ० २९, परि, पृ० ३१—अनन्त, असीम, जिसका पार न पाया जाय।

अप्रतिभट—अना, पृ० १६०—अद्वितीय योद्धा, ऐसा वीर योद्धा जिस का सामना करने वाला कोई न हो।

अप्रतिम—तुल, पृ० ३८—अद्वितीय, असमान, अनुपम, उपमा रहित, बेजोड़।

अप्रतिहत—परि, पृ० ६१—अबाध, निर्विघ्न, अपराजित, अक्षुण्ण।

अप्रमेय—आरा, पृ० ६७—जो बोध या ज्ञान का विषय न बन सके, बोधातीत, अज्ञेय, ज्ञानागोचर।

अप्रसंग—तुल, पृ० ४९—कुअवसर, अनुपयुक्त समय, बुरा मौका, ठीक अवसर नहीं पा कर या उपयुक्त अवसर न होने के कारण।

अप्रहत—अर्च, पृ० २६—अछूता, न जोता हुआ (खेत), कोरा या न पहना हुआ (कपड़ा)।

अप्सरा—अना, पृ० ९०—स्वर्गलोक वासिनी वेश्या, परी। अद्भुत अलौकिक सुषमामयी रमणी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अफ़सरान—नये, पृ० ८७—अफसर लोग, अधिकारी लोग, अधिकारीगण।

अफ़ीम—नये, पृ० १०१—पोस्त के डोढे से निकलने वाला काले रंग का गोंद जैसा नशीला पदार्थ, जो नशे के लिये खाने और दवा में काम आता है।

अबरू—नये, पृ० १३—भवें, भ्रू।

अबला—तुल, पृ० ५३—अशक्त, निर्बल, सुकुमार, कोमल, स्त्री, नारी, तन्वी, संदर्भार्थ—रत्नावली।

अबाधता—अना, पृ० ७२—निर्विघ्नता, बाधाहीनता, रुकावट का न होना, स्वच्छन्दता।

अब्द—तुल, पृ० १२, नये, पृ० ५६—वर्ष, साल, तीन सौ पैंसठ दिन का समय।

अभंग—अना, पृ० ८६—अखण्ड, निरन्तर, पूर्ण, चिरंतन।

अभयापदआसन—आरा, पृ० ५१—अभय या अचल पद पाने के लिये आसन लगाना। योग साधन करना।

अभिधा—अर्च, पृ० २१—नाम, पदवी, शब्द, शब्द का वाच्यार्थ प्रकट करने वाली शक्ति।

अभिधान—अर्च, पृ० ५, परि, पृ० १८५—नाम, उपाधि, कथन, शब्द, वाणी और उसका अर्थ।

अभिनन्दन—अना, पृ० ४६—आनन्दित या प्रसन्न करना, सराहना करना, प्रोत्साहन या बधाई देना, स्वागत करना, सम्मान करना।

अभिनव—अना, पृ० ६५—नया, नवीन, ताज़ा।

अभिभावन—आरा, पृ० २६—मनभावन, मनोहर, सुन्दर, मन को भाने वाला।

अभिमान—अना, पृ० ६४—मान, घमण्ड, अहंकार। अपने बल, वैभव, ज्ञान, कुल आदि का बोध और प्रकाशन।

अभियान—आरा, पृ० ३४—चढ़ाई, आक्रमण, सामने जाना, आन्दोलन, आगे बढ़ना।

अभिराम—अना, पृ० ५४—सुन्दर, आकर्षक, मोहक।

अभिसार—परि, पृ० ४६—शृंगार-सज्जा कर प्रिय-मिलन के लिये गमन, संकेत-स्थल, शुद्धिसंस्कार।

अभिसारक—अर्च, पृ० ६५—सौंदर्यवर्द्धक, शोभा-सजावट करने वाला।

अभिसारिका—परि, पृ० २२४—शृंगार-सज्जा कर प्रियतमसे मिलने के लिए जाने वाली नायिका, प्रेमिका।

अभ्यन्तर—अना, पृ० ६८—भीतरी, आन्तरिक, हृदय या मन से सम्बद्ध।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभ्यागत—परि, पृ० १२२—आया हुआ, अतिथि, मेहमान ।

अभ्रभेदी—अना, पृ० १०१—आकाश को चीरने वाला, अतिशय ऊंचा ।

अमर—अर्च, पृ० ८०—न मरने वाला, सदा जीवित रहने वाला, देवता ।

अमरण—परि, पृ० ५२—अमरता, न मरना ।

अमरण-रणमय—परि, पृ० ६१—ऐसे रण में, जिसमें मृत्यु नहीं होती, अमर करदेने वाले रण में लीन, अमरता में रमण करना ।

अमल कोमलतनु—परि, पृ० १७१—स्वच्छ अछूते सुकुमार शरीर वाली।

अमलतास—अना, पृ० २२, नये, पृ० ९८—एक वृक्ष जिसके फूल, फल और बीज औषधियों में काम आते हैं। यह आम या बबूल जितना ऊंचा होता है और इस पर ६–७ इंच लम्बी फलियां लगती हैं।

अमल धुली—गी, पृ० १९—नहाधो कर स्वच्छ हो गई ।

अमल विश्राम—आरा, पृ० ६१—[अमल=निर्मल, स्वच्छ, विकार हीन । विश्राम=निवास, विराम, आराम, शान्ति ।] निर्मल शान्ति, मन की विकार हीन स्थिर गति ।

अमला—तुल, पृ० ५३—निर्मल, धवल, पवित्र, पावन, निष्पाप, स्वच्छ, निष्कलंक नारी ।

अमला कलाकलन—अप, पृ० १६९—[अमला=निर्मल, स्वच्छ, निर्दोष, उज्ज्वल । कला=भाव या विचार प्रकाशन का साधन या ढंग । कलन=ग्रहण करना, समझना ।] उज्ज्वल दूषणरहित कला का ज्ञान । निर्मल स्वच्छ कला का निर्माण ।

अमानिशा—अना, पृ० १५४—अमावस की रात, घोर अंधकार से भरी रात ।

अमार्ज्य—तुल, पृ० ५९—जिसका मार्जन न हो, सघन, दुर्निवार, शक्तिशाली, सबल, भीषण ।

अमित्र—अना, पृ० १३—जो मित्र न हो, शत्रु, विरोधी ।

अम्रीयमाण—अना, पृ० ४५—न मरा हुआ, अमर, न मरने वाला ।

अमृत-मंत्र—गी, पृ० ३—[अमृत=न मरने वाला, एक पेय पदार्थ, जो अमर कर देता है । मंत्र=किसी देवता की सिद्धि या अलौकिक शक्ति प्राप्त कराने वाला शब्द या शब्द-समूह ।] ऐसा मंत्र जो मृत्यु से बचा दे, अमर कर देने वाला मंत्र ।

अमृत-मंत्र-स्वर—परि, पृ० ८६ अमृत के समान मधुर शीतल और अमर कर देने वाले मंत्रों का गान ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमृतसंतान—परि, पृ० १८०—कभी न मरने वाली संतान, अमर संतान, अमृत पान कर अमर होने वाली पीढ़ी ।

अमृताक्षर—तुल, पृ० ५४—अमृत के अक्षर, चिरन्तन या अनश्वर वाणी, जो मरने और नष्ट होने वाला न हो, मुर्दों में भी नये प्राण डाल देने वाली वाणी ।

अम्बर—तुल, पृ० १२, परि, पृ० ५७—आकाश, गगन । संदर्भार्थ—भारतीय जीवन का आकाश ।

अम्बर भर ज्योतिस्तर वासे—गी, पृ० ८३—आकाश की तहों को भरने वाली ज्योति के वस्त्र पहने हुए, पहनने वाली । आकाश के पर्तों को लबालब करने वाली आभा में निवास करने वाली ।

अम्बुपालिका—अना, पृ० १८१—पानी ले जाने वाली या पिलाने वाली ।

अयन—अर्च, पृ० १०, ५५, अना, पृ० १०१—चलना, सूर्य की विषुवत रेखा से उत्तर या दक्षिणको गति, राशि चक्र की गति, व्यूह का प्रवेशमार्ग, घर, आश्रय, उत्तरी आकाश ।

अयुत—अना, पृ० १५४—१० हज़ार की संख्या, पृथक, असम्बंद्ध । संदर्भार्थ—असफल, चूका हुआ, निशाने पर न लगा हुआ ।

अयुत-कर-किंकर—परि, पृ० १६५—[अयुत=पृथक, अलग, असफल । कर=हाथ, किरण । किंकर=सेवक, दास, राक्षसों की एक जाति ।]

अयुत-वर्ण—गी, पृ० १७—हज़ारों रंग, विविध रंग, पृथक-पृथक रंग ।

अरघान—आरा, पृ० ७—गंध, सुगंध, वास ।

अरण-वारण-वरण—अर्च, पृ० २६ [अरण=गतिहीन, शब्दहीन, रमण न करना, युद्ध न करना । वारण=निवारण, प्रतिरोध, निषेध, हाथी, अंकुश । वरण=चुनना, याचना करना, रक्षण, निवारण, सत्कार, परकोटा, पुल ।] निष्क्रियता के प्रतिरोध का रक्षण करने वाला, संघर्ष और सक्रियता को चुनने या पसन्द करने वाला ।

अरणी—गी, पृ० ६४—आग उत्पन्न करने का काठ का बना एक यंत्र विशेष, चकमक पत्थर, सूर्य, अग्नि ।

अरण्य—आरा, पृ० ६, परि, पृ० ५०, —वन, जंगल, झाड़-झंकाड़ वृक्ष लता आदि से घिरी भूमि । संदर्भार्थ - अनजान विघ्न वाधा भरा कण्टाकार्ण क्षेत्र, जीवन का वह निर्जन पंथहीन क्षेत्र जिसका अनुसंधान नहीं हुआ ।

अरथी—नये, पृ० ७४—शव के ले जाने के लिये बनाया गया बांस का ढाँचा, बांस के ढांचे पर लिपटा हुआ शव ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरबसमुद्रपार—अना, पृ० ८७—अरब सागर के पार का देश, योरुप के देश—इंगलैंड, फ्रांस, जर्मनी आदि ।

अरबी—नये, पृ० ४२—अरब देश की भाषा, अरब देश के निवासी, समझने में दुर्बोध भाषा ।

अरविन्द—अना, पृ० २३—कमल, सारस, तांबा ।

अरविन्दनन्दन—गी, पृ० २४—कमलों को आनंद देने वाला, सूर्य ।

अरहर—गीत, पृ० ५२—दो-ढाई गज़ लम्बे झाड़ के समान पौधों पर फलियोंमें लगने वाला सफेद रंग का एक दाल वाला अनाज । इस की दाल पीले रंग की होती है ।

अराल—आरा, पृ० ५५, अना, पृ० १८, अर्च पृ० ४०—टेढ़ा, मतवाला हाथी, टेढ़ा मेढ़ा, विषम, ऊँचा नीचा ।

अरुण-मुख-तरुण-अनुरागी—गी, पृष्ठ ४—[तरुण=युवक, किशोर, नवीन, नया । अनुरागी=प्रेमी ।] अरुण सूर्य के मुख के नये प्रेमी हैं (नेत्र रुपी कमल) ।

अरुणा—अर्च, पृ० १—ऊषा, लाल रंग वाली ।

अरुणार्क—अना, पृ० ७—लाल सूरज, प्रभातकालीन सूर्य, उगता हुआ सूर्य ।

अरूप—अना, पृ० २—रूपहीन, आकारहीन अदृश्य, जो दिखाई न दे ।

अरूपलग्न—तुल, पृ० ५२—[अरूप=रूप-आकार हीन, निराकार ब्रह्म । लग्न=लगी हुई, संयुक्त, ध्यान में लीन, सम्बद्ध ।] निराकार ब्रह्म में लीन, निराकार ब्रह्म के ध्यान में डूबी हुई ।

अरोर—गी, पृ० ८५—शब्दहीन, शांत, मौन ।

अर्गला—परि, पृ० १३९—अगड़ी, सिटकनी, रोक, हाथी बाँधने की जन्ज़ीर, साँकल ।

अर्घ्य—अना, पृ० ७४—पूजनीय, बहुमूल्य, पूजा में देने योग्य परार्थ, अर्पित की जाने योग्य वस्तु ।

अर्चा—परि, पृ० २१७, नये ५९—वन्दना, अर्चना, पूजा ।

अर्थ-भ्रम-भेद निवारण—गी, पृ० ५५—विभिन्न अर्थों के भ्रम और अन्तर को दूर करने वाला । विभिन्न दृष्टि और बुद्धि के कारण जो अर्थ का भ्रम और भेद मालूम होता है उसे दूर करके यथार्थ या सत्य स्वरूप का बोध कराने वाला ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थागम—अना पृ० १६—[अर्थ=धन, प्रयोजन, आशय, निमित्त, इन्द्रियों के विषय शब्द, स्पर्ष, रूप, रस, गंध। आगम=आना, प्राप्ति, जन्म, वर्द्धन, प्रवाह, धारा।] आशय, प्रयोजन, व्यख्या आदि का बोध होना। धन कमाना, धन प्राप्त होना।

अर्थागमोपाय—अना, पृ १२२—धन आने का उपाय। धन कमाने की युक्ति, ढँग, **तदबीर**।

अर्धनिमीलित (लोचन)—परि पृ० १३८—आधे खुले आधे बंद। आलस, निद्रा या नशे के कारण अधखुले (नयन)।

अर्बुद—दस करोड़ की संख्या, एक दैत्य जिसे इन्द्र ने मारा था, एक साँप, आबू पहाड़।

अलंकार लेशरहित—परि, पृ० २४०—जिस में तनक भी वाहरी सजावट न हो, शब्द और अर्थ को विशेषता या अतिशयता देने वाले साधनों से हीन, यथार्थ, स्वाभाविक, सीधासादा।

अलंघ्य—अना, पृ० ७८—जिसे लाँघा न ज़ा सके, जिसे पार न किया जा सके, **दुस्तर**, अतिशय कठिन, असीम।

अलक—तुल, पृ० ३४—बाल, केश, कुन्तल, बालों की लट।

अलका—अना, पृ० १४६—कुबेर पुरी, आठ-दस वर्ष की लड़की।

अलख—आरा, पृ० १—जो देखा न जाय, अगोचर, अलक्ष्य। संदर्भार्थ—अलौकिक, अलस्य, आध्यात्मिक।

अलख जगाना—अर्च, पृ० ३९—अलख अलख करते हुए परमात्मा का ध्यान करना और दूसरों को ध्यान दिलाना, अलख अलख करते हुए भीख मांगना, स्थान-स्थान पर घूमते फिरना, जगह-जगह पुकार-पुकार कर अपनी बात सुनाते फिरना।

अलस--अना, पृ० ६० –शिथिल, आलसपूर्ण।

अलसी—नये, पृ० ६३- तिल के दाने के समान किशमिश, कत्थे या कॉफ़ी के रंग का चपटा अनाज, जिससे तेल निकाला जाता है।

अलाप—अना, पृ० १००—वाणी, ध्वनि, शब्द, स्वर।

अलि-अलक—परि, पृ० ४८—सखी के बालों की लट, भौरों के समान काले केश।

अलिका—अर्च, पृ० ६५—भ्रमरी, भंवरी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलिपुंज—अना, पृ० १—[अलि=भौंरा, भ्रमर। पुंज=समूह, भीड़।] भ्रमरों का समूह।

अलिबाल—परि, पृ० ४३—भौरों के बच्चे, भ्रमर, छोटे-छोटे भौंरे।

अवगाहन—अना, पृ० १६—पानी में उतर कर नहाना। भीतर पैठना, डुबकी लगाना, छानबीन करना, थाह लेना।

अल्पो-अल्पों—अर्च, पृ० ४७—थोड़ा-थोड़ा करके, धीरे-धीरे।

अवगुण्ठन—गी० पृ० ४१—घूंघट, पर्दा, बीच का आवरण, व्यवधान।

अवज्ञा—परि, पृ० २२५—उपेक्षा, तिरस्कार, आज्ञा न मानना।

अवतंस—आरा, पृ० ४८—आभूषण, शोभा बढ़ाने वाला उपकरण।

अवदात—अना, पृ० १६७, गीत, ५२—उज्ज्वल, निर्मल, श्वेत या पीला रंग, स्पष्ट।

अवनत—अना, पृ० ५६—झुका हुआ, नमित, गिरा हुआ, पिछड़ा हुआ, अविकसित।

अवनमन—आरा, पृ० ७१—झुकना, नमन करना।

अवनी—अना, पृ० १५३—पृथ्वी, धरती।

अवरोधरहित—तुल, पृ० ४१—[अवरोध=बाधा, रुकावट, अटकाव।] बाधा रहित, स्वतंत्रता से, बिना संकोच-झिझक।

अवरोह—परि, पृ० १६४—नीचे आना, नीचे उतरना।

अवलेह—आरा, पृ० ५६—चटनी, चाट कर खाया जाने वाला पदार्थ, चाट, आसक्ति।

अवशम्वद—अर्च पृ० ६१—विवश होकर बोलने वाला, हाँ में हाँ मिलाने वाला, दास, सेवक, पराधीन।

अवशिष्ट—अना, पृ० ६८—शेष, बाकी, बचा हुआ।

अवश्रित प्रवचन—अर्च पृ० ६३—[श्रित=आश्रित, सेवित, पका हुआ, रक्षित। अव=निश्चय, व्याप्ति, ह्रास, ज्ञान, अल्पता।] परिपक्वज्ञान का उपदेश।

अवसन—अना, पृ० ८१—वस्त्रहीन, कपड़े उतार कर, नंगा।

अवसन्न—परि, पृ० ४०—सन्नाटे से भरा, भयभीत।

अवसाद—अना, पृ० ४६, आरा, पृ० ६१—उदासी, शिथिलता, नाश, अंत।

अवसान—अना, पृ० ५२, ५६,—अन्त, अस्त होना, बीतना, तिरोहित होना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवसित—तुल, पृ० ५६—समाप्त, शांत, परिपक्व, निश्चित, एकत्र। संदर्भार्थ—विस्तृत रूप में विद्यमान, व्याप्त।

अवहेला—अना, पृ० ९०—उपेक्षा, अनादर, अवज्ञा।

अविकच—अना, पृ० ४४—बन्द, अविकसित, न खिला हुआ।

अविकार—अना, पृ० ४३, परि, पृ० ५१—विकार या दोष रहित, निर्मल, उज्ज्वल, पावन।

अविकृत—परि, पृ० १०४—जिस में विकार न आया हो, जो बिगड़ा न हो, दोषरहित, सुघर, सुन्दर, शुद्ध।

अविचल—परि, पृ० २३८—स्थिर, अडिग, अचंचल।

अविचलचित्त—गी, पृ० ४४—अडिग चित्तवाली, अचल, एकनिष्ट प्रेम से भरे हृदय वाली।

अविचार—परि, पृ० १५३—विचार हीनता, नासमझी, अबोधता, मूर्खता।

अविधा—आरा, पृ १४—सामान्य या वाच्य अर्थबोध कराने वाला साधन, वाच्यार्थ, शब्दकोश के अनुसार अर्थ या भाव। संदर्भार्थ—सामान्य साधारण भाव या अर्थ।

अविनश्वर—तुल, पृ० ३५ परि, पृ० ३४—जिस का कभी नाश न हो, चिरन्तन, सदा विद्यमान, सदा जीवित रहने वाला।

अविश्वस्त—अना, पृ० ५९—जिस का विश्वास न हो, सन्दिग्ध, झूठा।

अष्ट सिद्धियाँ—परि, पृ० २१९—अणिमा, लघिमा, गरिमा, महिमा, प्रकाम्प, प्राप्ति, ईशित्व, वशित्व नामक आठ सिद्धयाँ।

अष्टादशाध्याय—अना पृ० १२१—अठारह अध्याय। अठारह खण्ड। संदर्भार्थ—जीवन के अठारह वर्ष।

अशन-व्यसन—अर्च पृ० २१—[अशन=भोजन, भक्षण, पार जाना, प्रवेश। व्यसन=पृथक करना, भंग करना, दुराचरण, बुरी आनत, लत, प्रिय विषय।] खानपान शौक स्वभाव रहन सहन आदि।

अशना—अर्च, पृ० ४७—भोजन कीं, भोजन खाने वाली, स्वाद चखने वाली।

अशनि—अना, पृ० १०५ वज्र, बिचली।

अशब्द—अन, तृ० १२१—शब्दहीन, मौन, मूक।

अशयन—अर्च, पृ० १०—[शयन=निद्रा, शय्या, नारी सहवास।] न सोना, नारी के प्रति विरक्ति।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अशरण-शरण-शरणा—अर्च, पृ० ३—[अशरण=अनाथ, आश्रयहीन, जिसे कोई शरण न दे। शरण=आश्रय, रक्षा-स्थान, रक्षक। शरणा=प्रसारिणी लता, फैलने वाली बेल।] आश्रयहीनों, अनाथों के लिये आश्रय, अवलम्ब का विस्तार करने वाली।

अशिव उपलाकार मंगल—गी, पृ० १४—अशुभ अमंगलकारी पत्थर ही शिव या मंगलमय बनता है।

अशेष—गी, पृ० ४—सम्पूर्ण, असीम, अतुलनीय।

अशेष निर्देश—गी, पृ० २८—शेष न होने वाले की ओर संकेत करती हुई, असीम अनंत की ओर संकेत करती हुई।

अशेष छविधर—तुल, पृ० ५८—सम्पूर्ण सौंदर्य धारी, अविनश्वर सौंदर्य से पूर्ण, चिरन्तन सौंदर्य माधुर्य से सम्पन्न तुलसीदास।

अशोक—आरा ४०—शोक रहित, प्रसन्न, आह्लादित।

अश्रु-जल-धौत—गी, पृ० २२—आँसुओं के पानी से धुलकर उज्ज्वल हुई।

अश्रु-ज्योत्स्ना-स्रोत—गी, पृ० ५२—चन्द्रमा के प्रकाश का प्रवाह मानों आँसू हैं।

अश्रुत—अना, पृ० ६, परि, पृ० १०३—न सुना हुआ, अभिनव, अभूतपूर्व।

अश्लेष—गी, पृ० ३१—जिसके दो अर्थ न हों, व्यंग्य-रहित, सीधी-सादी, भोली-भाली, समझने में सरल।

अश्व—तुल, पृ० २५—घोड़ा, हय, बाजी।

असत्—तुल पृ० ३५—अविद्यमान, जिस का अस्तित्व न हो, मिथ्या, झूठ, बुरा, अनुचित, नाशवान।

असमय समय न करो—गी, पृ० ४१—मिलन के इस उपयुक्त समय को कुसमय कह कर न टाल दो, यह न कहो कि मिलन का यह अवसर नहीं है, जब अवसर आयगा, तब तुम्हारी कामना पूर्ण होगी, मिलन के इस शुभ अवसर (समय) को कुअवसर (असमय) मत बना दो।

असम्भाव्य—अना, पृ० १५६—जिस का किया जाना, घटना या होना मुमकिन न हो, अनहोनी।

असहन—परि, पृ० ८५—जो सहा न जा सके, असह्य, न सहने योग्य, कष्टप्रद।

असहनीय परि, पृ० २०३—जो सहा न जा सके, न सहने योग्य, भीषण, भयंकर, अमानवी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असहयोग—नये, पृ० ७७—सहयोग या सहायता न देना। भारतीय स्वतंत्रता का आन्दोलन जो सन १९२१ में गाँधीजी के नेतृत्व में हुआ और जिसमें अंग्रेज़ी शासन से सहयोग न करने का आदेश दिया गया। विदेशी वस्त्र, शराब, सरकारी नौकरी, अंग्रेज़ी शिक्षा आदि का बहिष्कार भी असहयोग में सम्मिलित रहा।

असार—अना, पृ० १५—सारहीन, प्रयोजनहीन, व्यर्थ, बेकार।

असावरी—परि, पृ० २३४—एक रागिनी जो भैरव राग की स्त्री मानी जाती है।

असित—परि, पृ० १२३—काला, जो सफेद न हो।

असिद्धि—अना, पृ० १६७—असफलता, उद्देश्य पूरा न होना, निष्फलता।

असीमता—तुल, पृ० ५६—सीमाहीनता, अनन्तता, अतिशय व्यापकता या विस्तार।

असु—अर्च, पृ० २५, आरा, पृ० ९२८—प्राण, चित्त, गरमी, पानी, विचार, हृदय, शोक।

असुर—तुल, पृ० १३—दैत्य, दानव, सूर्य, राहु, खल, दुष्ट।

असूत्र—अना, पृ० ३२—जो बंधा न हो, बिखरा हुआ, असम्बद्ध, फैला हुआ, जो संक्षिप्त न हो।

अस्तदल—गी, पृ० १४—सूर्यास्त के पत्ते, सूर्यास्त की सघनता या मोटाई। दिवसावसान के समय के अंधकार की मोटी तहें।

अस्तमित—तुल, पृ० ११—[अस्त का विशेषण] अस्त हो गया, छिप गया।

अस्ताचल—अना, पृ० ५६—वह पर्वत जिसके पीछे सूर्य छिपता है।

अस्तित्व—परि, पृ० २०९—सत्ता, हस्ती, विद्यमानता।

अस्तिनास्ति—अना, पृ० १५६—होना-अनहोना, है और नहीं भी हैं, भाव और अभाव।

अस्त्र—अना, पृ० ५३—फेंक कर चलाये जाने वाला हथियार बाण आदि, मंत्र प्रेरित बाण, धनुष, नश्तर।

अस्नात—अर्च, पृ० ५४—बिना स्नान किया हुआ, न नहाया हुआ। मैला, गन्दा, अशुद्ध।

अस्फुट—अना, पृ० ३५, तुल, पृ० १८—बेखिली, अस्पष्ट, अप्रकट।

अस्मित—आरा, पृ० ४१—अहंकार, कष्ट, पीड़ित, मुस्कान-विहीन, उदास।

अहंकार—परि, पृ० १०९, २२७—अहङ्कृति, अभिमान।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहम्—अना, पृ० १००—अभिमान, घमण्ड, दुरभिमान, अपने बल, वैभव, ज्ञान, साधन आदि का बोध और कथन ।

अहरह—गी, पृ० ८५—रात-दिन, निशिवासर, हर समय ।

अहल्योद्धार-सार—तुल, पृ० २०—[अहल्या=गौतम ऋषि की पत्नी, जो पति के शाप के कारण शिला बन गई थी । विश्वामित्र के साथ जनकपुर जाते हुए राम ने अपना चरण स्पर्श देकर उसका उद्धार किया । उद्धार=मुक्त करना, बचाना, रक्षा करना, धार से ऊपर निकालना, डूबने से बचाना । सार=तत्त्व, अर्थ, प्रयोजन, उद्देश्य, निचोड़ ।] अहल्या का उद्धार करने वाले भगवान राम के स्वरूप, शील, शक्ति और सौंदर्य के यथार्थ स्वरूप और उनके प्रति भक्ति-भावना का रहस्य बताना ।

अहिरावण—आरा, पृ० १०—अहिरावण के समान दानवी स्वभाव वाला मन, दुष्कर्मों में फँसा दुष्ट व्यक्ति ।

अहोरात्र—गी, पृ० ५८—लगातार, रात-दिन ।

आंखका कांटा होना—नये, पृ० १९—कष्टदायक मालूम होना, असह्य दुख देना ।

आँगन—तुल, पृ० ४६—सहन, घर के बीच खुला स्थान ।

आँचना—अर्च, पृ० ७५—जलाना, तपाना, आँच लगाना ।

आँचो—आरा, पृ० ५५—जलाओ, तपाओ ।

आकर्षण—अना, पृ० ५८—खिंचाव, मनोमोहकता, मनोमुग्धता, अनुरक्ति ।

आकाश कुसुम—परि, पृ० २३४—आकाश पर फूल नहीं खिलते, वहाँ फूलों का होना असम्भव है । असम्भव की कल्पना करना, सर्वथा अप्राप्य की प्राप्ति की आशा रखना ।

आकुंचित भ्रू—तुल, पृ० १२—टेढ़ी भवें किये हुए, टेढ़ी भवों वाला । सदंर्भार्थ—क्रोधीली आतंककारी मुद्रा से देखना ।

आकृति—तुल, पृ० ३८—शक्ल, सूरत, मुद्रा, चेहरा, स्वरूप, गढ़न ।

आक्रान्त—अर्च पृ० ४८—जिस पर हमला किया गया हो, पराभूत, कष्टग्रस्त, परतंत्र ।

आगम प्रतीक्षा—अना, पृ० ७४—आने की राह देखना, आने की बाट जाहना ।

आगम-रीति—अर्च, पृ० ५२—[आगम=आना, धारा, उपक्रम, इति, शास्त्र, तंत्रशास्त्र] संगीत शास्त्र या सिद्धान्त के अनुसार ।

आगार—परि, पृ० १६३—घर, स्थान, निवास, आवास ।

आच्छद—आरा, पृ० ८२—वस्त्र, पहनावा, ढकना ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आजन्मग्रास—तुल, पृ० २५ -[आजन्म=जीवन भर के लिए, जन्म से मृत्यु पर्यन्त, सदा के लिए। ग्रास=खाये, निगले, हड़पे, हज़म किये या अधिकृत किये जाने वाली चीज़, भोजन का एक विशेष परिमाण, कौर।] ज़नमने से मरने तक अन्यों के द्वारा पीड़ित, शोषित बने रहना, जीवन भर औरों के अत्याचारों का शिकार बनना, जीवन पर्यन्त औरों का भोजन बने रहना। दास, गुलाम।

आजानु-विलम्बित-केश—गी, पृ० २६—[आजानु=जाँघ के अंत या घुटनों तक। विलम्बित=लम्बे।] घुटनों तक लटकने वाले बाल या बालों वाली।

आजीवन—तुल, पृ० ३८—जीवन भर, जीवन के आरम्भ से अन्त तक, आमरण।

आतप—तुल, पृ० २३—धूप, उष्णता, प्रकाश। संदर्भार्थ—सूर्य का प्रकाश,

आड़—परि, पृ० २६—पर्दा, संरक्षण, ओट, छिपाव, सहारा, अवलम्ब।

आतारक-सूर्याकाश—अना, पृ० १००—सितारों से लेकर सूर्य और आकाश तक।

आतुरपद—तुल, पृ० ३३—तीव्रता से पग रखते हुए, तेज़ी से चलते हुए, क्षिप्र गति से जाते हुए।

आत्मविस्मृत—अना, पृ० ५६—अपने अस्तित्व से उदासीन, आत्मसम्मान रहित, अपनी शक्ति, शौर्य, गौरव को भूला हुआ।

आत्मा-बांधव—तुल, पृ० १३—आत्मा के सम्बंधी कुटुम्बी। संदर्भार्थ-आध्यात्मिक शक्तियाँ, आत्मा के विकास में सहायक गुण।

आदर—अना, पृ० ६४—सम्मान, मान, सत्कार।

आदि वानी—अना, पृ० १०४—प्रथम शब्द, सृष्टि रचने से पूर्व शून्य में ध्वनित होने वाली सर्व प्रथम झंकार। वेद को भी आदि वाणी कहा जाता है।

आदि-रस—परि, पृ० ५५—[आदि=सर्वप्रथम, प्राचीनतम। रस=भावलीनता, आनन्द, स्वाद, फल आदि को निचोड़ कर प्राप्त किया गया पेय पदार्थ।] शृंगार-रस, रतिक्रीड़ा, केलिविलास।

आधि—आरा, पृ० ६५—मानसिक पीड़ा, विपत्ति, अभिशाप।

आध्यात्मिक—अना, पृ० १७७—परमात्मा, आत्मा या मन से सम्बन्ध रखने वाला।

आनत—गीत, पृ० ६२—झुका-हुआ, उदास।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१.७ / २-२ ४६,४०२

आनन्द—अना, पृ० २—दुःख का अभाव, प्रसन्नता, उल्लास, सुख।

आनबानशान—परि, पृ० १९२—गौरव, शोभा, समृद्धि, सजावट आदि।

आनत्—आरा, पृ० ४५, ६९—झुका हुआ, नम्र, विनीत।

आपदा—परि, पृ० २०३—मुसीबत, आपत्ति, विपत्ति।

आया—तुल, पृ० १२—पहुँचा, प्राप्त हुआ, मिला। संदर्भार्थ—पराजित हुआ, अधिकार में आया।

आभा—तुल, पृ० ३५, ४६—चमक, ज्योति, प्रकाश। संदर्भार्थ—अस्त होते हुए सूर्य की लाल ज्योति, सन्ध्या का सुनहरा प्रकाश।

आभार—अना, पृ० ६८—बोझ, अहसान, कृतज्ञता, अनुग्रह, उपकार।

आमद-पद-भर—अर्च, पृ० ६५—नशीले गीतों को भरकर, मादक गीतों से भरे हुए।

आमोदित—परि, पृ० २२४—प्रसन्न, आनन्दित, हर्षित।

आयत दृग—तुल, पृ० १७—[आयत=लम्बा, विशाल, विस्तृत, आकृष्ट। दृग=नयन, नेत्र, आँख।] बड़ी बड़ी आँखों वाला, विशाल नेत्रों वाला।

आरती—अना, पृ० १४१—मंगलकामना, पूजन, स्वागत आदि के लिये फूल, रोली, चावल, अगरु धूप आदि से भरी थाली किसी देवता या पूज्य व्यक्ति के मुख के चारों ओर घुमाना।

आरक्त—अना, पृ० ५९—लाल, अरुण, गुलाबी।

आराधना—अना, पृ० १६३, अर्च, पृ० ५४—पूजा, उपासना, सेवा।

आराम—अर्च, पृ० १००—आश्रय, विश्राम, सुख, चैन, आरोग्य।

आरोचन—अर्च, पृ० २—उज्ज्वल, चमकीली।

आलबाल—अना, पृ० १९४, अर्च, पृ० १०३—थाँवला, किसी वृक्ष के चारों ओर बनाया गया गोल घेरा, क्यारी।

आलम्बन—तुल, पृ० ३८—सहारा, सहारा लेना, आधार, कारण, साधन, रस की उत्पत्ति का आधार।

आला—परि, पृ० १२९—श्रेष्ठ, उत्तम, सर्वसुन्दर।

आलिंगन—तुल, पृ० १५—गले लगाना, छाती या हृदय से चिपटाना, बाँहों या अंक में भरना।

आलिंगित—अना, पृ० २१—चिपटा हुआ, हृदय से लगा हुआ, वक्ष से सटा और बांहों में बँधा हुआ, स्पर्शित, चुम्बित।

आलोक—अना, पृ० ६१—प्रकाश, ज्योति, ज्ञान।

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी
विश्वविद्यालय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलोकनग्न—परि, पृ० ७२—[आलोक=प्रकाश, आभा, ज्योति। नग्न=नंगा, अनावृत, स्पष्ट।] प्रकाश से निखरी हुई, निर्मल निर्विकार पुतलियाँ।

आल्प्स—नये, पृ० ६३—इटली देश के उत्तर में स्थित पर्वत।

आवरण—तुल, पृ० ४६—ढकना, छिपाव, पर्दा, वस्त्र, परिधान, आच्छादन।

आवर्तित—अप, पृ० १६६—बार बार आते हुए, परिक्रमा करते हुए, चारों ओर घूमते हुए, भीड़ की भीड़ एकत्र होते हुए।

आवृत—गी, पृ० ५, तुल, पृ० २६—ढका हुआ, छिपा हुआ। जो (कमल) खिले हुए न थे, खिले न होने के कारण जो (कमल) छिपे हुए थे। प्रभावित, आतंकित, आच्छादित, अधिकृत।

आवर्त—अना, पृ० १०४—घेरा, चक्राकार घूमना, भँवर।

आवर्तन—परि, पृ० ५८—घेरा, चक्कर काटना, लौट कर आना, भँवर।

आवलियाँ—आरा, पृ० ६३—समूह, पंक्तियाँ, भीड़, परम्परा।

आवेगरहित—अना, पृ० १६४—बिना भावावेश में आये, शांत गम्भीर भाव से, भाव से विचलित हुए बिना।

आवेश चपल—अना, पृ० २३—उत्तेजना के कारण चंचल, भावके आवेग के कारण अधीर।

आशय—तुल, पृ० ३५—शयनस्थान, विश्रामघर. आश्रम, शयन, आधार, अर्थ, अभिप्राय. तात्पर्य, हृदय, उदर, जानवर फँसाने का गड्ढा, अभ्युदय, भाग्य, सम्पत्ति, कृपण व्यक्ति। संदर्भार्थ—विशेष प्रयोजन, किसी विशेष कारण का आधार, सीधे या प्रत्यक्ष रूप में नहीं—परोक्ष सम्बन्ध रूप में, सम्बन्ध के कारण।

आशा—तुल, पृ० २५—किसी घटना के होने या किसी वस्तु की प्राप्ति की इच्छा और किंचित विश्वास, आसरा, भरोसा।

आशु—परि, पृ० ६४—शीघ्र, तुरन्त, तेज, द्रुत।

आशुतोष—अर्च, पृ० ४६—शीघ्र ही तुष्ट हो जाने वाला, थोड़ी सेवा से ही प्रसन्न हो जाने वाला, शिव, शंकर।

आसमुद्र चन्द्रमा—अना, पृ० १००—सागर से लेकर चन्द्रमा तक।

आसन—तुल, पृ० ११—बैठना, वह पदार्थ या उपकरण जिस पर बैठा जाय। जम कर बैठना।

आसव—तुल, पृ० १३, २६—मदिरा, शराब, मद, रस, मद्य, पुष्परस, उत्तेजन। बेहोश कर देने वाला पेय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रासुर – तुल, पृ० ५७—असुर-सम्बन्धी, पापपूर्ण. दानवी, तामसिक। काम, क्रोध, मत्सर, अज्ञान आदि दुष्ट प्रवृत्तियों से पूर्ण।

श्रास्तीन का साँप—परि, पृ० १०८ – बांह में रहने वाले साँप के समान सदा आशंकित और भयभीत रखने वाला, अपनी ही शरण या आश्रय में रहने वाला साँप के समान विषैला विश्वासघाती व्यक्ति जो कभी भी अवसर पाकर प्राणघात कर सकता है।

श्राहूत—अना, पृ० ५६—बुलाया हुआ, निमंत्रित, आमंत्रित, जिसका आह्वान किया गया हो।

श्राह्वान—अना, पृ० ६– पुकारना, चुनौती देना, आमंत्रित करना।

इ

इंगित—अना, पृ० ३१, अर्च, पृ० ६५—संकेत, इशारा, अभिप्राय, कम्पित, हिलता हुआ। अत्यन्त सरलता से, दैहिक चेष्टाओं से कोई भाव या विचार प्रकट करना। लेशमात्र भी परिश्रम किये बिना।

इंदीवर—तुल, पृ० ३०—नील कमल।

इन्दु—आरा, पृ० ९२ —चन्द्रमा, चाँद, राकेश।

इन्द्रधनु—अना, पृ० २०—इन्द्रधनुष, वर्षाकाल में आकाश पर दिखाई देने वाला नीले हरे गुलाबी रंग का अर्धचक्र।

इन्द्रधनुर्धर—परि, पृ० १६२—इन्द्रधनुष धारण करने वाला बादल।

इकला-दुकला—अर्च, पृ० ६४ –[इकला=अकेला। दुकला =एक साथी के साथ।]

इच्छा—तुल, पृ० २४—चाह, अभिलाषा, इरादा, संकल्प।

इतर—अना, पृ० ६, २५, तुल, पृ० २४—दूसरा, और, भिन्न, अन्य पराया, साधारण, हीन, नीचा।

इति—अर्च, पृ० ३८—समाप्ति, पूरा करना, अन्त।

इमन रागिनी—अना, पृ० ३६—कई राग-रागिनियों के स्वर मिला कर बनी एक रागिनी, इसे ऐमन और ईमन भी कहा जाता है।

इशारा—परि, पृ० १२२—संकेत, इंगित, आँख, मुँह या हाथ की चेष्टाएं, जो मौन रहकर, किसी बात को समझाने के लिए की जाती हैं।

इष्टदेव—परि, पृ० ११६—[इष्ट=अभिलषित, वांछनीय, अभिलाषा। देव=परमात्मा, प्रेम करने वाला, दिव्य अमर भव्य व्यक्ति, जो स्वर्ग में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचरण करता है।] मनवांछित देवता, मनोकामनाएँ पूर्ण करने वाला देवता, आराध्यदेव, देवताओं के समान पूज्य पति।

इसने—तुल, पृ० २४—भारतीय मन ने, भारतीय सांस्कृतिक पुनरुत्थान के अभिलाषी सामूहिक रूप में भारतीय चेतनाशील हृदय ने।

इसलाम-कला—तुल, पृ० १४—मुसलमानी सभ्यता, संस्कृति, आचार-व्यवहार वेशभूषा, खानपान आदि।

इसलाम-क्षम—तुल, पृ० २५—[इसलाम=हज़रत मुहम्मद द्वारा प्रवर्तित (चलाया गया) धर्म। क्षम=सहन करने में समर्थ, योग्य, उपयुक्त, औचित्य, शक्ति।] इस्लाम की सांस्कृतिक और राजनीतिक शक्ति का प्रभाव, मुस्लिम शासकों और संस्कृति का आतंक।

ई

ईटं—परि, पृ० ९९—पकाया हुआ मिट्टी का वर्गाकार टुकड़ा, धातु का चौकोर ढला हुआ टुकड़ा, जड़ता, चोट, भावनाहीनता।

ईट का जवाब पत्थर से देना—परि, पृ० २०६—बुरे काम का बदला अधिक बुरे काम से देना, बदले में अधिक भयंकर आघात करना।

ईप्सित—परि, पृ० १०५—अभिलषित, इच्छित, प्रिय, चाहा हुआ।

ईरण—अर्च, पृ० ११२—क्षुब्ध या अस्थिर कर देने वाला, क्षुब्ध, पीड़ित, अधीर।

ईश्वर-मज्जित—परि, पृ० ३४—[ईश्वर=स्वामी, राजा, पति, परमेश्वर, आत्मा। मज्जित=डूबा हुआ, स्नात, भीगा हुआ, लीन।] परमेश्वर में लीन, ब्रह्मलीन, भगवान की भक्ति या स्वरूप में डूबा हुआ, आत्मलीन।

उ

उऋण—तुल, पृ० १९—ऋण-मुक्त, जिसने कर्ज़ चुका दिया है, जो किसी के उपकार का बदला दे चुका है। जो किसी उत्तरदायित्व को पूरा कर चुका है। जो किसी के प्रति कर्तव्य पालन कर चुका है।

उन्मादन—अर्च, पृ० ६५—उन्मादकारी, नशे में डुबा देने वाला, नशीला, मादक।

उन्मीलन—अर्च, पृ० ४०—खिलना, खुलना, विकसित होना, व्यक्त होना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उग्रतर—अना, पृ० ५२, ८७,—अपेक्षाकृत अधिक तीव्र, भयानक, क्रूर, तीक्ष्ण, क्रुद्ध, परिश्रमी।

उचाट्—तुल, पृ० ४५—उचटना, उकताना, घबराना, आकुल या उतावला होना, उखड़ना।

उच्चाटन—अप, पृ० १७१, परि, पृ० २२३—एक तांत्रिक अनुष्ठान या मंत्र सिद्धि, जिसे पूर्ण कर किसी व्यक्ति के चित्त को उचाट किया जा सकता है, उन्मूलन करना या उखाड़ना, मन न लगना, हृदय का उचाट होना।

उच्छृंखल—अना, पृ० २६—बंधनहीन, स्वेच्छाचारी, नियम-मर्यादाओं की परवाह न करने वाला।

उछाह—तुल, पृ० १६—उत्साह, जोश, प्रसन्नता, कार्य करने की तत्परता और स्फूर्ति।

उड़द—गीत, पृ० ५२—दाल वाला एक काला अनाज, यह फलियों के भीतर पैदा होता है। इसकी बेल फैलती है।

उड़ गये—तुल, पृ० १४—विलीन हो गये, अन्तर्धान हो गये, मारे गये, बलिदान हो गये।

उतारी—आरा, पृ० ११—अन्य, नवीन, पृथक।

उत्कण्ठित—परि, पृ० ४४—आकुल, आतुर, प्रतीक्षा करती हुई।

उत्कट—अना, पृ० ११४—तीव्र, सघन, आकुल, भीषण।

उत्कल—तुल, पृ० ५६—बंधनमुक्त, स्वच्छन्द।

उत्तप्त—परि, पृ० १२५—गरम, जलती हुई, तपती हुई।

उत्तमता—तुल, पृ० ४२—श्रेष्ठता, अच्छाई, महत्व, प्रधानता, उच्चता।

उत्ताप—आरा, पृ० ५६—जलन, दुख, आँच, चिन्ता, क्षोभ, उत्तेजना।

उत्ताल-तरंगाघात-प्रलय-घन-गर्जन-जलधि-प्रबल—परि, पृ० १२७—ऊँची-ऊँची पठारों के आपस में टकराने से भयंकर प्रलय के बादलों के समान गरजता हुआ शक्तिशाली समुद्र।

उत्तोलन—अर्च, पृ० ६३—तोलना, साधना, सँभालना।

उत्थान—परि, पृ० २६—ऊपर उठाना, उन्नति, विकास, वर्द्धन।

उत्थित जग कारण—गी, पृ० ५५—संसार के उठने का कारण, विश्व के आविर्भाव का कारण।

उत्पल—तुल, पृ० ३, १७—कमल, वारिज, जलज, पंकज, इंदीवर। जैसे जल की शोभा कमल है, वैसे ही तुलसीदास अपने कुटुम्ब और मित्र-मिलापियों की शोभा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्फुल्ल—अना, पृ० ३७—खिला हुआ, विकसित, प्रसन्न, फूला हुआ।

उत्स—अर्च, पृ० २५—स्रोत, सोता, जलधारा, जलमय स्थान।

उत्सुकता—अना, पृ० ७४, परि, पृ० ४४—अधीरता, व्याकुलता, उत्कण्ठा, प्रबल अभिलाषा।

उथला—नये, पृ० १५—बहुत कम गहरा, कम पानी से भरा हुआ, छिछला।

उदरंभरि—तुल, पृ० २०—पेट भरने वाले स्वार्थ-साधक। औरों का शोषण करने वाले। अन्य की परवाह न करके निजी सुख-साधन जुटाने में लीन।

उदार—अना पृ० २०, तुल, पृ० ३१—दानशील, ऊँचे दिल वाला, दयालु, उच्च, विस्तृत, विशाल, धीर, अन्य, गुण-प्रशंसक, सुन्दर, उचित ईमानदार।

उद्गीरण—अना, पृ० १०८, परि, पृ० २४०—बाहर निकलना, वमन होना, गिराना, बरसाना।

उद्गीरित—अना, पृ० १५३—फैलती हुई, बाहर निकलती हुई।

उद्दाम वेग—अना, पृ० ६९, परि, पृ० १४६—प्रचण्ड, भयंकर, उग्र, बंधनहीन निरंकुश, तीव्र। वेग, गति, प्रवाह, बहाव।

उद्दीपन—परि, पृ० ५५, अर्च, पृ० ४६,—चमकाना, उत्तेजित करना, भड़काना, जगाना, बढ़ाना, जलाना। प्रेरित, प्रोत्साहित, अनुप्राणित करना, किसी भाव या अनुभूति को बढ़ाने, उत्तेजित करने, या जगाने वाले पदार्थ काव्य शास्त्र में जिन्हें उद्दीपन विभाव कहा जाता है।

उद्देश्य—अना, पृ० २९—प्रयोजन, मतलब, आशय, भाव।

उद्धत—परि, पृ० २०६—तीव्र, भीषण, कठोर, भयंकर।

उद्भासमान—परि, पृ० २२७—चमकता हुआ, व्यक्त, स्पष्ट, मालूम होता हुआ।

उद्यतकर—अना, पृ० ८७—प्रयत्नशील हाथ, सक्रिय हाथ, हाथ उठाये हुए या फैलाए हुए।

उद्वेल—आरा, पृ० २—मर्यादा तोड़ कर बहना, उबलना, उफनना, बंधन तोड़ कर प्रवाहित होना।

उनई—आरा, पृ० १४—उमड़ी, घिर आई, फैल गई।

उनये—अर्च, पृ० ३०—उमड़ आये, उग उठे, पैदा हो गये।

उन्नत—तुल, पृ० २६, अना, पृ० ५१—ऊपर उठा हुआ, न झुका हुआ, विकसित, सम्पन्न, समवर्द्धित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्मन—तुल, पृ० १५, २२, ४७—उद्विग्न, उदास, उत्कण्ठित, व्यग्र, अन्यमनस्क, आकुल, बेचैन, विकल।

उन्माद—अना, पृ० ६०—नशा, बेसुधि, विस्मृति, तन्मयता, मस्ती, पागलपन।

उन्मादिनी—अना, पृ० २७—नशे में चूर, नशीली, मदमस्त, पागल।

उन्मुक्तगुच्छ—तुल, पृ० ५२—गुच्छों को फैलाए हुए, समूह को बिखराए हुए, सिमटे हुए पंखों को फैलाए हुए।

उन्मुख—तुल, पृ० ३७—ऊपर की ओर मुख या दृष्टि किये हुए, तरफ या ओर को जाते हुए या मुख किये हुए, उत्कण्ठित, उत्सुक।

उन्मोचन—अना, पृ० ४६—खोलना, ढीला करना।

उपकरण—परि, पृ० २३६—साधन, सामग्री, यंत्र, जीविका का साधन, उपकार करना।

उपग्रह—आरा, पृ० ५६—छोटा ग्रह, प्रोत्साहन, पराजय, गिरफ्तारी, कैदी, अनुग्रह।

उपचार -परि, पृ० १२३- सेवा, विधान, प्रबंध, इलाज, प्रयत्न।

उपचार—अना, पृ० ११६—उपाय, विधान, व्यवस्था, इलाज।

उपल-खण्ड-नरमुण्ड-मालिनी—परि, पृ० १३५—[उपल=पत्थर, शिला। खण्ड=टुकड़ा। नर=आदमी, मनुष्य। मुण्ड=खोपड़ी, सिर। मालिनी=माला वाली, माला पहने हुए।] शिला खण्ड रूपी मनुष्य की खोपड़ियों की माला धारण किये हुए। मानव खोपड़ियों की माला के समान पत्थरों के टुकड़ों की माला पहनने वाली।

उपलप्रहार—अना, पृ० ९३ - पत्थरों की मार, ओलों की वर्षा या आघात।

उपलों के उत्पल बनाना—अना, पृ० ६८ -पत्थरों को कमल बनाना, पत्थर के समान कठोर भावना-हीन हृदयों को कमल के समान कोमल और स्निग्ध बनाना।

उपशमन—आरा, पृ० ७१—दमन, संयम, दबाना, नष्ट करना या होना।

उपशमिता—तुल, पृ० ५२—शान्त, विलीन, समाप्त।

उपवन—अना, पृ० ३—वाटिका, बगीचा, बगिया।

उपहार—अना, पृ० ६—भेंट, क्षतिपूर्ति, नैवेद्य, पूजन-सामग्री, आमोद-प्रमोद।

उपाख्यान—आरा, पृ० २१—छोटी कथा या कहानी, पौराणिक कथा या कहानी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपाधि तुल, पृ० ३३—बाधा, कष्ट, पीड़ा, छल, धोखा, विशेष लक्षण, चिह्न, प्रयोजन, पद, अल्ल।

उपायकरण—अना, पृ० २४—साधन जुटाना, यत्न करना, इलाज करना।

उपार्जन—अना, पृ० १२४—कमाना, प्राप्त करना, पैदा करना।

उपादेय—आरा, पृ० ५२—ग्रहण करने योग्य, उत्कृष्ट, प्रशस्त।

उवटन—नये, पृ० ३१—तिल सरसों आदि के तेल, हल्दी, आटा आदि को मिला कर शरीर पर मलने के लिये बनाये जाने वाला पदार्थ। राज-परिवारों के लिए अगरु, कस्तूरी, कपूर, चन्दन तेल आदि मिलाकर भी उबटन तैयार की जाती थी।

उभय भारती—अप, पृ० १७१—दूसरी सरस्वती, ज्ञान और प्रतिभा में शारदा के समान।

उर—तुल, पृ० ११—वक्षस्थल, छाती, हृदय, मन। संदर्भार्थ—धार्मिक, सांस्कृतिक भावनाएँ, विश्वास आस्थाएँ, परम्पराएँ आदि।

उरउर—तुल, पृ० १५—हृदय-हृदय, प्रत्येक मनुष्य, जनता, प्रजा।

उरगी—गी, पृ० ३३—सर्पिणी, साँपिन। नागिन के समान।

पर न तुम्हारे रेख रही—गी, पृ० ४१—तुम्हारे हृदय पर मेरे प्रेम का कोई भी चिन्ह नही रहा, मेरे इतने अनुनय-विनय करने पर भी तुम्हारे कठोर मन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

उर-मधुर-सिंधु—तुल, पृ० ५१—प्रेम के मधु से भरा हुआ हृदय रूपी समुद्र, कोमल भावनाओं के मधु से लवालव हृदय का सागर।

उर-मरु-पथ—गी, पृ० ४३—हृदय का रेतीला रास्ता, रेगिस्तान के पथ के समान नीरस रूखा और तप्त हृदय।

उरोज—अना, पृ० ५१, परि, पृ० २२५, तुल, पृ० ३१—छाती, स्तन, पयोधर, वक्ष।

उरोरुह—अर्च, पृ० १०७—उरोज, पयोधर, छातियां, स्तन।

उर्मिभंग—अना, पृ० १६—लहरों का खण्डित होना, तरंगों का टूटना या नष्ट होना। लहरों का उमड़ना उठना गिरना।

उर्मिल जल—तुल, पृ० ११—[उर्मिल=लहराता। जल=पानी, जीवन।] लहराता हुआ पानी रूपी भारतीय जीवन।

उर्वशी—अना, पृ० २—अप्सरा, अप्सरा के समान सुन्दर।

उलसो—आरा, पृ० २६—शोभित होओ, उगो, उत्पन्न होओ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उल्लू के पट्ठे—नये, पृ० १६—[उल्लू=एक पक्षी, मूर्खता का प्रतीक। पट्ठे=बच्चे, चेले, शिष्य।] वज्र मूर्ख, नितांत बुद्धिहीन, उल्लू के बच्चे। एक प्रकार की गाली।

उहार--अर्च, पृ० ५३--पालकी आदि पर परदे के लिये पड़ा हुआ कपड़ा। पर्दा, आवरण, माया अज्ञान आदि का पर्दा।

ऊ

ऊर्नावश—अना, पृ० १२१—उन्नीस। उन्नीस वर्ष की आयु।

ऊना—तुल, पृ० ५७—भयभीत, डरा हुआ, आशंकित, घबराया हुआ।

ऊबड़खाबड़—नये, पृ० १२—जिस में जहाँ-तहाँ छोटे-छोटे गड्ढे और उठान हों, रोड़े-कंकड़ पड़े हों, ऊँचा-नीचा टेढ़ा-मेढ़ा।

ऊर्जित—अना, पृ० ८५—ओजस्वी (भाषण), शक्तिशाली, समृद्धि, गम्भीर, तेजस्वी, श्रेष्ठ।

ऊर्ध्व—अना, पृ० १६६, तुल, पृ० ३६—ऊँचा, सीधा, ऊपर की ओर।

ऊर्ध्वग—परि, पृ० ७९—ऊपर या ऊंचे पर रहने वाला, उच्च, श्रेष्ठ।

ऊर्ध्वचन्द्र—आरा, पृ० १३—ऊपर चमकता हुआ चन्द्रमा, ऊंचे आकाश पर प्रकाशित चन्द्रमा।

ऊर्ध्व देश—तुल, पृ० २३—ऊँचा स्थान, ऊपर का स्थान, संदर्भार्थ—मानसिक ऊँचाइयाँ, मन का बहुत ऊँचा धरातल, चिन्तन की गहनता या ऊँचाई।

ऊर्ध्वध्यान—तुल, पृ० २०—[ऊर्ध्व=ऊँचा, भौतिक कामनाओं-वासनाओं से परे, स्वर्गीय, आध्यात्मिक। ध्यान=चित्तवृत्ति, मन का लगाव, स्मरण, चिन्तन, मनन।] भौतिक कामनाओं से मुक्ति का ध्यान, आध्यात्मिक चिन्तन, स्वर्गीय भावनाओं का ध्यान रखने वाला, ध्यान या चित्तवृत्ति को सांसारिकता से हटा कर आध्यात्मिकता की ओर लगाने वाला।

ऊर्ध्व-नभ-नग—गी, पृ० ४८—[ऊर्ध्व=ऊँचा, चिन्तन या ज्ञान की ऊँचाई। नभ=आकाश, शून्य, मन की निर्विकार निर्भाव स्थिति। नग=पर्वत-शैल-शिखर।] ऊँचे आकाश का पर्वत। निर्विकार मानसिक अवस्था का उच्चतम शिखर।

ऊर्मि-घूर्णित—गी, पृ० २७—लहरों में चक्कर काटता हुआ, घूमती हुई तरंगें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊर्मिल—अर्च, पृ १०—[ऊर्मि=तरंग, वेग, पंक्ति, प्रकाश, प्राणचित्त और शरीर के ६ क्लेश—भूख, प्यास, लोभ, मोह, सर्दी, गरमी। परिताप, इच्छा, व्यक्त] लहराती हुई। तरंगित, प्रवाहित, वेगवान परितप्त-दुखी, प्रकाशित-व्यक्त।

ऊषारुण—तुल, पृ० ४०—प्रभात के समान लाल, ऊषा जैसा गुलाबी, सूर्योदय के समान सुनहला।

ऋ

ऋचा—नये, पृ० ५६—ऋग्वेद के मंत्र।

ऋजु—परि, पृ० ७४—सीधा, सरल, सच्चा, अनुकूल, हितकर।

ऋजुकुटिल—परि, पृ० १७६—सीधा और टेढ़ा, सरल और कठिन।

ऋत—आरा, पृ० ४०—सृष्टि का आदि धारक तत्व, ब्रह्म, सूर्य, जल, यज्ञ, दीप्त, प्रभावित।

ऋता—नये, पृ० ६५—दीप्ति, चमक, उज्ज्वल, अनुकूल।

ऋतु—तुल, पृ० २०—जलवायु ताप आदि के परिवर्तन के अनुसार वर्ष के ६ विभाग, किसी काम के होने का नियत या उपयुक्त काल, दीप्ति, मौसम। संदर्भार्थ—मुस्लिम शासन काल, जल्दी-जल्दी बदलने वाला मुस्लिम कठोर शासन या मुसलमान बादशाह।

ऋतुपति—परि, पृ० ४२—ऋतुओं का राजा या स्वामी, वसन्त।

ऋषि—अना, पृ० ३०—मंत्र द्रष्टा, बहुत बड़ा तपस्वी, मुनि।

ए

एकत्व—अना, पृ० ७८—एक हो जाना, अद्वैत भाव, पृथक अस्तित्व-बाध का तिरोभाव, एकरूपता।

एकान्त—अर्च, पृ० ४८—अकेला, मुक्त, राग-विराग से रहित।

एकाएक—अना, पृ० ३—सहसा, अचानक।

एकादश रुद्र—अना, पृ० १५७—पुराणोक्त ग्यारह रुद्र : शिव, अजैकपाद, अहिर्बुध्न, विरुपाक्ष, सुरेश्वर, जयन्त, बहुरुप, त्र्यंबक, अपराजित, सावित्र हर। वेदोक्त—प्राण, अपान, व्यान, समान, उदान, नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त, धनंजय, जीवात्मा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकीभूत—परि, पृ० १११—संघटित, एक रूप होकर।

एम० ए०—नये, पृ० ६६—मास्टर ऑफ़ आर्ट्स, कला वर्ग में आने वाले किसी विषय का स्वामी या अधिकारी, कॉलिज या विश्वविद्यालय में पढ़ाई जाने वाली सब से बड़ी श्रेणी या क्लास, यह क्लास पास करके मिलने वाली उपाधि।

एवम्बिध—आरा, पृ० ६०—इसी प्रकार, इस प्रकार का, ऐसा।

ऐ

ऐच्छिक—आरा, पृ० ३४—इच्छानुसार, मनचाहे, अभिलाषा के अनुसार।

ओ

ओंकार—परि, पृ० ८२—वेदों में व्याप्त ब्रह्म का स्वरुप जो ओंकार की ध्वनि द्वारा प्रकट है, ब्रह्म का शब्द-रुप, शब्दब्रह्म। भगवान का नाम जिसमें समस्त शब्द समाये हैं, जो अ, उ और म अक्षर से निर्मित है।

ओंछें—आरा, पृ० १—निछावर, श्रद्धा-समर्पण की भावनाएँ या उद्‌गार। भावनाओं-उद्‌गारों की भेंट।

ओजस्वी—अना, १५७—तेजपूर्ण, प्रभावशाली, सशक्त, वीरतापूर्ण।

ओतप्रोत—गी, पृ० ५२ सराबोर, पूरी तरह डूबे हुए।

औरत की जात नये, पृ० १०—बेचारी औरत, अबला, बेबस, असहाय नारी।

ओला—नये, पृ० ५४—वर्फ़ सा ठण्डा, खाण्ड का बना छोटा लड्डू, गोल-गोल हिमखण्ड जो वर्षा के साथ आकाश से बरसते हैं।

क

कंकण—परि, पृ० ४८—कलाई में पहनने का आभूषण, कंगन।

कंकालकाय—तुल, पृ० २५—हड्डियों के ढाँचे मात्र शरीर वाला, शरीर जिसका पिंजर मात्र रह गया है, क्षीण देह वाला, जिस देह में नाम मात्र को रक्त-मास रह गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कंकालशेष—अना, पृ० २४—हड्डियों का ढाँचा मात्र, अत्यन्त दुर्बल, क्षीण शरीर वाला।

कंचुकी—परि, पृ० १७५—अँगिया, आँगी, चोली, स्त्रियों का कटिवस्त्र।

कंटक—तुल, पृ० ३३—काँटे, शूल, चुभीली-नुकीली चीज़ें।

कण्टकमय—अना, पृ० २६—काँटों से भरी, विघ्नबाधाओं से पूर्ण।

कण्टके—अर्च, पृ० २८—काँटे के समान चुभे, काँटे से बाधक या कष्टदायक हुए।

कन्दर—परि, पृ० १११—कन्दरा, गुफ़ा, दरी।

कगार—तुल, पृ० २०—किनारा, तट, कूल, पुलिन, कछार।

कच—परि, पृ० १२३—बाल, केश, कुन्तल।

कचनार—नये, पृ० ६८—एक वृक्ष जिसकी कली तरकारी में और छाल तथा फूल औषधियों में काम आते हैं।

कच-पवनतम-बिस्तार—गी, पृ० ४—सर्वव्यापक वायु और अंधकार, जिसके बाल हैं। अंधकार और पवन जिसके बाल बन कर दूर-दूर तक फैले हुए हैं।

कछार—अना, पृ० ६२—किनारा, तराई, नदी तट की नीची और गीली धरती।

कजली—नये, पृ० ६२—उत्तर प्रदेश के पूर्वी क्षेत्र में वर्षा ऋतु में गाये जाने वाला गीत विशेष।

कटक—अना, पृ० १०८—सेना, फ़ौज, समुद्र।

कटहल—नये, पृ० ६८—कड़े खुरदरे मोटे छिलके वाला गोलाई लिये हुए लँबोतरा फल, जिसकी तरकारी बनाई जाती है। पकने पर फल की तरह खाया भी जाता है। बीजों के ऊपर की तह बहुत मीठी और स्वादिष्ट होती है।

कटारी—अर्च, पृ० १८—एक छोटी तलवार, कटार, कृपाण।

कटि—परि, पृ० २०२—कमर।

कठोर पवि—परि, पृ० १६५—वज्र के समान कठोर।

कतकी—नये, पृ० ६४—कार्तिक की पूर्णिमा, जिस पर गंगास्नान होता है।

कदम्बमुखस्वर्णपराग—पृ० ४८—कदम्ब के फूलों का सुनहला पराग, कदम के सुनहले फूलों का मकरंद।

कदापि नहीं—तुल, पृ० २७—कभी नहीं, बिल्कुल नहीं, तनिक भी नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कनक—परि, पृ० ३२—सोना, धतूरा, गेहूँ। सोने के समान स्वच्छ और अनमोल।

कनक कर—अर्च, पृ० ३५ और ७३—कनक-किरन, सोने की किरन, ऊषा कालीन सुनहरे प्रकाश की किरण, प्रभात का सुनहरा प्रकाश।

कनक-गात—तुल, पृ० ४८—[कनक=सोना,स्वर्ण,हेम। गात=शरीर, देह।] सुनहरे शरीर वाले, सोने के समान झिलमिलाते हुए, ऐसे चमकते थे जैसे स्वर्ण के बने हों।

कनक-छाया—अर्च, पृ० ८—सुनहरी छाया, ऊषा कालीन सुनहरा आलोक।

कनक-पुष्प—परि, पृ० ४५—सोने का फूल, सुनहरा फूल, एक स्वर्णाभूषण जो सिर पर बाँधा जाता है और टीका कहलाता है।

कनक-प्रभात—अना, पृ० १, परि, पृ० १०२—सुनहरा प्रभात, प्रातःकाल जिसमें सूर्य का सुनहरा प्रकाश फैला हो, सोने के समान जगमगाती उज्ज्वल आशाओं से भरा जीवन का नया प्रारम्भ।

कनक-प्रसून—परि, पृ० ६०—सुनहरे फूल, सोने के समान जगमगाती उज्ज्वल अम्लान आशाएँ और अभिलाषाएँ।

कनक-रश्मि—अर्च, पृ० ६८—सुनहरी किरणें, प्रभात कालीन स्वर्ण-प्रकाश।

कनक-रेखा—अना, पृ० ७९—सुनहरी या सोने की लकीर, प्रभात कालीन किरण या रश्मि। जीवन के प्रभात में स्वर्ण के समान सुन्दर उज्ज्वल आशा, प्रेम, आनन्द आदि की झलक।

कनक-शस्य-कमल-धरे—गी, पृ० ७३—सुनहरे पके हुए धान और कमल धारण करने वाली।

कनकाचल—अर्च, पृ० ८६—सोने का पर्वत, सुमेरू पर्वत, सोने के पर्वत के समान।

कनीकनी—अर्च, पृ० ८१—छोटे से छोटा टुकड़ा, कण-कण, छोटे से छोटा पदार्थ भी।

कपाट—अना, पृ० ६८—किवाड़, फाटक, द्वार, आवरण।

कपि—अना, पृ० २५—बन्दर।

कपोत-कण्ठ—परि, पृ० २२५—कबूतर के समान गर्दन, कबूतर के गले के समान गले वाली।

कमनीय-गात—परि, पृ० १७१—सुन्दर तन वाली, गोरे गदरे सुन्दर शरीर वाली।

कमरख—गीतगुंज, पृ० ४५—एक फल जो फाँकदार और कुछ खट्टा होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमरखियाँ—अर्च, पृ० १५—कमरख के समान फाँकदार, कमरख की फाँक के समान आँखें।

कमल-कामिनी—अना, पृ० ४२—कमल के समान कोमल और सुन्दर रमणी।

कमल-वलयित-सरल-दृगजल-हार—अना, पृ० ८०—भोले-भाले नयनों के आँसुओं के कमलों से गुंथी हुई माला, भोले भाले स्वच्छ आँसुओं के कमलों को पिरोकर बनाया गया हार। भोले भाले नेत्रों से निरंतर बहती हुई अश्रु-धारा, जो कमल की माला के समान (शारदा के चरणों पर अर्पित) है।

कमला—तुल, पृ० ५३—लक्ष्मी, विष्णु की पत्नी।

कम्पन—परि, पृ० ३०—काँपना, भय, आशंका, शीत आदि के कारण सहसा शरीर का चंचल हो उठना।

कम्पित—अना, पृ० २—शीत या भय से काँपता हुआ। संदर्भार्थ—थिरकती चंचल नाचती हुई (दृष्टि)।

कम्पित-जंगम—परि, पृ० १६१—प्राणी का कांप उठना, भय से काँपते हुए प्राणी।

करंबुआ—नप, पृ० ६१—एक जगंली पौधा और उसके फूल।

कर-आतपत्र—अना, पृ० १९—[कर=हाथ। आतपत्र=छाता, छतरी] हाथ में छाता या राजछत्र धारण किये हुए।

करकट—नप, पृ० ९—कूड़ा, कचरा।

करण—अना, पृ० १०३— कर्म करने का साधन, उपकरण, जिसकी सहायता से काम किया जाय—जैसे लिखना कर्म है और लेखनी करण, खेलना कर्म है और गेंद करण।

करणकारण—अर्च, पृ० ८८—सभी साधनों उपकरणों के निर्माता। संदर्भार्थ —जिन प्राकृतिक तत्वों और गुणों से सृष्टि-रचना होती है, वह भी तुम हो और सृष्टि के कर्त्ता भी तुम्हीं हो।

करद—अर्च, पृ० ९२—छुरी, हँसिया, दराँत।

कर-दान—गी, पृ० ७६—किरणों का दान, प्रकाश फैलाना, ज्ञान प्रदान करना।

कर-पल्लव-झंकृत—परि, पृ० ८१—पल्लव के समान सुकुमार हाथ से बजाया जाता हुआ, फूल की पंखडी-से कोमल हाथों द्वारा बजता हुआ।

करारा—अर्च, पृ० ५८—किनारा, तट, कगार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करालिका—अना, पृ० ११४—भयंकर भीषण रूप धारण किये हुए, भयंकर-कठोर दुर्गा या काली।

करुणाकर—अना, पृ० २९—करुणा करने वाला, दयालु, कृपालु।

करुणा-करों उतारो—अर्च, पृ० १०८—दया करके अपने हाथ से इस भवसागर से पार उतारो, अपने दयालु हाथों से हमें भीषण भवसागर से पार करो।

करुणा की किरण—परि, पृ० १११—करुणा या दया की ज्योति, अनुग्रह का प्रकाश।

करुणामय—तुल, पृ० ३६, अना, पृ० २९—करुणा, दया, अनुग्रह, परदुख कातरता आदि से पूर्ण।

करुणा-विलाप—तुल, पृ० ४३—करुण क्रंदन, ऐसा रुदन जिसे सुन कर शोक उमड़ पड़े, शोक से भरा रुदन, करुणा या शोक उत्पन्न करने वाला चीत्कार।

करो हार—तुल, पृ० २१ [हार=माला, एक कंठाभूषण]—जिन पदार्थों से हार बनाया जाय—हीरे, मोती, लाल, जवाहर, मणि] गौरवशाली और प्रिय बनाओ, इन्हें [पत्थरों को] हीरे, लाल, जवाहर के समान बना दो, जिस से ये पद-दलित न रहकर गले का हार बन कर शोभा बढ़ाएँ और सम्मान पायें।

करोद्दण्ड—तुल, पृ० १३ [कर=हाथ, किरण। उद्दण्ड=निर्भय, अक्खड़, न दबने वाला,] संदर्भार्थ—प्रखर तेजस्वी किरणों वाला, अदमनीय तीक्ष्ण किरणों वाला।

कर्कशता—अना, पृ० ५२—कठोरता, कटुता, कानों को अप्रिय लगने वाली ध्वनि।

कर्मकुटिल—परि, पृ० १३३—कर्मों के द्वारा दुष्ट, खोटा, टेढ़ा या छली बना हुआ। दुष्कर्मों के कारण खोटा, बुरे कामों के कारण दुष्ट बना हुआ।

कर्म-कुसुम—गी, पृ० ३८—कर्मों के फूल, कर्म रूपी फूल, फूलों के समान कर्म।

कर्णकुहर—अना, पृ० १३—[कुहर=गढ़ा, छेद, कण्ठस्वर, कान, सांमीप्य। कर्ण=कान] कान का छेद या गढ़ा, कान के भीतर।

कर्दम—परि, पृ० ११२—कीचड़, मांस, पाप।

कर्दममय—परि, पृ० २३७—कीचड़ से भरा हुआ, पाप-पूर्ण, कलंक-पूर्ण।

कर्म—अना, पृ० १०३—कार्य, क्रिया, चेष्टा, काम, दैहिक श्रम।

कर्मजीवन—अना, पृ० ८९—अच्छे-बुरे कर्म, वासना, आसक्ति आदि और उनके कुफल और सुफल भोगने वाला जीवन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्ष—अना, पृ० १४—खींचना, जोश, उत्तेजना।

कर्षण-विकर्षण-भाव—परि, पृ० २१०—[कर्षण= खिंचना, आकर्षित होना, विकर्षण=दूर हटना, अलग होना।] मिलना-बिछड़ना, रूठना-मनाना, संयोग-वियोग।

कलंक—तुल, पृ० ३४—कालिमा, दाग, धब्बे, लांछन, बदनामी, दोष।

कल-कल—तुल, पृ० १६—सुन्दर, कोमल, श्रुतिमधुर, पानी के गिरने या टकराने से उत्पन्न मधुर नाद या स्वर।

कलकल कुलकुल टलमल टलमल—परि, पृ० १२६—यमुना की लहरों के टकराने का स्वर।

कलरव—तुल, पृ० २६—[कल=सुन्दर, मधुर, कर्णप्रिय, श्रेष्ठ। रव= शब्द, स्वर, वाणी, आवाज़, नाद, ध्वनि।] मधुर स्वर, पक्षियों के स्वर, चहचहाना। संदर्भार्थ—कोलाहल, हायतोबा, जड़जंगम संसार के सब कार्यकलाप, चहलपहल और कोलाहल।

कलरव-तरंग—अना, पृ० २—[कल=सुन्दर, मधुर। रव=शब्द, ध्वनि, आवाज़। तरंग= लहर।] पक्षियों के चहचहाने के शब्द, कलरव का उमड़ना, अतिशय चहचहाना या कलरव करना।

कलश-मधु-उर—तुल, पृ० १६—मधु के कलश अपने हृदय में लिए हुए, ऊँचे-ऊँचे गुम्बदों वाली।

कलाँ—नप, पृ० १२—बड़ा, दीर्घाकार। यह शब्द बहुधा किसी गाँव के नाम के साथ लगाया जाता है जैसे हसनपुर कलाँ। प्रसंगार्थ—बड़ा गाँव या बड़ी बस्ती।

कला किरण दृग चुम्बन—गी, पृ० ४६—शीतल शुभ्र ज्योति की किरणों से नयनों को चूमने वाली। अपनी ज्योत्स्ना से आँखों को शीतल और उज्ज्वल करने वाली।

कला कौमुदी—अना, पृ० ४८—कला का प्रकाश।

कलाधर—अना, पृ० ५०—चद्रमा, कलाओं को धारण करने वाला।

कलासव—आरा, पृ० ६३—अच्छी मदिरा, श्रेष्ठ शराब।

कलिकल्मष—आरा, पृ०२८—कलियुग का पाप, कलंक, कालिमा, नरक।

कलिका—तुल, पृ० ५६—कली, बिना खिला फूल। संदर्भार्थ—सुषमा सुकुमारता मधुरता से भरी कली के समान रत्नावली।

कलित रवि का मुख—गी, पृ० ८४—उषा का सूर्य रूपी सुन्दर मुख। शोभाशाली सूर्य ही मानों ऊषा-सुन्दरी का मुख है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलियाई—आरा, पृ० ४०—कलियों से भर गई, पुष्पित हो गई।

कली के निष्ठुर पीड़न—परि, पृ० १६१—कलियों को निर्ममता से पीड़ा पहुँचाने वाला, कलियों को बेदर्दी से मसल देने वाला।

कलुष के कृत सुहृत कोमल—गी, पृ० १४—पाप के कारण ही मनुष्य निर्मल निष्पाप होता हुआ कोमल बनता है।

कलुषभेद—अर्च, पृ० २८—मन की कालिमा के कारण उत्पन्न भेदभाव, भेदभाव का पाप।

कलुष-भेद-तम—गी, पृ० ३—[कलुष=पाप, दुष्कर्म, कलंक। भेद=अन्तर, भेदभाव। तम=अंधेरा, अंधकार, अज्ञान।] पाप से भरा भेदभाव उत्पन्न करने वाला अन्धकार या अज्ञान।

कलुषित—अना, पृ० ७—कलंकित, कीचड़ से भरा, मटमैला।

कल्प-काल—तुल, पृ० १५—कल्पित समय, वास्तविक नहीं। सन्दर्भार्थ—कल्पित या झूठे सुखों का समय।

कल्प तरु—अना, पृ० १८८, अर्च, पृ० ८—नन्दनवन का एक वृक्ष जो समुद्र मंथन से निकले हुए १४ रत्नों में से एक रत्न माना जाता है और यह मानव की सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाला समझा जाता है।

कल्पना-लता—अना, पृ० २६—[कल्पना=मन की वह शक्ति जो परोक्ष विषयों का रूप, आकार आदि सामने लाती है, किसी पदार्थ की प्राप्ति, उससे मिलने वाला सुख, अभाव में अनिष्ट आदि की बात सोचना।] कल्पना की बेल, बेल के समान अनेक आकांक्षाओं, अभिलाषाओं, सुखानुभूतियों के पत्र-पुष्प-फलों और पीड़ाओं, आशंकाओं के काँटों से भरी कल्पना या मानसिक क्रियाशीलता।

कल्पनिस्सीम—अना, पृ० ८—[कल्प=चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष का ब्रह्मा का एक दिन, धार्मिक कर्त्तव्यों का विधिविधान, प्रलय, उचित, योग्य, सशक्त, सम्भव, प्रयोग में लाने योग्य।] अनन्तकाल, असीमकाल तक रहने वाला दिन या प्रलय।

कल्मष के छल—तुल, पृ० ५६—[कल्मष=कलंक, कालिमा, लांछन, पाप, दुष्कर्म।] पाप की कालिमा के छलकपट, पाप के छलकपट।

कल्मषोत्सार—तुल, पृ० २६—[कल्मष=मल, पाप, एक नरक, पापी, दुष्ट, गन्दा, कलंक। उत्सार=हटाने, दूर करने, नाश करने वाला, नाशक।] पाप को नाश करने वाला।

कल्याण—अना, पृ० ४४—भलाई, मंगल, उपकार, शुभ, सद्गति।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कल्याणी—परि, पृ० १४१—कल्याण, मंगल, उपकार, हित करने वाली, कष्टों से मुक्त करने वाली।

कल्प-वयन—गी, पृ० १८—[कल्प=कल्पना। वयन=बुनना।] कल्पना की उधेड़बुन, मन के संकल्प-विकल्प, विचारों की उलझन।

कवरी—अप, पृ० १७०—बालों का जूड़ा, चोटी, वेणी।

कवल—अर्च, पृ० ६१, गी, पृ० ७०—मुट्ठी, ग्रास, भोजन, शिकार, एक बार मुंह में डालकर खाया जाने वाला अंश या टुकड़ा।

कविमनीषी नप, पृ० ७२—कवि और चिन्तक, गहन भावानुभूति और अपूर्व ज्ञान का चितेरा।

कांक्षा—तुल, पृ० २७—इच्छा, चाह, झुकाव, प्रवृत्ति, आकांक्षा, अभिलाषा। संदर्भार्थ—तृष्णा, उत्कट वासना।

कांड़ना—नप, पृ० ६—कुचलना, कूटना।

कांग्रेसमैन—नप, पृ० ५६—कांग्रेस के सदस्य।

कान्त कामिनी—परि, पृ० ८०—[कान्त=मनोरम, प्रिय, शोभन, कृष्ण, वसन्त। कामिनी=कामवेग का अनुभव करने वाली, सुन्दर स्त्री, मदिरा, कामनाओं-भरी रमणी।] अपने पति की प्यारी सुषमित रमणी।

कान्तार—अर्च, पृ० ७३—गहन वन, दुर्गम पथ, विवर, गड्ढा।

काकलि—अर्च, पृ० १०२—कोयल या मोर का स्वर।

काकली—परि, पृ० १८३—मोर या कोयल का स्वर।

काकुन—नप, पृ० ६१—कँगनी, एक निम्नकोटि का चावल।

काठिन्य—अना, पृ० ७५—कठिनता, कठोरता, दृढ़ता।

कादर—आरा, पृ० ३५—गीत गुंज, पृ० ४८—अधीर, भीत, विवश, आर्त, परेशान, कष्ट से आकुल।

कानन-मण्डल—तुल, पृ० ५७—[कानन=वन, उपवन, निर्जन, जंगल। मण्डल=घेरा, समूह, सीमाएँ।] वन-प्रदेश, सारा वन।

कानी—नप, पृ० ६—जिसे एक आँख से दीखता हो, एक आँख वाली।

काफ़िर—परि, पृ० २०३—जो मुसलमान न हो, अमुसलिम लोगों के लिये प्रयुक्त तिरस्कार व्यक्त करने वाला शब्द।

काम कमनीय—परि, पृ० २३५—कामदेव के समान सुन्दर, मोहक और आकर्षक।

काम-कला-कोविद—परि पृ० २३५—प्रेम-क्रीड़ा की कला में चतुर, रतिक्रिया में अत्यन्त प्रवीण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कामं-बीज—अना, पृ० ७६—अभिलाषा, आकांक्षा, कामना या वासना के बीज, मन में स्थित वासना ।

कामना-काम—आरा, पृ० ३४—इच्छा, वासना, तृष्णा, आसक्ति ।

कामपरता—परि, पृ० १८२—कामनाओं में आसक्ति, काम-भावना (इन्द्रिय-सुखभोग) में डूबना ।

कामरूप—आरा, पृ० १४—इच्छानुसार रूप धारण करने वाला, कामदेव के समान रूप वाला, अतिशय सुन्दर । संदर्भार्थ—समस्त अभिलाषाओं का स्वरूप, सम्पूर्ण कामनाओं का कोश ।

कामातुर—परि, पृ० २०२—कामवासना की तृप्ति के लिये बेचैन ।

कामिनी-कुमुद-कर—तुल, पृ० १५—[कामिनी=काम का अनुभव करने वाली, कामनाओं से भरी युवती, सुन्दर स्त्री । कुमुद=रक्तकमल, कमल, रात में खिलने वाली कमलिनी । कर=हाथ, किरण] कामवासनाओं से भरी रूपवती युवतियों के कमल जैसे हाथ, सुन्दरियों के आदेश-संकेत ।

काया—परि, पृ० ८१—शरीर, देह, तन ।

कायिक—आरा, पृ० ५३—शारीरिक, दैहिक, काया सम्बंधी ।

कारगर—अर्च, पृ० ८५—असर करने वाला, प्रभावशाली, सफल ।

कारण—अना, पृ० १०३—कर्ता, कर्म करने वाला । कार्य करने की सामग्री, पदार्थ आदि । सुनार ने सोने के आभूषण बनाये—सुनार और सोना कारण हैं, आभूषण बनाना और आभूषण कर्म या कार्य और हथौड़ी, चिमटी, आग, सुहागा आदि करण हैं ।

कारण-जाम—गी, पृ० ७—शराब का प्याला या कटोरा ।

कारण-मण्डली—अना, पृ० १०४—सृष्टि रचना के लिये अचेतन उपकरण । प्रलयके कारण जड़ बनी सृष्टि रचने की सामग्री । प्रलय की नींद में सोते तीनों गुण, पाँचों तत्त्व, जिनसे ब्रह्माण्ड की रचना होती है ।

कारण संसार के—परि, पृ० १९३—संसार की रचना करने वाले, सृष्टि-कर्ता भगवान ।

कारागार—परि, पृ० ५८—वन्दीगृह, कैदखाना ।

कारि—अर्च, पृ० १००—कार्य, कलाकार, कलाकुशल ।

कारुणिक प्राण—तुल, पृ० ५९—करुणा से भरे हुए प्राण, करुणापूर्ण हृदय, औरों की दीनहीन पीड़ित अवस्था पर दया करने वाला हृदय या मनुष्य ।

कार्तिक—अना, पृ० १६९—कार्तिकेय, शिव-पार्वती का पुत्र ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्मुक—गी, पृ० २८—धनुष, चाप।

कार्य—परि, पृ० १५६—निर्मित पदार्थ, परिणाम, फल, उपलब्धि जैसे सोना कारण है और सोने से बना आभूषण कार्य।

काल-ताण्डव—परि, पृ० ११९—कुसमय, दुर्भाग्य या मरण का विनाशकारी नाच, प्रलयकारी नृत्य।

कालनागिनी—परि, पृ० ८१—काल या मरण के समान भीषण सर्पिणी, अत्यन्त विषैली नागिनी जिस के काटने पर प्राण न बचें, मृत्यु हो जाय।

कालिका—परि, पृ० १३५—काली देवी, चण्डी, दुर्गा।

कालिमा—अना, पृ० ७१—कलंक, कलुष, कालापन।

काव्यालोचन—तुल, पृ० १७—[काव्य=भाव या अनुभूति प्रधान साहित्य। आलोचन=देखना, गुण-दोष-विवेचन, परख, परीक्षा।] काव्य (साहित्य) के गुण-दोषों की परख और विवेचना।

काष्ठा—आरा, पृ० २४—दिशा, अन्तिम सीमा, सीमा, जल, स्थिति।

काश्मीर—नप, पृ० ९४—भारत का उत्तर पश्चिमी सीमान्त प्रदेश, भारत-गणतंत्र का उत्तरपश्चिमी राज्य, जिसकी सीमाएं दक्षिण में पाकिस्तान, पश्चिम में अफगानिस्तान और उत्तर में चीन से मिलती हैं।

कास—नप, पृ० ९०—दो-ढाई गज़ ऊंची घास, जो बहुधा तराई के क्षेत्रों में उत्पन्न होती है। शरद् ऋतु के आरम्भ में इसमें लम्बे गुच्छेदार सफ़ेद फूल आते हैं।

किंवार—अर्च, पृ० ७१—किवाड़, फाटक, दरवाजा।

किंशुक-डाल—गी, पृ० ८०—पलाश, टेसू या ढाक की शाखा या टहनी।

किन्नरगण—तुल, पृ० १३—[कन्नर=देवताओं की एक योनि या जाति, जिसका मुंह घोड़े के मुँह जैसा होता है, यह गाने-नाचने में प्रसिद्ध है। गण=समूह, वर्ग, जाति, सेवक, अनुचर।] किंपुरुष, नीच मनुष्य। नचनियों-गवैयों के समान मुसलमानों के दास बने हुए नपुंसकों-कायरों का समूह।

किन्नरियाँ—अना, पृ० ४०—गाने वाली देव-बालाएं, संगीत-निपुण देव-नारियाँ।

किनारा—अर्च, पृ० ४९—तट, एक सिरा, एक तरफ। किनारा करना=अलग हो जाना, रूठ जाना, सम्बंध तोड़ देना।

किरण-सम्पात—अना, पृ० १—किरणों का गिरना, किरणों का बरसना, प्रकाश का फैलना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किरणें-चेतन—तुल, पृ० ५७—ज्ञान के प्रकाश की किरणें, ज्ञान और कर्म को प्रेरणा देने वाली शक्ति ।

किरणों का—तुल, पृ० २७—निर्मल प्रकाश का, उज्ज्वल आलोक का ।

किरणों का दर्शन—गी, पृ० ७४—किरणों के देखे जाने और दिखाने का गुण । किरणों का कोई रूप नहीं है, तो भी वे देखी जाती हैं और उन किरणों (प्रकाश) में सभी रूपवान पदार्थ दिखाई देते हैं ।

किरणोज्ज्वल—अना, पृ० ७९—किरणों के समान जगमग झिलमिल या उज्ज्वल ।

किरिया—नप, पृ० १०२—एक ग्रामीण मज़दूर का नाम ।

किरीटिनी—नप, पृ० ९३—[किरीट=मुकुट, ताज] मुकुटधारिणी, महारानी । किरीट धारण करने वाली ।

किल—आरा, पृ० ३६—क्रीड़ा, निश्चय ही ।

किलना, कीलना—अर्च, पृ० १०९—मंत्र से बाँधना, जादू करना, मंत्रशक्ति-सम्पन्न करना ।

किशोर—परि, पृ० ५७—यौवन से पहले की अवस्था, ११ से १५ वर्ष तक की अवस्था, ११ से १५ वर्ष तक की अवस्था वाला बालक ।

किस घाट उतारें—तुल, पृ० ४५—क्या बहाना करें, कैसे धोखा दें, क्या रास्ता बताएं, कैसे पीछा छुड़ाएँ, कैसे धता बताएँ ।

किसलय—परि, पृ० १०२—कोंपल, नई ताज़ी पत्ती ।

किसलय-वसना—गी, पृ० ५—[किसलय=कोंपल, नवपल्लव । वसना=वस्त्रों वाली ।] नवीन कोंपलों के वस्त्र पहने हुए, नई कोंपलों से ऐसे ढकी हुई जैसे कोई सुन्दरी नवीन कोमल विविध रंग के वस्त्रों से ढकी और सजी हो ।

किसान—नप, पृ० १००—कृषक, खेतीबाड़ी का व्यवसाय करने वाला ।

किसी कृष्ण के उर की गीता अनुपम—अना, पृ० १८९—जैसे कृष्ण ने अपने मन, प्राण और हृदय को गीता द्वारा प्रकट किया, वैसे ही किसी ने अपनी आत्मा को इन (धूलिधूसरित व्यक्तियों) में व्यक्त किया है ।

कीर्ण—अना, पृ० १४५—धारण किये हुए, धृत ।

कीर्ति-क्षेत्र—अना, पृ० ५८ [कीर्ति=यश । क्षेत्र=स्थान, मैदान] वह धरती, जहाँ कीर्ति प्राप्त की जाय या की गई हो ।

कीर्तिशोणिमा—परि, पृ० १९४—यश की लालिमा ।

कीश—अर्च, पृ० १००—बन्दर, कपि ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुंकुमशोभा—तुल, पृ० ४३—[कुंकुम=रोली, सिंदूर, लाल रंग का चूर्ण, जो सोहागिनी स्त्रियाँ माथे पर लगाती या माँग में भरती हैं।] सोहाग-मयी, सौभाग्यवती।

कुंचित—अना, पृ० २२—सिकुड़ा हुआ, टेढ़ा, घुंघराले।

कुंचे—तुल, पृ० ३३—चुभे, घुसे।

कुंजर—परि, पृ० १३४—हाथी, गज।

कुण्ठा—नप, पृ० ६७—जड़ता, निष्क्रियता।

कुण्डली नगन नील—गी, पृ० ७९—केचुलीहीन साँप की काली कुण्डली। कालासघन अंधकार जो चक्राकार होकर समस्त धरती-आकाश पर छाया है, आकाश रूपी साँप की कुण्डली है।

कुन्द धवल दशना—गी, पृ० ३१—कुन्द की कलियों के समान सुन्दर शुभ्र दाँतों वाली।

कुडमल गताघ्राण—गी, पृ० ५८—सूँघे हुए फूल के समान, जैसे बार-बार सूँघा जाने पर फूल मुरझा-सा जाता और गंधहीन-सा होजाता है, वैसे ही…।

कुंहड़े—आरा, पृ० ७५—पेठे, काशीफल।

कुज्झटिका—आरा, पृ० १३—कुहरा, कुहासा, धुंधलापन।

कुइरी—नप, पृ० १००—जुलाहा, कपड़े बुनने वाली एक जाति।

कुटिल भाल—तुल, पृ० १२—टेढ़ा सर्वटों पड़ा मस्तक, क्रोधपूर्ण दृष्टि।

कुढ़ना—परि, पृ १५६—दुखी होना, खीजना, हल्के क्रोध और मानसिक खेद का भाव, दुख निवारण में असमर्थता के कारण क्षोभ करना।

कुम्हार—नप, पृ० १००—घड़ा, मटकी, सुराही, नाँद, हाँडी, शकोरे, कूजे आदि मिट्टी के बर्तन बनाने और वेचने का व्यवसाय करने वाला।

कुरवक—तुल, पृष्ठ १३—लाल कटसरैया नामक काँटेदार एक पौधा, आक, इन पौधों के फूल या कलियाँ आदि। संदर्भार्थ—परागरहित, गंधहीन फूल या कली, जो कँटीले झाड़-झंखाड़ में लगी हो, जिस में कोई मनोरमता, आकर्षण, सौंदर्य न रहा हो। कुरवक उस बुंदेलखण्ड या बुंदेला राजपूतों का उपमान है, जिसकी गुण-गरिमा, बलविक्रम-महिमा नष्ट हो चुकी थी।

कुरल-कुहरे-सा—तुल, पृ० १८—कुहरे की कुण्डली के समान, चक्राकार उमड़ते हुए कोहरे के समान, कुहरे के समान घुमैला-अस्पष्ट।

कुरी—अर्च, पृ० ६४—एक प्रकार का अन्न, चबेना, ढेर, खण्ड, टुकड़ा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुलदीपक—तुल, पृ० १७—[कुल=वंश, गोत्र, कुटुम्ब। दीपक=दीया, चिराग, प्रकाशित करने वाला।] कुल को प्रकाशित करने वाला, कुल का मान गौरव बढ़ाने वाला।

कुलधर्म—तुल, पृ० ५३—कुल में पालन किया जाने वाला धर्म, कुल के रीति-रिवाज, वंश की मर्यादा-परम्परा।

कुलमानग्रंथि—अना, पृ० ६—[कुल=वंश, परिवार, समस्त। ग्रंथि=गाँठ, बंधन।] वंश के मान मर्यादा का बंधन।

कुलमानध्यान—तुल, पृ० ४७—[कुल=वंश, गोत्र, घर, खानदान, कुटुम्ब। मान=गौरव, मर्यादा, शान, सम्मान।] अपने वंश के गौरव-मर्यादा का ध्यान।

कुवलय—अना, पृ० १०६—कमल, कंज, सरोज।

कुशल—तुल, पृ० १६—चतुर, निपुण, होशियार, उचित, प्रसन्न, स्वस्थ। कला-कौशल, उद्योग-धंधे, शिल्प आदि में निपुण।

कुसुम-कोमल—परि, पृ० १६५—फूलों के समान कोमल। पुष्पों के समान सुकुमार।

कुसुम-दशन—अना, पृ० ९६—[दशन=दाँत, कवच, शृंग।] फूलों के दाँत, फूलों की चोटियाँ, फूलों के समान उज्ज्वल दाँत।

कुसुम-सम्भार—परि, पृ० १४६—फूलों की सजावट, फूलों की सौंदर्य-सुषमा।

कुहरा भरा सम्भार—अर्च, पृ० ७५—कुहरे से भरी हुई सृष्टि, छलकपट अज्ञान के अंधेरे से भरा संसार।

कुहरित—अना, पृ० १२—कुहरे से भरा, धुँधला, अस्पष्ट।

कूजन—अना, पृ० ४—कोयल का बोलना, भौंरों का गुंजन।

कूटना-पीसना—नप, पृ० ४—आनाज की भूसी-तिनके आदि निकाल कर साफ करना और पीसकर आटा बनाना। संदर्भार्थ—घर के सारे काम धंधे करना।

कूप—तुल, पृ० २८—कुआँ, गड्ढा, छेद, मस्तूल, नदी के बीच स्थित पेड़ या चट्टान।

कूल—तुल, पृ०१६—किनारा, तट। संदर्भार्थ—लक्ष्य, आदर्श। जीवन का यथार्थ प्रयोजन का उद्देश्य।

कूलद्रुम—तुल, पृ० ४३—[कूल=किनारा, तट। द्रुम=पेड़, वृक्ष, पादप] नदी के किनारे पर लगा पेड़। नदी के तट पर खड़ा वृक्ष, जो नदी के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहाव से कभी भी गिर सकता है। संदर्भार्थ--बूढ़ा व्यक्ति, जो मृत्यु के निकट हो, जिसे अधिक जीवित रहने की आशा न हो।

कूली—नप, पृ० १००—सामान ढोकर दैनिक आजीविका चलाने वाला मज़दूर, रेलवे स्टेशनों पर यात्रियों का सामान लाने-लेजाने वाला।

कूलोपल- तुल, पृ० १६—[कूल=किनारा, तट। उपल=पत्थर, शिला] किनारे पर पड़ा हुआ पत्थर। संदर्भार्थ— निर्जीव निकम्मे पत्थर के समान पड़े हुए सौंदर्य की यथार्थ अनुभूति और भोग न करने वाले व्यक्ति।

कृतविद्य—अना, पृ० २—[कृत=किया हुआ, बनाया हुआ, पकाया हुआ, काम उपकार, कर्मफल, उद्देश्य, भेंट, युद्ध में प्राप्त धन। विद्य=लाभ, प्राप्ति।] प्राप्त हुआ कर्मफल, पाई हुई भेंट, उद्देश्य।

कृमि-कीट—अना, पृ० १०१—कीड़ा-मकोड़ा।

कृष्ट—आरा, पृ० १४—खींचा हुआ, जोता हुआ, खिंच आये।

कृष्णपक्ष—अना पृ० १८६—महीने के वे पन्द्रह दिन जिनमें अँधेरा रहता है, अँधेरा पखवारा।

केका—गी, पृ० ४१—मोरनी, मयूरी का रंग।

केतन—आरा, पृ० ४४—झण्डा, पताका, ध्वजा।

केतनवर— अर्च, पृ० १०६ — अच्छा झण्डा, सुन्दर पताका।

केलि—परि, पृ० १७१—प्रेमक्रीड़ा, छेड़छाड़, आलिंगन, चुम्बन, मर्दन आदि।

केशर—तुल, पृष्ठ २१—एक फूल का नाम, जो कश्मीर में उत्पन्न होता है, उस फूल के भीतर के अंकुर, पुष्प के भीतर के अंकुर, पराग, परिमल, पुष्परज।

केशर-रज-कण—तुल, पृ० ३१—[केशर=पुष्प तन्तु, फूल के भीतर पतले-पतले अंकुर, पराग, परिमल। रज=धूलि, चूर्ण, चूरा। कण=बहुत छोटा टुकड़ा, रवा, बूँद, दाना।] पराग या परिमल का चूरा। पुष्प पराग से आच्छादित और सुगंधित (पर्वत समूह)।

कैद—नप, पृ० २७—बन्धन, शर्त।

कैशोर—परि, पृ० ८८—किशोर अवस्था, बाल्य और यौवन के बीच की आयु, किशोरपन।

कोकनद—अर्च, पृ० ९९, आरा, पृ० ४०—कमल, सरोज, लाल कमल।

कोटितीर्थ—तुल, पृ० ३३—करोड़ों तीर्थ, असंख्य तीर्थों का पुण्प देने वाला एक तीर्थ। चित्रकूट में एक स्थान विशेष (तीर्थ) जिसके दर्शन से करोड़ों तीर्थों का पुण्य प्राप्त होना माना जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोदो—नप, पृ० ६१—अत्यन्त निम्नकोटि का एक सस्ता अन्न।

कोमल निषाद—अना, पृ० ६२—[कोमल=मुलायम, सुकुमार, एक स्वर। निषाद=एक अनार्य जाति, एक स्वर] कोमल—संगीत के तीन स्वरों में से एक स्वर। निषाद—संगीत के स्वरों में से अन्तिम, जिसका संक्षिप्त 'नि' है। संदर्भार्थ—सभी प्रकार की राग-रागनियाँ और मधुर मोहक संगीत के स्वर-तालों से गूंजती हुई (दिल्ली)।

कोमलांग—परि, पृ० २३२—कोमल अंग, सुकुमार शरीर। क्षीण सुकुमार तनवाली।

कोर—अर्च, पृ० १११—कोना, किनारा।

कोश—तुल, पृ० ३०—अतिशय धनराशि, खज़ाना। बहुत बड़ा पुंज, ढेर, राशि।

कौड़ा—नप, पृ० ५४—कुण्ड या मिट्टी की बरोसी (अँगीठी) में लकड़ियाँ जलाकर तापना।

कौपीन—अना, पृ० १७१—लंगोटी। गोपनीय स्थान ढकने के लिये पहना जाने वाला कपड़े का छोटा सा टुकड़ा।

कौमुदी—परि, पृ० २३३—चाँदनी, ज्योत्स्ना, चन्द्रमा का प्रकाश।

कौशल—तुल, पृ० ५८—कुशलता, शक्तिमत्ता, चालाकी, धूर्तता, छलकपट, मायाजाल, दावपेंच।

कौस्तुभ—अना, पृ० १५७—समुद्र मंथन से प्राप्त एक मणि, जिसे विष्णु छाती पर धारण करते हैं।

क्या अब निष्फल सफल सही—गी, पृ० ४१—क्या एकटक देखते रहना ही मेरी सफलता है ? क्या निरन्तर अपलक नयनों से तुम्हारी बाट जोहते रहना मेरी सफलता है ? क्या मेरे प्रेम का यही फल है कि मैं निरन्तर तुम्हारी अपलक प्रतीक्षा करती रहूँ ?

क्रन्दन-वंदन—अना, पृ० ४६—[क्रन्दन=रोना, विलाप करना। वंदन=स्तुति, पूजन, नमस्कार] करुण विलाप और स्तुति-पूजन आदि। रोना चीत्कार और विनय-प्रार्थना करना।

क्रम—अना, पृ० २१—सिलसिला, शृंखला, परम्परा, निरन्तरता।

क्रम क्रम से—परि, पृ० २२८—नम्बरवार, धीरे-धीरे, लगातार, परम्परा से, थोड़ा-थोड़ा करके।

क्रमबिनाश—तुल, पृ० ३७—क्रम या सिलसिला टूटना, परम्परा भग, पूर्वापर सम्बन्ध नष्ट हो जाना, विशृंखल होना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रमशः—तुल, पृ० १२—नम्बरवार, एक के बाद दूसरा, धीरे-धीरे, सिलसिलेवार ।

क्रान्त—तुल, पृ० १२—गया हुआ, बीता हुआ, दबा हुआ । संदभार्थ—पराजित, अधिकृत ।

क्रिय-विक्रय—परि, पृ० ५५—खरीदना और बेचना, लेना-देना, आदान-प्रदान, उपभोग करना और कराना ।

क्रीड़ित—तुल, पृ० १७—खेलता हुआ, खिलाड़ी, खेलने की, खेलने वाली ।

क्रीतदास—अना, पृ० १७०, परि, पृ० २०६—खरीदा हुआ गुलाम ।

क्रूर—परि, पृ० १३२—निर्दय, परपीड़क, भयंकर कार्य, हिंसक, आघात ।

क्रूरता—अना, पृ० ५२—अत्याचार, निर्दयता ।

क्रौंच-मिथुन—नप, पृ० ७०—क्रौंच-युगल की रतिक्रिया, जिनमें एक व्याध के द्वारा मारे जाने पर बाल्मीकि के हृदय में करुणा का उद्रेक हुआ और सहसा उनके मुख से निकल पड़ा ।

क्लान्त—परि०, पृ० ३९—दुखी, मलिन, मुरझाया, थका ।

क्लिन्न—अना, पृ० १९—गीला, आद्र, रोता हुआ ।

क्लेदयुक्त—गी, पृ० २२—कीचड़ से सना, पाप में लीन, मैला, धूलिधूसरित ।

क्षण भंगुर—परि, पृ० ३४—क्षण भर में नष्ट हो जाने वाला, नाशवान ।

क्षति—तुल, पृ० ३७—हानि, ह्रास, नाश, कमी, घाटा, टोटा ।

क्षत्र—अना, पृ० १९, अर्च, पृ० ८९—क्षत्रिय, बल, राज्य, देह, धन, योद्धा ।

क्षत्राणी—परि, पृ० २०१—क्षत्रियों की स्त्रियाँ, वीरांगनाएं ।

क्षमापन—अर्च, पृ० ५६—क्षमा कराना, माफ़ी माँगना ।

क्षय—आरा, पृ० १—नष्ट होना, क्षीण होना, घटना, समाप्त होना ।

क्षर रेखा—तुल, पृ० ५५—नाश होती हुई रेखाएँ, मिटती हुई या विलीन होती हुई सीमाएँ, ओझल होते हुए किनारे ।

क्षार-तल—अर्च, पृ० ७५—खारी तलहटी, खारी तली, खारीपन लिये हुए (पानी का) निचला भाग ।

क्षालनार्थ—अना, पृ० १५४—धोने के लिये ।

क्षिति—अना, पृ० १७७—पृथ्वी, धरती, प्रलयकाल ।

क्षिप्त—परि, पृ० २०६—फेंका या त्यागा हुआ, उपेक्षित, बहिर्मुख (चित) । संदभार्थ—वंचित या उपेक्षित ।

क्षिप्रधार—तुल, पृ० १४—तीव्रगति से बहने वाली जलधारा, तेज बहाव, तीव्रता से प्रवाहित होने वाली नदी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षीण—तुल, पृ० २५—पतला-दुबला, निबल, मृत, समाप्त, थोड़ा, निर्धन, घटा हुआ।

क्षीणकटी—अना, पृ० २३—पतली कमर, पतली कमर वाली।

क्षुद्र—तुल, पृ० २३—छोटा, लघु, नीच, अल्प, तुच्छ, कंजूस, खोटा, ओछा, नन्हा, नगन्य।

क्षुद्र-जीवन-संबल—तुल, २५—[क्षुद्र=छोटा, थोड़ा, लघु, तुच्छ, अल्प, नीच। सम्बल=आधार, सहारा, अवलम्ब, साधन।] जीवित रहने के लिए अत्यन्त छोटे साधन, प्राण बचाये रखने के लिये तुच्छ आजीविका, बहुत थोड़ी कमाई, जिससे किसी प्रकार पेट पाल सकें।

क्षोभ—अना, पृ० ४५—व्याकुलता, रोश, क्रोध-मिश्रित दुःख।

क्षोभन—तुल, पृ० ४०—क्षुब्ध करने वाला, हलचल, व्याकुलता, रोष उत्पन्न करने वाला या इनसे भरा हुआ। क्षोभण—कामदेव का एक बाण, विष्णु, शिव।

क्षोम—तुल, पृ० ३४—अटारी, दुमंज़िला कमरा, अलसी आदि के रेशों से बना हुआ कपड़ा, रेशमी चिकना वस्त्र।

ख

खंजन—नप, पृ० ६२; परि, पृ० ४८—चातक के आकार का एक काला छोटा चंचल पक्षी, जिससे आँखों की समानता की जाती है।

खण्डशः—परि, पृ० २०६—टुकड़े-टुकड़े, अनेक खण्डों में बटे हुए, विभाजित।

खँडहर—अना, पृ० २९—टूटेफूटे मकान आदि के ढेर, ध्वस्त मकान, भग्नावशेष।

खड्ग—परि, पृ० १३७—तलवार, खाण्डा, गेंडा।

खजोहरा—नप, पृ० १६—एक प्रकार का रोएँदार कीड़ा, जिस के छूने से शरीर में बहुत तेज़ खुजली होने लगती है।

खटाई—अर्च, पृ० ४९—खट्टापन, बुरी बात, मनमुटाव, भेदभाव, कटुता, वैरभाव।

खप्पर—परि, पृ० १३७—कटोरा, प्याला, घड़े के नीचे का आधा भाग, कपाल, भिक्षा-पात्र, काली के हाथ में रहने वाला रुधिर-पात्र।

खमण्डल—अर्च, पृ० ५—आकाशमण्डल, नभोमण्डल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ख-मण्डल—अना, पृ० १०५—आकाशमण्डल, आकाशलोक, ग्रह-नक्षत्र-तारा-मण्डल।

खमदार—नप, पृ० १३—टेढ़े, तिरछे, वक्र, बलखाये।

खर—तुल, पृ० १६—तेज़, प्रचण्ड, भीषण, तीक्ष्ण।

खरीफ़—नप, पृ० १२—आषाढ़-सावन (जून-जुलाई) में बोई जाने वाली फसल जिसमें धान, उड़द, मूँग, बाजरा, ज्वार आदि बोये जाते हैं। यह कार्तिक-अगहन (अक्टूबर-नवम्बर) में काटी जाती है।

खर्व—अना, पृ० १६५—विकलांग, बौना, छोटा, नष्ट होना।

खल्खल्—परि, पृ० १६०—लहरों के टकराने का स्वर।

खलना—अर्च, पृ० १६—बुरा लगना, दुखदायी होना, अखरना, चुभना।

खलिहान—नप, पृ० ६८—कटी हुई फसल के रखने और अनाज निकालने का स्थान।

खिन्न-खिन्न—तुल, पृ० ५८—दुखी, शोकाकुल, उदास।

खिरनी—आरा, पृ० ८०—निबौली जैसे पीले फल वाला पेड़।

खींचकर—परि, पृ० २२३—लेकर, छीनकर, निचोड़कर, एकत्र कर।

खुटा दिया—अर्च, पृ० ३८—[खुटाना=पूरा होना, समाप्त होना।] समाप्त या पूरा कर दिया। पृथक्, बंधन-मुक्त या स्वतंत्र कर दिया।

खुथरे—अर्च, पृ० ६४।

खुदरो—नप, पृ० ४७—अपने आप उगा हुआ, जंगली पेड़-पौधा।

खुरपी—नप, पृ० ६२—घास या छोटे पौधे की जड़ें खोदने के लिए प्रयोग में आने वाला छोटा खुरपा।

खुरी—अर्च, पृ० ६४—खुर वाला जानवर—गाय, बैल, भैंस, बकरी, घोड़ा, गधा आदि। खुर या टाप का निशान।

खुर्द—नप, पृ० ५२—छोटा, अल्पवयस्क। यह शब्द किसी गाँव के नाम के साथ लगाया जाता है जैसे रामपुर खुर्द। प्रसंगार्थ—छोटा गाँव या छोटी बस्ती।

खुलती—तुल, पृ० ३०—खुलती हुई, खिलती हुई, फैलती हुई, विकसित हुई, अधिकाधिक शोभामयी बनती हुई।

खुलती आभा—तुल, पृ० १८—मुक्त प्रकाश, फैलती और स्पष्ट होती हुई ज्योति।

खून की नदी बहना—नप, पृ० २५—ऐसा भीषण युद्ध या मारकाट होना, जिस से मरने वालों के खून से नदी-सी बहने लगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खेड़े--अर्च, पृ० ६७—गाँव में, नगरों में, आश्रित।

खेतिहर—नप, पृ० ५५—खेती करने वाला, कृषक, किसान।

खेल रंग—परि, पृ० १७२—रंगरेलियां करके. फाग खेलकर, प्रेम की क्रीडाएँ करके, रतिक्रिया करके।

खेवनहार—परि, पृ० ३०—खेने वाला, चलाने वाला, पार लगाने वाला।

ग

गंगापुत्र—नप, पृ० १०० --भीष्म, कार्तिकेय। गंगा के घाट पर रहकर तीर्थ यात्रियों के लिये पूजा-पाठ करने-कराने वाले, उन से दान-दक्षिणा लेने वाले ब्राह्मण। इन्हें पण्डे भी कहा जाता है।

गंध—तुल, पृ० ३७—पृथ्वी तत्त्व का गुण, सुगंध, बू, चंदन, केसर आदि का लेप, नाक के द्वारा भीतर को साँस लेने पर किया जाने वाला अनुभव।

गंधप—परि, पृ० १३१—सुगंध से भरे, सुगंध फैलाने वाले, सुवासित।

गंध लहर कमल स्पर्श गूंज—गी, पृ० १४—[गंध=धरती का गुण। गुण से पदार्थ का अर्थ लेने से इसका अर्थ हुआ पृथ्वी। लहर=तरंग, जल। कमल रूपवान है। रूप गुण है तेज का, अर्थ हुआ अग्नि। स्पर्श वायु का गुण होने से अर्थ हुआ वायु। गूंज=ध्वनि। शब्द आकाशका गुण होने से अर्थ हुआ आकाश। सामूहिक अर्थ हुआ पाँचों तत्त्व, पंच तत्त्व निर्मित समस्त ब्रह्माण्ड।

गंधर्वगान—परि, पृ० २१५—[गंधर्व=संगीत निपुण एक देव जाति।] गंधर्वों द्वारा गाये जाने वाले मधुर मोहक संगीत।

गन्ध-लुब्ध—परि, पृ० ४३—गंध पर लुभा जाने वाला, गंध पर मोहित, परागलोभी।

गन्ध-व्याकुल-कूल-उर-सर—गी, पृ० १४—हृदय-सरोवर का तट सुगन्ध से व्याकुल हो रहा है, हृदय के सरोवर के तट पर खड़े प्राणी, सरोवर में प्रफुल्लित कमलों की मादक सुगंध से आकुल हैं।

गंधोच्छल —तुल, पृ० ३७—उछलती, ठाठें मारती, उमड़ती या बह निकलने को आकुल गंध, उमड़ती हुई सुगंधि वाला, जिस (फूल आदि) से सुगंधि उमड़ रही हो।

गगन—गी, पृ० ७९—व्योम, आकाश। संदर्भार्थ—सर्प के रूप में प्रयुक्त।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गगन—तुल, पृ० ४४—आकाश, आसमान, अवकाश, शून्य, खाली स्थान।
संदर्भार्थ—हृदय, मन।

गगन—तुल, पृ० १५—आकाश, व्योम, आसमान। संदर्भार्थ—भारतीय जीवन।
सम्भाव्यार्थ -मुसलमानी शासन, मुसलमानी साम्राज्य-विस्तार और भारतीयों के सिरों पर तनी सैनिक शक्ति।

गगन गीति—गीतगुंज, पृ० ६२—आकाश में गूँजते गीत।

गगन घन-घन धार—गी, पृ० १८—[घन-घन=स्थूल से स्थूलतर और स्थूलतम होता हुआ, शून्य से सघनता में बदलता हुआ।] शून्य सघनता हीन आकाश ही स्थूल और सघन होकर पानी का रूप धारण करता है और धारा बन कर बरस जाता है।

गगन नयनों से···भरते—गी, पृ० ५२—आकाश अपने नयनों से ओस की वर्षा करके अपनी प्रिया पृथ्वी के ओठों को सिक्त करता रहता है।

गजगामिनी—अना, पृ० ३४—हाथी के समान मस्त चाल चलने वाली।

गढ़—तुल, पृ० १३—दुर्ग, किला, कोट। संदर्भार्थ—केन्द्र, कालिंजर का किला।

गतगीता—तुल, पृ० ४४—[गत=गया हुआ, बीता हुआ, प्राचीन, पुराना। गीता=कृष्ण के द्वारा अर्जुन को दिया गया कर्मयोग का उपदेश।] कर्तव्य पालन का आदर्श उपदेश, कर्मयोग का सन्देश, गाने या प्रशंसा करने योग्य, महिमाशाली, महत्त्वपूर्ण।

गतभय—तुल, पृ० १७—[गत=बीता हुआ, नष्ट हुआ। भय=डर, आशंका] निर्भय, निडर, आशंका-रहित, साहसी।

गताचार--अना, पृ १६० --आचारहीन, चरित्रहीन, दुश्चरित्र, पापी।

गतालोक—अना, पृ० १५—बीता हुआ प्रकाश, अंधकार छा जाना।

गति-प्रकाश—तुल, पृ० ३६—गतिशील प्रकाश, गतिशील या आगे बढ़ता-फैलता हुआ प्रकाश, प्रकाश का प्रवाह।

गतिरहित-छन्द—तुल, पृ० ५५—बंधन-पाश में बँधा जीवन, निष्क्रिय जीवन।

गद—अर्च, पृ० ६९—एक रोग, विष, कोमल-कठिन पदार्थों के टकराने का स्वर, मेघध्वनि, भाषण।

ग़नी—नप, पृ० ६६—धनी, मालदार, बेपरवाह, सन्तुष्ट, सरदार, नेता, स्वामी।

गने—आरा, पृ० ६०—गिने, गणना की।

गमक उठा—गीतगुंज, पृ० ६२—[गमकना=महकना, गूंजना। गमक=महक गंध, गूंजना, गाने में एक श्रुति से दूसरी श्रुति पर जाने की रीति।] महक उठा, सुवासित हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गमागमन—आरा, पृ० १२—[गम=जाना, आगमन=आना।] आना-जाना चलना-फिरना।

गम्यता परि, पृ० ६१ --जाना, चलना, पहुँचना, जाने की सामर्थ्य।

गरल—अना, पृ० ३०—विष, ज़हर, वह पदार्थ जिसके खाने से मृत्यु हो जाती है।

गरलामृत—गी, पृ० १६—गरल और अमृत, गरल को अमृत बना देने वाला—शिव। शिशिर के विष के प्रभाव से मरी हुई डाली को अमृत पिला कर फिर लहलहाती पुष्प-पत्र-फल-शोभित बना देने वाला—बसन्त।

गरियार—नप, पृ० ४३—गलिया, निर्बल, निकम्मा, सुस्त चलने वाला, शीघ्र ही थक कर बैठ रहने वाला।

गरीयसी—अना, पृ० ६—पूज्य, गौरवशालिनी, सम्मानित।

गर्जन—अना, पृ० १८—घोष, कड़क, भीषण ध्वनि।

गर्जन-भैरव-संसार—परि, १५६—वह लोक या स्थान जहाँ भयंकर गर्जन होता हो, आकाश लोक जहाँ बादल भीषणता से गरजते हैं।

गर्जितोर्मि—गी, पृ० ७३—गरजती हुई लहरें, गरजती हुई लहरो वाला।

गर्दभ-मर्दन-स्वर—अना, पृ० ८८—गधे के स्वर को मर्दन करने वाली वाणी, गधे से भी अधिक गला फाड़ कर बोलना।

गलकर—गी, पृ० ६५—पिघलकर, वहकर, समाकर, व्याप्त होकर।

गलगई- तुल, पृ० ४१ – क्षीण हो गई, पतली-दुबली हुई, निर्बल हो गई।

गला नापना—नप, पृ० १३—डराना धमकाना, आतंकित करना, खरीखोटी सुनाना।

गलियारा—नप, पृ० १२—गाँव या वस्ती की तंग गली, बहुत कम चौड़ा कच्चा रास्ता, मार्ग या सड़क।

गवना—अर्च, पृ० ८४—गमन, जाना, प्रस्थान, मुकलावा, विवाह के कुछ काल बाद मायके से वधु का ससुराल जाना।

गहन—परि, पृ० २६—गहरा, घना, मोटा।

गहराई—अर्च, पृ० १०५—गहरी हो गई, सघन बन गई, घिर आई।

गह्वर—अर्च, पृ० ७—गुफ़ा, गड्ढा, दरी।

गांजा—नप, पृ० १०१—भाँग की जाति का एक पौधा, जिसकी पत्तियाँ मसल कर तम्बाकू के साथ चिलम में रख कर नशे के लिये पी जाती हैं।

गांधीवादी—नप, पृ० ५६—गाँधी जी के सिद्धान्तों को मानने वाला, राजनीतिक सामाजिक आर्थिक विचारों में गाँधी जी का अनुयायी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाँस-गाँस—अर्चं, पृ० ३८—बैर, मनमुटाव, रुकावट, भेद की बात । गाँठ-गाँठ, प्रत्येक फन्दा ।

गागर—परि, पृ० ५७—पानी, दूध आदि भरने के लिये मिट्टी का पात्र, घड़ा, मटकी ।

गागर—आरा, पृ० ८—घड़ा, मटकी । संदर्भार्थ—शरीर, मन, हृदय ।

गाज—अना, पृ० १८३—बिजली, वज्र, कोई बहुत बड़ा कष्ट आ पड़ना ।

गात-हरी—अर्च, पृ० २४—देह को हरने वाली, तन की सुध-बुध भुला देने वाली, तन पर अधिकार करने वाली ।

गाते—तुल, पृ० १३—नाच गाकर उत्सव मना रहे हैं ।

गान—तुल, पृ० २०—गीत, गाना, संदेश, प्रेरणा ।

गार्हस्थ्याश्रम—अना, पृ० १७०—हिन्दु समाज व्यवस्था या जीवन के चार विभागों में से एक, जिसमें मनुष्य वैवाहिक जीवन व्यतीत करता है ।

गाहित—अर्च, पृ० १७—गोता लगाती हुई, अवगाहन करती हुई, डूबी हुई, निमज्जित ।

गिरि-उर—परि, पृ० ५८—हृदय रूपी पर्वत, हृदय का पहाड़ ।

गिरिजा-विवाह—अना, १३४—पार्वती का विवाह । पार्वती जैसी सुन्दर तरुणी लाड़ प्यार में पली कन्या का विवाह शिव जैसे अधेड़ अवधूत गँवार आदमी से करना ; गिरिजा यहाँ सरोज (निराला जी की पुत्री) का उपमान है ।

गिरदान—नप, पृ० १५—गिरगिट, छिपकली के समान, अपेक्षाकृत तनिक बड़े आकार का एक प्राणी । बहुधा पेड़-पोधों में रहता है । कहा जाता है, यह परिवेश के अनुसार रंग बदल लेता है ।

गिरिपद—तुल, पृ० ३३—पहाड़ के पैरों पर, पर्वत चरणों पर, पर्वत की तलहटी में, घाटी, पर्वत के पैरों के पास फैली समतल धरती ।

गिरिश्रृंग-सागर-तरंग—अना, पृ० ७८—पर्वत की चोटियों, सागर की पठारों आदि के समान वासना, प्रलोभन, काम, क्रोध, मद, मोह, आदि की बाधाएं ।

गीतागीत—अना, पृ० ५८—जिसका वर्णन या बखान न किया जा सके ।

गीति—तुल, पृ० ४७—गीत,संगीत, गान, संगीत-स्वर-लहरी ।

गीति-मुखर—गी, पृ० ९—ध्वनित होते हुए गीत, गीतों से ध्वनित ।

गीतों के आकार—गी, पृ० ६६—गीतों के स्वरूप, गीतों को पूर्ण स्वरों और गहन अनुभूतियों के साथ गाया जाने लगा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीदड़—परि, पृ० १९९—लोमड़ी के रूप रंग और कुत्ते के आकार का एक पशु जो बस्तियों के आस-पास जंगलों में रहता है। रात को गीदड़ों का सामूहिक कोलाहल सुना जाता है। यह बहुत डरपोक जानवर समझा जाता है और बहुधा मरे पशुओं का मांस खाता है। कायरता, भीरुता आदि के उपमान के रूप में यह प्रयुक्त किया जाता है।

गुंजन—अना, पृ० १६—गूंजना, लगातार कम्पनमय ध्वनि, गुंजार, भ्रमर का स्वर।

गुंजनपर—तुल, पृ० ३०—गुंजन में लीन, गूँजता हुआ, गाता हुआ।

गुंजमृदु—अना, पृ० १—मधुर गुंजार, कोमल गुंजन, भौंरों का मधुर मधुर गूंजना।

गुच्छ गुच्छ—अना, पृ० १—प्रत्येक गुच्छा, फूलों का प्रत्येक समूह, बहुत से गुच्छे।

गुड़ाकेश—परि, पृ० १६४—अर्जुन या शिव।

गुणगरिमा—परि, पृ०—२२०—गुण के कारण प्राप्त गौरव, मान, सम्मान, गुरुता आदि।

गुणत्रय—अना, पृ० ९५—तीनगुण, सत, रज, तम।

गुना—तुल, पृ० ६०—सोचा-समझा, मनन किया, चिन्तन किया, विवेचन किया, सूक्ष्मता से विचार किया।

गुप्त रहस्य सृजन—परि, पृ० ५२—छिप कर गूढ़ प्रेम क्रीड़ाएं करना, छिपकर प्रेम-विलास या केलि-क्रीड़ाएँ करना।

गुप्ताभूषण—तुल, पृ० २०—छिपाकर रखे हुए आभूषण, अप्रकट गुण, जो शोभा वर्द्धन करते हैं। संदर्भार्थ—कला, ज्ञान, दर्शन, शिल्प आदि में उपलब्धियाँ, जिन से गौरव-वर्द्धन होता है।

गुमान—अर्च, पृ० ६६—अभिमान, घमण्ड।

गुरुभार—तुल, पृ० २६—[गुरु=बड़ा, भारी, शिक्षा-दीक्षा देने वाला, मंत्र-दाता, शिक्षक, पूज्य, महत्, कठिन, देरसे पचने वाला, दुर्दम, शक्तिशाली। भार=बोझ, वज़न, तोल, उत्तरदायित्व।] भारी बोझ, कठिन उत्तर-दायित्व।

गुलाम—परि, पृ० २०३—दास, सेवक, पराधीन, पराजित, नौकर।

गुल्म—गीतगुंज, पृ० ५५—झाड़, गुच्छ, दल।

गुहा—अना, पृ० १०१—गुफ़ा, गढ़ा, दरी।

गूंज-बारम्बार—गी, पृ० १४—बार बार गूँजता है, बार बार गूंज सुनाई देती है, लगातार गुंजार होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गूड अर्थ—नप, पृ० ३१—[गुड=अच्छा, भला, श्रेष्ठ । अर्थ=धरती, पृथ्वी, मिट्टी ।] श्रेष्ठ धरती, बहुत उपजाऊ धरती ।

गूढ़ विलास—परि, पृ० ४४—[गूढ़=छिपा हुआ, गुप्त, कठिन, एकान्त, रहस्यपूर्ण । विलास=प्रणय क्रीड़ा, हाव-भाव, सुखोपभोग ।] रहस्यपूर्ण एकांत प्रणय-क्रीड़ाएँ ।

गूलड़ नप, पृ० २४—गोल हरे मटमैले रंग का एक फल, जिसके भीतर छोटे रेशे और भुनगे (उड़ने वाले कीड़े) होते हैं । इसे अंजीर का एक निम्न प्रकार समझना चाहिए ।

गूला—नप, पृ० ८५—नीचे का सिरा, लाठी या छड़ी का नीचे का सिरा, जिस पर लोहे या पीतल की शाम (टोपी-सी) चढ़ा रहती है ।

गृह-कलह—परि, पृ० २०१—घर की लड़ाई, परस्पर लड़ना ।

गृहणी— तुल, पृ० ३१—घरवाली, पत्नी ।

गेह—अना, पृ० ५ —घर, मकान, निवास-स्थान ।

गोंडे—आरा, पृ० ७४—बाड़ा, परछन, सहन, घेर । पशुओं के रहने के लिए बाड़ा।

गोड़इत—नप, पृ० ८७—गाँव का चौकीदार ।

गोधूमचूर्ण आरा, पृ० २८—[गोधूम=गेहूँ । चूर्ण=चून, धूलि ।] गेहूँ का आटा, गेहूँ की मैदा, रवा, सूजी आदि ।

गोपन—अना, पृ० १५५—गुप्त, छिपा हुआ, छिपना ।

गोपीज -यौवन-मोहन-तन—तुल, पृ० ४८—[गोपी=दूध-दही बेचने वाली, ग्वालिनी, अहीरनी । जन=व्यक्ति, भक्त, दास, मनुष्य । यौवन=जवानी, जवानी की उम्र । मोहन=मोहित करने वाला, मोहक, प्यारा, आकर्षक, मुग्धकारी । तन=शरीर, देह, गात ।] जीवन के उभार और सौंदर्य से पूर्ण मुग्ध करने वाली गोपियों के शरीर ।

गेरू—अर्च, पृ० ३३—एक प्रकार की लाल कड़ी मिट्टी, जिसे पीस कर रंग बनाया जाता है जिसमें साधु-संन्यासी अपने कपड़े रंगते हैं । अनेक पर्व-त्योहारों पर गेरू के रंग से दीवारों पर चित्रकारी भी की जाती है ।

गोल बाँधना—नप, पृ० २३—मण्डली बनाना, दल संगठित करना, भीड़ एकत्र करना, गिरोह बनाना ।

गोष्पद—अना, पृ० १०२—गाय का पैर, गाय का खुर, गाय के खुर के समान लम्बा-चौड़ा या स्थान घेरने वाला ।

गौरव-प्रलम्ब—परि, पृ० १६२ – गौरव से लम्बी, स्वाभिमान से तनी हुई, अपनी महानता के विश्वास से तना हुआ सिर ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गौरी—आरा, पृ० ६६—रागिनी (गौड़ी), धरती, वाणी, पार्वती ।

गौरीशंकर—नप, पृ० ९२—निरन्तर हिमाच्छादित हिमालय का एक शिखर जिसकी ऊँचाई फीट है ।

ग्रह—अना, पृ० ९५—सूर्य की परिक्रमा करने वाला तारा । सूर्य, चन्द्र, मंगल बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु, और केतु—ये नौ ग्रह माने जाते हैं ।

ग्रास—अना, पृ० १०३—भोजन, निंगलना, खाया जाना, लीन, लय तिरोहित होना ।

ग्रीवा—गी, पृ० ४; अना, पृ० ३७—गला, गर्दन, कण्ठ ।

ग्रीवा-कपोत—अना, पृ० ६१—कबूतर की गर्दन के समान सुघर गर्दन वाला, गर्दन रूपी कबूतर ।

ग्रेड—परि, पृ० ७८—पदवी, पद, स्तर, मान ।

घ

घन—परि, पृ० ८०—घना, सघन, ठोस, बादल ।

घनग्रंधकार—तुल, पृ० १२—[घन=घना, गहरा, ठोस, मोटा, बादल, मेघ] गहन या गहरा अंधेरा, काले घने बादलों के घिर आने और जम जाने के कारण छाया हुआ गहन अंधकार ।

घननीलालका—तुल, पृ० ५२—[घन=बादल, घने, सघन । नील=नीला, काला । अलका=बालों वाली, केशों वाली] बादलों के समान घने काले बालों वाली, जल भरे मेघों के समान सघन, स्निग्ध और श्याम केशों वाली रत्नावली ।

घनौची—आरा, पृ० ७८—घड़ा रखने के लिये बना लकड़ी का ढाँचा, घड़ौंची ।

घर—तुल, २७, ८८—स्थान, सदन, आलय, लोक ।

घर्मक्त—अना, पृ० ८४—[घर्म=धूप, घाम, पसीना । अक्त=लिप्त हुआ, लिपा हुआ, व्याप्त, भरा हुआ ।] पसीने से भरा हुआ, पसीने में तर, धूप से सताया हुआ ।

घातप्रतिघात—अना, पृ० १०४—आपस में टकराना, एक दूसरे पर चोट करना ।

घिरघिरकर—तुल, पृ० १२—चारों ओर से आक्रमण होने के कारण, हार कर, दासता के चक्र में फंसकर ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घूँस—नप, पृ० १०१—रिश्वत, उत्कोच, अँकोर।

घूर्णावर्त—अना, पृ० १५३—चक्कर खाते हुए भँवर, लहरों का घूमते हुए आना-जाना।

घूर्ण्य—तुल, पृ० ४५—घूमता हुआ, चक्कर खाता हुआ।

घोर-जटा-पिंगल—अना, पृ० ५२—रूखी उलझी पीली सघन जटाओं वाला।

घ्राण—अना, पृ० १३०—नाक, सूंघने की शक्ति।

च

चंग—अर्च, पृ० २२—पतंग, ढप के समान चमड़े से मढ़ा एक बाजा। स्वस्थ, चतुर, सुन्दर। चंग चढ़ना=प्रताप या दबदबा होना, उन्नत सम्पन्न अवस्था में होना।

चण्ड—अना, पृ० ११२—भयंकर, प्रखर, प्रचण्ड।

चण्ड मार्तण्ड—परि, पृ० २२५—भयंकर सूर्य, तेज़ी से जलता हुआ सूरज।

चण्डू—नप, पृ० १०१—अफीम से बना पदार्थ, जो चिलम में रखकर चरस, गाँजे या तम्बाकू के समान नशे के लिये पिया जाता है।

चकचौंध—परि, पृ० ८३—तीव्र प्रकाश से आंखों में यथार्थ रूप देखने की सामर्थ्य न रहना, दृष्टि चौंधिया जाना, हक्का-बक्का या आश्चर्य चकित रह जाना, दृष्टि का तिलमिला जाना।

चक्रांक पुच्छ—तुल, पृ० ५२—पूंछ को चक्राकार बनाए हुए, पिछले पंखों को गोलाई में फैलाए हुए।

चक्राकार—अना, पृ० २—गोल, चक्करदार, गोलाकार।

चटकना—अर्च, पृ० २६—चट की आवाज़ के साथ टूटना, फूटना, जलना। तड़कना, फटना, झुँझलाना, बिगाड़ होना, कली का खिलना। कली खिलगई है, मनमुटाव हो गया है, स्नेह संबंध टूट गया है।

चतुरंग चमु—परि, पृ० १८०—पैदल, हाथी, घोड़ा और रथ—चार प्रकार की सेना।

चतुर्दिक भरते—अना, पृ० २—चारों ओर भर देते हैं, सब ओर भर देते हैं।

चपड़ा—नप, पृ० १०३—साफ़ की हुई लाख।

चपल—तुल, पृ० १७—अस्थिर, चंचल, सचेष्ट, सक्रिय, बहने वाला, प्रवाह शील, तरंगायित, लहट्टाता हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंपल—तुल, पृ० ३३—आकुल, उत्कण्ठित, उत्कट अभिलाषा पूर्ण, चंचल, उत्साहभरा।

चपला—तुल, पृ० ५३—चंचला, बिजली, दामिनी, सौदामिनी। संदर्भार्थ—बिजली के समान चमकती हुई और तड़कती हुई रत्नावली। रत्नावली के हृदय के आकाश में सबल संकल्प और भावावेग की बिजली कौंध उठी और तड़कने लगी।

चपला-चल—गी, पृ० २१—बिजली के समान चंचल।

चपलानन्दित—तुल, पृ० ४८—आनन्द से चंचल, सुख से चंचल, आनन्द में थिरकता हुआ।

चबूतरा—नप, पृ० १३—मकान के आगे लगभग एक गज़ ऊँचा समतल फ़र्श, थला, मंच।

चमकी—तुल, पृ० ४६—जल उठी, दहकने लगी, तिलमिला उठी, कौंधने लगी।

चमके केशर पंचानन में—गीतगुंज, पृ० ४२—[केशर=फूल के बीच का सींका या रेशा, बाल, सोना, घोड़े या शेर की गर्दन के बाल। पंचानन=पाँच मुंह वाला, शिव, सिंह] शेरों के अयाल सोने की तरह चमकने लगे हैं, शीत समाप्त हो जाने, वसन्त ऋतु आ जाने से शेर गुफाओं से बाहर विहार करने लगे हैं। धूप में घूमने से उनके बाल सोने के समान चमकने लगे हैं।

चमरौधे जूते—अना, पृ० १३३—पुराने ढँग के देसी चमरुआ जूते।

चमार—नप, पृ० १००—चमड़े के जूते आदि बनाने और बेचने का काम करने वाला।

चमेली—गीतगुंज, पृ० ६२—एक प्रकार का सफेद छोटा फूल, जो ग्रीष्म ऋतु में फूलता है। जिसके हार और गजरे बहुधा शाम को भारतीय नगरों में बिकते देखे जाते हैं।

चय—परि, पृ० १३५—समूह, चयन, ढेर, एकत्र करना।

चयनशील—अना, पृ० ७६—संग्रह करने वाला, संग्रही, अनेक भावों से पूर्ण।

चयनोत्कल—तुल, पृ० ५१—[चयन=संग्रह करना, एकत्र करना, चुनना। उत्कल=वर्तमान उड़ीसा का प्राचीन नाम, वहेलिया, भारवाहक।] बहेलिये के समान फँसाकर। संदर्भार्थ—जैसे बहेलिया पंख फड़फड़ाती चिड़ियों को पकड़ कर लेजाता है, ऐसे ही तुलसीदास अपनी आंखों में रत्नावली के चपल नयन बसाकर चल दिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चरणचार—अना, पृ० १४५; आरा, पृ० ९ –आनाजाना, विहार, विचरण, चहलपहल। उद्घाटन, अनुसंधान।

चरणचिह्न रहित—अना, पृ० ७०—पैरों के निशान बनाये बिना। बिना प्रभाव डाले।

चरणविचारण—आरा, पृ० २०—[चरण=पग, छन्द का एक पाद, मूल, सहारा, सूर्यचन्द्र की किरण, भ्रमण करना। विचारण=विचारना, परीक्षा, सन्देह, स्थान-परिवर्तन।] कर्म और विचार, सर्वव्यापक गति और सर्वकालिक चिन्तन, कर्म और विवेक का मूल या आधार, ज्ञान और कर्म का मूल या प्रेरक।

चरणामृत-सागर में बहना—परि, पृ० २२०–चरणों के अमृत के सागर में तैरना और गोते लगाना। संदर्भार्थ—सुधा के सागर में स्नान, मज्जन और उसे पान करने में जो शीतलता, शांति, संतोष, तृप्ति मिलती है, वही चरणों का ध्यान करने से मिलती है।

चरणारुण—तुल, पृ० ४७—सौन्दर्य, यौवन और गोरे रंग के कारण लाल तलुए या पैर, गुलाबी पगतल।

चरस—नप, पृ० १०१—गाँजे के पौधे से निकलने वाला गोंद, जो नशे के लिए चिलम में रखकर तम्बाकू के समान पिया जाता है।

चराचर—अना, पृ० ५२—चेतन और जड़, स्थावर और जंगम, प्राणवान और निष्प्राण।

चल—तुल, पृ० २०, ३५—चपल, चंचल, लपटों में लपलपाती हुई, गतिशील।

चलदल—गी, पृ० ९१—चंचल पत्ता, पीपल का पत्ता।

चलदृग—तुल, पृ० ४६—चपल नयन, चंचल कटाक्ष, चंचल पुतलियाँ।

चलते-फिरते—तुल, पृ० २५—घूमते-फिरते, आते-जाते, जीवित, गतिशील, जानदार, क्रियाशील।

चहार—आरा, पृ० ९—चार की संख्या। संदर्भार्थ—चारदीवारी, सीमाएँ, बंधन।

चाँदनी की धुली हुई—परि, पृ० १७१—पूनम की चाँदनी में निखरी हुई, चन्द्रमा की शीतल स्वच्छ चांदनी में जगमगाती हुई।

चाटुकार–तुल, पृ० २४—खुशामदी, झूठी प्रशंसा करने वाला।

चापलूस—नप, पृ० २४—खुशामदी, चाटुकार, झूठी प्रशंसा करने वाला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चारण-वारण—तुल, पृ० ४८—[चारण=चराना, चरना, पशुओं को जंगल में ले जाकर घास खिलाना-घुमाना। वारण=रोकना, हटाना, निषेध करना, मना करना।] गाय भैंसों आदि को चराना और उन्हें अनिच्छित जगह जाने से रोकना, हटाना या घेर कर वापस लाना।

चारापानी करना—नप, पृ० ४९—पशुओं को चारा खिलाना और पानी पिलाना, पशु को खिलाना पिलाना।

चारू—तुल, पृ० १७—सुन्दर, मनोहर, प्रिय।

चारु-करण—आरा, पृ० ६—[चारु=प्रिय, सुन्दर, मनोहर। करण=क्रिया, साधन, इन्द्रिय, देह, क्षेत्र, परमात्मा।] मनोहर साधन, प्रिय क्रियाकलाप, सुन्दर इन्द्रियाँ या शरीर।

चारुचित्रा—परि, पृ० २१६—सुन्दर चित्र वाली, सुन्दर चित्र के समान, रंगबिरंगी।

चारुतरा—गी, पृ० ५१—अधिक सुन्दर, अत्यन्त शोभाशाली।

चाय—नप, पृ० १०१—एक पौधे की पत्तियाँ, या उन पत्तियों को उबाल कर, दूध, चीनी मिलाकर बनाया गया पेय। कुछ व्यक्ति दूध के स्थान पर नींबू का रस डालकर भी चाय पीते हैं। आधुनिक जीवन में अभ्यागत को चाय पिलाना विशेष स्वागत-सत्कार समझा जाता है। भारत में देहरादून, दार्जिलिंग, पालमपुर आदि में चाय के अनेक बाग हैं।

चिन्तामणि—गी, पृ० ७७—समस्त चिन्ताओं को नष्ट करने वाली मणि, वह मणि जो हृदय की सारी कामनाओं को पूरी करती है।

चिन्त्य—तुल, पृ० १८—चिन्तनीय, चिन्ता करने योग्य, विचारणीय। संदर्भार्थ—चिन्ता में लीन, विचारों में डूबे, चित्रकूट-दर्शन से प्रेरित विचारों और भावनाओं पर मनन करते हुए तुलसीदास।

चिन्त्यप्राण—तुल, पृ० १३—प्राणों की आशंका के साथ, प्राणों में चिन्ता भरे हुए, प्राण जाने के भय में लीन। संदर्भार्थ—मुसलमान बादशाहों के घातक आक्रमण और फलस्वरूप अपनी स्वतन्त्रता के अपहरण की चिन्ता में डूबे हुए।

चिन्ता-पल—अना, पृ० १५३—चिन्ता के क्षण, खेद-शंका आदि का समय।

चिन्तालोल—परि, पृ० १३९—[चिन्ता=संशय, शंका, भय, अनिष्ट-कल्पना। अलोल=कुरूप, मुरझाया, मलिन।] चिन्ता के कारण मलिन उदास या मुरझाया हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिखा दो—गीतगुंज, पृ० ६३—चखा दो, खिला दो।

चिघरना—अर्च, पृ० ५१—चिंघाड़ना, हाथियों का घोर भयंकर नाद करना।

चित—तुल, पृ० २४—चेतनाशील, प्रबुद्ध, चुन चुन कर इकट्ठा किया हुआ, जिस का चयन किया गया हो, संचित, आच्छादित, बुद्धि, मन, हृदय।

चितवन—अना, पृ० ६४; परि, पृ० ३३—दृष्टि, नज़र, कटाक्ष, नयन, देखना।

चितवन से संचर—अना, पृ० १९८—[संचर=मार्ग, गमन, प्रगति।] नयन-कटाक्ष से गमन करती हुई, दृष्टि से मार्ग बनाती हुई।

चिताभस्म—अना, पृ० ५९—चिता की राख, चिता में जला हुआ।

चितेरा—अना, पृ० १०७—चित्र बनाने वाला, चित्रकार।

चित्त—अना, पृ० १००; परि, पृ० २३१—अन्तरिन्द्रिय, अंत:करण, मन की अनुसंधानकारिणी वृत्ति।

चिद्घन आनन्दकन्द—परि, पृ० २२७—[चिद्=चेतनस्वरूप, ज्ञान विवेक बोध से सम्पन्न। घन=सघन, ठोस, अतिशय। आनन्द=हर्ष, प्रसन्नता, द्वंद्वों का तिरोभाव। कन्द=मूल, जड़।] अतिशय चेतनता और आनन्द के मूल, पूर्ण चेतनता और आनन्द के उद्गम।

चिबुक—अना, पृ० ७४; परि, पृ० २२४—ठोड़ी।

चिर—अना, पृ० ३१—दीर्घकालीन, पुराना, बहुत दिन तक, सदा।

चिर कारा—गीतगुंज, पृ० ६४—कभी न टूटने वाला बंधन, निरन्तर वश में रखने वाला बंधन।

चिरकालिक—अना, पृ० ७२—बहुत समय से विद्यमान, बहुत पुराना। बहुत लम्बे समय से सम्बन्ध रखने वाला।

चिरकालिक पतझड़—परि, पृ० १८५—निरन्तर रहने वाला पतझड़, सदा रहने वाला विनाश अवनति पराभव। आशा हर्ष उत्साह से सदा वंचित।

चिरकुमार—अना, पृ० ५८—जो आजीवन अविवाहित रहे। बहुत समय से कुआरा।

चिरपोषित—अना, पृ० ७१—बहुत काल से पाली हुई, बहुत समय से अपने मन में बसाये हुए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिरौंजी—नप, पृ० ५१—एक फल, जिसके बीज मसूर के दाने के समान होते हैं और किशमिश-बादाम की तरह काम में लाये जाते हैं।

चिह्नम्लान—तुल, पृ० १३—[चिह्न=लक्षण, पहचान, छाप, निशान, अंकन। म्लान=मलिन, गन्दा, मुरझाया हुआ, कुम्हलाया हुआ, दुर्बल उदास।] संदर्भार्थ—उत्सव समाप्त होने के बाद पड़े रह जाने वाले मुरझाए मसले फूल, फटी-फटाई झंड़ियां, मैली-गन्दी दरियाँ-चाँदनी, जूठी पत्तलें और बर्तन, अधजली धूप-अगरबत्तियाँ आदि।

चीता—नप, पृ० ५१—शेर के समान बलवान एक मांसाहारी जंगली पशु, जिसके शरीर पर धारियाँ-सी होती हैं।

चीत्कारोत्कल—अना, पृ० १२४—चीत्कार, रोदन, क्रन्दन का बोझ ढोने वाला, अत्यन्त चीत्कार करने वाला. रुदन क्रन्दन कोलाहल से भरा।

चीनांशुक—अना, पृ० १२२—चीन में बनने वाला रेशमी वस्त्र, रेशमी कपड़ा।

चुगना नप, पृ० १४—पक्षियों द्वारा दाने या कीड़े चुन कर खाया जाना। धीरे-धीरे और बहुत छोटे छोटे ग्रास ले लेकर खाना।

चुड़िहार—नप, पृ० १००—चूड़ियाँ बनाने वेचने पहनाने वाला, मनिहार।

चुम्बन—तुल, पृ० १५—चूमना, स्पर्श, छूना, प्यार के प्रतीक स्वरूप कपोलों अधरों, मस्तक, हथेली आदि पर होंठ अंकित करना।

चुम्बन-मधु-ज्योति का—अना, पृ० ७३—मधुर प्रकाश का चुम्बन। संदर्भार्थ चंद्रमा के प्रकाश का मधुर स्पर्श।

चुम्बित-मधुर-ज्योति-नयन-च्युत—गी, पृ० ४७—नयनों से बरसती मधुर ज्योति से चुम्बित, नयनों से शुभ्र प्रकाश (कमल पर) बरसाती है, जैसे उस मधुर शीतल प्रकाश से वह कमल को चूम रही हो।

चूर्ण-चूर्ण—तुल, पृ० १४—टुकड़े-टुकड़े, चूरचूर, नष्ट-भ्रष्ट।

चूर्ण उर्मि चेतन—आरा, पृ० १—[चूर्ण=चूरा, धूल, बुरादा, अबीर, गंधद्रव्यों का चूर्ण। उर्मि=लहर, तरंग, प्रवाह, वेग, प्रकाश। चेतन=आत्मा, जीव, मन, प्राण, ज्ञान, बोध, बुद्धि, विवेक] संदर्भार्थ—रूप, रस, गंध, चिन्तन, सक्रियता, प्रकाश, शक्ति आदि से पूर्ण जीवन। बुद्धिविवेक, कर्म, चेतना, सौंदर्य आदि से पूर्ण जीवन।

चूल न बैठना—नप, पृ० ५७—सफलता न मिलना, योजना पूरी न होना, बेमेल रहना।

चेचक—नप, पृ० ९—एक रोग जिस में सारे शरीर पर छोटे छोटे दाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकल आते हैं और कई बार आराम होने पर दाग छोड़ जाते हैं। इसे माता या सीतला भी कहा जाता है।

चेतन—तुल, पृ० २३—सचेत, बुद्धिमान, जागरूक, क्रियाशील, प्राणवान।

चेतन अमल अंश—परि, पृ० १६२—ज्ञानवान विवेकशील निष्कलंक वंश में उत्पन्न।

चेतन-गति-कर्षण—अना, पृ० ७७—चेतना की गति का आकर्षण या खिंचाव, आध्यात्मिक सजगता का खिंचाव, गतिशील प्रबुद्धता या ज्ञान की प्रभाव-शक्ति।

चेतना—अना, पृ० २७—बुद्धि, क्रियाशीलता, सजगता, प्रबुद्धता।

चेतनाहत—गी, ८५—अचेत, बेसुध, निष्क्रिय।

चेतनाहीन—तुल पृ० २३—बुद्धिविवेकहीन, ज्ञानहीन, मूढ़, निष्क्रिय।

चेतनोर्मियाँ—तुल, पृ० २६—[चेतन=ज्ञान, विवेक, सजीवता, क्रियाशीलता, जाग्रत। उर्मियाँ=लहरें, तरंगें।] ज्ञान की लहरें, ज्ञान की धाराएँ।

चेतावनी—परि, पृ० २२७—चेताना, ख़बरदार करना, चौकन्ना या सतर्क करना, ध्यान दिलाना।

चैती—नप, पृ० ६८—एक प्रकार का जनगीतविशेष, राग विशेष। चैत्रमास में या चैत्य (मठ-मंदिर) में किसी उत्सव-पूजा आदि पर गाया जाने वाला राग।

चैत्र—अना, पृ० १६०—एक भारतीय महीना, जिसमें फूल खिलते हैं, बसन्त का समय।

चैन की बंसी बजाना—नप, पृ० १६—आराम से जीवन बिताना, निश्चिन्त होकर मस्ती से दिन बिताना।

चोप—अना, पृ० ११०—चोट, धमाका, नाद।

चोर—तुल, पृ० ५०—चोरी करने वाला, छिप कर कोई वस्तु उठा ले जाने वाला। संदर्भार्थ—दुष्प्रवृत्ति, बुराविकार, नीच विचार, पापपूर्ण अभिलाषा, काम वासना।

चोली—आरा, पृ० २५—नारी का एक वस्त्र, जिस के बटन या तनियाँ कमर की तरफ हों, अँगिया या चोली अधिकतर नाभी से उपर के वक्ष तथा कटिभाग को ढकती है।

चौकीदार—नप, पृ० १००—दिन या रात को घर दूकान बाज़ार आदि की चौकसी या रखवाली करने वाला, पहरा देने वाला, गाँव में पहरा देने के लिये नियुक्त पुलिस कर्मचारी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौगड़ा—नप, पृ० १४—चार सींगों वाला जंगली बकरा।

चौदह रत्न—परि, पृ० २२३—समुद्र मंथन करके निकाले गये चौदह रत्न—अमृत, गरल, लक्ष्मी, रम्भा, कल्प वृक्ष, काम धेनु, धन्वतरी, मदिरा, श्याम करण घोड़ा, ऐरावत हाथी, कौस्तुभ मणि, चन्द्रमा, धनुष और शंख।

छ

छन्द से नंदित—गीतगुंज, पृ० ४०—गीतों से ध्वनित होती हुई, छन्दों में बजती हुई, गीतों से प्रसन्न होती हुई।

छत्र—अना, पृ० १४—छाता, छतरी, आवरण।

छद—आरा, पृ० ८६—आवरण, खाल, छाल, पत्ता, पंख।

छद्म—तुल, पृ० ४६; अर्च, पृ० ८३—धोखा देने वाला, झूठा, बनावटी, छली-कपटी, अवास्तविक।

छये—अर्च, पृ० ३०—ढके हुए, आवृत, आच्छादित, छाया हुआ।

छलक रही—तुल, पृ० ६०—उमड़ रही, टपकती हुई, झलक रही, जगमगा रही।

छलका—तुल, पृ० ५९—उड़ेल कर, बिखरा कर, बाहर निकाल कर, फेंक कर, बहा कर।

छलकें—तुल, पृ० ५२—छलकना, बाहर निकलना, उद्वेग, आवेग। संदर्भार्थ—हृदय की आकुल भावनाएँ, हृदय की भावनाओं का आवेग।

छलछल—तुल, पृ० ६०—छलकती हुई, पानी छलकाती हुई, आँखों में आँसू भरे हुए।

छल छल छल—तुल, पृ० १६—पानी के बहने या तरंगों के टकराने का शब्द। धोखा, माया, कपट, अवास्तविक, झूठा।

छलछल छवि—गी, पृ० ९८—छलकती हुई सुन्दरता। डबडबाई आँखों वाली, जैसे सौंदर्य सुषमा उमड़ी पड़ती है।

छलते सब चले एक अन्य के छले—गी, पृ० ९६—एक दूसरे को धोखा देते हुए सब चले जा रहें हैं। परस्पर ठगते-ठगाते हुए ही जीवन बिता रहे हैं।

छलना—तुल, पृ० ५२—धोखा, माया, कपट, दुराव, छिपाव।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छवि—तुल, पृ० १८, १६, २१, २३—सुन्दरता, सजावट, रूप, सौंदर्य-मूर्ति, चित्र। संदर्भार्थ, पृ० २३—माया की जगमग से युक्त मुसलमानी विलासी संस्कृति, बाहरी अवास्तविक सुन्दरता के कारण आकर्षित करने वाली मुसलमानी संस्कृति।

छवि मधु सुरभि—परि, पृ० ३४—सुन्दरता, मिठास, सुगंधि। रूप रस गंध। सौंदर्य, मधुरता, नशा और सुगंधि।

छहराना—अना, पृ० ६१—बिखराना, बरसाना।

छागकण्ठ—अना, पृ० ११२—बकरे या बकरी का गला।

छाया—तुल, पृ० १६, २८, ४१—फैला हुआ, आच्छादित, ढके हुए, प्रतिबिम्ब, बिम्ब, धुंधलापन। सन्दर्भार्थ, पृ० ४१—उदासी की मूर्ति, रूपरंग सौंदर्य विहीन म्लान मुखी।

छाया उर—तुल, पृ० ४७—प्रेम की प्रतिमा, स्नेह की छाया, हृदय में रहने वाली प्रेम की छाया, हृदय पर छायी हुई प्रेम-प्रतिमा।

छायाधर—तुल, पृ० १२—छायाधारण करने वाला। सन्दर्भार्थ—अस्पष्ट सौंदर्य की छाया धारण किये हुए संस्कारों का सागर।

छाया श्लथ—तुल, पृ० १३—[छाया=प्रतिबिम्ब, परछाई, अनुकृति, क्रान्ति अन्धेरा, रक्षा, सौंदर्य, आश्रय। श्लथ=शिथिल, अलस, दुर्बल, बिखरा हुआ, उदास।] संदर्भार्थ—उदास या अवसाद पूर्ण धुंधली छाया, शिथिलता और उदासी के भार से धुमैला दृश्य।

छाया-प्रशमन—गी, पृ० १०३—छाया से शीतल करने वाला।

छाया-सी—तुल, पृष्ठ, २३—अस्पष्ट, धुंधली, छाया के समान, प्रतिविम्ब के समान।

छिद्र—अना, पृ० ११४—दराड़, सूराख, कमियाँ, दोष, अभाव।

छिन्न तार—अना, पृ० ८२—टूटे हुए तार, खण्डित तारों वाला, क्षीण तारों वाला, जिसके तार काट कर अलग कर दिये गये हों।

छिन्नहार—अना, पृ० ३—टूटा हुआ हार, टूटी हुई माला।

छिपती छवि—तुल, पृ० १८—अप्रकट सौंदय, रहस्यमय सुन्दरता।

छुईमुई—अना, पृ० १८—एक छोटा सुकुमार पौधा जो स्पर्श करने से मुरझा जाता है, लाजवन्ती।

छुटा दिया—अर्च पृ० ३८—छुड़ा दिया, मुक्त कर दिया।

छोर—तुल, पृ० ३४—किनारा, तट लक्ष्य, अन्त, आदर्श, उद्देश्य, प्रयोजन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज

जंगमता—परि, पृ० २३७—चेतनता, सक्रियता ।

जंगम जीवन—तुल, पृ० १६—[जंगम=चल, चलने-फिरने वाला, सजीव, प्राणवान, चेतन ।] चेतनाशील प्राण । संदर्भार्थ—तुलसीदास ।

जकड़ना—अना, पृ० ६८—कसना, बाँधना, बन्द करना ।

जग-अजान-मन-शव-शिव-शक्ति महान—गी, पृ० ४६—संसार के अनजान प्राणहीन मन रूपी शिव की तुम्ही शक्ति हो। संसार का मन अज्ञानी और लाश के समान है और तुम इस के लिए कल्याणमयी शक्ति हो। जिस प्रकार शक्ति से रहित शिव एक शव के समान है, शक्ति से वह शिव बनता है, इसी प्रकार संसार के अज्ञानी प्राणहीन मन को तुम शक्ति प्रदान करने वाली हो, जिससे वह शिव बन जाता है।

जगत—आरा, पृ० ७८—कुएँ का चबूतरा, कुएँ की मन ।

जगतवाला—नप, पृ० १३—[जगत=धरती के ऊपर कुएँ के चारों ओर बना लगभग एक गज ऊँचा गोलाकार पुश्ता, चबूतरा ।] मन वाला, पुश्तेवाला ।

जगतारण—तुल, पृ० १४—[जग=संसार । तारण=तारना, रक्षा करना, मुक्त करना ।] संसार का उद्धार करने वाले, विश्व के रक्षक, विश्व को पराधीनता से मुक्ति दिलाने वाले ।

जग परितृप्त—गी, पृ० ४८—जाग कर संतुष्ट या प्रसन्न होना । प्रबुद्ध या चेतनाशील होकर सन्तुष्ट या प्रसन्न होना ।

जड़वादग्रस्त—कविश्री, पृ० ३७—भौतिकतावाद में फंसे हुए, भौतिक सुख साधनों और दैहिक सुखभोग में लीन ।

जड़विकास—कविश्री, पृ० ३७—भौतिक उन्नति, भौतिक सुख और सुविधाएं देने वाले साधनों का संवर्द्धन ।

जगवीणा—तुल, पृ० ५६—विश्व रूपी वीणा, संसार भर के मनुष्यों के हृदय की वीणा, मानव मात्र का हृदय, समस्त प्राणियों के हृदय की भावनाएँ ।

जटिल—अना, पृ० ५४—कठिन, उलझा हुआ, दुर्बोध, जटाधारी, सिंह, बकरा, शिव, ब्रह्मचारी, साधु-संन्यासी ।

जटिल जाल—अर्च, पृ० ४०— उलझा हुआ जाल, उलझनों से भरी जीवन की समस्याएं, कष्टों का ऐसा फंदा जिसमें फँस कर निकला न जा सके ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जड़—तुल, पृ० ५८—मूल, आधार, स्थिर, निष्क्रिय, मूर्ख, बुद्धिहीन, अज्ञानी। संदर्भार्थ—अज्ञान-अविवेक-दुष्कर्म-दुर्वृत्तियों में फँसे मनुष्य।

जड़ तक मारना (जड़ तक मारी थी)—अर्च, पृ० ५३—पूरी तरह नष्ट करना, निर्मूल करना, मिटा देना।

जड़ निशि कृश—गी, पृ० ७६—निश्चल रात से संकुचित या सिकुड़ा हुआ। अज्ञान-अविवेक की रात के कारण दबा या शक्तिहीन हुआ।

जड़ावर्त—परि, पृ० २३७—अज्ञान और निष्क्रियता का भँवर।

जड़िमा—तुल, पृ० ५४—जड़ता, स्तब्धता, संज्ञाहीनता, मूर्खता।

जड़ीभूत—अना, पृ० ५—अचल, जमा हुआ, जड़ा हुआ।

जनगण—तुल, २७—सामान्य जनता, मनुष्य समाज।

जन-जनपद—तुल, पृ० १४—[जन=मनुष्य, व्यक्ति, सेवक, दास। जनपद=राज्य, देश, जनता, प्रजा] संदर्भार्थ—व्यक्ति और समाज, प्रजा, जनता और राज्य।

जन-ताका—अना, पृ० ४४—मनुष्यों का देखा हुआ, सामान्य जनसमाज द्वारा प्राप्त अनुभव।

जन-भय-भावन—गी, पृ० १२—लोगों के हृदय में भय उत्पन्न करने वाला, जनमन को आतंकित करने वाला।

ज़बाँ—नप, पृ० ३०—वाणी, जीभ, भाषा।

ज़बाँदराज़ी—नप, पृ० ३३—ज़बान चलाना, बहुत अधिक बोलना, उचित-अनुचित का विचार न करके बोले जाना, बड़ों के सामने बेअदबी या धृष्टता से बोलना।

जपालक्त—अना, पृ० १४५—अड़हुल (लाल रंग का फूल) के समान लाल, महावर से रंगा।

ज़मीदार—नप, पृ० ६६—धरती का स्वामी। पंजाब में किसान ही धरती का मालिक होने के कारण ज़मीदार कहा जाता है। उत्तर प्रदेश और बिहार आदि में धरती का स्वामी ज़मीदार होता है, जो स्वयं खेती नहीं करता, बल्कि जमीन लगान पर किसानों को दे देता है। किसान खेती करता है। अब सभी प्रांतों से ज़मीदारी समाप्त कर दी गई है।

जयन्त—नप, पृ० ५०—इन्द्र का लड़का, जिसने राम के अवतार होने की परीक्षा लेने के लिए सीता के तलुए में चोंच मारी थी। राम के बाण ने तीनों लोकों में उस का पीछा किया। अन्त में वह राम की शरण में आया और राम ने उस की एक आँख फोड़ कर उसे क्षमा कर दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जय—तुल, पृ० २८—सफलता, अधिकार, सिद्धि, अभिलाषा पूर्ति, कामना-सिद्धि।

जयकिरीट—अना, पृ० ४८—विजय पाने पर मुकुट धारण करना, विजय द्वारा पहनाया गया मुकुट।

जय-विजय-रणना—अर्च, पृ० ३—जय विजय ध्वनि, जय जय कार, विजय-घोषणा।

जराजीर्ण—अना, पृ० २९—बुढ़ापे के कारण निर्बल, वृद्धता के कारण अत्यन्त शक्तिहीन। संदर्भार्थ—पुराना होने के कारण टूटा फूटा ध्वस्त।

जल—तुल, पृ० १६—पानी। संदर्भार्थ—तात्कालिक जीवन प्रवाह, उस समय का भोगवादी विलासी जीवन।

जल-जग—गी, पृ० १४—स्थावर जंगम, सचल और अचल।

जलचर—आरा, पृ० ३६—पानी के जीव, मछली, मकर आदि।

जलज—परि, पृ० १६७—जल से उत्पन्न, कमल, सरोज, नीरज।

जलद-जाल—तुल, पृ० १२—[जलद=पानी देने वाला। जाल=फंदा, फँसाने की युक्ति, विस्तार, समूह।] बादलों का समूह, फैलाव विस्तार या आवरण। दूर तक फैली या छाई हुई सघन घन घटाएं।

जलद-पयोधर-भारा—अर्च, पृ० ६१—[जलद=पानी देने वाला, बादल, मेघ। पयोधर=पानी या दूध धारण करने वाला, बादल या उरोज, स्तन। भारा=भार उठाने वाली, बोझ से दबी।] बादल रूपी उरोजों से बोझल, मेघ रूपी स्तनों के बोझ से झुकी।

जलद-यान—तुल, पृ० १२—[जलद=बादल, मेघ, घन। यान=सवारी, वाहन, अभियान, आक्रमण] भयंकर बादलों का अभियान, घनघोर घटाओं का घुमड़ आना और भीषणता से बरसना। संदर्भार्थ—मुगल सेनाओं को सघन बादल बताया गया है।

जलद-मन्द्र-रव—गी, पृ० ७—बादल के समान गम्भीर स्वर, मेघ गर्जन के समान गम्भीर नाद या ध्वनि।

जलधर—तुल, पृ० ३९—जल धारण करने वाले, बादल, मेघ, घन, जलद।

जल-बन्धन-बल—गी, पृ० ५३—जल की अवरोध करने वाली शक्ति, जड़ बंधनों या रुकावटों की शक्ति।

जलबिम्ब—अना, पृ० १०२—पानी का प्रतिरूप, पानी की प्रतिच्छाया—हिम, ओला, ओस आदि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जलयान-दण्ड-स्थित—अना, पृ० १८७—जहाज़ या नाव के मस्तूल या बाँस पर बैठा हुआ।

जलरुह—अर्च, पृ० १०६—पानी में उत्पन्न, कमल, जलज।

जल-हरि—गी, पृ० ७२—पानी को हरने वाला, पानी को चुराने वाला।

जल्पो-जल्पो—अर्च, पृ० ४७—बकवाद, तर्कवितर्क, प्रलाप करते कराते हुए, वकझक करते हुए, झींखते-कलपते हुए।

जहान—अना, पृ० १३८—संसार, संसार के प्राणी।

जागरण-क्लान्ति—परि, पृ० १७४—जागने के बाद की थकान, जागते हुए प्रमादलीन रहना।

जागरणोपम—तुल, पृ० २०—[जागरण=जागना, सचेत होना, प्रबुद्ध होना। उपम=समान, उपमा देने योग्य।] जागने के समान, प्रबुद्ध होने के समान मालूम होना। देखने में ऐसे लगना, जैसे सचेत और क्रियाशील हों।

जागर-भेदन—गी, पृ० ८१—जागृति को छेदने या काटने वाला। जागृति को नष्ट करने वाला। नींद में लीन करने वाला। ज्ञान और दृष्टि को नष्ट करने वाला।

जागृति—परि, पृ० ४७—जागना, जागरण, बोध, ज्ञान, विवेक।

जाती ख्याल—परि, पृ० ७६—जातीय विचार, अपनी जाति या समाज की भलाई के विचार।

जानकी-प्राण—अना, पृ० १६१—[जानकी=जनक की पुत्री—सीता] सीता को प्राणों के समान प्यारा या जीवित रखने वाला—रामचन्द्र।

जामाता—तुल, पृ० ४२—दामाद, किसी की लड़की का पति, जँवाई।

जामुन—नप, पृ० ६६—वेर के आकार का गोलाई लिये हुए लँबोतरा नीले लाल मिश्रित रंग का एक फल या उस का पेड़।

जाया—नप, पृ० ६३—पत्नी, वधू।

जावक—आरा, पृ० ४०—लाल रंग का अनुलेप, जिससे स्त्रियाँ चरणतल रंगती है, महावर।

जाह्नवी—अना, पृ० १६१—गंगा, जह्नु ऋषि की कन्या।

जिन्दगी—अर्च, पृ० ६६—जीवन, आयु।

जित—तुल, पृ० २४—जीता हुआ, पराजित, वश में किया हुआ, जिस ओर, जहाँ। दामिनी-जित=सौन्दर्य-सुषमा चपलता में बिजली को पराजित करने वाली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिज्ञासा—परि, पृ० ४५, २२७—जानने की इच्छा, पूछ-ताछ, अनुसंधान, ज्ञान प्राप्ति की अभिलाषा।

जिज्ञासु—परि, पृ० २२७—ज्ञान प्राप्ति की अभिलाषा रखने वाला, ज्ञानार्थी।

जीते हुए—गी, पृ० ८६—विजयी, जिनकी जीत हुई। जीवित रह कर, युद्ध में बच कर।

जीर्ण-शीर्ण—अना, पृ० १४, ६८—टूटा फूटा, पुराना, जर्जर, अत्यन्त क्षीण और अशक्त।

जीवन—तुल, पृ० ४६—पानी, जीवित रहना, आयु भोगना, प्राण, रहन-सहन आचार-व्यवहार।

जीवन के पारावार—परि, पृ० १६७—पानी से भरा हुआ समुद्र, जीवन रूपी सागर। संदर्भार्थ—प्राणी मात्र के जीवन का आरम्भ से अन्त तक पालन करने वाला।

जीवन-क्षय—तुल, पृ० ३६—जीवन का विनाश, जीवन का ह्रास, निर्जीवता, निकम्मापन, निष्क्रियता।

जीवन-घूटी—अर्च, पृ० २२—जीवन की घूटी, जीवित रखने वाली ओषधि, जीवन प्रदान करने वाली ओषधि।

जीवनद—परि, ७८—जीवन देने वाला, पानी देने वाला, जीवन देने वाला बादल।

जीवनघन—अना, पृ० ५२—पानी से भरे बादल, जीवन देने और रक्षित रखने या बचाने वाले बादल।

जीवन-धन—अना, पृ० ६५—जीवन भर की सम्पत्ति, जीवन के लिये धन के समान प्रिय और मूल्यवान, जीवन के स्वामी, पति।

जीवन-धनिके—गी, पृ० १७—प्रत्येक जीवन में स्थापित धन की देवी-लक्ष्मी, जीवन को धनसमृद्धि से भर देने वाली लक्ष्मी।

जीवन-प्रसून—परि, पृ० ३७—जीवन रूपी फूल, फूल के समान कोमल मधुर मोहक जीवन।

जीवनभर—तुल, पृ० ३४—पूरा जीवन, सम्पूर्ण जीवन जब तक जीता रहे, आजीवन, मरने तक, जीवन को भरने वाला, जीवन को परिपूर्ण करने वाला, जीवन के अभावों को दूर करने वाला।

जीवनशमन—अना, पृ० ५२—जीवन को शान्त करने वाला, ग्रीष्म के आतप से झुलसते हुए प्राणियों लताद्रुम आदि को शीतल करने वाला।

जीवन-समीर—तुल, पृ० ५४—जीवन देने वाली हवा, जीवित रखने वाली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वायु, प्राण वायु, प्राण देने और उन्हें कायम रखने वाली वायु, समस्त संसार की साँस।

जीवनहर—तुल, पृ० ५८—जीवन के हरने वाला, जीवन का विनाश करने वाला, जीवन का उन्मूलन करने वाला, जीवन का अन्त करने वाला। संदर्भार्थ—जन्ममरण नाशक, जन्ममरण के बंधन काटने वाला, मोक्ष दाता, मृत्यु के समान भीषण और प्राणघातक।

जीवनोपाय—तुल, पृ० २५—जीवन का उपाय, जीवित रहने का साधन, प्राण बचाये रखने का प्रयास या प्रयत्न, पेट भरने का साधन, आजीविका।

जीवित मिस लय—गी, पृ० ८८—जीवित भी मृतक के समान। मृतक जैसे होते हुए भी जीवित रहने का बहाना कर रहे हैं।

जुझार—अना, पृ० १११—योद्धा, लड़ाका, युद्ध में जूझने वाला।

जुही, चमेली, मालती—आरा, पृ० २३—पुष्प-विशेष।

जेंए—तुल, पृ० ५१—भोजन किया, खाना खा लिया।

जोत उदोत—अर्च, पृ० २६—शुभ्र ज्योति, प्रकाश की उज्जवल लौ, चमकती ज्योति।

जोबन—अर्च, पृ० १८—यौवन, जवानी, अंगों का कसाव, उभार, सौंदर्य।

ज्ञात—तुल, पृ० ४८—प्रकट, स्पष्ट, जानी-पहचानी, परिचित।

ज्ञान—तुल, पृ० ३५; अना, पृ० ५८—जानना, बोध, जानकारी, यथार्थ बोध, बुद्धिवृत्ति, वेद, परब्रह्म। आत्मा, परमात्मा और जगत का यथार्थ स्वरूप जानने और परमात्मा या मोक्ष की प्राप्ति का एक बुद्धिवादी सिद्धान्त और साधन।

ज्ञान-ज्ञेय-ज्ञाता—अना, पृ० १०३—जानना-समझना, जिसे जाना जाय या जानने योग्य और जानने वाला। ज्ञान, ज्ञान का विषय परब्रह्म और परब्रह्म को जानने वाला योगी सन्त सिद्ध साधक आदि।

ज्ञान-तन्तु—गी, पृ० ४६—ज्ञान का तार, चिन्तन-धारा, सोचने-विचारने का साधन।

ज्ञानदीप्ति—तुल, पृ० ३६—[ज्ञान=जानकारी, परिचय, तत्त्व-बोध, यथार्थ जानकारी, पहचान, विवेक। दीप्ति=प्रकाश, चमक, ज्योति, आभा, तेज़ चमक।] ज्ञान का प्रकाश। ज्ञान की आभा।

ज्ञान-विपणि-खनि—गी, पृष्ठ १७—ज्ञान के उत्पन्न होने का स्थान और वितरण का क्षेत्र। ज्ञान की खान और मण्डी।

ज्ञानसूत्र—अर्च, पृ० ८०—ज्ञान की डोरी, ज्ञान की परम्परा, ज्ञान की श्रेणी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञानाम्बुधि-वीचिरहित—परि, पृ० २३९—लहरों से रहित ज्ञान का समुद्र, शांत समुद्र के समान ज्ञान की स्थिर अवस्था, ज्ञान के सागर की अचंचल दशा, ज्ञान प्राप्ति की वह स्थिति, जब तर्क-वितर्क, संकल्प-विकल्प, निश्चय-अनिश्चय की अस्थिरता नष्ट हो जाती है—वह आत्म-रूप या ब्रह्म में आत्मा का पूर्ण विलय रूप रह जाता है।

ज्ञानोद्धत—तुल, पृ० २८—[ज्ञान+उद्धत=ज्ञानोद्धत] ज्ञान की शक्ति से निर्भय और सबल, ज्ञान-बल के कारण कठोर और भीषण।

ज्ञानोन्मीलन—तुल, पृ० ५६—ज्ञान का खिलना, खुलना या विकसित होना, ज्ञान का उदय और विकास। ज्ञान के शुद्ध रूप की प्राप्ति।

ज्येष्ठ—अना, पृ० ५२—सब से बड़ा भाई, श्रेष्ठ, एक महीना, परमेश्वर, पति का बड़ा भाई।

ज्योतिमय—तुल, पृ० १५—प्रकाशपूर्ण, चमकीला, जगमगाता हुआ, चमकदार, प्रसन्नता से जगमगाता।

ज्योतिमय—तुल, पृ० २६—प्रकाशमिय, आभामय, आलोक से पूर्ण, शुद्ध चेतना और आनन्द की आभा से जगमगाता हुआ। परम उज्जवल चिरन्तन सत्य का आलोक। ज्ञान से सम्पन्न।

ज्योतिर्मयी लता—अना, पृ० १—प्रकाश की बेल, चमकती हुई बेल, प्रकाश की तरंग। सौन्द्रर्य-सुषमा की आभा से जगमगाती युवती।

ज्योतिश्चुंबिनी—तुल, पृ० १६—ज्योति को चूमने वाली, प्रकाश में झिलमिलाती।

ज्योतिःकारा—गी, पृ० ६३—प्रकाश की कैद, प्रकाश का बंधन पाश।

ज्योतिकी तन्वी—गी, पृ० ४—किरणों की कोमलांगी, किरणों के समान उज्जवल शुभ्र अरुण सुकुमार रमणी।

ज्योतिर्छवि—अना, पृ० ४—प्रकाश की सुन्दरता, आलोक से जगमाता रूप।

ज्योति-त्प्त-मुख—गी, पृ० १९—[ज्योति=प्रकाश, आभा, आलोक, यहाँ—प्रभत कालीन आलोक। तप्त=जलता हुआ, तपा हुआ, आग में तपा हुआ पदार्थ लाल हो जाता है। यहाँ—लाल, गुलाबी] प्रभात कालीन सूर्य के आलक से गुलाबी और प्रफुल्लित मुख वाली (कलियाँ), अम्लान सौंदर्य की ाभा से जगमगाती प्रेम की ललाई लिए हुए आँखें।

ज्योतिः प्रपात—तुल, पृ० ४८—प्रकाश का झरना, प्रकाश का सोता। सदर्भार्थ—जैसे झरना तीव्रता से धरती पर गिरता है, वैसे ही क्षिप्रता से फैलता हुआ प्रभात कालीन सुनहला प्रकाश।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योतिमुख—तुल, पृ० ३७—[ज्योति=प्रकाश, लौ, सूर्य, नक्षत्र, अग्नि, दृष्टि आत्मा, चैतन्य, मेथी ।] प्रकाश, आलोक, आभा, किरण आदि का मुख, सूर्य ।

ज्योतियानद्वार- परि, पृ० ६७—[ज्योति=प्रकाश, आभा । यान=सवारी, रथ, पालकी आदि । द्वार=दरवाज़ा, मार्ग, पथ ।]
प्रकाश की सवारी आने का दरवाज़ा या मार्ग, पूर्व क्षितिज, पूर्व दिशा, जिधर से सूर्य का उदय होता है ।

ज्योतिर्घन—तुल, पृ० ५७—प्रकाशपिण्ड, आलोक का कोश ।

ज्योतिर्धमनी—अर्चं, पृ० ४२—[धमनी=नाड़ी, सिरा, गर्दन, एक गंधद्रव्य] ज्योति की नसनाड़ियों वाली, जिसकी नसनाड़ियों में प्रकाश बहता है । प्रकाश की देहधारिणी, प्रकाश-निर्मित शरीर वाली ।

ज्योतिश्छाय—अर्चं, पृ० १७—प्रकाश की छाया करने वाली, अपनी छाया से प्रकाश फैलाने वाली ।

ज्योतिः सर—तुल, पृष्ठ २६—[ज्योति=प्रकाश, आभा, रोशनी, आलोक, ज्ञान, बोध । सर=आरम्भ, किनारा, स्रोत, उत्पत्तिस्थान, गतिशील, जलप्रपात, तालाब, गमन ।] प्रकाश का उद्गमस्थान, प्रकाश का प्रवाहित आगार या कोश, ज्ञान के आलोक का बहता हुआ स्रोत ।

ज्योति-सिंधु-ज्वाला – परि, ८५—प्रकाश के समुद्र की आग, प्रकाश के सगर की तीव्र चमकीली लपटें । संदर्भार्थ—समुद्र के समान ओर छोरतक फैली हुई धूप की तपन ।

ज्योतिस्तरणा—अना, पृ० १२१—प्रकाश की नाव । अपने प्रकाश से पराभूत करने वाली । अत्यन्त तेजस्विनी या आलोकमयी ।

ज्वार—गीत गुंज, पृ० ५२—एक निम्न कोटि का सफेद अनाज, जिस का पौधा मक्का के पौधे के समान होता है, जो गोभों या गुच्छों में पैदा होता है ।

ज्वार—तुल, पृ० २८—बाढ़, सैलाब, जल-प्रवाह । जीवन का संघर्ष जीवन में आने वाले अवरोध प्रतिरोध विरोध व्यवधान आदि ।

ज्वालातरंग—तुल, पृ० ४६—आग की लपटें, अग्नि की लहरें अग्नि शिखाएँ ।

ज्योत्स्ना—अना, पृ० २६—चाँदनी, चन्द्रमा का प्रकाश ।

ज्योस्नाकुल—अना, पृ० ३५—प्रकाश से प्रेरित, प्रकाश पाने के लिए उतावला ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झ

झंकार नवीन—अना, पृ० ४०—नया स्वर, गीत या राग, नवीन भाव या ज्ञान की ध्वनि ।

झंकृत—तुल, पृ० ३२—ध्वनित, बजते हुए, बजाये हुए, स्वरित ।

झंझा—परि, पृ० १३७—आँधी, तूफान ।

झकझोर—अना, पृ० ६४—उथल-पुथल, मंथन, मसल डालना, तेज़ी से हिलाना ।

झटिका—परि, पृ० १४२—आँधी, तीव्र या प्रचण्ड पवन ।

झरना—अना, पृ० २—बरसना, गिरना, स्रोत, जलधारा, प्रवाह ।

झरोखा—अना, पृ० ६०—वायु और प्रकाश आने जाने और बाहर देखने के लिये अटारी या भवन में बना हुआ छेद, वातायन, गौख, गवाक्ष ।

झाड़ी—तुल, पृ० २०—कांटेदार सघन पौधा ।

झिल्ली-रव—अना, पृ० ६२—(झिल्ली=बरसात की रात में अत्यन्त तीखे स्वर में बोलने वाला एक कीड़ा, झींगुर, एक बाजा । रव=स्वर, शब्द ।] झींगुर का स्वर ।

झींगुर—नप, पृ० ५६—टिड्डी के ढँग का अपेक्षाकृत छोटा कीड़ा जो अधिकतर वर्षा काल में बोलता हुआ सुना जाता है। इस की अटूट झंकार से कान झन्ना जाते हैं ।

झोकों की झड़ियाँ—परि, पृ० १७२—पवन के निरन्तर अनेक आघात, बार-बार झुक कर मर्दन करना ।

झोल—अर्च, पृ० १६—रसा, कढ़ी, ढीला लटकने वाला अंश, गर्म राख, जलन, पुराना हो जाने पर धुएँ आदि से गला हुआ काला अनुपयोगी फूस या कुशा आदि ।

झोझें—नप, पृ० १४—घोंसला ।

ट

टापू—नप, पृ० २२—वह स्थलखण्ड, जो सब ओर पानी से घिरा हो, द्वीप । संदर्भार्थ—इंगलैण्ड ।

टूक—परि, पृ० १२५—टुकड़ा, खण्ड, भाग ।

टोना—नप, पृ० २८—परोक्ष या रहस्यपूर्ण ढँग से किसी भेद के जानने का प्रयास करना, छूने से पहचानना, टटोलना ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठ

ठाँव—अर्च, पृ० ३७—स्थान पर, जगत, किनारा, घाट।

ठाट—तुल, पृ० २४; अना, पृ० ७८—स्वरूप, संघटन, शान, गौरव, वैभव।

ठेक—अर्च, पृ० ९५—टेक, सहारा, पेंदा, पच्चड़।

ठोकर खा जाना—नप, पृ० ४१—ईंट-पत्थर आदि से टकराकर पैर की उँगलियों में चोट मार लेना, हानि उठाना, गल्ती कर बैठना।

ठौर—तुल, पृ० २८—स्थान, आश्रय, शरण, विराम स्थल, पड़ाव। संदर्भार्थ—मन की शांत सन्तुष्ट अवस्था।

ड

डगड़ी—अर्च, पृ० ९—दगली=लबादा, ढीला लम्बा पहनावा

[दगड़=लड़ाई का डंका
दगरा=देर, मार्ग, डगर
डगर=मार्ग, रास्ता,
डगरा=मार्ग, रास्ता, बाँस आदि का बना एक छिछला वर्तन
डग=कदम, पग।]

डफ—नप, पृ० ६३—चार-पांच इंच की ऊँचाई वाले लकड़ी या लोहे के चक्र पर एक ओर चमड़े से मढ़ा हुआ बाजा।

डम्बर—आरा, पृ० ४१—आडम्बर, चहलपहल, गर्व, आयोजन।

डायेलॉग्स—नप, पृ० १८—संवाद, वार्तालाप, बातचीत।

डिगरी—परि, पृ० ७९—ऊँचाई, सम्मान, उपाधि।

डोम—नप, पृ० १००—हिन्दुओं में अंत्यजों की एक जाति जो सूप (छाज) टोकरी, छावड़ी, मूँज सन आदि के बान, रस्सी, कूँची, सिरकी, चिक आदि बनाने-बेचने का पेशा करती है।

डोर न टूटना—अर्च, पृ० २२—सम्बन्ध न टूटना, सिलसिला जारी रहना।

डोलती—परि, पृ० ३०—धीरे-धीरे चलती, डगमगाती।

ढ

ढलकना—गी, पृ० ६२—नीचे सरकना, रपटना, गिरना, बहना, अस्त होना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ढेरा—अर्च, पृ० ५८—सुतली आदि बँटने का लकड़ी का एक ओजार। टेरा, ऐँचाताना, टेरेपन से देखा।

ढीलापोली—नप, पृ० १०२—ढीलढाल, निर्बलता, सुस्ती, संघटन में शिथिलता।

ढोलक—नप, पृ० १२—दोनों ओर चमड़े से मढ़ा हुआ एक बाजा।

त

तण्डुल—अना, पृ० २५—चावल, अक्षत।

तंत्र—अना, पृ० १७१—तंतु, ताँत, वीणा आदि का तार, व्यवस्था, शासन-प्रबंध, शिव-शक्ति की पूजा और अभिचार आदि विधान करने वाला शास्त्र, आगम ग्रंथ। संदर्भार्थ—शिव और शक्ति सिद्ध करने के उपादान या साधन।

तंत्री—परि, पृ० १०५—वीणा, सारंगी, सितार आदि तारों वाले बाजे।

तंत्रीक्षीण—अना, पृ० ४०—निर्बल या धीमे स्वर वाली वीणा, क्षीण ध्वनि वाली सारंगी, वीणा, सितार आदि। संदभर्थि—साधनहीन जीवन।

तन्द्रालस—परि, पृ० ११३—आलस में ऊँघते रहना, नींद की शिथिलता या सुस्ती, अधनिद्रा के कारण आया आलस।

तन्मय—परि, पृ० ३०—लीन, डूबा हुआ, निमग्न।

तन्मयता—परि, पृ० ३०—लीनता, निमग्नता, सुधबुध हीनता।

तकवाहा—नप, पृ० ६८—तोलने वाला, तुलैया।

तगड़े—अना, पृ० १३८—मजबूत, स्वस्थ, बलवान।

तट-मृदंग—अना, पृ० १०—[मृदंग=ढोल के समान चमड़े का बाजा, मुरज।] मृदंग के समान बजता हुआ नदी-तट।

तटरेखा—तुल, पृ० १८—किनारे की रेखा, सीमा रेखा, किनारा।

तटिनी—अना. पृ० ४९—नदी, सरिता।

तड़िद्दाम—परि, पृ० १६३—[तड़ित=बिजली, विद्युत। दाम=डोरी, रस्सी] बिजली की प्रत्यंचा, बिजली की रस्सी।

तड़ित-तूलिका-रचना—परि, पृ० ८२—बिजली की कूँची से बनायी गई तस्वीर।

तत्काल—अना, पृ० १—उसी समय, तुरन्त, अविलम्ब।

तत्क्षण—तुल, पृ० ५४—उसी क्षण, उसी पल, तुरन्त, तभी, उसी समय, बिना विलम्ब किये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तत्त्व—अना, पृ० ३१—यथार्थता, सार, ब्रह्म। पंचभूत—ग्राकाश, वायु, ग्रग्नि, जल, पृथ्वी। त्रिगुण—सत, रज, तम।

तत्त्व-नभ-तम में—गी, पृ० २४—प्रकृति के पांच तत्त्वों में से पहले तत्त्व ग्राकाश के ग्रँधेरे में।

तत्त्ववेत्ता—ग्रना, पृ० ६८—सूक्ष्म रहस्य के ज्ञाता, जीवन जगत ग्रात्मा परमात्मा ग्रादि के सार को समझने समझाने वाला।

तथागत—अर्च, पृ० २६—जिसने वह (जो चाहिए) गति प्राप्त करली है। मुक्त पुरुष, महात्मा बुद्ध।

तदबीर—परि, पृ० २०६—प्रयत्न, योजना, पुरुषार्थ, बुद्धि-विवेक।

तदनंत—तुल, पृ० १२—[तत्=वह, उसके। अनंत=वाद में, पश्चात।] उस (पंजाब) के बाद में।

तनया—ग्रना, पृ० १५१—पुत्री, लड़की।

तनिमा—गी, पृ० ६९—नजाकत, सुकुमारता, मृदुल भावभंगिमा।

तनीतान—ग्रर्च, पृ० २८—तान अलापी जा रही है, स्वर गूंज रहा है।

तनु वल्कल—गी, पृ० ९—देह में लपेटी हुई पेड़ की छाल।

तप—परि, पृ० ८०—ताप सहना, कष्ट सहना, भगवान की भक्तिसाधना में कष्ट सहन करना।

तपस्या—अना, पृ० ५३—तप, किसी अभीष्ट की सिद्धि के लिए कष्ट-सहन।

तपेदिक—नप, पृ० ६९—एक रोग जिस में फेफड़ों में छिद्र हो जाते हैं, ग्रौर निरन्तर ज्वर ग्रौर खाँसी रहती है। क्षयरोग।

तपोवन—परि, पृ० २१५—तप करने का वन, तपस्वियों के रहने का वन।

तपोवरण—ग्रर्च, पृ० ३—[तप (तपस, तप:)=ताप, जलाने वाला, तपस्या, कष्ट सहन, ग्रग्नि, सूर्य। वरण—एक नदी, वरण की गई, चुनी हुई, रक्षिका, जिससे याचना की जाय] इष्ट देवी जिससे याचना की जाय और जिस के लिये तपस्या की जाय।

तप्त—परि, पृ० ४४—गर्म, जलते हुए, वेदना-पीड़ित।

तम—तुल, पृ० २६—अंधकार, ग्रज्ञान, प्रकाश का ग्रभाव। संदर्भार्थ—मायामय विलासपूर्ण संस्कृति, ग्रज्ञान के ग्रंधकार में भटकाने वाला भोगवाद।

तबला—नप, पृ० २९—एक ग्रोर चमड़े से मढ़ा जोड़ी वाला वाजा, जिसमें एक नीचे सपाट और ग्रपेक्षाकृत लम्बा ग्रौर दूसरा नीचे से गोल। ऊपर दोनों चमड़े से मढ़े हुए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तम जग नयनों में—गी, पृ० ४१—अंधकार से भरे हुए संसार की आँखों में। अज्ञान अंधकार में लीन संसार की आँखों में, अँधेरेमें सोते हुए संसार के नेत्रों में।

तमजिज्जीवन—तुल, पृ० ५७—अंधकार को जीतने वाला जीवन, सूर्य के आलोक के समान जीवन या व्यक्ति, निष्क्रियता अज्ञान अविवेक और नैराश्य को पराजित कर ज्ञान विवेक आशा और कर्म की प्रतिष्ठा करने वाला—तुलसीदास।

तमतारा—परि, पृ० ५४—अंधकार सी काली पुतलियाँ, काली-काली आँखें।

तमशेषजाल—तुल, पृ० ५३—[तम=अंधकार, अँधेरा, प्रकाश का अवरोध। शेष=बचा हुआ, बाकी, सम्पूर्ण, समस्त। जाल=विस्तार, फैलाव, आवरण, फँसाने, वश में करने या बन्दी बनाने का साधन, युक्ति, योजना या षड़यन्त्र।] अज्ञान या माया का जाल जो उस समय भारतभूमि पर फैला था, सघन अंधकार का जाल।

तमश्चरिता—अना, पृ० ८९—[चरित=आचरण, कर्म, स्वभाव, आचरित, किया हुआ, प्राप्त, गत, ज्ञात।] अंधकार नष्ट करने वाली, तामस आचरण करने वाली।

तमस्तरण—अर्च, पृ० १४—अंधकार से पार उतारने वाला, अंधकार पर तैरने वाला।

तमस्तूर्य—तुल, पृ० १२—[तम=अंधकार, अँधेरा। तूर्य, तूर (तुरही) का विशेषण=तुरही वाला, बजती हुई तुरही वाला।]
अंधकार की तुरही से गूँजता हुआ, जहाँ अंधकार विजय की तुरही बजा रहा है, वह आकाश।

तमस्तोम—अर्च पृ० ३८—[तम:=अंधकार, तिमिर। तोम=राशि, समूह।] अंधकार की राशि, अत्यन्त सघन अंधकार।

तमाल—परि, पृ० ७८—जमना तट और पहाड़ों पर होने वाला एवं सदाबहार वृक्ष, जिस की लकड़ी काले रंग की होती है।

तमिस्र—परि, पृ० ५०—अंधकार पूर्ण, अँधेरे से भरा।

तमिस्र-संक्षर—गी, पृ० ६१—[तमिस्र=तम, अँधकार, काला। संक्षर=साथ बहने वाली, एक साथ नाश होने वाले, मारने या घात करने वाले।] अंधेरे में आघात करने वाले, अंधेरे में मारने वाले।

तरंग—तुल, पृ० २२—लहर, उल्लास की उमंग, ऊर्ध्वगामिनी वृत्ति, शक्ति-तरंग, शक्ति की धारा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरंग—तुल, पृ० १६—लहर, उमंग, उर्मि । संदर्भार्थ—सामयिक प्रवाह, तात्कालिक जीवन का बहाव ।

तरंग-तीर-हत—अर्च, पृ० ३६—तरंगों से आहत किनारा, नदी तट जिस से लहरें टकराती हों ।

तरण-तारण—अर्च, पृ० ८८—[तरण=बेड़ा, डाँड, नाव, तरना, पार होना । तारण=तारने वाला, नौका, पार करना, विष्णु, शिव, विजय ।] तुम्हीं भवसागर पार करने वाली नवका, पतवार और खिवैया हो । तुम्हीं नाव हो, तुम्हीं पतवार हो और तुम्हीं नाव खेकर पार उतारने वाले नाविक हो ।

तरंग-राजियाँ—अना, पृ० १०२—लहरों का समूह, लहरों की भीड़ ।

तरंगाकुल—तुल, पृ० १८—लहरों के घात-प्रतिघात के कारण चंचल, तरंगों के क्षिप्रता से उठने-गिरने, परस्पर टकराने के कारण उतावला, ज्वार में आया हुआ ।

तरंगित—अना, पृ० ३१—लहराता हुआ, उमंग में भरा, आनन्द उत्साह में चंचल ।

तरंगिनी—परि, पृ० २१४—नदी, सरिता, धारा ।

तरकिहार—नप, पृ० १००—शाक सब्जी तरकारी बोने और बेचने वाला ।

तरणितरण—आरा, पृ० ६९—[तरणि=सूर्य, किरण, नाव, तीव्रगामी, उत्साही । तरण=तरना, तारना, बेड़ा, स्वर्ग ।] पार उतारने वाली नाव, भवसागर से पार लगाने वाला साधन या नाव ।

तरणी—अर्च, पृ० १—नाव, नौका, बेड़ा ।

तर रहे—गो, पृ० ४—फहरा रहे हैं, फैल कर उड़ रहे हैं ।

तरल—अना, पृ० ५६—बहने वाला, चपल, चमकीला ।

तरी—अना, पृ० १६—नाव, नवका, वेड़ा ।

तरुण वर्ष—गी, पृ० १९—यौवन काल, जवानी के साल, पूर्ण विकसित यौवन ।

तरू-मलय-वलय—अना, पृ० १५२—[वलय=घेरा, परिधि, कंकण, छल्ला] चन्दन के वृक्षों से घिरा हुआ, चन्दन-वृक्षों की परिधि में ।

तरुण—तुल, पृ० ३४; अना, पृ० २२—सोलह वर्ष से ऊपर की अवस्था बाला, युवक, जो पूर्ण विकसित न हुआ हो, चढ़ती जवानी वाला ।

तरुणा-तरुणी—अर्च, पृ० १—युवती, जवान स्त्री, सोलह वर्ष से ऊपर की अवस्था वाली । सबल और नयी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरु-तन—अना, पृ० १—वृक्ष का शरीर, पेड़ का तना।

तरुणतरंग—परि, पृ० ३७—यौवन की उमंग, जवानी का जोश, युवकों के समान निर्भयता, अडिगता उत्साह और क्रिसाशीलता।

तरुणीतनु—तुल, पृ० ३८—युवती का शरीर, यौवन सम्पन्न नारी की देह।

तर्कसिद्ध—कविश्री, पृ० ३७—[तर्क=युक्ति, प्रमाण। सिद्ध=प्रमाणित, प्राप्त।] युक्तियों-प्रमाणों आदि से प्राप्त या प्रमाणित निष्कर्ष।

तर्पण—अना, पृ० १३४—तृप्त करने की क्रिया, आहार, देवताओं, ऋषियों और पितरों को तिल-चावल-मिश्रित जल देकर तुष्ट करना, श्राद्ध करना।

तलातल—अना, पृ० १००—धरती के नीचे सात लोकों में से एक लोक, चौदह भुवनो में से एक।

तलाश्रित—परि, पृ० ७८—तले पर आश्रित, पेंदे पर टिका हुआ, मूल के सहारे खड़ा हुआ।

तल्प—गीतगुंज, पृ० ५८—शय्या, सेज, अटारी।

ताग—अर्च, पृ० ५५—तागा, डोरा, धागा।

ताज—नप, पृ० ८१—मुकुट, किरीट।

तान—तुल, पृ० ४७, ६०—स्वर का विस्तार, गीत-स्वर, अलाप, ज्ञान और कला के विविध विषय और क्षेत्र।

तानमान—आरा, पृ० १७—[तान=सूत्र, विस्तार, स्वर, अलाप, धुन, ज्ञान का विषय। मान=आदर, आत्मसम्मान, अभिमान, रूठना, परिमाण, मानदण्ड, पैमाना।] स्वर का विस्तार, ज्ञान का विषय-विस्तार या विकास।

ताप—आरा, पृ० १९—तपन, जलन, पीड़ा, कष्ट, वेदना, ज्वर।

तापकरा—गी, पृ० १४—ताप देने वाली, जलाने-झुलसाने वाली।

ताप-क्षर—तुल, पृ० ४९—तपन से जल कर, आग से झुलस कर, ग्लानि की लपटों में जल कर।

तापप्रशमन—तुल, पृ० १५—उष्णता शांत करने वाला, गर्मी नष्ट करने वाला। यातनाओं, पीडाओं, दुखों को नष्ट करने वाला, सुखशान्ति देने वाला।

तापहर—अना, पृ० ६९—जलन दूर करने वाला, शान्ति शीतलता देने वाला, पीड़ा दूर करने वाला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तार—तुल, पृ० २१—[तार=डोरा, तागा, सूत, धागा, तार द्वारा भेजा गया सन्देश, किसी धातु से बनाया गया तार, जिसे सितार, सारंगी, वीणा, वायलन, तँबूरे, इकतारे, चिकारे आदि में लगाया जाता हैं ।] तार चढ़ाना—तार कसना, सितार, वीणा आदि को बजाने के लिये तैयार करना । संदर्भार्थ—कमर कस कर तैयार हो जाना, किसी कठिन और मंगल कार्य के लिए उपयुक्त तैयारी करना ।

तार—अर्च,पृ० ९१—सिलसिला, शृंखला, खोज, अता-पता ।

तारक-तनु रवि के कर संचित—अर्च, पृ० ६५—[तारक=सितारा, नक्षत्र । तनु=शरीर, काया, स्वभाव, विरल, अल्प, सुकुमार, कृश, छिछला ।] सितारों के सुकुमार शरीर सूर्य की किरणों के समान जगमगा रहे हैं ।

तारक-प्रदीप-कर—अना, पृ० १९३—सितारे का दीपक हाथ में लिये ।

तारक-मण्डल—तुल, पृ० ३६—नक्षत्रों-सितारों का घेरा या समूह, सितारों से भरा आकाश ।

तारक-शत लोक-हार छवि—गी, पृ० ७८—वह सौंदर्य-राशि की प्रतिमा जो सैकड़ों तारों के समूह का हार धारण किये हुए हैं ।

तारकोज्जवल—गी, पृ० ३६—[तारक=तारा, सितारा, नक्षत्र । उज्ज्वल=शुभ्र, निर्मल, चमकीला, सफेद ।] सितारों के समान शुभ्र, तारों के समान जगमगाता हुआ ।

तारतम्य—अना, पृ० १९०—सिलसिला, शृंखला बद्धता, सामंजस्य, सम्बद्धता ।

तार तार—तुल, पृ० ५९—सूत, डोरा, धागा । तारतार—टुकड़े-टुकड़े, चीर-चीर, लघुतम अंश, सूक्ष्म से सूक्ष्म भाग या अवयव ।

तारा—तुल, पृ० ५५—नक्षत्र, आँखों की पुतली, ज्ञानराशि । प्रकाशित करने वाली ज्योति—रत्नावली ।

ताराकुमार—अना, पृ० १६०—तारा का पुत्र—अंगद ।

ताराद्युति—तुल, पृ० ४१—[तारा=नक्षत्र, तारिका, पुतली, पुतली का तिल । द्युति=प्रकाश, आलोक, ज्योति ।] तारिका का प्रकाश, नक्षत्र के समान जगमग आँखो की पुतली की ज्योति, नक्षत्र जैसी आलोक पूर्ण दृष्टि ।

तारिका—तुल, पृ० २९—सितारा, नक्षत्र, तारा, आँखों की पुतली, आँखों की पुतली के समान प्रिय, तारिका के समान टिमटिमाती, प्रकाश में झलमिलाती या प्रकाश दिखाती हुई ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तारुण्य—अना, पृ० १—जवानी, यौवनावस्था, यौवन।

ताल—तुल, पृ० १५—हथेली, हाथ पर हाथ मारना या मारने का शब्द, संगीत में नियत मात्राओं पर ताली बजाना, नाचते समय धरती पर एड़ी या पंजे अंकित करना। संदर्भार्थ—संकेत, प्रेरणा, प्रभाव, आज्ञा।

ताल-तरंगें—अना, पृ० ५६—ताल देती हुई तरंगें, परस्पर टकराती संगीत-सा उत्पन्न करती लहरें।

ताल-मात्राएँ—अना, पृ० ३३—[ताल=संगीत में नियत मात्राओं पर ताली बजाना, ताड़वृक्ष, जाँघ या बाजू पर हथेली ठोककर उत्पन्न की गई ध्वनि। मात्रा=संगीत में एक स्वर के बोलने में लगने वाला समय] संगीत शास्त्रानुसार स्वर के अलाप, आरोह-अवरोह, आघात की माप या लम्बाई।

ताल-शिंजित-नूपुर—तुल, पृ० ४७—[ताल=स्वर, स्वराघात। शिंजित=बजते या गूँजते हुए। नूपुर=पैरों का घुंगरूओं जड़ा आभूषण, पायल] गूँजते हुए नूपुर जैसे संगीत के ताल-स्वरों में बजते थे।

ताली—अर्च, पृ० ११२—कुंजी, ताला खोलने और बन्द करने का यंत्र। संदर्भार्थ—तन मन धन के सार तत्त्व या रहस्य का जानने का साधन।

तिनतिन—अर्च, पृ० ६२—प्रत्येक तिनका, छोटे से छोटा, रोमरोम।

तिन तोड़ना—अर्च, पृ० १०५—तिनका तोड़ना, आश्चर्य चकित हो जाना, बलैया लेना, अपने को न्योछावर करना।

तिमिर—तुल, पृ० २८—अंधकार, अज्ञान, माया का व्यवधान, विघ्न बाधा का अंधेरा।

तिमिर—अना, पृ० १३—अंधकार, अंधेरा, निराशा, पीड़ा, अज्ञान।

तिमिर-जाल—परि, पृ० ३७—[तिमिर=अंधकार। जाल=जाली, विस्तार, फन्दा, झरोखा, ठगने या फंसाने की युक्ति।] दूर तक फैला हुआ अंधेरा, घोर गहन विस्तृत अंधकार।

तिमिरदारण—अर्च, पृ० १६—अंधकार को चीरने वाला, अंधकार का नाश करने वाला।

तिमिर-भेद-शर—अर्च, पृ० १६०—अंधकार को भेदने या नष्ट करने वाला तीर—किरण। ज्ञान की आलोकरश्मि जो जड़ता अज्ञान निराशा का विनाश कर दे।

तिमिरवरण—अर्च, पृ० १५—अंधकार के रंग वाला, काला, श्याम।

तिमिरहर—परि, पृ० १६५—अंधकार दूर करने वाला, सूर्य, चन्द्रमा, प्रकाश, किरणें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिरती—तुल, पृ० ६१—तैर रही थी, ऊपर विचर रही थी ।

तिर्यक—अर्च, पृ० ११२—टेढ़ा, वक्र, तिरछा ।

तिर्यकदृग—तुल, पृ० ३०—तिरछी आँखें, वक्र कटाक्ष, टेढ़ी दृष्टि ।

तिर्यग्दृग—अना, पृ० ५०—[तिर्यक=आड़ा, तिरछा, वक्र । दृग=नयन, आँखें, कटाक्ष, दृष्टि ।] तिरछी आँखें, वक्र दृष्टि, टेढ़े कटाक्ष ।

तिलांजलि—नप, पृ० ७४—मृतक के नाम पर जलमिश्रित तिल की अंजलि देने की हिन्दु-प्रथा । पूरी तरह त्याग देना, सदा के लिये सम्बन्ध तोड़ लेना ।

तीज—आरा, पृ० ९६—तीसरी तिथि, सावन के शुक्ल पक्ष की तीसरी तिथि ।

तीनों गुण—अना, पृ० १०३—[तमोगुण=आलस्य, अज्ञान, क्रोध, भ्रम आदि का जनक । रजोगुण=भोग, विलास, प्रदर्शन का जनक । सतोगुण=विवेक, धर्म, सत्य, ईश्वर, जीव, प्रकृति का बोध कराने वाला गुण ।] सत, रज, तम—प्रकृति के तीनों गुण या धर्म ।

तीर्ण—आरा, पृ० ५५—जो पार कर चुका हो या किया जा चुका हो ।

तीव्र—अना, पृ० ५३—तेज, क्षिप्र, उग्र, तीखा ।

तीसरा नयन प्रकाश अमर—गी, पृ० ७७—दोनों भौंओं के बीच आज्ञाचक्र के ऊपर तीसरा नेत्र है, इसका प्रकाश अमर है । लखलिया निज केशों में व्योम, तीसरा नेत्र प्रकाश अमर—जिस प्रकार नीले आकाश में सूर्य उदय होने पर हम उस के प्रकाश में सब कुछ देख लेते हैं, इसी प्रकार श्यामल केशों के आकाश में उदित तीसरे नेत्र के अमर प्रकाश में हम ब्रह्मरूपी प्रकृति को देख सकते हैं ।

तुङ्ग—परि, पृ० ८०—ऊँचा, उन्नत, उग्र, शिव, पर्वत ।

तुमुल—अना, पृ० १५७—भयंकर, कोलाहल पूर्ण, घमासान, घोर युद्ध ।

तुरी—आरा, पृ० ८७—तुरही, तूलिका ।

तुरीय—अना, पृ० १५५—श्रेष्ठ, शक्तिशाली, गतिशील, चंचल । संदर्भार्थ—सात्विक प्रणयभाव से भरा ।

तुर्क—परि, पृ० १९७—तुर्किस्तान का निवासी, मुसलमान ।

तुर्कों को तुरकी में जवाब देना—परि, पृ० २०७—किसी को उसी की भाषा में उत्तर देना, जिससे उसकी समझ में आ जाय, मुसलमान आक्रमणकारियों की नृशंसता निर्दयता आदि के बदले में उन पर निर्दयता नृशंसता करना ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुलक—अना, पृ० ९१—राजमंत्री ।

तुलकर—तुल, पृ० २२—[तुलना=समता, बराबरी, जाँच करना, न्यूनाधिक-विचार, सधना, जमना, स्थिर होना, सन्नद्ध या उतारू होना ।] बुरा-भला, लाभ-हानि, सफलता-असफलता की भली भाँति जाँच करके, सन्नद्ध होकर, पूर्ण रूप से तैयार हो कर, निश्चय करके उतारू हो गया ।

तुलना—(तुले, तुल, पृ० ३०; तुली, अर्च, पृ० ९६)—ओर झुकना, प्रवृत्त होना, करने के लिये तयार होना, करने में लग जाना ।

तुषाग्नि—अप, पृ० १७२—[तुष=अन्न के ऊपर का छिलका, भूसी, भुस । अग्नि=आग] भूसी की आग, जलती हुई भूसी ।

तुषार-दव—गी, पृ० ८५—पाले की आग । आग जैसे जला कर राख कर देती है ऐसे ही पाला कमलों को नष्ट कर देता है, इस लिए तुषार को आग बताया गया है ।

तूणीर—परि, पृ० २०२—तरकश. वाण रखने वाला खोल ।

तूणीर—अना, पृ० १५३—तरकश, निषंग, वाण रखने का चोंगा ।

तूम—गी, पृ० ३६—चुनती हुई, चुनकर, एकत्र करके, ढेर लगाती हुई ।

तूर्ण—तुल, पृ० १४—शीघ्र, अल्प समय में, तेज़ी से, क्षिप्रता से, तीव्रता से ।

तूर्णचरण—अना, पृ० १२१—तीव्र पग धरते हुए, तेज़ी से चढ़ कर ।

तूल—आरा, पृ० २५—गाढ़ा लाल रंग, लम्बाई, विस्तार, ढेर, रुई ।

तूलिका—अना, पृ० १८८—चित्र बनाने की कूची, तूली, लेखनी ।

तृप्तिहीन—जिसकी प्यास न बुझती हो, जिसे सन्तोष या शान्ति प्राप्त न हो, प्यासा, असन्तुष्ट ।

तृष्णा—अना, पृ० ३८, ५८—प्यास, आकुलता, असन्तोष, उत्कट वासना ।

तृष्णापर—तुल, पृ० २७—[पर=लगा हुआ, लीन, निरत ।] लोभ में डूबे हुए, वासनालीन, भोगविलास की उत्कट कामना में डूबे हुए ।

तृष्णाशा-विषानल—गी, पृ० ९४—भीषण अभिलाषा और आशा जो विषैली आग के समान है ।

तृष्णोद्धत—तुल, पृ० २४—[तृष्णा=प्यास, लोभ, तीव्र अभिलाशा या वासना । उद्धत=कठोर, उजड्ड, अतिशय, अक्खड़, अविनीत; ऊपर उठा हुआ ।] भयंकर लोभ और वासनाओं में फंसे, भीषण भोग वासना में लीन ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेजघन—अना, पृ० १५७—सघन तेज, गहन प्रकाश, तीव्र आलोक।

तेजपुंज —अना, पृ० ५३—प्रकाश की राशि, अत्यधिक आलोक।

तेजस्वी—पृ० ५७—तेज से भरा हुआ, तेजपूर्ण, ज्ञान, गौरव, शक्ति और प्रतिभा की आभा से चमकता हुआ।

तेली—नप, पृ० १००—तिल, सरसो, तरा, लाई, अरण्डी आदि का तेल पेरने और बेचने का व्यवसाय करने वाला।

तोड़े तिन—गीतगुंज, पृ० ६१—बलैयाँ ली, तिनके तोड़े। प्रसन्नता आश्चर्य शुभ कामना प्रकट की।

तोरण—परि, पृ० ३४—बाहरी द्वार, बन्दनवार, फूलपत्तों की बनी मालाएँ। पुष्प, कलियाँ, पल्लव आदि।

तोलना—अर्च, पृ० १४—सँभालना, उठाना, साधना, जोखना, जाँचना, मूल्यांकन करना।

तोष--तुल, पृ० ४४—सन्तोष, प्रसन्नता, आनन्द, सुख, निर्लोभता।

तौर—तुल, पृ० २८—ढंग, तरीके, प्रकार, साधन, उपकरण, रीतिनीति, जीवन व्यवहार।

त्यागोज्जीवित—तुल, पृ० २०—[त्याग=बलिदान करना, छोड़ना, किसी को अपनी वस्तु देना, अर्पण करना, उत्सर्ग करना। उत=उच्च, ऊँचा, श्रेष्ठ, अधिक, प्रबलता, प्राधान्य। जीवित=जीवन से पूर्ण, सजीव, प्राणवान, सचेत।] उत्सर्ग की भावनाओं से भरा हुआ, परहित के लिये अपना सब कुछ बलिदान करने की प्रेरणा देने वाला, जिसमें उच्च त्याग का जीवन हो।

त्याग की तरुणा—तुल, पृ० ४०—त्याग करने वाली युवती, सब कुछ उत्सर्ग करने वाली रमणी, त्याग करने में जवान, उत्साही और कर्मशील।

त्रास—अना, पृ० १७, ५२—भय और कष्ट।

त्रिकुटी—अना, पृ० १६६—दोनों भौंओं के मध्य नासिका के ऊपर स्थान, जिसे शून्य भी कहा जाता है।

त्रिगुणात्मक—परि, पृ० २३६—सत रज तम गुणों वाली।

त्रुटि—परि, पृ० २१८—कमी, दोष, खोट।

त्रेता—नप, पृ० ४५—भारतीय मतानुसार सृष्टि की आयु के चार युगों [सत, त्रेता, द्वापर, कलि] में से दूसरा युग, जिसमें भगवान रामचन्द्र हुए थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वक—अना, पृ० ३१—छिलका, वल्कल, चर्म, खाल, स्पर्श का ज्ञान कराने वाली इन्द्रिय।

त्वचा—आरा, पृ० ७३—खाल, शरीर, देह, स्पर्श का ज्ञान कराने वाली इन्द्रिय।

त्वरित—अना, पृ० ८८—तुरन्त, शीघ्र, उसी समय, तत्काल, तत्क्षण।

थ

थर्राती—परि, पृ० १३५—काँपती, भयभीत होती।

थल—आरा, पृ० ५—स्थल, स्थान, जगह, आधार, ठिकाना।

थे गले-गले—गो, पृ० ९६—परस्पर गले से गला मिलाए थे। भेद-भाव भूल प्रेमालिंगन में बंधे थे। परस्पर अतिशय प्रेम था।

द

दख़ल—नप, पृ० ४७—विघ्न, बाधा, रुकावट। अधिकार, कब्ज़ा।

दग़ा—नप, पृ० २८—धोखा, विश्वासघात, कपट।

दग़ाबाज—परि, पृ० १९६—धोखा देने वाला, कपटी, विश्वासघाती।

दगी—अर्च, पृ० १९—दागी हुई, जली हुई, गर्म लोहे का जिस पर चिह्न लगाया गया हो।

दधिमुख—अना, पृ० ११८—राम की वानर सेना का एक सेनापति।

दबैल—नप, पृ० १००—दबने वाले, उपकार या ऋण से दबे हुए, दास, डरने वाले।

दम—तुल, पृ० ३५—दण्ड, दमन, इन्द्रियों को विषयों से निवृत्त करना, कीचड़, दमयन्ती का एक भाई, विष्णु।

दमका—तुल, पृ० ३९—चमक उठा, झिलमिलाने लगा, जगमगाया, आलोकित हो गया, सुषमित हो गया।

दमड़ी के आम—नप, पृ० ४५—[दमड़ी=सब से छोटा प्राचीन सिक्का] बहुत सस्ते और रद्दी प्रकार के आम।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दमदार—नप, पृ० १३ —निडर, बलवान, भयंकर, डरावना, प्रचण्ड ।

दमन-दाह—अना, पृ० ४८—[दमन=दबाना, पीड़न, उत्पीड़न । दाह=आग, जलाना ।] उत्पीड़न की ज्वाला ।

दमामा—अना, पृ० १०७—ढोल, नगाड़ा ।

दम्य—परि, पृ० ५३—दमन योग्य, दबाने या नष्ट करने योग्य ।

दर—अर्च, पृ० ४५—पीड़ित हो कर, दला जाकर ।

दरी—अना, पृ० १७८—गुफा, खोह, कन्दरा । पर्वत में बना निवास-स्थान ।

दर्पित पद—तुल, पृ० १२—अभिमानी पैरों वाले, घमण्ड में चूर, अभिमान से चलने वाले, अकड़ कर चलते हुए ।

दर्शनशर—अना, पृ० ६०—देखते ही रूप-सुषमा का तीर सा चुभ जाना ।

दल—तुल, पृ० २३, ३०; अर्च, पृ० १०८—मोटाई, गुद्दा, पंखड़ी, पल्लव, पत्ता, समूह, संघ, पार्टी, सम्प्रदाय, समाज ।

दलदल—परि, पृ० १६०—गीली धरती जिसमें प्राणी धँस जाता है, कींचड, पंक ।

दलमल देना—गी, पृ० ६७—दलना-मलना, बुरी तरह कुचल देना ।

दलित चरण—तुल, पृ० २०—पैरों तले कुचली हुई, अत्यचार-पीड़ित, पैरों से मसली हुई, अपमानित ।

दव—अर्च, पृ० ७३—ज्वर, वन, जंगल, वन में स्वतः लगने वाली आग ।

दव ही दव—अना, पृ० १२—आग ही आग, सब ओर आग लग जाना ।

दशभुजा—अना, पृ० १६४—दशभुजाओं वाली दुर्गा, शक्ति, भवानी ।

दशस्कन्ध—अना, पृ० १५८—दस कंधो या सिरों वाला—रावण ।

दस्यु—अना, पृ० ५६—डाकू, लुटेरा, खल, अनार्य, जो प्राचीन काल में यज्ञ बिध्वंस किया करते थे ।

दह—तुल, पृ० १२—अग्नि शिखा, आग की लपट, ज्वाला, जलाने वाला, दाहक ।

दहता—तुल, पृ० १६—जलाता । सन्तापित करता । कष्ट या पीड़ा देता ।

दहला—तुल, पृ० ४३—दहल गया, हृदय को बहुत आघात लगा, पीड़ित हुआ, नीचे धँस गया ।

दहशत—नप, पृ० ८२—भय, आशंका, घबराहट, आतंक ।

दाग—परि, पृ० २०१—धब्बा, कलंक, बदनामी ।

दाड़िम—परि, पृ० ५७—कुन्द, अरविन्द, कदली, चम्पक, श्रीफल, मृगशिशु, खंजन, शुक, पिक, हंस, मिलिन्द, हरिमृग, काले नाग, मयूर ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दाता—परि, पृ० १२५—देने वाला, दानी।

दान फिर माँगो—तुल, पृ० ५६—परिवर्तन में प्राप्त करो, प्रतिदान की कामना करो, बदला चाहो।

दानव—अना, पृ० २५—दनु के गर्भ से उत्पन्न कश्यप के पुत्र। दुष्ट, राक्षस असुर, आततायी। संदर्भार्थ—दुष्ट भिखारी (व्यंग्य)।

दाप—आरा, पृ० १६—दर्प, घमण्ड, प्रताप, क्रोध, जलन, दुःख, दीप्ति, उत्साह।

दामिनीजित—तुल, पृ० ५२—[दामिनी=बिजली, चपला। जित=जीतने वाली, पराजित करने वाली, अपेक्षाकृत श्रेष्ठ।] बिजली से भी अधिक चपल और सुषमा-ज्योति से जगमगाने वाली, अपने सौंदर्य के आलोक और अवयवों की चपल चेष्टाओं से बिजली को भी पराजित करने वाली—रत्नावली।

दारा—परि, पृ० २०५—शाहजहाँ द्वारा नियुक्त युवराज दारा शिकोह।

दारिद्र्य—अना, पृ० १७२—दरिद्रता, निर्धनता, गरीबी।

दारुण—अना, पृ० ६७—कठोर, निर्दय, भयंकर, उग्र, तीव्र, कँपा देने वाला।

दारोग़ा—नप, पृ० ८७—हिफ़ाज़त करने वाला, निगरानी करने वाला, थाने का प्रधान अधिकारी, थानेदार।

दाल न गलना—परि, पृ० १९८—बश न चलना, चारा न होना, असफल होना।

दासता—परि, पृ० ११२—अधीनता, सेवकाई, गुलामी, परतंत्रता।

दिङ्मंडल—तुल, पृ० ११—[दिङ्=दिशाएँ। मण्डल=घेरा, चक्र, समूह, दल] दिक्‌चक्र, दशों दिशाएँ। तमस्तूर्य दिङ्मण्डल—अंधकार दशों दिशाओं में विजय की तुरही बजा रहा है। दशों दिशाएँ अंधकार की तुरही या शहनाई से गूँज रही हैं।

दिङ्नागदलन—अप, पृ० १६६—दिशाओं के हाथियों का दलन करने वाला, दिशाओं के हाथियों को पराजित करने वाला, अलौकिक बलशाली।

दिक्—तुल, पृ० ३४—दिशा, किसी ओर, तरफ़।

दिक्कुमारिका—गी, पृ० ८३—दिशा रूपी कुमारी, दिशा-सुन्दरी, दिशा रूपी रमणी।

दिगन्त—अना, पृ० २—दिशाओं का अन्त, आकाश, क्षितिज।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिगन्त-पल—गी, पृ० ६२—दिगन्त की पलकें, आकाश की पलकें।

दिगम्बर—अना, पृ० १६५—दिशाएँ ही जिस का वस्त्र हैं, नंगा, शंकर।

दिग्देशकाल—अना, पृ० १८—दिशाएँ, देश और समय।

दिग्देश-ज्ञान—तुल, पृ० १२—[दिग्=दिशाएँ, चारों ओर का परिवेश, देश=स्थान, जन्मभूमि, राष्ट्र, देश का स्वरूप—संस्कृति, परम्परा, प्राचीन गरिमा, वर्तमान विवशता दासता की दशा आदि। ज्ञान=पहचान, परिचय, जानना, बोध, यथार्थ जानकारी।] संदर्भार्थ—परिवेश परिस्थिति जीवन-पथ, देश के यथार्थ स्वरूप, उसकी सांस्कृतिक परम्पराएं, प्राचीन गौरव-गरिमा, वर्तमान बेवसी और पराधीनता का सही बोध।

दिग्वधू—अना, पृ० ५३,—दिशारूपी रमणी, दुलहन के समान सुन्दर सजी हुई दिशा।

दिग्वसना—परि, पृ० ८२—दिशाओं का वस्त्र पहने हुए, दिशाओं का कपड़ा पहनने वाली, नग्न, निर्वसन।

दिग्वास—आरा, पृ० ४—दिशाओं में रहने वाले, चारों ओर बसे या उगे हुए, पेड़-पौधे लता-वीरुध।

दिनमणि—परि, पृ० ५०—सूर्य, प्रभाकर।

दिनमान—परि०, पृ० ४१—सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय, दिन की लम्बाई।

दिवस की सान्ध्यवेला—कविश्री, पृ० ३८—दिन के बीत जाने का समय, सूर्य का अस्त हो जाना। जवानी के बीत जाने पर बुढ़ापा आ जाना, यौवन का अन्त होना और वृद्धावस्था आजाना।

दिवा-विभावरी—परि, पृ० ५२—दिन और रात। रातदिन।

दिव्य देह धारी—परि, पृ० २१६—अलौकिक देह धारण किये हुए।

दिव्यभावधर—अना, पृ० १५८—अलौकिक तेजस्वी भाव धारण करने वाला।

दिशावधि—अर्च, पृ० १०८; आरा, पृ० ९२—दिशाओं की सीमा, क्षितिज, धरती-आकाश की मिलन-रेखा।

दीन—तुल, पृ० २५—गरीब, निर्धन, दरिद्र, दयनीय दशा में पड़ा हुआ, विपन्न, दुर्दशा-ग्रस्त।

दीपक-पतंग-से—अना, पृ० ७५—दीप-शिखा के पतंगे के समान, जिस प्रकार दीपक की लौ पर पतंगा आकर गिरता है, वैसे ही·········आकर गिरते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीपयुगल—तुल, पृ० ३५—दो दीपक, दो चिराग। संदर्भार्थ—दीपकों के समान चमकती और प्रकाश दिखाती दो आँखें।

दीप्त—अना, पृ० ५८—जलता हुआ, उज्ज्वल, चमकता हुआ।

दीर्घ—अना, पृ० ५२—बड़ा, लम्बा, विशाल, विस्तृत।

दीर्ण—अना, पृ० ६८—चीरा हुआ, फटा हुआ, डरा या डराया हुआ, विदारित।

दीवान-आम—अना, पृ० ६२—आगरा और दिल्ली के लाल किलों में बने सभा-भवन जिनमें उपस्थित होकर सामान्य जनता अपने कष्ट-शिकायतें आदि मुगल-सम्राटों को सुनाया करती थी, सामान्य जन-संसद-भवन।

दीवानी—अर्च, पृ० ९५—पागल, बावली, भ्रमित, आश्चर्यचकित, हैरान।

दुई—आरा, पृ० १६—दो होने का भाव, द्वैत भाव, गैरपन, परायापन।

दुकूल—परि, पृ० ६२—वस्त्र, अंचल, दोनों किनारे।

दुकूल-प्रतिमा—तुल, पृ० ३८—[दुकूल=रेशमी वस्त्र, मुलायम पतला वस्त्र, चिकना-बारीक वस्त्र। प्रतिमा=मूर्ति।] रेशम के समान मुलायम सुकुमार बाहों वाली प्रियतमा—रत्नावली।

दुग्धधवल—अना, पृ० ९१—दूध के समान उज्ज्वल।

दुराक्रांत—अना, पृ० १५४—कठिनता से पराभूत होने वाला, दुर्जय।

दुराव—अना, पृ० १६१—छिपाव, छल, कपट।

दुराशा—परि, पृ० ५३—कठिनता से पूरी होने वाली आशा, अनुचित आशा, बुरी आशा।

दुरित—आरा, पृ० ३४; अर्च, पृ० ६—कठिन, पापी, दुष्कर्म, संकट। पाप, पातकी।

दुरितशयन—अर्च, पृ० ५५—[दुरित=कठिन, पापी, संकट। शयन=निद्रा, शय्या, मैथुन।] कलुषित या पापी विलास-विश्राम, पाप में डुबा देने वाली अज्ञान की निद्रा।

दुर्दम—तुल, पृ० २८; अना, पृ० १६—जिसका दमन कठिनता से हो सके, अप्रतिहत, भीषण, दुर्जय।

दुर्धर—अना, पृ० १७५—कठिनता से धारण करने योग्य, भीषण, भयंकर, दुर्बाध, कठिनता से निवारण किया जाने वाला।

दुर्धर्ष—तुल, पृ० १४—अना, पृ० १४—[धर्ष=पराभव, घमण्ड, हिंसा, अपमान, धृष्टता।] उग्र, प्रबल, जिसे वश में न किया जा सके, जिसका पराभव न किया जा सके। संदर्भार्थ—भीषण अजेय योद्धा, भयंकर घमासान युद्ध करने वाले।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्निवार—तुल, पृ० १२—जिस का निवारण कठिनता से हो सके, जिसे टालना कठिन हो, जिस पर विजय न पाई जा सके, जिससे अपनी रक्षा सरल न हो। जिसका घटना या होना अनिवार्य हो।

दुर्बल—तुल, पृ० २७—निर्बल, कमज़ोर, प्रभावहीन, जिस का विशेष फल या लाभ न हो।

दुर्मद—परि, पृ० १९२—अभिमानी, घमण्डी।

दुर्मिल—आरा, पृ० ९२—कठिनता से मिलने वाले, न मिलने वाले, बिखरे या छितरे हुए।

दुर्मिल—अर्च, पृ० १०—अनमेल, कठिनता से मिलने वाला।

दुर्वार—अना, पृ० १५२—भीषण, ज़िसे रोका न जा सके, अत्यन्त घातक।

दुष्कर—गी, पृ० २१—कठिनता से क्रिये जाने वाला, कष्टसाध्य।

दुसह—अर्च, पृ० ८५—कठिन, जो सहन न हो सके, अत्यन्त पीड़ा या कष्ट देने वाला।

दुस्तर—तुल, पृ० १२—[दुः=बुरा, अशुभ, कठिन, अनुचित, भीषण, भयंकर। तर=तरना, तैरना, पार करना] कठिनता से तरा जाने या पार होने वाला। संदर्भार्थ—सरलता से छिन्न-भिन्न न होने वाला। सघनता और दृढ़ता से जमा हुआ।

दुस्तार—परि, पृ० ८१—जो कठिनता से पार किया जा सके, दुर्गम और असीम।

दून-ड्योढ़-पौन—आरा, पृ० २०—दोगुना, डेढ़ गुना और पौन गुना, घटना-बढ़ना, एक समान न रहना, रूप-आकार परिवर्तित होना।

दूरगत—अना, पृ० ६०—दूर गया हुआ, बीता हुआ, पुराना, प्राचीन।

दूरतर—अना, पृ० ४—अधिक फासले पर, बहुत अलग हटा हुआ।

दूरप्रसर—तुल, पृ० १६—दूर तक फैला हुआ, देश प्रदेश में प्रसिद्ध।

दूर्वादल—अना, पृ० २५—दूब, घास।

दूसरी शक्ति—तुल, पृ० २४—अलक्ष्य शक्ति, भगवान की शक्ति, परब्रह्म परमात्मा।

दृक्करुणा—तुल, पृ० ४०—आंखों की करुणा, करुणादृष्टि, दयादृष्टि, कृपा कटाक्ष।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृग-दृग को रञ्जित कर, अञ्जन भर दो भर—गी, पृ० ८३—प्रत्येक प्राणी की आँखों को आनन्द के अंजन से सुशोभित कर दो, जिससे उनमें नवीन ज्ञान-ज्योति जगमगा उठे। प्रत्येक नयन को सुखानुभूति की रंगीन ज्योति से सुशोभित करदो और उसमें नवीन चेतना का अंजन लगा दो।

दृगछवि—तुल, पृ० ३०—आँखों की सुन्दरता, नयनों की शोभा, नेत्रों की ज्योति या आभा।

दृग-पल—तुल, पृ० ३४—आँखों की पलकें, बरौनियाँ।

दृग रूप तिल रहा—गी, पृ० ७४—आँखों में रूप की पुतली है, आखों की पुतली या तिल में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का रूप समाया है। यद्यपि वह रूपहीन है, तो भी उससे अनन्त रूप-विस्तार देखा जा सकता है।

दृगों की कोर—अना, पृ० ५०—आँखों के कोने, नयनों की नोक, नयन कटाक्षों का चुभीलापन।

दृप्तृधार—अना, पृ० १२७—[दृप्तृ=गर्वित, दीप्त, तेजपूर्ण, उन्मत्त।] उन्मत्त प्रवाह, क्षिप्रता से बहने वाली धारा।

दे दिया दान—तुल, पृ० ४५—अर्पित कर दिया, कन्या दान कर दिया, विवाह कर दिया। हमेशा के लिये दे दिया।

देदीप्यमान—तुल, पृ० ५९—चमकीला, उज्ज्वल, आलोकित, प्रकाशित, निर्मल, जगमगाता हुआ।

देवदूत—तुल, पृ० १४—स्वर्ग के संदेश वाहक, अवतारी पुरुष, देवताओं का सन्देश लाने वाले।

देवव्रत—अना, पृ० ५४—कार्तिकेय, कोई धार्मिक संकल्प।

देवांगना—तुल, पृ० ३३—देव रमणी, देवता की पत्नी, देवबाला।

देवालय—अर्चं, पृ० ४०—देवता का स्थान, देवमंदिर।

देवीदह—अना, पृ० १६५—[दह=नदी का वह भाग, जहाँ पानी बहुत गहरा हो। हौज़, बावली, तड़ाग।] लंका का सरोवर जिसमें सैंकड़ों नीले कमल उगे थे, शक्ति-पूजा के लिये भगवान राम ने देवीदह में से ही हनुमान जी को एक सौ साठ कमल ले आने को भेजा था।

देवेश्वर—अना, पृ० २०—देवों के स्वामी, इन्द्र, परमात्मा, ईश्वर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशकाल—तुल, पृ० २३—[देश=धरती, भूमि, स्थान, भूखण्ड। काल=समय, युग, मृत्यु, अन्त।] भारतभूमि और यहाँ बीतने वाला समय, उस समय भारत में रहने वाले आदमी। समय और स्थान सम्बंधी दूरी। विशेष युग और भूभाग या उसके निवासी।

देश की पृथ्वी—तुल, पृ० १४—मातृभूमि, जन्मभूमि, स्वदेश, अपनी धरती।

देशबल—तुल, पृ० १४—देश की शक्ति, सैनिक वल, राष्ट्रीय वल-विक्रम।

देशमूल—तुल, पृ० १६—देश का आधार, स्वदेश-प्रेम और अतीत के आदर्श, भारतीय सांस्कृतिक अवलम्ब।

देहज्वाला—अना, पृ० ६—शरीर को तपाने झुलसाने वाली आग।

देह-सप्तक—गी, पृ० २४—शरीर जिसमें सातों स्वर झंकृत होते हैं, सातों स्वरों से पूर्ण देह।

देहाती—नप, पृ० ४१—देहात का रहने वाला, ग्रामीण, गाँवनिवासी।

देहात्मबोध—तुल, पृ० ५६—अपने शरीर का बोध, शरीर की सुध-बुध।

दैन्य—अना, पृ० २४ दीनता, निर्धनता, असहाय दशा।

दैन्यहीन—परि, पृ० १८३—दीनता के भाव से रहित, स्वाभिमानी।

दैहिकदव—तुल, पृ० १३—[दैहिक=शारीरिक, देह सम्बंधी। दव=आग, दावानल, पीड़ा, ज्वर।] शारीरिक यातना, आग में जलकर भस्म हो जाना, दैहिक पीड़ा या सन्ताप।

दो कुमुद—अना, पृ० ५०—दो कमलिनी। संदर्भार्थ—दोनों उरोज।

दोगली—नप, पृ० ८८—वर्णसंकर, विभिन्न जाति के माता पिता से उत्पन्न सन्तान।

दोनाली—नप, पृ० ५६—दो नलियों वाली बन्दूक।

दोनों सुलतान—परि, पृ० ११२—दोनों मुसलमान बादशाह, गोलकुण्डा और बीजापुर के बादशाह।

दोषरण—आरा, पृ० ६२; गीतगुंज, पृ० ५०—[दोष=अपराध, कलंक, पाप, कलुप, ऐब, त्रुटि। रण=युद्ध, लड़ाई, शब्द, रमण, गति।] अपराध या पाप को शरण देने वाला, पापियों या कलंकियों को गति देने वाला।

द्यणुक—अना, पृ० ९८—[घनुक=विशाल, लम्बाचौड़ा, अत्यन्त स्थूल।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्युति—तुल, पृ० ५५—ज्योति, प्रकाश, आभा। द्युति नील नील=नीली झीनी आभा, नीला नीला हल्का प्रकाश।

द्रंष्टा—गी, पृ० २७—दाँत, दाढ़।

द्रवनीहार—परि, पृ० ५८—[द्रव=बहना, पिघलना। नीहार=ओस, कोहरा हिम, बर्फ।] पिघल कर बहते हुए बर्फ के समान बहते हुए आँसू।

द्रवित जल नीहार—गी, पृ० १४—[नीहार=ओस, पाला, हिम] द्रवित=बहता हुआ, पिघला हुआ] बहने वाला पानी ही जम कर सघन हिम बनता है, जमा हुआ बर्फ ही पिघल कर पानी बनता है।

द्रष्ट—गी, पृ० ५८—काटा हुआ, तोड़ा-मरोड़ा हुआ।

द्रिमद्रिम—अर्च, पृ० ८३—एक प्रकार की नाद, स्वर शब्द या ध्वनि जैसे डम डम डिम डिम, डमक डमक आदि।

द्रुततर—तुल, पृ० ३३—बहुत क्षिप्रतासे, तेज़ चाल से, शीघ्रता से, जल्दी जल्दी डग बढ़ाते हुए।

द्रुमदलशोभी—अप, पृ० ६५—वृक्ष के पत्तों के समान सुन्दर, तरु पल्लव जैसे ताज़े हरियाले चंचल।

द्वन्द्व—तुल, पृ० ३६—युगल, युग्म, जोड़ा, दो व्यक्तियों का परस्पर युद्ध, कलह, संघर्ष, अनिश्चय, दुर्ग, रहस्य। लड़ाई-झगड़ा, दुख-सुख।

द्वंद्व समर—तुल, पृ० २८—मलयुद्ध, संघर्ष, युद्ध।

द्वय—अर्च, पृ० १०२—दो।

द्विज—तुल, पृ० २४; परि० पृ० २०५—[द्वि=दो, दो बार। ज=जन्म लेना।] दो बार जन्म लेने वाला, पक्षी, चन्द्रमा, दाँत, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य। संदर्भार्थ—ब्राह्मण।

द्विजगण—तुल, पृ० २५—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, ऊँची जातियाँ, सवर्ण हिन्दु।

द्विदल—परि, पृ० १०४; अना, पृ० १६६—दो पत्ते, दो पत्तों के समान, दो पुष्प-पंखडियों के समान आँखें।

द्विधा—परि, पृ० १९६—दुचित्तापन, निश्चय न कर पाने की दशा।

द्वेष-विष-जर्जर—परि, पृ० १३१—ईर्ष्या के विष से आहत, क्षीण, शक्तिहीन, काँपता हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ध

धँधा—आरा, पृ० ४०—झंझट, झमेला, फँसा हुआ।

धन्य—तुल, पृ० ३१—कृतार्थ, कृत्कृत्य, प्रशंसनीय, पुण्यात्मा, भाग्यशाली, धन-दाता, धनी।

धन्या—अना, पृ० १३५—उपमाता, धात्री। प्रशंसनीय, भाग्यवती, पुण्यवती, संदर्भार्थ—निराला जी की सौभाग्यवती पुत्री सरोज।

धड़का—गीतगुंज, पृ० ६१—धड़ाका, खटका, आशंका, हृदय की धड़कन।

धडाका—अर्च, पृ० १०५—दिल काँपना, बादल की गर्जन, बिजली तड़कना, कड़ाका, धमाका।

धनुगुण—अना, पृ० १५३—धनुर्ष की डोरी, प्रत्यंचा।

धमार—नप, प० ६४—सीता स्वयंबर में रामचन्द्र के द्वारा तोड़े गये शंकर के धनुष के विषय में या उस अवसर पर गाये जाने वाले राग।

धमार—नप, पृ० ६८—उछल कूद, कलाबाजी, उपद्रव। फाग का एक भेद विशेष। होलियों में गाया जाने वाला एक जनगीत या राग-विशेष।

धरा—तुल, पृ० १५—पृथ्वी, धरती, ज़मीन, धारण करने वाली। संदर्भार्थ-भारतभूमि, भारतवासियों का जीवन।

धर्म—तुल, पृ० ४४—जो धारण किया जाय, जिस कार्य या कर्तव्य का पालन करना अनिवार्य हो। गुण, सामर्थ्य, कर्तव्य, शील, शुभ-कर्म। मानव और समाज के मंगल के लिए किये गये कर्म परमार्थ,। स्वर्ग मोक्ष या अगले जन्म में सुख पाने के लिये गये कर्म, उपासना भक्ति आदि। संदभार्थ—नारी का कर्तव्य।

धर्मघातक—परि, पृ० १९७—धर्म पर आघात करने वाला, धर्मनाशक, पापी।

धर्म परम—तुल, पृ० २५—सर्वोच्च, सर्वोत्तम या सर्वश्रेष्ठ कर्तव्य, एकमात्र धर्म, अनिवार्य कर्म।

धवल—अना, पृ० २६—स्वच्छ, श्वेत, सफ़ेद।

धवारी—अर्च, पृ० ३६—काँपती हुई, डोलती हुई, लहराती हुई।

धसकना (धसका)—अर्च, पृ० ४७—नीचे की ओर बैठना, भयभीत होना, गिर जाना।

धातुएँ—अर्च, पृ० २१—प्राकृतिक तत्त्व—जल, अग्नि, पृथ्वी, आकाश, रूप, रस गंध। सोना, चाँदी, लोहा ताम्बा, पीतल आदि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धान– आरा, पृ० २०—आधार, पोषण, अनाज ।

धान्य-धन—आरा, पृ० ६४—रुपया पैसा सम्पत्ति और अन्न, अनाज रूपी धन ।

धाम—अर्च, पृ० ११२—घर, स्थान, नगर, स्थान, लोक ।

धारण—तुल, पृ० ३६—धरना, रखना, पकड़ना, स्वीकार करना, रखने पकड़ने वाला ।

धाराधर—अर्च, पृ० ७१—मेघ, बादल, घन ।

धाराधर—अना, पृ० ८४—जलधारा धारण करने वाला, बादल, जलद, मेघ ।

धारा स्तव—तुल, पृ० २०—[धारा=प्रवाह, बहाव, स्त्रोत, नदी । स्तव= वन्दन, स्तुति-प्रार्थना ।] वन्दना की धारा जिस में बहती हो, वन्दना की बहाने वाला । त्यागोज्जीवित, ऊर्ध्वध्यान, धारास्तव—ये तीनों शब्द-समूह 'गान' के विशेषण हैं ।

धार्य—अना, पृ० १५६—धारण करने योग्य, उत्तरदायित्व लेने योग्य ।

धावन—आरा, पृ० ३—हरकारा, दूत, तेज दौड़कर जाने वाला, तीव्रगामी ।

धीमान—परि, पृ० २००—बुद्धिमान, विवेकशील ।

धूत—तुल, पृ० ५३—पवित्र, पावन, शुद्ध, गौरवशाली ।

धूप—अना, पृ० १४४—सुगंधित जड़ी-बूटियों से बनाया गया चूर्ण या लुब्दी, जो देव-पूजा में या सामान्य रूप से घर को सुवासित करने के लिये जलाई जाती है ।

धूमकेतु—अना, पृ० १००—पुच्छल तारा, जिस का उदय अशुभ माना जाता है ।

धूमायमान—तुल, पृ० ५५—धूमिल, धुंधला, धुमैला, धुएँ के समान रंगवाला और उमड़ता हुआ, अँधियाला, काला, अस्पष्ट ।

धूमिलतन—तुल, पृ० १६—धुंधला, धुमैला, अस्पष्ट, साँवला, धुएँ के समान ।

धूलिधूसरित—तुल, पृ० १६—धूल से सना हुआ, मटमैला, धूल से धुंधला, अस्पष्ट ।

धूसर—तुल, पृ० ५५—धुंधला, मटमैला, अस्पष्ट, धुंए के रंग का ।

धृति—गी, पृ० ७६—धारण करना, धैर्य, धारणा ।

धृत-विश्व-वर-करा—गी, पृ० ५८—सुन्दर हाथों से संसार को धारण करने वाली ।

धेनु—तुल, पृ० ४८—गाय, गौ ।

धोबी—नप, पृ० १००—अन्य व्यक्तियों के कपड़े धोने का काम करने वाला ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धौत—तुल, पृ० १५—धोया हुआ, प्रक्षालित, धवल, दीप्त, चाँदी, श्वेत। संदर्भार्थ—निर्मल, मेघहीन, शान्तिपूर्ण [मुसलमानी राजनीतिक और सांस्कृतिक आक्रमण की वर्षा थम जाने के कारण।]

धौला—नप, पृ० ४३—धवल, सफेद।

ध्यानमग्न—तुल, पृ० ५२—ध्यान में डूबा हुआ, ध्यान में लीन, विचार में लीन।

ध्रुवतारा—अना, पृ० ७२—एक नक्षत्र जो सदा एक स्थान पर स्थिर रहता है, दिशा निर्देश करने वाली, पथप्रदर्शिका, आदर्शलक्ष्य।

ध्वज—तुल, पृ० ३८—झण्डा, पताका, केतन।

ध्वनि—अना, पृ० ३९; अर्चना, पृ० ४१; तुलसी पृ० १२—शब्द, आवाज़, शोर, कोलाहल।

ध्वनित—तुल, पृ० ३२—गूँजती हुई, बजती हुई, शब्दित।

ध्वस्त—अना, पृ १०३; परि, पृ० ११२—विनष्ट, बरबाद, उजड़ा हुआ।

न

नन्दन—अना, पृ० ४५—आनन्द देने वाला, पुत्र, कृष्ण, महादेव, मेघ। संदभार्थ—इन्द्र का उपवन।

नन्दननिकुंज—अना, पृ० ६—स्वर्ग का कुंज, इन्द्र के उपवन में उगा कुंज।

नन्दन-स्वरूप—अना, पृ० ७५—नन्दनवन (स्वर्ग की वाटिका) के समान आनन्द, शीतलता, शान्ति देने वाला।

नक्षत्र-दीप-कक्ष—परि, पृ० १७५—कमरा जिस में सितारों के दीपक जलते हैं, तारों के दीपकों से जगमग नभोमण्डल।

नग—अर्च, पृ० ५५—नगीना, मणि, रत्न, अचल, स्थिर, पर्वत, वृक्ष, पर्वत आदि जड़ पदार्थ।

नग्न-नीलिमा—परि, पृ० २४०—निर्मल स्पष्ट नीलापन, नीलिमा जो किसी अन्य पदार्थ से ढकी या मिश्रित न हो।

नग्न-पद—तुल, पृ० ३३—नंगे पैरों, विन जूता या खड़ाऊँ पहने हुए।

नचहती—अर्थ, पृ० ९० अनचाही, अप्रिय, अनिच्छित, बुरी।

नजारा—नप, पृ० १२—दृश्य, शोभायवान या दर्शनीय प्राकृतिक स्थान या उत्सव, नाच, गाना, नाटक, सजावट आदि।

नटनागर—परि, पृ० ४३—[नट=अभिनेता, नर्तक। नागर=नगर का निवासी, चतुर, प्रवीण।] चतुर अभिनेता या नर्तक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नटी—अना, पृ० २३—नाचने वाली, नर्तकी, अभिनेत्री ।

नतवदना—अना, पृ० २३—नीचा मुख किये हुए, शीश झुकाए हुए ।

नद—तुल, पृ० १४—बहुत बड़ी या महान् सरिता, विशाल जल-स्रोत । सन्दर्भार्थ—शक्तिशाली उच्च और बड़े वर्ग, राज्य, जातियाँ आदि ।

नदियाँ—तुल, पृ० १४—सरिताएँ, जल-धाराएँ। संदर्भार्थ—विभिन्न जातियाँ वर्ग, समाज आदि ।

नदी झरने—कविश्री, पृ० ३८—पानी के छोटे-बड़े स्रोत या धाराएँ । जीवन में आने वाली बाधाएँ-विपत्तियाँ और कठिन कर्तव्य-कर्म, जो नदी-झरनों के समान हैं।

नदीश-नन्दिनी—परि, पृ० १४२—[नदीश=नदियों का पति या राजा, समुद्र। नन्दिनी=पुत्री, लड़की।] समुद्र की पुत्री लक्ष्मी, विश्व का पोषण करने वाली धनसम्पत्ति की देवी विष्णु की पत्नी लक्ष्मी ।

नभ—तुल, पृ० ११; परि, पृ० ८१—आकाश, व्योम, आसमान, सावन, वर्षा, मेघ, प्रकृति के पाँच तत्त्वों में से पहला तत्त्व, जिससे शब्द की उत्पत्ति होती है । संदर्भार्थ—भारतीयों के जीवन का सूना आकाश ।

नभजात—गी, पृ० ९०—आकाश में उत्पन्न, सावन में उत्पन्न, वर्षा से उत्पन्न । संदर्भार्थ—शब्द, शब्द-रूप प्रियतम ब्रह्म ।

नभतम—तुल, पृ० २९—आकाश का अंधकार, आकाश की नीलिमा, आसमान की कालिमा ।

नभ-नभ के तारे—अर्च, पृ० ४६—सूने हृदयों में प्रकाशित होने वाले सितारे, जैसे अंधियारे काले सूने आकाश में सितारे टिमटिमाते हुए प्रकाश देते हैं, ऐसे ही आप हताश सूने हृदयों में सितारों के समान चमकते और प्रकाश फैलाते हैं ।

नभोदेश—तुल, पृ० २२—आकाश देश, आकाश का विस्तार । निर्विकार और निर्भाव मानसिक दशा, संकल्प-विकल्प से मुक्त मन की दशा, भावशून्य अवस्था ।

नमनीय—आरा, पृ० ७९—पूजनीय, नमन करने योग्य ।

नर—तुल, पृ० १३—पुरुष, मर्द । संदर्भार्थ—पौरुष-पराक्रमशाली बीर योद्धा ।

नरनाथ—परि, पृ० १९७—राजा, नरेश, महाराज ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नराधम—परि, पृ० २३४—[नर+अधम=नराधम] नीच मनुष्य, पापी आदमी।

नरेन्द्र-वंदित—अना, पृ० २०—राजाओं के द्वारा प्रशंसित सम्मानित पूजित।

नर्गिस—अना, पृ० १६०—एक फूल विशेष, जो विशेषकर ईरान में होता है और फारसी और उर्दू साहित्य में आँखों के उपमान के रूप में प्रयुक्त होता है। प्रस्तुत सन्दर्भ में प्रेयसी या प्रेयसी का उपमान भी हो सकती है।

नर्तनावर्तोच्छ्वास—अना, पृ० १०४—[नर्तन=नाचना, चक्कराकार घूमना। आर्वत=भँवर। उच्छ्वास=साँस।] नाचते हुए भँवरों का उच्छ्वास छोड़ते हुए आना। लहरें भँवर बनाती नाचती तीव्रता से साँसें लेती आती हैं। नाचती भँवर बनाती लहरों की तीव्रता से आती जाती साँसें।

नर्तित—तुल, पृ० ५२—आनन्द से नृत्य करता हुआ, नाचता हुआ, नर्तन करता हुआ।

नलिन-नयन—परि, पृ० ७५—कमल के समान आँखें।

नलिनी—परि, पृ० ७६—नलिन का स्त्रीलिंग, कमलिनी, कुमुद।

नवनीत—अर्च, पृ० ७७—मक्खन, माखन। मक्खन के समान स्निग्ध मधुर, स्वादिष्ट।

नवप्रकाश—तुल, पृ० १७—नयी ज्योति, नवीन आलोक। संदर्भार्थ—ज्ञान का नया आलोक और प्रेरणा, अनुभूति की नवीन आभा।

नवरत्न—अप, पृ० १६६—नौ बहुमूल्य पत्थर—माणिक, नीलम, लहसुनिया, हीरा, पन्ना, पुखराज, मूँगा, मोती, गोमेद। या मोती, मानिक, वैदूर्य, गोमेद, हीरा, मूँगा, पद्मराग, पन्ना, नीलम। विक्रमादित्य की सभा के विख्यात नौ विद्वान—कालिदास, अमरसिंह, वररुचि, घटखर्पर, धनवन्तरि, क्षपणक, शंकु, वैतालभट्ट, वराहमिहिर।

नवल—तुल, पृ० ३५; अना, पृ० २२—नया, नवीन, ताजा, अभिनव, अभूतपूर्व।

नवलवयसिके—गी, पृ० ६४—नई उम्रवाली, तरुणी, युवती, किशोरी।

नव वय—गी, पृ० ५—[वय=आयु, अवस्था, उम्र। नव=नयी, ताज़ी।] नयी आयु, नयी आयु वाली, युवती।

नवोत्कर्ष—गी, पृ० ५—[नव+उत्कर्ष=नवोत्कर्ष] नवीन उन्नति, नया विकास, नयी बहार।

नश्वरता—तुल, पृ० ४०; अना, पृ० ६८—नाश होना, मरण, विनाश।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नष्ट—अना, पृ० ६८—ध्वंस, बरबाद ।

नाई—नप, पृ० १००—बाल काटने, हजामत बनाने का काम करने वाला । विवाह-सगाई, अन्य सामाजिक उत्सव-अनुष्ठान आदि का बुलावा देने का काम भी नाई करता है ।

नागन—नप, पृ० ६२—सर्पिणी, सांपिन, नागफनी, नागकेसर (फूलविशेष) ।

नाट्य-सूत्राधार—गी, पृ० ४८—नाटक का संचालक । जीवन के नाटक का निदेशक-परमात्मा ।

नातिन—नप, पृ० ११—लड़की की लड़की, धेवती ।

नाथ—नप, पृ० ४४—बैल या भैंसे को वश में रखने के लिए नाक के बीच से निकाल कर मुंह के दोनों ओर से होकर सिर पर बंधी रस्सी । नाक में बंधी रस्सी खींचने से बीच की झिल्ली खिचती है, जिस से पशु को बहुत कष्ट होता है ।

नाथ—अना, पृ० ६५—स्वामी, पति, मालिक, अधिनायक ।

नादवेद—परि, ८२—शब्दरूप वेद, ईश्वरी ज्ञान वेदों की वाणी, वेदों का सार जो शब्द रूप में प्रकट होता है ।

नाधना—आरा, पृ० ३९—हल या जुए में बैल को बाँधना या जोतना, गूंथना, पिरोना, आरम्भ करना, ठानना ।

नामशोभन—तुल, पृ० ४०—नाम के अनुरूप शोभा वाली, नाम की शोभा बढ़ाने वाली ।

नामनिशान—परि, पृ० १३०—अतापता, चिन्ह, संकेत, सामान्य उल्लेख ।

नामानुबंध—आरा, पृ० ६७—नामों का सिलसिला, नामों का क्रम, नामों का सम्बन्ध जोड़ने वाला ।

नायाब—अना, पृ० ११५—अनुपम, अत्यन्त श्रेष्ठ, दुर्लभ, बहुमूल्य ।

नाला—नप, पृ० १४—बरसाती छोटी जलधारा, नगर के गन्दे पानी के निकास के लिए बनाई गई बड़ी नाली, छोटी पतली नदी ।

निन्दित—अना, पृ० १००—निन्दा करने योग्य, या जिसकी निन्दा की गई हो, लज्जित, अपेक्षाकृत कम श्रेष्ठ, तुलना में तुच्छ ।

निःशब्द—तुल, पृ० १८—मौन, निस्तब्ध, शब्दहीन, अवाक् ।

निःशूला—तुल, पृ० ५६—निष्कण्टक, बाधारहित, स्वच्छन्द, स्वतन्त्रता से, पीड़ारहित, सुखपूर्वक ।

निःशेष—तुल, पृ० १३—समाप्त, नष्ट, कुछ भी शेष न रहना, पूर्ण रूप में विनाश होना ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निःश्वसना—तुल, पृ० ५४—साँस छोड़ने वाली, प्राण वायु को बाहर निकालने वाली, निश्वास छोड़ने वाली ।

निःसंग—अना, पृ० ३—अकेला, पृथक, अनासक्त, विरक्त, निर्लेप ।

निःसम्बल—तुल, पृ० ५२—सहारे के बिना, आधारहीन, अवलम्ब रहित, असहाय ।

निःसंशय—तुल, पृ० १७, २८—निश्चिन्त, द्विधारहित, सन्देह और भ्रम से रहित, निश्चित, निर्भय ।

निःसहाय—तुल, पृ० २५—जिसकी कोई सहायता न करता हो, असहाय, सहायताहीन, उपेक्षित, कष्टमय जीवन बिताने वाले ।

निःसुरभि—तुल, पृ० ४६—सुगंधिहीन, सुगंध रहित, पराग-विहीन, परिमल से रहित, मुरझाया हुआ, म्लान ।

निःस्व—अर्च, पृ० १७—दरिद्र, धनहीन ।

निःस्वन—तुल, पृ० १५—[स्वन=स्वर, शब्द, आवाज़ ।] चुपचाप, मौन नीरव ।

निःसृत—तुल, पृ० ३४—प्रवाहित, बहता हुआ, निकलता हुआ, रिसता हुआ, गतिशील, चलता हुआ ।

निक्वण—अर्च, पृ० ११०—नूपुरों का शब्द, पायलों की ध्वनि ।

निखारना—अर्च, पृ० १०८—साफ़ करना, निर्मल करना, उज्ज्वल बनाना ।

निखिल के शर—अर्च, पृ० ८९—सब तीर, सभी प्रकार के बाण । सभी प्रकार के अस्त्र-शस्त्र और साधन ।

निगड़—अना, पृ० १८७—बेड़ी, शृंखला, हाथी बांधने की साँकल ।

निगमागम—अर्च, पृ० ६१—[निगम—वेद, पथ, मार्ग, वेद का बोध कराने वाले शास्त्र । आगम=आना, समागम, जन्म, तंत्रशास्त्र, दर्शन ।] वेद-शास्त्र, तंत्रग्रंथ आदि ।

निगरानी—नप, पृ० १०—देखभाल, पहरा, रक्षा ।

निगह—नप, पृ० ८५—निगाह, नज़र, दृष्टि, आँख ।

निजतारत—अना, पृ० १६६—आत्मलीन, अपने ही स्वार्थ में लीन, अपने ही सुख-दुख लाभ-हानि के लिए प्रयत्नशील ।

नितम्ब—परि, पृ० २२५—चूतड़, पीठ के नीचे और जंघाओ के ऊपर गुदगुदा माँसल भाग ।

निद्रित जीवन—परि, पृ० ५०—सोता हुआ जीवन, प्रेम-मद और अनुभूति में बेसुध जीवन ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निदाघ—अना, पृ० ८४—गर्मी, ऊष्णता, दोपहरी, ग्रीष्म।

निमेषहीन—अना, पृ० ५—पलक मारे बिना, अपलक, एकटक, पल या क्षण हीन।

निम्न—तुल, पृ० ३७—नीचे, नीचे का, छोटा, तुच्छ।

नियमन—अना, पृ० १६७—नियंत्रण, संयम, नियमानुसार चलाना।

नियमितपद—तुल, पृ० १५—नियम के अनुसार पद रखना, निपेतुले डग भरना। संदर्भार्थ—राजनीतिक दासता के बंधनों में जीवन बिताना।

निरंकुश—परि, पृ० १३२—जिस पर किसी का अंकुश, शासन या नियंत्रण न हो, स्वेच्छाचारी, निर्दय, उच्छृंखल, अतिचारी।

निरंजन—अना, पृ० ५; परि, पृ० १५१—अंजन रहित, निर्दोष, अज्ञान से रहित, परमात्मा, शिव, निर्लेप, अव्यक्त, माया रहित।

निरपवाद—अप, पृ० १७०—अपवाद, निन्दा, अपकीर्ति से रहित। निर्दोष, सर्वदा प्रशंसनीय, अभिनन्दनीय।

निरभ्र—अना, पृ० ८४—बिना बादल, मेघहीन (गगन)।

निरलंकार—परि, पृ० १५४; गी, पृ० २४—[अलंकार=काव्य की शोभा बढ़ाने वाले या भाव को उत्कर्ष देने वाले साधन जैसे उपमा, रूपक, श्लेष आदि। आभूषण।] शृंगार सजावट के बिना अपने स्वाभाविक रूप में आभूषणों के बिना, अलंकारों से रहित (कविता)।

निरलस—अना, पृ० ५, १६२—आलस-विहीन, सक्रिय, सचेष्ट।

निरवमान—अर्च, पृ० ८०—अवज्ञा, अपमान या तिरस्कार से रहित। किसी के प्रति अपमान, अवज्ञा या तिरसकार की भावना न रखने वाला।

निराकांक्ष—आरा, पृ० ५०—आकांक्षा रहित, इच्छा या वासना से परे।

निराकार—तुल, पृ० ३८—आकार-हीन, जिसका कोई दैहिक स्वरूप न हो, रूप, रंग, आकार से रहित।

निराधार—अना, पृ० १५—आधार-बिना, वेसहारे, निरावलम्ब, अधर। संदर्भार्थ—अकारण, बिना किसी अपराध के।

निरानन्द—तुल, पृ० १५—आनन्द-रहित, दुखी, अप्रसन्न।

निराना—नप, पृ० १२—खेत में से अनावश्यक अपने आप उगे हानिकारक पौधों-घास आदि को जड़ से निकालना।

निरामयता—अर्च, पृ० ५०; गीत गुंज, पृ० ४९—नीरोगता, निर्दोषता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निरावरण—अना, पृ० १४८—[नि=नहीं, रहित । . रावण=रुलाने. या हाहाकार कराने वाला ।] सुखदायी, सुकुमार ।

निरुद्गम—आरा, पृ० ५०—अनादि, अजन्मा, जिसका उद्गम न हो ।

निरुपम—तुल, पृ० ३४—अद्वितीय, जिसकी तुलना या समानता न हो, उपमा रहित, अनुपम ।

निरुपाय—अना, पृ० १५, ७२—उपाय रहित, जो उपाय न कर सके, विवश ।

निर्गंध कुसुम—परि, पृ० २३५—सुगंधि रहित फूल । हृदय की कोमल अनुभूतियों या भावनाओं से रहित मनुष्य जो देखने में फूल के समान सुन्दर सुकुमार लगता है ।

निर्घोष—अना पृ० ६८—नाद, घोषणा, ध्वनि, आवाज़, स्वर, शब्द ।

निर्जन—अना, पृ० २७—मनुष्यों से रहित, सूना, वन, जंगल ।

निर्जर—परि, पृ० २०२; तुल, पृ० १४; अना, पृ० ६७—[निः+जर=निर्जर] नाश या जरा रहित, अजर अमर, सदा जवान रहने वाला, देवता, अक्षय ।

निर्जल—अर्च, पृ० ५० –बिना पानी, जल हीन, नीरस, सूखा-मुरझाया ।

निर्झर—तुल, पृ० ५०— झरना, सोता, स्रोत, जलधारा, जलप्रपात ।

निर्झर-गर्जित—अना, पृ० ६८ – निर्झर के समान गरजते हुए । जलधारा की गर्जन से गूंजता हुआ ।

निर्दय—अना, पृ० ५२—दयाहीन, कठोर, अत्याचारी ।

निर्दलन-भय—अर्च, पृ० ३—[निर्दलन=नाश करना, भंग करना, विनाश करने वाला] विनाश या उत्पीड़न का भय ।

निर्द्वन्द्व—परि, पृ० २९—[निः=विहीन, रहित, अभाव । द्वन्द्व=दो, जोड़ी, दुखसुख, रातदिन, अंधकार, प्रकाश आदि ।] दुख-सुख से परे, स्वच्छन्द ।

निर्धन—परि, पृ० ३२—धनहीन, गरीब, दीनहीन, तुच्छ ।

निर्धूम—अना, पृ० ८४—धुएं से रहित, स्पष्ट, उज्ज्वल, निर्मल ।

निर्निमेष—अना, पृ० २९—[निः+निमेष] बिना पलक मारे, अपलक नेत्रों से ।

निर्बंध—परि, पृ० १६०—बाधा-बंधन रहित, स्वाधीन, उच्छृंखल ।

निर्बीज—परि, पृ० २३८—जिसका बीज ही पैदा न हो, निर्मूल, जिसका वंश नष्ट हो जाय, पूर्ण विनाश ।

निर्भर—तुल, पृ० २८—अत्यन्त, तीव्र, गाढ़, भरा हुआ, अवलम्बित, आश्रित, आधारित, दृढ़, जमा रहना, डटे रहना ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्भारि—गी, पृ० ४८—भारहीन, जिसमें बोझ न हो, हल्का ।

निर्मय—अर्च, पृ० १०२—[मय=दानव-शिल्पी मय, जिसने इन्द्रप्रस्त में युधिष्ठर के लिये, अद्‌भुत सभाभवन बनाया था। सहित, युक्त, भरा हुआ। शराब, खच्चर, घोड़ा, ऊँट।] संदर्भार्थ—शुद्ध, बिना किसी अन्य पदार्थ से मिश्रित, निज में पूर्ण और समृद्ध ।

निर्मल—अना, पृ० ६८—मैल, रज आदि से रहित, उज्ज्वल, साफ़, शुद्ध ।

निर्यातन—आरा, पृ० ५७ ; गीतगुंज, पृ० ४९—प्रतिशोध, प्रतिकार, ऋण चुकाना, धरोहर वापस करना, मारण, विनिमय ।

निर्वाण—तुल, पृ० ३६—मोक्ष, मुक्ति, छुटकारा, मुक्त, शांत, अचल, परम गति, मृत, जो अस्त हो गया हो, विनाश, संगम ।

निर्वात—आरा, पृ० १७—वात रहित, जहाँ हवा न हो, हवा से रक्षित, शांत ।

निर्वार—अर्च, पृ० ७—[वार=नियत समय, अवसर, वाण, शिव, रोक, घिरा हुआ स्थान, ढक्कन, द्वार ।] मुक्त, स्वतंत्र, जिस का निवारण न हो सके, अवश्यंभावी, अनिवार्य ।

निर्विरोध—तुल, पृ० ५६—बिना विरोध, सर्वसम्मति से, स्वाधीनता पूर्वक ।

निर्वेदन—गी, पृ० ८१—संवेदना, दया या करुणा से हीन । निर्दय, कठोर ।

निलय—अना, पृ० १०४—वासस्थान, घर, नष्ट या लुप्त हो जाना ।

निवाजे—गीत गुंज, पृ० ५५—कृपा की, अनुग्रत किया ।

निवारी—गीत गुंज, पृ० ३९—जूही की जाति का एक फूल या पौधा ।

निविड़—अना, पृ० १६२; अर्च, पृ० ४० ; परि, पृ० ५१—घोर, सघन, बड़े आकार का, कसा हुआ ।

निशा प्रिय उर शयन सुखधन—गी, पृ० १४—निशा रूपिणी रमणी का अपने प्रियतम के हृदय पर सोकर सुख का धन प्राप्त करना, रात्रि-रूप सुन्दरी अपने प्रियतम के हृदय से चिपट कर सोने में जो अमूल्य सुख लूटती है ।

निशावसान—अर्च, पृ० ८०—रात की समाप्ति, रात का व्यतीत होना । सबेरा, प्रभात, ऊषा काल ।

निशित—अना, पृ० १५८—तीक्ष्ण करना, सान पर चढ़ाना, धार चढ़ा हुआ।

निशि-तम-डाल-मौन—गी, पृ० ४७—रात के अंधकार की डाली पर मौन बैठा हुआ, रात के अँधेरे की डाली पर छिपा निश्शब्द बैठा हुआ ।

निशिवासर—तुल, पृ० ५८—रात दिन, निरन्तर, लगातार ।

निशीथ—परि, पृ० ५३—आधी रात, निशा, शयनकाल ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निश्चल—तुल, पृ० १३; अना, पृ० २—अचल, स्थिर, शिथिल, प्रयासहीन, निष्क्रिय। संदर्भार्थ युद्धविरत, शांत, शक्ति-पराक्रम खो बैठा हुआ।

निश्चलत्प्राण—तुल, पृ० ११—[निश्चलत=शिथिल, कंपनहीन, निष्क्रिय। प्राण=जीवनी शक्ति, बल, जान, वायु] प्राणहीन, जीवन-शक्तिरहित, मुरझाया हुआ, निर्जीव।

निश्चेतन—अना, पृ० १५३; तुल, पृ० ५८—अचेतन, निष्क्रिय, अबोध। अज्ञानी और अकर्मण्य मनुष्य समाज—भारतीय।

निश्चय—तुल, पृ० २८—सन्देह रहित ज्ञान, विश्वास, निर्णय, जाँच, फैसला, निबटारा, आशंका रहित, निर्विवाद।

निश्छल—तुल, पृ० २१—[निः=अभाव, नहीं, रहित, हीन। छल=कपट, धोखा, माया, असत्य।] माया रहित, निष्कपट, वास्तविक, यथार्थ।

निश्वास—अना, पृ० ५२—साँस को बाहर निकालना, बहिर्मुख श्वास, लम्बी साँस।

निश्शर—अर्च, पृ० ७१—वाणों से रहित, वाण-विहीन, निश्शस्त्र, निर्बल, निहत्था, चिन्ता रहित, जलहीन।

निश्शर-विश्वतरणा—अर्च, पृ० ३—[निः=रहित, अभाव, हीन, विना। शर=वाण, सरकण्डा, हिंसा, चिन्ता, जल। विश्व तरणा=संसार से पार करने वाली।] चिन्ता रहित, अविनश्वर, जलहीन। वह अविनश्वर जो संसार से तार दे, जलहीन संसार-सागर से पार उतारने वाली।

निश्शेषचेतन—अर्च, पृ० ८९—ऐसी चेतना जिस में कुछ भी शेष न रहे, पूर्ण चेतन, सर्व विध चेतना, जीवन के सभी क्षेत्रों में जागरण।

निष्कर—अर्च, पृ० ७१—बिना हाथों का, किरणों से विहीन, प्रकाशहीन।

निष्कल—अर्च, पृ० २०—कला रहित, नष्टवीर्य, क्षीण, सम्पूर्ण, ब्रह्म, आधार।

निष्क्रान्त—अर्च, पृ० ४८—निकाला गया, भगाया गया, निर्गत, दबाया गया। [क्रान्त=गया हुआ, लाँघा हुआ, बीता हुआ, दबा हुआ, चढ़ा हुआ पाँव, घोड़ा, गमन, डग।]

निष्क्रिय—तुल, पृ० १६—क्रियाहीन, निकम्मा, आलसी, शिथिल, प्रयास हीन, चेष्टा रहित, जड़, प्राणहीन, निर्जीव, अकर्मण्य।

निष्पन्द—अना, पृ० १६२—धड़कनहीन, निष्क्रिय, जड़, गतिहीन, स्थिर।

निष्पात—(नयन) तुल, पृ० ५२—विना गिरे हुए अपलक, विना लगे हुए, खुली हुई, टकटकी लगाए हुए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निष्पावन—आरा, पृ० २६—अपवित्र, मलिन, गंदी, पापी, अशुद्ध।

निष्प्रश्रय—तुल, पृ० ५६—[प्रश्रय=विनय, प्रीति, सहारा] निराधार, बेसहारे।

निष्प्रीति—तुल, पृ० ४६—प्रीति से हीन, प्रेमविहीन, बिना प्यार, स्नेह से रहित, ममता रहित।

निस्तब्ध—अना, पृ० ६३—मौन, निश्शब्द, हक्काबक्का, अवाक, सन्नाटे में आया हुआ।

निस्तरंग—तुल, पृ० २२—[निः=रहित, हीन, अभाव।] तरंग=लहर, चंचलता, चपलता, क्रियाशीलता।] लहरहीन, अचपल, स्थिर, शान्त। संदर्भार्थ—विभिन्न विकारों और भावों के संघर्ष से मुक्त शांत और स्थिर।

निस्तल—तुल, पृ० ३५—जिसका तल न हो, जिसकी गहराई न नापी जा सके, अतल, अगाध।

निस्सीम—तुल, पृ० ४४—जिसकी सीमा न हो, असीम, अनन्त, सर्वव्यापक, सर्वविस्तृत, कूल या तट हीन।

नीड़-विहंगम—परि, पृ० १६१—घोंसलों में रहने वाला पक्षी, पक्षियों के छोटे-छोटे बच्चे।

नीड़सुख—अना, पृ० ८—घोंसले का सुख, घर के विश्राम का सुख।

नीड़स्थ—परि, पृ० २३८—घोंसले में बैठा हुआ, भौतिकता में फँसा हुआ, सांसारिकता में लीन।

नीम—गीतगुंज, पृ० ५३—एक वृक्ष, जिसके पत्तों में आरी के समान दाँते होते हैं। इसके पत्ते, फल, छाल सभी कड़ए होते हैं। इसकी पतली मुलायम टहनी की दातुन भी की जाती है।

नीरज—तुल, पृ० ५२—नीर से जन्म लेने वाला, पानी में उगने वाला, कमल, सरोज, पंकज।

नीरद—अना, पृ० १९३—पानी देने वाला, बादल, मेघ, जलद।

नीरव—अना, पृ० २७—[रव=शब्द, कोलाहल।] निश्शब्द, सन्नाटे से पूर्ण, अवाक, मौन।

नीरव सन्तोष—अना, पृ० ६८—मौन होकर सन्तोष करना, शान्त होकर सन्तुष्ट रहना।

नीरस—अना, पृ० १०—रसहीन, स्वादहीन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीलगाय—नप, पृ० १७—एक प्रकार की जंगली गाय, जो रूपरंग में बारहसिंगे के समान होती है। इसकी पूँछ के चँवर बनाये जाते हैं।

नीलम-सोपान—तुल, पृ० ४६—नीलम की पौड़ियाँ, नीलमणि की सीढ़ियाँ। संदर्भार्थ—निर्मल नीले आकाश की ऊँचाइयाँ।

नीलवसना—तुल, पृ० ५४—नीले वस्त्र पहने हुए, नीला परिधान धारण करने वाली, नीला अम्बर ही जिसका परिधान है।

नील-शयन—गी, पृ० ८४—नीले आकाश में सोने या विश्राम करने वाली।

नीलांचल—परि, पृ० १२३—नीला वस्त्र, नीला ओढ़ना।

नीलाम्बरा—अना पृ० ४—नीले वस्त्रों वाली, नीले आकाश वाली।

नीलिमा—परि, पृ० ८१—नीलापन, नीलारंग।

नूतन—अना, पृ० ६७—नया, नवीन, अभिनव, ताजा।

नूपुर—अना, पृ० ३७; परि, पृ० ४४—पैरों में पहनने का घुंघरू जड़ा आभूषण, पायल, पाजेब।

नृत्यपर—अना, पृ० २३—नाचने की कला में श्रेष्ठ।

नृपवेश—तुल, पृ० १४—राजाओं के वेश में, नाम के राजा।

नृम्न—अर्च, पृ० ५—धन, बल, पौरुष, कृष्ण।

नेगी—गी, पृ० १६—नेग लेने वाला, सेवक, याचक, प्रार्थी, भिखारी, चाकर।

नैतिक नीरस—तुल, पृ० ४६—[नैतिक=नीति की बातें करने वाले, नियम-सिद्धान्तों के बंधनों में बंधे हुए, नीति से सम्बन्ध रखने वाली, नीति-विषयक। नीरस=रस-विहीन, आनन्द से रहित, स्वादहीन, भावहीन।] नीति की बातें बघारने वाले, कट्टर सिद्धान्तों या नियमों के बंधनों में बँधे जैसे भाव या रस में लीन नहीं होते, रीति-नीति वाले जैसे नीरस रूखे या भावना हीन होते हैं।

नैमित्तिक—अना, पृ० १३४—सोद्देश्य, किसी विशेष प्रयोजन के लिये, परमात्मा का इसमें भी कोई विशेष उद्देश्य या प्रयोजन है।

नैश—अना, पृ० १२६, परि, पृ० २२०—निशा सम्बन्धी, रात का, रात में दीखने या आने वाला (स्वप्न)।

नैशांधकार—अना, पृ० १४६—रात का अंधेरा।

नैसर्गिकता—अना, पृ० १४७—स्वाभाविकता, सहजता, प्राकृतिकता।

नैहर तुल, पृ० ४२—पीहर, लड़की के माँ-बाप का घर, मैका।

नौजवाँ—नप, पृ० ४१—नौजवान, नवयुवक, बीस-पच्चीस वर्ष का व्यक्ति।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नौबत आना—परि, पृ० १४२—[नौबत=बारी, दुर्दशा, स्थिति, उत्सव मंगल आदि सूचित करने वाला बाजा, धौंसा, नगाड़ा] दशा, अवस्था, स्थिति, दुर्गत होना, बारी आना।

न्यस्त—अना, पृ० ११४—छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ, रखा या डाला हुआ।

न्यायधर्म-वंचित—परि, पृ० १९८—न्याय और धर्म से हीन, अन्यायी और पापी, न्याय और धर्म का पालन न करने वाला।

प

पंक—अना, पृ० १९—कीचड, गीली मिट्टी, गारा, दलदल।

पंक-उर—गी, पृ० २०—कीचड़ के हृदय में, कीचड़, दलदल या गीली सनी हुई मिट्टी के बीच में।

पंक-कर्दम—अर्च, पृ० ३९—कीचड़ से गंदा, कलुषित, मिट्टी-गारे में सना हुआ।

पंकज-दृग—गी, पृ० ४—[पंकज=कीचड़ में उत्पन्न होने वाला, कमल।] कमल के समान सुन्दर नयन, कमल जैसे खिले हुए निर्मल पवित्र नेत्र।

पंक-प्रवाहित—तुल, पृ० २०—बहती हुई कीचड़, बहती हुई कीचड़ से भरी। संदर्भार्थ—वह नदी या जलधारा जिसके पानी में कीचड़ मिली हो, मटमैले गदले पानी से भरी नदी।

पंकिल—अना, पृ० ७—कीचड़ से भरी, गारे मिट्टी में सनी, दलदल से पूर्ण।

पंकिल सरि—तुल, २०—कीचड़ से भरी नदियाँ, मैले गन्दे पानी वाली जलधाराएं।

पंच—अर्च, पृ० ७१—पाँच की संख्या, पाँच मनुष्यों का समूह, मध्यस्थ, न्याय करने वाली सभा या सभा का सदस्य।

पंचतीर्थ—तुल, पृ० ३३—पंचवटी में एक स्थान, जहाँ पाँच तीर्थ—विश्रान्ति, शौकर, नैमिष, प्रयाग और पुष्कर को एकत्र माना जाता है।

पंचदशी कामनियाँ—अना, पृ० ४०—पन्द्रह वर्षीया युवतियाँ, पन्द्रह वर्ष की आयु वाली लड़कियाँ।

पंचभूतात्मक—परि, पृ० १५६—आकाश, वायु, अग्नि, जल, और पृथ्वी—इन पाँच तत्त्वों से सम्बन्ध रखने वाला या बना हुआ, सारे जड़-चेतन पदार्थ इन्हीं पाँचों तत्त्वों से निर्मित हैं, इसलिये सभी दृश्य अदृश्य जगत पंच भूतात्मक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंचम—परि, पृ० ७१—पाँचवा, चतुर, सुन्दर, एक राग विशेष, संगीत के सप्तक का पाँचवाँ स्वर, जो कोयल की कूक के समान मधुर और कोमल माना जाता है ।

पंचमस्वर— अना, पृ० १२—संगीत के सात स्वरों [षड्ज, ऋषभ, गान्धार, मध्यम, पंचम, धैवत, निषाद] में से पाँचवाँ स्वर, जो कोयल की कूक के समान कोमल और मधुर माना जाता है । पंचम स्वर अत्यन्त कोमल और मधुर होने के कारण कोयल की कूक को पंचम स्वर कहा जाता है ।

पंचशर—परि, पृ० ८२—कामदेव, मदन, कामदेव के पाँच बाण—सम्मोहन, उन्मादन, स्तंभन, शोषण, तापन । कामदेव के पाँच बाण, जो फूलों के बताए जाते हैं, वे इस प्रकार हैं—लाल कमल, अशोक, आम्र मंजरी, चमेली, नील कमल ।

पंजा लड़ाना—परि, पृ० १३७—संघर्ष या युद्ध करना, युद्ध की चुनौती देना ।

पंजों बाँटते हुए—नप, पृ० ६०—पाँच-पाँच के हिसाब से बंटवारा करते हुए । जैसे सौ आम पाँच आदमियों में बाँटना है तो पाँच-पाँच आम प्रत्येक को दिये जायेंगे । इस प्रकार चार चक्करों में हर एक पर चार चार पंजे (बीस-बीस) आम आ जायेंगे । तीस-पैंतीस वर्ष पहले पंजों का हिसाब बहुत प्रचलित था । आम, संतरे, केले, सेव, अखरोट आदि पंजों के हिसाब से बेचे जाते थे । एक और भी विचित्र बात यह थी कि कोई चीज़ पच्चीस पंजे की सौ, कोई तीस पंजे की सौ, कोई पैंतीस पंजे की सौ—बीस पंजे की सौ कोई चीज़ नहीं होती थी ।

पकरिया—नप, पृ० ३५—टेक, सहारा, पकड़ने के लिए कोई आधार—डण्डा, बांस आदि ।

पकौड़ी—नप, पृ० ३७—बेसन में आलू, गोभी, बैंगन, पालक, मेथी आदि मिला कर तेल या घी में तली हुई गोली ।

पक्ष—तुल, पृ० ३६—पंख, पर, दल, वर्ग, पार्टी, पखवारा (१५ दिन का समय) बगल, दायाँ या बांया भाग, ओर, तरफ । दो सप्ताह का समय ।

पक्ष्मल—तुल, पृ० ३०—लम्बी सुन्दर बरौनी वाला, बलदार ।

पखियाँ—अर्च, पृ० १५—पंख । संदर्भार्थ—पलकें, पालकों का आवरण ।

पछाँह—नप, पृ० १४—पश्चिम, पश्चिम की ओर । पश्चिम की ओर बसे हुए नगर, ग्राम, मनुष्य आदि ।

पटकना—परि, पृ० १२२—तेज़ी से गिराना, धरती पर दे मारना, तुच्छ पदार्थ के समान किसी के सामने डाल देना या किसी को दे देना, सौंप देना ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पटल—परि, पृ० ८२—पट, तख्ता, आधार। घनपटलश्याम=काले बादल का पट या तख्ता, बादल का काला आवरण।

पतंग—अना, पृ० १—सूरज, पतंगा, शलभ, कनकौआ।

पतनाघात—परि, पृ० २६—[पतन=अवनति होना, नीचे गिरना, गिरावट। आघात=चोट, घाव, प्रहार, विपत्ति, धक्का, वध।] अवनति या गिरावट का प्रहार, पतन के कारण आई हुई विपत्ति।

पतवार—परि, पृ० ३०—चप्पू, नाव चलाने का बाँस, डाँड।

पताक—आरा, पृ० १७—पताका, ध्वज, झण्डा, निशान, प्रतीक।

पतित—अना, पृ० ५६—नीचे गिरा हुआ, धर्माचरण से गिरा हुआ, नीच कर्म करने वाला, पापी, धर्मभ्रष्ट।

पतित-पत—आरा, पृ० ६४—पेड़ से टूट कर नीचे गिरे या गिरते हुए पत्ते।

पतित-पावनी—अर्च, पृ० ६६—नीचे गिरे हुए, धर्म-आचार-भ्रष्ट व्यक्तियों या पापियों को पवित्र करने वाली।

पत्तल—परि, पृ० १२५—ढाक, वट आदि वृक्षों के पत्तों से बनी थाली, जो भोजन परोसने के लिये काम में लाई जाती है।

पत्थर—अना, पृ० ६०—शिला, पाषाण, कठोर, भावना या अनुभूतिहीन।

पत्रांक—परि, पृ० १७१—पत्तों की गोद, पत्तों की शैया।

पथ—परि, पृ० २६—मार्ग, रास्ता, साधन।

पथिक—परि, पृ० २६—यात्री, बटोही, पंथी, साधक।

पद-पतित—परि, पृ० २२५—पैरों पर गिरा हुआ, शरणागत, पैरों पड़ कर दीनता से गिड़गिड़ाने वाला, क्षमा माँगने या कोई याचना करने वाला। संदर्भार्थ—प्रेम की भीख माँगने वाला।

पद-पद-चल—गी, पृ०—छन्द के प्रत्येक चरण में से होकर, छन्द की प्रत्येक पंक्ति में चलती हुई।

पद-राग-रञ्जित—गी, पृ० ६७—चरणों के प्रेम से रंगा हुआ। (मरते समय) हृदय तुम्हारे चरणों के प्रेम में डूबा हो।

पदाति—अप, पृ० १७०—पैदल सैनिक, पैदल सेनाएं।

पद्म-जल-बिन्दु पर—गी, पृ० ११—कमल पल्लवों पर पड़ी हुई जल की बूंदें, कमल पर पड़ी हुई ओस की बूंदें। कमल के गालों पर पड़ी आँसुओं की बूदें, जैसे कमल सूर्य के विरह में रोया है।

पद्म-पत्र—परि, पृ० १४०—कमल-पत्र, कमल के पत्ते, कमल की पंखड़ियाँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पनहारिन—नप, पृ० ३९—कहारी, पानी भरने वाली, कहार या घींवर जाति की स्त्री।

पपीहावधू—परि, पृ० ८५ – चातिकी, पपीहे की पत्नी।

पय—परि, पृ० ७८—दूध, पानी।

पयस्विनि सरि—तुल, पृ० ३३—पयस्विनि नामक नदी, जो चित्रकूट प्रदेश में बहती है।

पयोधार—तुल, पृ० ३१—पानी की धार, दूध की धार, दूध के समान निर्मल जलधारा।

पयोधि—परि, पृ० २१५—समुद्र, सागर, जलधि।

पर—तुल, पृ० २९—अन्य, ऊपर, पराया, अन्य का, आगे या बाद का, पृथक अतिरिक्त, परे, हद से बाहर, सर्वोपरि, सर्वोच्च, सर्वश्रेष्ठ, सर्वातीत, विरोधी, लीन, निरत, विपक्षी; शत्रु। जीवनातीत, अलौकिक।

परकृति—गी, पृ० ७४—[पर=दूसरी, अन्य, जो सामान्य न हो, श्रेष्ठ।] श्रेष्ठ रचना, उत्तम कार्य।

परजे—नप, पृ० १००—प्रजाजन, अधीन जन, निर्धन आदमी।

परभर—गी, पृ० ५१—पंख फैला कर, उड़ती हुई।

परम—तुल, पृ० २१—महान्, अन्तिम, सर्वोच्च, सर्वोत्तम, अनुपम।

परमारति—अना, पृ० १९३—रोक या विराम, अतिशय क्लेश, मनोव्यथा।

पर मारना—अर्च, पृ० ३०—उड़ने का प्रयास करना, पंख फड़फड़ाना, भरसक प्रयत्न करना।

परार्थ—परि, पृ० १३२—[पर=अन्य, पराया, दूसरा। अर्थ=प्रयोजन, उद्देश्य, धन, भलाई, उपयोगिता।] दूसरों की भलाई, परोपकार, जीवन का सर्वोत्तम प्रयोजन, भगवान का चिन्तन आराधन आदि, मोक्ष-प्राप्ति-साधना।

परशुधर—परि, पृ० २१८—परसा धारण करने वाला, परशुराम।

परा—आरा, पृ० ४—परमार्थ का ज्ञान कराने वाली विद्या, ब्रह्मविद्या, यथार्थ ज्ञान सम्पन्न।

पराकृष्ट—अर्च, पृ० ३२—अन्य के द्वारा आकर्षित, ब्रह्मविद्या की ओर आकर्षित।

पराग—अना, पृ० २९—परिमल, पुष्पधूलि, फूल के भीतर रहने वाली सुगन्धित रज, जो छूने में अत्यन्त चिकनी और हल्के पीले रंग की होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परांग संचार—अना, पृ० ४१—पराग का उड़ना, फैलना, बरसना।

परापथ—अर्च, पृ० २७—[परा=ब्रह्मविद्या, गंगा, श्रेष्ठ। पथ=मार्ग, रास्ता।] ब्रह्मविद्या का मार्ग, शुद्ध ज्ञान का मार्ग।

परावर—आरा, पृ० १८—कार्य और कारण, विश्व, परम्परागत, सर्वश्रेष्ठ, निकट का और दूर का।

पराशक्ति—नप, पृ० ७६—ब्रह्मविद्या की शक्ति, ब्रह्म की शक्ति, ब्रह्मज्ञान की शक्ति।

परिक्रमण—तुल, पृ० ३४—परिक्रमा करना, चारों ओर चक्कर काटना या घूमना, फेरी लगाना, टहलना, क्रम, प्रवेश।

परिचय—तुल, पृ० १७—जान पहचान, जानना, ज्ञात होना। तुल, पृ० ३५, संदर्भार्थ—सबल अविच्छेद्य सम्बन्ध, अटूट सशक्त आकर्षण।

परिचय-परिचय पर जग गया भेद—गी, पृ० ६६—जब एक दूसरे से परिचय बढ़ा तो भेद भाव उत्पन्न हो गया। अधिक निकट आने या जान-पहचान होने से कभी-कभी मनमुटाव भी हो जाता है।

परिणति अर्च, पृ० १०७—अत्यन्त झुकना, विनय से नत होना, अवसान, पूर्ण विकास या परिपक्वता को प्राप्त होना।

परिणय—अना, पृ० ६८, १२३—विवाह के प्रस्ताव, सगाई, विवाह।

परिणाम—परि, पृ० २०३—नतीजा, फल, प्रतिक्रिया।

परिमल—अना, पृ० २६—पराग, पुष्पधूलि, फूल के भीतर की मसृण, पीली मधुर गंध वाली रज।

परिमाप—आरा, पृ० २७—माप, नाप, तोल, मात्रा, आकार।

परिवर्तित—अना, पृ० ५८—बदली हुई, अन्य रूप, आकार, गुण धारण किये हुए।

परिहार—परि, पृ० १३१—त्यागना, छोड़ना, दोष का निराकरण, अनादर, अवज्ञा, खण्डन।

परिहास—परि, पृ० ४७—हास्य-विनोद, हँसी-मजाक, हँसना, व्यंग्य करना।

परी-नागरी—अना, पृ० १४३—अप्सरा के समान सुन्दर युवती, चतुर अप्सरा के समान स्त्री।

पर्णों के—तुल, पृ० २४—[पर्ण=पत्ता, पान, पलाश का पेड़, पंख।] संदर्भार्थ—सामान्य जन समाज, साधारण श्रेणी के लोग।

पर्यंक—परि, पृ० १७५—शैया, पलंग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर्यटक—अना, पृ० ७६—भ्रमण करने वाला, घूमने फिरने वाला, बिहारी।

पर्यटनार्थ—अना, पृ० २३—घूमने के लिए, सैर करने के लिए, भ्रमण करने के लिये।

पर्वतचय—तुल, पृ ३१—पर्वत समूह, पर्वत-श्रेणियां, पर्वत-शिखर, पत्थरों के समान नगण्य और अनगढ़।

पर्वततल—तुल, पृ० ५७—पहाड़ों की तलहटी, पर्वतों के नीचे चौरस धरती या मैदान, घाटी।

पल—तुल, पृ० ३०—क्षण, समय का एक लघुतम भाग, पलकें।

पलक-कल-तन—गी, पृ० १४—पलकों के कारण सुन्दर शरीर, सुन्दर, आँखों वाला तन। मोहक नेत्रों वाला सुन्दर व्यक्ति।

पल-प्रकाश—पृ० ३७—क्षण भर का प्रकाश, चंचल आलोक, क्षणिक ज्योति, पलकों का प्रकाश, आँखों की ज्योति, दृष्टि।

पलास—आरा, पृ ४०; अना, पृ० २२; गीतगुंज, पृ० ४२—टेसू या ढाक का फूल या पेड़।

पवनउंचास—अना, पृ० १५३—एकशक्र, द्विशक्र, त्रिशक्र, एक ज्योति, द्विज्योति, त्रिज्योति, मित, सम्मित, सुमति, अनिमित्र, अनमित्र, पुरुमित्र, ऋतजित्, सत्यजित्, सेनजित्, अपराजित, ईदृक्ष, अदृक्ष, तत्, ऋत, पतिसक्रुत, इन्द्र, गतदृश्य, पर, सुषेण, अथवास, विराट, काम, जय, ऋतवाह, धरुण, धर्ता, धृति, धाता, ध्रुव, व्रतिन, देवदेव, विधारण, दुर्ग, वपु, द्युति, सह, अयात, अभियुक्त, भीम, अनाय्य, समर।

पवनाञ्चल—गी, पृ० २५—हवा का अंचल, हवा का वस्त्र, हवा की गोद। हवा की लहरे।

पवि—अना, पृ० १६२—वज्र, बिजली, अशनि।

पशु—तुल, पृ० २५—जानवर, चौपाए। संदर्भार्थ - पशुओं के समान बुद्धि-विवेक, स्वाभिमान, स्वाधिकार वंचित मनुष्य।

पशु-खग—तुल, पृ० २१—[पशु=जानवर, चौपाया। खग=पक्षी, परंद, विहग।] संदर्भार्थ—पशु-पक्षियों के समान बुद्धिहीन, चेतनारहित जीवनादर्श के प्रति अबोध उच्छृंखल जीवन बिताने वाले भारतीय।

पहरों से—अना, पृ० ४६—बहुत अधिक समय से, अनेक घण्टों से।

पहलवाँ—नप, पृ० ४१—पहलवान, कुश्ती लड़ने वाला।

पाँख—अना, पृ० १४३; गीत गुंज, पृ० ३९—पंख, पर, डैना। पक्षी, विहग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाँखं फिर गई—अर्च, पृ० २३—[पाँख=पंख, पर, डैना] दूसरी ओर उड़ गया। प्रतिकूल हो गया, विमुख हो गया, विपरीत दिशा को चले गये।

पांसे खेत—नप, पृ० ६३—खाद दिये हुए खेत।

पाताल—अना, पृ० १००—धरती के नीचे माना जाने वाला एक लोक, चोदह भुवनों में से एक।

पाथार—अर्च, पृ० ७५—ऊँचा, समूह, पठार, भीषण ज्वार।

पाथेय—अर्च, पृ० २७; आरा, पृ० ६१—रास्ते का भोजन, संवल, राहखर्च।

पाद-पद्म—अना, पृ० १५०—कमल के समान सुन्दर शीतल कोमल चरण।

पानी—नप, पृ० १००—आभा, तेज, चमक, शोभा, दवदवा, प्रताप, प्रभाव।

पानी चढ़ाना—परि, पृ० २०६—चमकाना, धार चढ़ाना, तीक्ष्ण, गौरव बढ़ाना। शक्ति संघटित कर आक्रमण या आत्मरक्षा करना।

पाप-शमन—अर्च, पृ० ४६—पाप शान्त होना, पाप समाप्त करना, पाप का नाश करने वाला।

पामर—अना, पृ० १०९—पापी, नीच, तुच्छ, कायर।

पायल—गी, पृ० ८—पैर में पहनने का एक घूंघरूदार गहना, पाजेब, नूपुर।

पारण—आरा, पृ० २८—पार करने वाला, उद्धार करने वाला, तृप्ति, बादल, उपवास के वाद का भोजन।

पारस—गीतगुंज, पृ० ४६—अपने स्पर्श से लोहे को सोना बना देने वाला एक पत्थर, मझौले आकार का एक पर्वती वृक्ष।

पारस्य—नप, पृ० ६२—फारस, ईरान।

पारायण—अना, पृ० २५—किसी ग्रंथ का आदि से अंत तक पढ़ना, पार जाना, सम्पूर्णता।

पारावार—परि, पृ० ३१; आरा, पृ० १८—महासागर, समुद्र, दोनों किनारे।

पारिक—आरा, पृ० १४—किनारे वाला, किनारे या छोर पर विद्यमान, तटवर्ती।

पारिजात—परि, पृ० १३१—हारसिंगार या शेफाली का पुष्प या पौधा। हरसिंगार पाँच पल्लवों का अत्यन्त छोटा सफ़ेद फूल होता है, जिसकी नली पीले रंग की होती है। इस को रगड़ कर बच्चे अपनी पुस्तकों की तस्वीरें रँगते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पारिषद-दल—अना, पृ० १५६—दरबारियों का समूह, राजसभा के सदस्य।

पारें—आरा, पृ० ४४—पार उतारें, दूसरे किनारे पर लगाएँ। पराजित करें, मार भगाएँ।

पार्थिवैश्वर्य—तुल, पृ० २७—[पार्थिव=पृथ्वी से उत्पन्न, राजसी, सांसारिक, मिट्टी का बना। ऐश्वर्य=ईश्वरता, शक्ति, प्रभुत्व, आधिपत्य, धन-वैभव, सर्वव्यापकता, अणिमादि सिद्धियाँ।] भौतिक या सांसरिक सुख-भोग, धन-वैभव। इहलौकिक सुखसम्पत्ति।

पार्श्व—अना, पृ० ६२—करवट, बग़ल, पहलू, सामीप्य, दायें-बाँये भाग, पसलियाँ, कपट, धूर्तता, छल।

पार्श्वच्छवि—अना, पृ० ११४—दाहिनी-बाईं ओर की सुन्दरता। किसी करवट या बग़ल की ओर विद्यमान सुन्दरता। उपेक्षित छवि। बीती बहार। किनारे कर दिया या डाल दिया गया।

पाला—नप, पृ० ५४—शीत, बहुत ठण्डक, कोहरा, जमे पानी की अत्यन्त क्षीण तह जो बहुधा शाक-तरकारियों, फूल, पोधों, घास आदि पर देखी जाती है।

पाली—अप, पृ० १७०—एक भाषा-विशेष, जिसमें बौद्ध साहित्य लिखा मिलता है।

पावन—तुल, पृ० १८—पवित्र, शुद्ध, पवित्र या शुद्ध करने वाला, निर्मल, स्वच्छ।

पाश-विमोचन—अर्च, पृ० २—[पाश=फंदा, बंधन, जाल। विमोचन=दूर करना, मुक्त करना, हटाना, निकालना, शिव।] जाल से मुक्त करने वाला, बंधनों से छुड़ाने वाला।

पाषाण-खण्ड—तुल, पृ० २०, २१—[पाषाण=पत्थर, शिला, चट्टान। खण्ड=टुकड़े, भाग, हिस्सा।] पत्थरों के टुकड़े, चट्टानों या शिलाओं के समूह। संदर्भार्थ—अविवेकी या ज्ञान हीन निष्क्रिय भारतीय। पत्थरों या शिलाओं के समान जड़ और पैरों-तले कुचले हुए विविध भीषण ऋतु रूपी अत्याचारी मुसलमान शासकों द्वारा पीड़ित, मुस्लिम शासन के दाहक सूर्य द्वारा जलाए गये भारतीय।

पासी—नप, पृ १००—बहेलिया, हिन्दुओं में एक अस्पृश्य जाति, जो सूअर पालने और ताड़ी निकालने का काम करती है। बहुत सी जगह अब यह जाति यह पेशा छोड़कर साग तरकारी और खेती-बाड़ी का काम करने लगी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिंजर—तुल, पृ० १३—पिंजरा, कंकाल, ललाई लिये हुए पीला रंग। संदर्भार्थ—वन्दीगृह, कारागार, बन्धन।

पिक—परि, पृ० ७१—कोयल, कोकिल। कौए या कबुतर के आकार का एक पक्षी जो बहुधा बसन्त ऋतु में आम की डालियों पर अत्यन्त मधुर स्वर में बोलता पाया जाता है।

पिक-कुहरित—तुल, पृ० ४८—[पिक=कोयल, कोकिल। कुहरित=स्वरित, मुखरित, शब्दित, कोयल की वाणी से पूर्ण।] कोयल की काकली से गुंजित। कोयल की वाणी से मुखरित।

पिच्छल—गी, पृ० २१—फिसलन से भरा, पैर फिसलाने वाला, अत्यन्त चिकना।

पिड़की—नप, पृ० १४—कबूतर के समान एक पक्षी—पंडुक, पंडाखता, फ़ाखता।

पिड़ियाँ—आरा, पृ० ८०—चावल के गुँधे हुए आटे का लंबोतरा टुकड़ा जो पानी में उबाल कर खाया जाता है।

पितर-देवी-पाख—आरा, पृ० ९६—श्राद्ध पक्ष, वर्ष के वे पन्द्रह दिन जिनमें पितरों के श्राद्ध किये जाते हैं।

पितापक्ष—अना, पृ० १५३—पिता की ओर से सगे-सम्बंधी। माता-पिता, चाचा-ताऊ, दादा, भाई-भतीजे आदि।

पिपासा—परि, पृ० ८३—प्यास, तृष्णा, उत्कट अभिलाषा, तीव्र कामना।

पियानो—नप, पृ० २९—मेज़ के आकार में बना हुआ एक बाजा, जिसमें हारमोनियम के समान स्वर बने होते हैं और कुर्सी पर बैठ कर बजाया जाता है।

पिलौधा—नप, पृ० १६—पिचका हुआ, कुचला हुआ।

पिष्ट—परि, पृ० ६३—पिसा हुआ, चूर्ण किया हुआ, निचोड़ा हुआ, गुंधा हुआ।

पीड़ाकर—तुल, पृ० २७—पीड़ा देने वाला, वेदनाप्रद, कष्टदायक, दुखदायक।

पीत—तुल, पृ० ४६—पीला। सरसो के फूलों के समान रंग वाला।

पीताभ—अना, पृ० ८४—पीली आभा वाली, पीले चमकीले रंग का।

पीन—अना, पृ० ५१—मोटा, स्थूल।

पीन उभार—परि, पृ० ५६—[पीन=मोटा, स्थूल। उभार=उठान, विकास, उभरना, फैलाव।] मासल विकास, अंगों का मोटा गदरा और कठिन हो जाना। यौवनावस्था प्राप्त होना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीनोरु—परि, पृ० २०२—[पीन=मोटा, स्वस्थ, कठोर। [ऊरु=जाँघ, रान, जंघा।] मोटी जंघाओं वाली युवती।

पीयूष—परि, पृ० ७८—अमृत, सुधा, अमर करदेने वाला पेय।

पीवर—आरा, पृ० ३१—स्थूल, मोटा, भरापूरा, कछुआ।

पुंजीकृत—अना, पृ० २२—ढेर किया हुआ। एकत्र किया हुआ।

पुण्यरेणु—तुल, पृ० ४८—[पुण्य=पवित्र, पावन, शुद्ध या पवित्र करने वाली। रेणु=धूल, रेत, बालू।] पवित्र धूल, पावन करने वाली रेत, पापों से मुक्त करने वाली रज।

पुए—अना, पृ० २५—पूड़े, मीठे आटे या मैदा से बने पकौड़े या पूरियाँ।

पुकार—तुल, पृ० २७—आवाज़, आह्वान, बुलाना, प्रार्थना, निवेदन, अनुनय-विनय।

पुख्ता—अना, पृ० १७९—पक्का, मज़बूत, सबल।

पुनर्वार—आना, पृ० ६८—फिर, दोबारा, एक वार और।

पुनीत—अना, पृ० ६७—पवित्र, शुद्ध, पावन, निर्मल। शुद्ध, पवित्र, निर्मल चरित्र वाला।

पुर—तुल, पृ० २५—नगर, कसवा, टाउन, शहर, नगरी, कोट, किला, गृह।

पुरवाई—गीतगुंज, पृ० ५३—वर्षा ऋतु में पूर्व दिशा से चलने वाली वायु, पावस की सीली शीतल पवन।

पुरश्चरण—अना, पृ० १६२—आगे का कार्यक्रम, शेष कर्मकाण्ड, आगे बढ़ना, चलना या पग रखना।

पुरातन—अना, पृ० २९—पुराना, प्राचीन, अतीत, बीता हुआ।

पुरुषकार—परि, पृ० १९७—पुरुषार्थ, पौरुष, उद्योग।

पुरुषत्व—परि, पृ० २०४—पौरुष, बल, शक्ति, पुरुषार्थ, वीरता।

पुरुषपुरातन—अना, पृ० २९—सब से प्राचीन पुरुष, सब से पहला व्यक्ति, भगवान, परमात्मा, ईश्वर।

पुरुषसिंह—अना, पृ० १५९—पुरुषों में सिंह के समान निर्भय, वीर और शक्तिशाली।

पुरुषोत्तम—तुल, पृ० ५०; परि, पृ० २३३—[पुरुष=मनुष्य, आदमी, मानव, व्यक्ति। उत्तम=अच्छा, सर्वश्रेष्ठ।] मनुष्यों में सब से अच्छा, सर्वश्रेष्ठ मनुष्य। भगवान रामचन्द्र।

पुरोहित—नप, पृ० १००—विवाह, नामकरण, मुण्डन, जाति, मृतक आदि संस्कार और यज्ञ पूजा पाठ आदि धार्मिक कृत्य कराने वाला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुलक-प्लुत—अना, पृ० ६४—रोमांचों से आवृत, पुलकों से फूला हुआ।

पुलक-राशि—अना, पृ० २—[पुलक=रोमांच, रोम, रोएं। राशि=समूह, पुंज।] रोमों का समूह, रोमपुंज। अतिशय रोमांच।

पुलक-स्पन्द—गी, पृ० ४५—आनन्द-कम्पन, सुखानुभूति से रोमांचित होना और थिरक उठना, आनंद से हृदय धड़कना और रोमांचित हो जाना।

पुलकित—तुल, पृ० ३४—रोमांचित, प्रफुल्लित, प्रसन्न, उत्साहित, भाव-विह्वल, आनन्द-मग्न।

पुलिन—अना, पृ० ५९—किनारा, तट।

पुष्कल—तुल, पृ० ३०; अर्च, पृ० २७—अत्यन्त, अतिशय, बहुत अधिक।

पुष्टदेह—तुल, पृ० १७—पक्की देह वाला, सबल, स्वस्थ, गठे हुए शरीर वाला।

पुष्प—अना, पृ० १—फूल, सुमन।

पुष्प-भाषा—अर्च, पृ० ४१—फूल की भाषा; फूल की सुन्दरता, सुकुमारता, सुगंधि, अभिनवता, मुग्धकारिता आदि।

पुष्प-युवती—परि, पृ० १९०—फूल के समान सुन्दर, सुकुमार, मदभरी युवती।

पुष्पराज—परि, पृ० २१४—फूलों का राजा, सर्वश्रेष्ठ फूल, कमल। संदर्भार्थ—पुष्पों के राजा कमल के समान श्री रामचन्द्र।

पुष्पाकुल—तुल, पृ० २२—[पुष्प=फूल, सुमन, कुसुम, पुखराज, खिलना, विकसित होना। आकुल=उद्विग्न, परेशान, बेचैन, आतुर, उत्कण्ठित, उत्कट इच्छा से।] फूलों से तीव्रता से निकली हुई, आतुर या उत्कट अभिलाषा वाले कुसुम, क्षिप्रता या चपलता से खिले पुष्प।

पुष्पाभरण—परि, पृ० २२९—फूलों के आभूषण, फूलों के हारों, गजरों आदि के आभूषण।

पूजार्घ्यदान—अना, पृ० २२—[अर्घ्य=पूजनीय, बहुमूल्य, पूजा या सम्मान में भेंट की जाने वाली वस्तु, किसी पूज्य के आने पर द्वार पर छिड़का जाने वाला तेल जल आदि।] पूजा में अर्घ्य देना, सम्मान में द्वार पर जल, तेल आदि छिड़कना।

पूर्ण—तुल, पृ० १६—भरापूरा, सब प्रकार से सम्पन्न, जहाँ कोई भी अभाव न हो। सनाप्ति, अन्त।

पूर्ण-इन्दु—तुल, पृ० ५१—पूर्ण चन्द्रमा, पूर्णिमा का चाँद, सम्पूर्ण सौंदर्य शीतलता और आभा से सम्पन्न चन्द्रमा (मुख)।

पूर्ण-मनोरथ—परि, पृ० १६२—जिसकी कामना पूर्ण हो, जो अपनी कामनाओं में सफल हो, जिसकी सारी अभिलाषाएँ पूरी हों।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्णाभिषेक—अना, पृ० १५८—भली प्रकार मंत्रों द्वारा शुद्ध, बाधारहित और अमोघ बनाना, पूरी तरह विधि-विधान सहित राजतिलक हो जाना।

पूर्वज—परि, पृ० २००—पूर्व पुरुष, पुरखे, पहले जन्मे हुए।

पूर्वा—अर्च, पृ० १११—पुरवैया, पूर्व से आने वाली हवा, वर्षाकालीन पूर्वी पवन।

पूर्वाचल—तुल, पृ० ५७—पूर्व का पहाड़, पूर्वदिशा में स्थित वह पर्वत, जिस पर सूर्योदय होना माना जाता है। संदर्भार्थ—उदयाचल के समान भारत जिस में ज्ञान और नवजीवन का सूर्य उदय होगा।

पूर्वापर—तुल, पृ० ३६—अगला और पिछला, पूर्व और पश्चिम का, क्रम-सम्बंध, सिलसिला।

पृथु—तुल, पृ० ५२—विस्तीर्ण, चौड़ा, विशाल, बहुसंख्यक, अतिशय, चतुर, विशिष्ठ।

पृथुल—अना, पृ० ५—स्थूल, मोटा, विस्तीर्ण, विशाल।

पृथ्वी—तुल, पृ० २१—धरती, संसार, भारतभूमि, भारतभूमि के निवासी।

पृष्ठ—गी, पृ० ४—पीठ, कमर, पत्र या कागज़ का एक ओर।

पेपर—अना, पृ० ८५—कागज़, समाचार-पत्र।

पेशवा—नप, पृ० ४२—नेता, सरदार, मुखिया। मराठा राजाओं के प्रधान-मंत्रियों की उपाधि।

पेंग—गीत गुंज, पृ० ५४—झोटा, झूले या हिंडोले का तीव्रता से आगे-पीछे जाना।

पैमाने—आरा, पृ० ३०—प्याले, गिलास, माप।

पोथियों में जनता को बाँधना—नप, पृ० २४—ऐसी पुस्तकें लिखना, जिन में परलोक, परमात्मा, धर्म, नरक आदि का भय दिखाकर जनता को वश में किया जाय। धर्मशास्त्र, ईश्वर, परलोक, कर्मफल, नरक स्वर्ग आदि का भय और लोभ दिखा कर जन साधारण को मानसिक दास बनाया जाना।

पौर—तुल, पृ० ५०; अर्च, पृ० २६; आरा, पृ० ४६—पुर सम्बन्धी, नगर का, पेट्ठ, पुरवासी, ड्योढ़ी, द्वार, नगरवासी।

पौर में जैसे पुरी है—आरा, पृ० ८७—एक घर या द्वार में सम्पूर्ण नगरी समाई है।

प्यास—अना, पृ० ६५—पानी पीने की इच्छा, तृष्णा, आकाँक्षा, लालसा।

प्रकर—आरा, पृ० १—समूह, राशि, सहायता, मैत्री, रिवाज़, सम्मान।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाम—आरा, पृ० १४—यथेष्ठ, पर्याप्त, इच्छा, तृप्ति, जिस में कामवासना की अधिकता हो ।

प्रकाश—तुल, पृ० १७—आलोक, ज्योति, आभा, रोशनी । संदर्भार्थ—प्रतिभा और ज्ञान का प्रकाश ।

प्रकृति—परि, पृ० ८१; अना, पृ० ३१—वह मूल तत्त्व जिस का परिणाम जगत है, जगत का उपादान कारण रूप मूल तत्त्व, माया, पंच महाभूत, यथार्थ स्वभाव । संदर्भार्थ—माया, सृष्टिरचना का कारणभूत मूल तत्त्व ।

प्रकृति-परित हिल्लोल-हरित—अना, पृ० १४०—प्रकृति में चारों ओर नीले जल की तरंगें उठ रही हैं । समस्त सृष्टि में हरियाली लहरा रही है । हरी नीली हिलोरें चारों ओर से प्रकृति को घेरे हुए हैं ।

प्रखर—तुल, पृ० २८, ३३; परि, पृ० ३०—तेज़, तीव्र, प्रचण्ड, तेज़ी से बढ़ता हुआ, शीघ्रता से गिरता या झरता हुआ ।

प्रखर-प्रखरतर प्रखरतम—परि, पृ० १९२—प्रतिदिन अधिक से अधिक प्रचण्ड, भीषण, तीक्ष्ण होता हुआ ।

प्रगति—तुल, पृ० ३७—आगे बढ़ना, आगे चलना, उन्नति करना, विकसित होना ।

प्रगद—अर्च, पृ० ९६—[गद=भाषण, मेघध्वनि ।] भाषित, ध्वनित, वर्णित ।

प्रगल्भ (धारा)—परि, पृ० ५८—तेज़, क्षिप्र, चंचल, मर्यादाहीन, उच्छृंखल ।

प्रगल्भता—अना, पृ० ९७—धृष्टता, हठकारिता, चालाकी ।

प्रचण्ड—तुल, पृ० १३; अना, पृ० १६१—प्रबल, प्रतापी, भीषण, उग्र, अत्यन्त तेजस्वी ।

प्रचुर—परि, पृ० ५५—अधिक मात्रा में, पर्याप्त, अत्यधिक ।

प्रच्छन्न—छिपा हुआ, धोखेबाज़, कपटी, छली ।

प्रजापति—अना, पृ० १६२—सृष्टि के आरम्भ में ब्रह्मा द्वारा उत्पन्न किये गये दस लोक-कर्ता ।

प्रणत—अना, पृ० १६५—झुका हुआ, विनम्र, नतमस्तक, शरण में आया हुआ ।

प्रणय—तुल, पृ० ३५—प्रेम, प्रीति, विश्वास, मोक्ष, उदारता, कृपा, श्रद्धा, नायक, नेतृत्व, प्रीतिभरी प्रार्थना ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रणय-श्लथ—गी, पृ० ५१—प्रेम में दुर्बल, प्रेम प्रकट करने में लोकलाज आदि के कारण भयभीत या निर्बल।

प्रणयन—अना, पृ० ६—लाना, ले जाना, निबद्ध करना, लिखना, रचना, वितरण, देना (दण्ड)।

प्रणय-रश्मि—अना, पृ० १—प्रेम की किरण, प्यार की ज्योति।

प्रणयी—अना, पृ० ६०—प्रेमी, स्नेही, चाहने वाला।

प्रणव—परि, पृ० २२०; आरा, पृ० २१—ओंकार, परमेश्वर, ढोल।

प्रतनु—तुल, पृ० ४०; अना, पृ० २—अति क्षीण, अति सूक्ष्म, बहुत पतला, बहुत थोड़ा, तुच्छ। कोमल तन वाली, सुकुमार तनमन वाली।

प्रतिकरा—आरा, पृ० ७६—विस्तीर्णता, विकास, प्रतिशोध, क्षतिपूर्ति।

प्रतिकार—परि, पृ० २०१—बदला, प्रतिशोध।

प्रतिछवि—तुल, पृ० ५८—[प्रति=नकल, समान, वैसा ही। छवि=रूप, सुन्दरता।] वैसी ही सुन्दरता, वैसा ही रूप, ईश्वरीय रूप सौन्दर्य का प्रतिबिम्ब। संदर्भार्थ—माया, प्रकृति।

प्रतिजड़—तुल, पृ० १६—प्रत्येक जड़ पदार्थ, प्रकृति का कण-कण, पत्थर, पेड़, पौधे, नदी तालाब आदि।

प्रतिज्ञा—अना, पृ० ६५—दृढ़ संकल्प, वचन देना, प्रण करना, घोषणा करना।

प्रतिद्वन्द्वी—परि, पृ० २०२—विरोधी, प्रतिस्पर्द्धी, मुकाबला करने वाला, प्रतिनायक, शत्रु।

प्रतिबिम्ब—अना, पृ० ७०—वैसी ही छाया, समान रूप दिखाई देना, समान रूपाकार।

प्रतिभात—परि, पृ० ५०—प्रभायुक्त, चमकदार, ज्ञात, अवगत।

प्रतिमन्त्र—परि, पृ० २२०—[मंत्र=शब्दसमूह जिसके पाठ या जप से अलौकिक शक्ति या सिद्धि प्राप्त हो।] हर एक मंत्र।

प्रतिमा—तुल, पृ० ४४—मूर्ति, आकृति। संदर्भार्थ—तुलसीदास की पत्नी रत्नावली। प्रतिमा के समान सुगठित सुडौल अंगों वाली रत्नावली।

प्रतिमानस-सर—तुल, पृ० २१—[प्रति=हरेक, समस्त, सम्पूर्ण, सब। मानस=हृदय, सरोवर, मनुष्य। सर=सरोवर, तालाब।] प्रत्येक मनुष्य के हृदय का सरोवर।

प्रतियाम—आरा, पृ० ३४—हर समय, निरन्तर, सदा।

प्रतिरोध—तुल, पृ० २३—विरोध, बाधा, रुकावट, रोक, प्रतिबंध, तिरस्कार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिसध—अना, पृ० १५३—प्रतिकूल भाग्य वाला, पुनर्जन्मी हुई, दो विरोधी परिस्थितियों में फंसी ।

प्रतिहतचेतन—तुल, पृ० ३८—घायल चेतना, अवरुद्ध ज्ञान, चेतना की क्षीणता, ज्ञान या चेतना का क्षय, नष्टप्रायः ज्ञान । ज्ञान विवेक प्रतिभा आदि का ह्रास होना ।

प्रतीक्षण—नप, पृ० ६२—बाट जोहना, सम्मान-पूजा करना, ध्यान देना ।

प्रतीति—अना, पृ० १८४—ज्ञान, बोध, ख्याति, हर्ष, विश्वास, प्रस्थान, आदर ।

प्रत्यक्ष—अना, पृ० १६६—आँखों के सामने, स्पष्ट, आँखों देखा ।

प्रत्यूष—परि, पृ० ११३—प्रातःकाल, सवेरा, प्रभात ।

प्रत्यूह—अना, पृ० १४८—विघ्न, बाधा, रुकावट ।

प्रदीपनिर्वाण—परि, पृ० ५२—दीपक बुझना ।

प्रदेश—तुल, पृ० १२—प्रान्त, भूभाग, भूखण्ड, राज्य, भारतवर्ष के अन्य भाग ।

प्रपात—परि, पृ० १५१; आरा, पृ० ८—झरना, प्रवाह, धारा, स्रोत ।

प्रपूर्ण—तुल, पृ० १४—भरपूर, पूरी तरह भरे हुए, पूर्णरूप में प्रभावित और प्रेरित ।

प्रबलतर—तुल, पृ० २०—अपेक्षाकृत प्रबल, प्रचण्ड, भयंकर, भीषण, कठोर, शक्तिशाली, बलवान ।

प्रभंजन—अना, पृ० ६७; आरा, पृ० ३६—हवा, आँधी, तूफान, तोड़फोड़, नष्ट करने वाला ।

प्रभात—तुल, पृ० ५७—सवेरा, सूर्योदय, रात का अवसान । संदर्भार्थ—अज्ञान अन्धकार निराशा और पतन की रात बीतने के बाद नवीन ज्ञान, आशा और पुनर्जीवन का उदय ।

प्रभापूर्य—तुल, पृ० ११—[प्रभा=प्रकाश, आलोक, ज्योति, तेज । पूर्य (पूर का विशेषण)=भरा हुआ, भरने वाला ।] आलोकपूर्ण, प्रकाश भरने वाला । संदर्भार्थ—भारतीय जीवनाकाश को प्रकाशित करने वाला भारतीय तेज का प्रतीक ।

प्रभा-भयंकर—गी, पृ० ६१—तीव्र चौंधियाने देने वाले प्रचण्ड प्रकाश के कारण भयंकर या डरावना ।

प्रभुता—परि, पृ० २०५—स्वामित्व, अधिकार, अधीनता ।

प्रमद—अर्च, पृ० १०९—मतवाला, उग्र, लापरवाह, जिसमें बहुत मद हो ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रमन—तुल, पृ० १६; अना, पृ० १५६—प्रसन्न, आनन्दित, कुशलमंगल।

प्रमाण से प्रणाम—अर्च, पृ० १२—[प्रमाण=यथार्थ ज्ञान का साधन, सबूत, माप, अवधि, यथार्थता, मर्यादा, धर्मशास्त्र, विष्णु। प्रणाम=झुकना, नमस्कार, अभिवादन, महानता के लिए अपनी लघुता और विनम्रता प्रकट करना।] सचाई के सामने मस्तक नत होता है। चमत्कार को नमस्कार है।

प्रमाद—अना, पृ० १०५—आलस्य, उन्माद, मतवालापन, लापरवाही।

प्रमुक्त—अना, पृ० २१—बंधनहीन, स्वतन्त्र, विस्तृत। संदर्भार्थ—दूर-दूर तक सब दिशाओं में उड़ने या फैलने वाला।

प्रमुद—तुल, पृ० १६—प्रसन्न, आनन्द-मोद-लीन, सुखविलास में डूबा हुआ।

प्रयाण—अना, पृ० १६—जाना, प्रस्थान करना, विदा होना।

प्रयास—परि, पृ० ५४—प्रयत्न, चेष्टा, कोशिश, उद्योग, परिश्रम।

प्रलयाब्धि—अना, पृ० १५२—प्रलय का समुद्र, प्रलय के समय गरजता और उमड़ता हुआ समुद्र।

प्रलाप—तुल, पृ० ४३; अर्च पृ० ६९—वियोग की एक अवस्था जिसमें वियोगी असंगत, अस्वाभाविक अनहोनी बातें कहता है। बकना, असंगत बातें करना। व्यर्थ की बातें करना, दुखड़ा रोना।

प्रवण—गीतगुंज, पृ० ५८—प्रवृत्त, अनुकूल, आसक्त, लगा हुआ।

प्रवर्षण आरा, पृ० ३५; गीतगुंज, पृ० ४८—बारिश, पहली वर्षा, किष्किंधा के पास का पर्वत, जहाँ कुछ दिन राम रहे थे।

प्रवहमान—गी, पृ० ९५—बहती हुई, गतिशील, चलती हुई।

प्रवाल—अर्च, पृ० १०३—नया कोमल पत्ता, कोंपल, मूंगा, वीणादण्ड, शिष्य, जानवर।

प्रवीण—अर्च, पृ० ५२—चतुर, कुशल, निपुण। निपुणता से, कुशलतापूर्वक।

प्रश्न-चित्रों (चिन्हों) का फैला कूट—गी, पृ० २७—[कूट=छल, कपट, जटिलता, उलझन।] चारों ओर उलझन भरे जटिल प्रश्नों की भीड़ लगी है। चारों ओर अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं और उलझन में डाल रही हैं।

प्रसंग—अना, पृ० १४४—सिलसिला, परिस्थिति, परिवेश, सम्बन्ध, तारतम्य, प्रकरण, अवसर।

प्रसर—तुल, पृ० १६; अना, पृ० ८४—आगे बढ़ना, बढ़ाव, फैलाव, विस्तार, वेग, प्रवाह।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रसरित—अना, पृ० ७२—विस्तृत, फैला हुआ, प्रवाहित ।

प्रसाद—परि, पृ० ४९—कृपा, अनुग्रह, आशीर्वाद, वरदान, सरलता, सुबोधता ।

प्रसारकामी—परि, पृ० १७९—फैलने या लहराने के इच्छुक, लहराते हुए ।

प्रसुप्ति—परि, पृ० ५१—नींद, बेसुधी ।

प्रसून—तुल, पृ० ३७; अना, पृ० ६७—फूल, पुष्प, सुमन ।

प्रस्तर—अना, पृ० ३४—पत्थर, पत्ते-पुआल आदि का बिछावन, चौरस मैदान, कुश का मुट्ठा, रत्न, ग्रंथ का अध्याय ।

प्रस्थानत्रयी—अप, १७२—उपनिषद, गीता और ब्रह्मसूत्र ।

प्रस्रवण—अना, पृ० २; गीतगुंज, पृ० ५८—प्रपात, झरना, लगातार बरसना या बहना ।

प्रस्वेद—अना, पृ० ८४—पसीना, पसीजना ।

प्रहत—आरा, पृ० १७—आहत, चोट खाया हुआ, पराभूत, विद्वान, मारा हुआ ।

प्रहरण—अना, पृ० १७२—छीनना, प्रहार, आघात, आक्रमण, युद्ध, दमन ।

प्रहार—तुल, पृ० २५, २७, २९; अना, पृ० ६८—आघात, चोट, अत्याचार उत्पीड़न, शोषण, हमला, वार, आक्रमण ।

प्रांगण—परि, पृ० १८६—आँगन, सहन, क्षेत्र, मैदान, घर की चार दीवारी ।

प्रांत-प्रांतर—अना, पृ० ६०; तुल, पृ० ३२—वन, जंगल, छाया रहित लम्बा रास्ता, कोटर, पेड़ का खोखला भाग ।

प्रान्तिक—अना, पृ० ८६—प्रान्तीय, किसी प्रदेश का, स्थान विशेष की ।

प्राकार—अना, पृ० ७९—परकोटा, चार दीवारी, ईंट लकड़ी आदि का बनाया हुआ घेरा ।

प्राची—अना, पृ० २—पूर्व दिशा, सूर्योदय की दिशा ।

प्राची-दिगंत-उर—तुल, पृ० ६१—[प्राची=पूर्वदिशा । दिगंत=दिशा, आकाश । उर=हृदय, मध्य, अन्दर, भीतर ।] पूर्व दिशा में, पूर्वी क्षितिज पर, पूर्वी आकाश में ।

प्राचीन—अना, पृ० १०—पूर्व का, अतीत, पुराना ।

प्राचीर—अना, पृ० ८—परकोटा, चारदीवारी ।

प्राण—परि, पृ० ८१—साँस, वायु, जीवनी शक्ति, जान, जीवन ।

प्राण-संगिनी—तुल, पृ० २९—प्राणों के संग रहने वाली, जीवन भर की संगिनी, जीवन भर के दुख-सुख में साथ देने वाली, पत्नी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राण-संघात—गी, पृ० ९७—मानसिक भावों का संघर्ष। हृदय की भावनाओं वृत्तियों आदि का मंथन। भावोद्वेग का घात-प्रतिघात।

प्राणाशय—तुल, पृ० ५६—प्राण, आत्मा।

प्राणों की छवि—तुल, पृ० १५—आत्मिक मानसिक आन्तरिक सौंदर्य।

प्रात—परि, पृ० ९९—प्रभात, सबेरा, सूर्योदय का समय।

प्रात-अरुण—गी, पृ० १०—प्रभात में नवोदित सूर्य, प्रभात का गुलाबी सूरज।

प्राप्तवर—गी, पृ० १००—वर प्राप्त किये हुए, आशीर्वाद पाये हुए।

प्रासाद—अना, पृ० ६०—महल, विशाल ऊँचा आवास, देवालय, राजभवन, दर्शकों के लिए बना हुआ ऊँचा स्थान।

प्रासारिक—आरा, पृ० १४—फैले हुए, विस्तृत, दूर तक।

प्रियंगु—अना, पृ० १८—एक वृक्ष विशेष, पीपल।

प्रिय—अना, पृ० २—प्यारा, अच्छा, श्रेष्ठ, सुन्दर, आकर्षक।

प्रिय की समाधि ओर—अना, पृ० १८६—सूर्यास्त के स्थान की तरफ। संदर्भार्थ—उस दिशा में जहाँ सूर्य अस्त हुआ, अस्ताचल की तरफ़।

प्रियतम—तुल, पृ० २०—सबसे अधिक प्यारा। संदर्भार्थ—परमात्मा, परब्रह्म, परम इष्ट।

प्रियतम-कर-पतिता-सी—अना, पृ० ४९—प्रियतम के हाथ से गिरी हुई, प्रिय ने जिसे त्याग दिया है।

प्रिय पथ का पार—परि, पृ० ५१—प्रिय के पथ का अन्तिम छोर, मिलन-स्थान।

प्रियालाप—तुल, पृ० ५०—[प्रिय=प्यारा, अच्छा, मधुर। आलाप=बोलना, कथन, कहना, बातचीत।] प्यारी मधुर बातचीत, मोहक मधुर वार्तालाप।

प्रियावरण—तुल, पृ० ३६—प्रिय का आवरण, प्रिय का प्रभाव, प्रिय की प्रेरणा, प्रिय की सुन्दरता शोभा सुषमा, प्रिय के सौंदर्य की अनुभूतिलीनता।

प्रेक्षण—नप, पृ० ६२—तमाशा, अभिनय, खेल आदि, देखना, आँख।

प्रेत—कविश्री, पृ० ३७—एक अमानवी नीच योनि, भूत।

प्रेत-पिशाच—अना, पृ० ११३—निकृष्ट तामसी योनियाँ, जो दुर्गा के साथ युद्ध-भूमि में रक्त पीने, माँस खाने, हड्डियां चबाने वाली मानी जाती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेम-चयन के—गी, पृ० ३३—प्रेम को चुनने वाले। संकेतों चेष्टाओं आदि से प्रेम के अनुभव प्रकट करने वाले। प्रेम के भावों से भरे हुए।

प्रयसी—तुल, पृ० २९, ३४—प्यारी, प्रियतमा, पत्नी, प्रेमिका।

प्लावन—तुल, पृ० १२—बाढ़, उमड़ कर बहना, तीव्र प्रवाह।

प्लावनपटु—अना, पृ० ६९—बहा ले जाने में चतुर, निमज्जित कर देने में कुशल।

प्लावित—अना, पृ० ३९—बहता हुआ, प्रवाहित होता हुआ।

प्लुत—परि, पृ० ६१—जल से व्याप्त, ढका हुआ, उछलता-कूदता हुआ, तीन मात्राओं का।

फ

फ़तहयाब—परि, पृ० १९८—विजय, विजेता।

फलियाँ—आरा, पृ० ६३—फल देने वाली, लाभदायक, अनेक बीज या दाने वाली लम्बोतरी फली।

फाँस—परि, पृ० ६९—चुभन, फंदा, जाल।

फ़िरदौस—अना, पृ० ६२—स्वर्ग, बिहिश्त, उद्यान। दिल्ली के लाल किले में बने राजप्रासाद वाटिकाएँ आदि, जिन्हें सुख-समृद्धि-विलास के कारण स्वर्ग-समान कहा जाता था।

फ़िलहाल—नप, पृ० १३—अब, इस समय, अभी।

फींचना—नप, पृ० ३८—दोनों ओर से दबाना, कुचलना, ऐंठना, पीचना।

फीकी—अर्च, पृ० १८—नीरस, बेस्वाद, सुख-आनन्द-सौंदर्य से रहित।

फुल्लचुम्बित—अना, पृ० २—फूलों के द्वारा चुम्बन किया हुआ, जिसे फूल स्पर्श और आच्छादित करते हों।

फूल—तुल, पृ० १६—पुष्प, सुमन। संदर्भार्थ—फूल के समान सुकुमार शक्ति-हीन निराधार मनुष्य।

फेनिल—परि, पृ० ४६—झाग वाली, झागों से भरी, झाग-सी सुकुमार, गुदगुदी।

फेरी धुरी है—आरा, पृ० ८७—चारों ओर भ्रमण किया है, सब जगह घूमी फिरी है, विजय घोषणा की है!

फौवारे—आरा, पृ० ६३—झरने, सोते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब

बंकिम—अना, पृ० ३७—जो सरल न हो, टेढ़ा, वक्र, मुड़ा हुआ, कठिन ।

बंध—तुल, पृ० २३—बँधकर, संघटित होकर, अधीन होकर ।

बंध—अना, पृ० २०; तुल, पृ० ३६—बंधन, पाश, विवशता, अधीनता, दासता, बेड़ी, कैद, निर्माण, व्यवस्था, संयोग, परिणाम, शरीर, बाँध, गाँठ, प्रदर्शन, बंधक रखी वस्तु ।

बन्धन—तुल, पृ० १३—बाँधना, वेड़ी, जंज़ीर, बाँधने या रोकने वाला, कारागार, क़ैद, परवशता, पराधीनता । संदर्भार्थ—माया के बंधन, माया के पाश ।

बन्धन-स्तर—गी, पृ० ३— [बंधन=पराधीनता, दासता, पाश, विवशता, परवशता । स्तर=तह, पर्त ।] बेवसी या दासता के पर्त, हृदय के ऊपर चढ़े हुए वर्ण, जाति, सम्प्रदाय, अज्ञान, परवशता आदि के आवरण ।

बंधुर—तुल, पृ० २०—ऊँचे-नीचे, दुर्गम, भयंकर, कठिन । विघ्न बाधाओं से भरे ।

बघार—नप, पृ० ५७—बातचीत, गपशप ।

बघेलखण्ड—नप, पृ० ४६—वखेला राजपूतों का प्रदेश, जिसमें ओरछा आवागढ़, सीतामऊ, मोहबा आदि प्रसिद्ध रियासतें थीं ।

बड़का—नप, पृ० ४०—वड़ा शब्द का घरेलू रूप या प्यार में बोला जाने वाला रूप । बड़ा, अपेक्षाकृत अधिक आयु वाला ।

बढ़ई—नप, पृ० १००—लकड़ी का सामान बनाने और वेचने वाला ।

बतलाये कान कान—तुल, पृ० ४६—एक दूसरे के कान में कहा, काना-फूसी की, तुलसीदास के सहसा बिना बुलाए आ जाने के विषय में धीरे-धीरे चर्चा की ।

बदमाश—नप, पृ० ८८—दुष्ट, लुच्चा, दुष्टकर्म से जीविका चलाने वाला, दुराचारी ।

बदल नीली—गी, पृ० ७६—(आग पी जाने के कारण) बदल कर काली हो गई है । संध्या अँधेरी रात के रूप में बदल गई है ।

बद्ध-दृष्टि—अना, पृ०२— बँधी हुई नज़र, टकटकी लगाकर देखना, एकटक दृष्टि, अपलक नयन ।

बद्धी—आरा, पृ० ७४—बाँधने की रस्सी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनबिलाव—नप, पृ० १४—जंगली विलाव।

बनीठनी—अर्च, पृ० ८१—सजी हुई, शृंगार किये हुए, रंगबिरंगे वस्त्र आभूषण पहने माँग पट्टी किये बिन्दी महावर लगाये हुए।

बनोवास—नप, पृ० ६४—रामचन्द्र का बनवास, बन में रहने का समय, बन में जाने का आदेश दिया जाना, अयोध्या त्याग कर बन जाना और वहाँ निवास करना।

बबूल—नप, पृ० १५—इमली के पत्तों के समान पत्तों, बिरल छाया और लम्बे पतले काँटों वाला एक वृक्ष, कीकर।

बम्हन—नप, पृ० ३८—ब्राह्मण। हिन्दू समाज व्यवस्था के अनुसार चार वर्णों में पहला, एक जाति।

बरगद—नप, पृ० ७५—पीपल के समान एक अत्यन्त विशाल सघन वृक्ष, जिसकी शाखाओं से जड़ें लटककर धरती में जम जाती हैं। इस प्रकार एक वृक्ष के अनेक बन जाते हैं। उसके फल गूलर के समान उससे छोटे और नारंगी रंग के होते हैं। बट, बड़।

बरनी—आरा, पृ० ६६—पलकें, दुल्हन।

बरी—अर्च, पृ० २४—बली, निर्दोष, मुक्त, रिहा। वरण की गई, बरी गई, चुनी गई।

बर्बरता—अना, पृ० ५६—निर्दयता, अनाचार, हिंसा, जंगलीपन, असभ्यता, पशुपन।

बलतोड़—नप, पृ० ३४—बाल के टूटने से हुआ फोड़ा।

बलयित—तुल, पृ० २४—घिरा हुआ, वेष्ठित, चक्कर खाता हुआ, गोल, मुड़ा हुआ।

बलाका—गीत गुंज, पृ० ५५—प्रिया, कामुकी स्त्री, बगली, बगलों की पंक्ति।

बलाहक—अना, पृ० ४—बादल, मेघ, मोथा, सर्पों का एक भेद, एक पर्वत।

बह जाय—परि, पृ० २१०—समाप्त हो जाय, नष्ट हो जाय, दूर चले जायँ।

बहता—तुल, पृ० ४५—वहन करता था, बहता था, प्रवाहित होता था, फैला था, छाया हुआ था।

बहने का—तुल, पृ० ६०—वहन करने के लिए, धारण करने का, पालन करने के लिए, प्रवाहित होने का, निबाहने के लिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहनोई—नप, पृ० ७५—बहन का पति, जीजा।

बहमान—आरा, पृ० २७—प्रवाहित, बहती हुई, आगे चलती हुई।

बहरे—अर्च, पृ० ९३—न सुनने वाले, अनसुनी करने वाले, ध्यान न देने वाले।

बहार—तुल, पृ० ५९—सुन्दरता, विकास, शोभा, वसन्त, समृद्धि, सम्पन्नता। स्वर के बहार—संगीत की समृद्धि, मोहक मधुर संगीत-लहरी, विविध मुग्धकारी रागरागिनियाँ।

बहिर-अन्तर एक पर होंगे—गी, पृ० ४८—तन और मन एक ही इष्ट (ब्रह्म) में रमण करेंगे या लीन हो जायेंगे।

बहिरागमन—परि, पृ० २३७—बाहर की ओर आना, सांसारिक विषय-वासनाओं की ओर जाना।

बहु जन्म—गी, पृ० ९३—अनेक जन्म लेने वाला, अनेक बार उत्पन्न होने वाला।

बहु-रचन—अर्च, पृ० ९७—विविध प्रकार की रचना, अनेक ढँग या शैली में लिखित।

बहेड़ा—नप, पृ० ५१—एक जंगली वृक्ष और उसका फल। यह बड़ी हड़ के समान कड़ुआ होता और औषधियों में काम आता है।

बाँध—अना, पृ० १८—बाँधना, रोक, पुश्ता, पानी रोकने के लिये बनाई गई दीवार या मेड़।

बाँधे सचराचर भव—गी, पृ० ८३—[बाँधना=वश में करना, मुग्ध करना। सचराचर=चर और अचर।] विश्व के जड़-चेतन सभी पदार्थों को मुग्ध कर दे।

बाँधो—तुल, पृ० ५७—एकत्र करलो, सँभालो, अपनालो, लाभ उठाओ, अपने अधिकार में करलो।

बाजीं—तुल, पृ० ५७—बज उठीं, कलकल ध्वनि कर उठीं, ध्वनित या मुखरित हो गई।

बाट-जोहती—परि, पृ० ८१—[बाट=पथ, रास्ता। जोहती=देखती हुई।] प्रतीक्षा करती हुईं।

बाड़वाग्नि—परि, पृ० २१६—पानी में रहने वाली आग, तपन।

बाध (बाधों)—आरा, पृ० ७७—प्रतिरोध, रोक, कष्ट, बाधाएँ देने वाले, मूंज की रस्सी।

बाधना—अर्च, पृ० २१, ९९—अशांति, कष्ट, बाधा, रुकावट डालना, प्रतिरोध।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाधा-बंध-विहीन—अना, पृ० ६७—रुकावट और बंधन से रहित, सब प्रकार मुक्त, पूर्ण स्वतन्त्र ।

बाधा-रहित—परि, पृ० १६०—स्वच्छंदता से विचरण करने वाला ।

बान—गीत गुंज, पृ० ४७—ऊँची लहर, वाण, आदत ।

बानिज का राज—नप, पृ० २२—व्यापारियों का राज्य । संदर्भार्थ —अंग्रेज़ व्यापारियों का शासन ।

बामपथ—अप, पृ० १७०—वाममार्ग, टेढ़ा, विरुद्ध, विपरीत, कठिन मार्ग । चार्वाक द्वारा चलाया हुआ वेद-विरुद्ध एक तांत्रिक साधना-पंथ, जिस के पंच मकार हैं--मांस, मद्य, मत्स्य, मैथुन और मुद्रा । इसका "ऋणं गृहीत्त्वा घृतं पिवेत", सिद्धान्त भी प्रसिद्ध है ।

बारम्बार—अना, पृ० ६६—बार बार, लगातार ।

वारहमासी—नप, पृ० ६२—एक जनगीत विशेष, जिस में नारी के बारह महीने का वियोग-वर्णन रहता है । बारह महीने का नारी-विरह का चित्रण ।

बारी—नप, पृ० १००—हिन्दुओं में एक जाति जो पत्तल, दोने आदि बनाने का काम करती है ।

बालइन्दु– परि, पृ० ८१—शुक्ल पक्ष की प्रारम्भिक रातों का चन्द्रमा, प्रथम सप्ताह का चाँद ।

बालकाण्ड—परि, पृ० २२१—बाल्यावस्था, बचपन का भाग, बालक का कार्यकलाप । जीवन की आरम्भिक अवस्था ।

बालकेलि—अना, पृ० ६६—बच्चों का खेल, निष्प्रयोजन महत्वहीन कार्य ।

बालदल—तुल, पृ० ४८—बालकों का समूह, बच्चों की भीड़ । बहुत से बालक ।

बाल में बैल—आरा, पृ० ७—[बाल=केश, दरार, बच्चा, बछेड़ा, दूध, नारियल, पाँच बरस का हाथी का बच्चा । बैल=मूर्ख, बुद्धिहीन, बिल में रहने वाला प्राणी, बिल से सम्बन्ध रखने वाला । गोजाति का नर ।] बछड़ों के बीच बैल । बच्चों में बूढ़ा ।

बलीबर्द—आरा, पृ० ४३— बलवान साँड, बैल, भैंसा, ऊँट, सूअर ।

बासो—आरा, पृ० ५०—पुरानी, सड़ी हुई, व्यर्थ ।

बासे—आरा, पृ० ११; अर्च, पृ० ५७—जिस में बास या गंध आने लगे, पुराने, जो ताज़े न हों, सड़े गले दुर्गन्ध से भरे ।

बाहर—तुल, पृ० ३५—तन, शारीरिक रूप, सांसारिक जीवन ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाहुबल— परि, पृ० १६५—भुजाओं का बल, शारीरिक शक्ति, युद्ध की कला और शक्ति।

बाहु-वल्ली—अना, पृ० २६—बाँह रूपी लता, लता के समान सुकुमार पतली भुजा।

बाह्य—अना, पृ० १०१—बाहरी, इन्द्रियगोचर, आकारवान।

बिसखोपड़—नप, पृ० ५१—बिसखपरा, गोह की जाति का एक विषैला जन्तु।

बिच्छू—नप, पृ० ५१—एक विषैला छै पैर वाला जानवर।

बिद्ध—अना, पृ० ५२—बिंधा हुआ, गुंथा हुआ, बंधन में, घायल।

बिना शब्द अर्थ की—अना, पृ० ७१—जो न सुनाई दे और न जिसका अर्थ ही समझ में आये, अनुभूति से सम्बन्ध रखने वाली, हृदय या मन ही जिसे समझ पाये।

बिना-सरण-सारण—अर्च, पृ० ५१—[सरण=गमन, सरकना, गमन करने का मार्ग। सारण=चलाने या वहाने वाला, गंधप्रसारिणी, एक गंध द्रव्य।] बिना चलते-चलाते। गतिहीन।

बिम्बाधर—अना, पृ० ११०—बिम्वा फल के समान लाल ओठ।

बिल—नप, पृ० २४—रहने के लिये धरती में बना छिद्र, बाँबी, सूराख़।

बिल्वदल—प्ररि, पृ० २१७—बेलपत्र, बेल के पत्ते।

बीता उत्सव—तुल, पृ० १३—[उत्सव=आनन्द प्रसन्नता देने वाला कार्य, नृत्य-संगीत, नाटक, खेल-तमाशा जलसा आदि।] उत्सव बीतने के बाद।

बीन—गी, पृ० १०४—वीणा, सपेरों द्वारा मुँह से बजाया जाने वाला एक बाजा, जो तूमड़ी और दो नलकियों को मिलाकर बनाया जाता है।

बीनना—नप, पृ० ६—चुनना, अनाज आदि में से कंकर तिनके आदि निकाल कर उसे साफ़ करना।

बुआ—नप, पृ० १२—पिता की बहन।

बुढ़ाई—आरा, पृ० २२—बुढ़ापा, पुरानापन, क्षीणता।

बुद्धि— अना, पृ० १००; परि, पृ० २२७—जानने, समझने विचारने की शक्ति, अन्तःकरण की निश्चयात्मिका वृत्ति, प्रकृति का पहला परिणाम, महत्तत्व।

बुहारना—नप, पृ० ६— झाड़ू-बुहारी करना। झाड़ू से घर का कूड़ा समेटना, साफ़ करना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेचारा—गी, पृ० ६३—दीनहीन, असहाय, निरुपाय, निरीह, भोला-भाला, सीधा-सादा, कमज़ोर।

बेड़े—अर्च, पृ० ६७—नाँव, नावों के समूह।

बेपर की बातें—अर्च, पृ० ८४—बिना किसी आधार की, बेबुनियाद बातें, नितांत झूठी बातें, असम्भव बातें।

बेर—अर्च, पृ० ३०—देर, विलम्ब, अधिक समय।

बेलाग—आरा, पृ० ८३—बिना लगन, बिना पक्षपात, बिना लगाव, अनासक्त भाव से।

बेहना—नप, पृ० १००—रूई धुनने वाला, कपड़े बुनने वाली जुलाहे की एक उपजाति।

बैठाला—अर्च, पृ० ३८—बैठाया।

बैरिस्टर—नप, पृ० ७७—वकील।

बौर-बौर—अर्च, पृ० ३२—आम्रमंजरी, आम का हर एक फूल।

बौर्भुआज़ी—नप, पृ० १००—सामन्ती, सम्भ्रांत, कुलीन, पूंजीवादी, प्रतिरोधी, पिछड़े हुए विचारों के शोषक और परम्परावादी।

बौराया—गीतगुंज, पृ० ४०—उन्मत्त हुआ, बौर या मंजरी से लदा हुआ। वह आमवृक्ष जिस पर बौर आ गया हो।

ब्रह्मचर्य—अना, पृ० ५८—हिन्दू धर्म या समाज-विधान के अनुसार अविवाहित रह कर विद्याध्ययन करने की अवस्था, जो प्रथम पच्चीस वर्ष तक मानी जाती है, विवाह या किसी नारी से रति-सम्बन्ध न करना।

ब्रह्मशर—अना, पृ० १६८, १७८—ब्रह्मा का दिया हुआ बाण, अलौकिक शक्ति सम्पन्न तीर, ईश्वरी शक्ति रखने वाला तीर।

ब्रह्माण्ड—अना, पृ० १०२—संसार, जगत। सूर्य, चन्द्रमा, ग्रहनक्षत्र, पृथ्वी आदि अनेक लोकों से मिलकर बना जगत।

ब्रह्माहरिशंकर का स्तर—अना, पृ० १६७—ब्रह्मा विष्णु शिव आदि की उत्पादक पालक संहारक शक्तियों से भी अधिक शक्ति प्राप्त करना।

भ

भंग—अना, पृ० ३३—वक्रता, तोड़ना, लहर, खण्डित होना, बाधा, टेढ़ापन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भंग-भ्रू-लास—गी, पृ० ७१—भौंहों की मधुर मोहक भंगिमा, दृष्टि या कटाक्षों से सरस मधुर संकेत करना।

भगवती—अना, पृ० १६८—दुर्गा, लक्ष्मी, देवी, सामान्य स्त्री।

भग्न—परि, पृ० १३२; आरा, पृ० ६२—टूटा हुआ, घायल, जीर्ण-शीर्ण, जर्जर।

भजन—तुल, पृ० ३३—गीत, गान, संगीत, इष्ट देवता का नाम जपना, भगवान की स्तुति-प्रार्थना, भगवत-गुण-गान, सेवा, आराधना, भक्ति।

भड़कना—नप, पृ० ३९—चौंकना, उत्तेजित होना, सहसा क्रोध करने लगना।

भतीजा—नप, पृ० १२—छोटे या बड़े भाई का लड़का।

भयकातर—परि, पृ० २१५—[भय=अनिष्ट की शंका से उत्पन्न दुखजनक भाव, डर, खतरा। कातर=अधीर, परेशान, आर्त, भीत, आकुल।] भय से अधीर, डर के कारण घबराया हुआ, आने वाले संकट की आशंका के कारण दुखी।

भर गये हैं मोती के झाग—अर्च, पृ० ३३—सरिता-सरोवर आदि में ऐसे निर्मल स्वच्छ झाग उठ रहे हैं, जैसे उनमें मोतियों का पानी भरा हो, जलाशयों में मोती के समान उज्ज्वल श्वेत जगमगाते झाग उठ रहे हैं।

भर-छन्द-भ्रमर-गुञ्जित-नीलोत्पल—गी, पृ० ८८—गूँजते हुए भ्रमरों के गीतों और नीले कमलों से भरी हुई या भर कर, ऐसे नीले कमलों से भरी हुई, जिन पर मंडराते हुए भौंरे गाते रहते हैं।

भरणी—अर्च, पृ० ५१—धारण, पालन, पोषण, उत्पन्न करने वाली।

भरतकूप—तुल, पृ० ३४—चित्रकूट में एक कुआँ, जिसमें भगवान राम के राज्याभिषेक के लिये लाया गया अनेक तीर्थों का जल डाला गया था।

भल्लपति—अना, पृ० १५४—भालुओं या रीछों का नायक या राजा—जांबवन्त।

भव—तुल, पृ० २८—उत्पत्ति, जन्म, होना, संसार, संसृति, अग्नि, शिव, कुशल।

भव-अर्णव—अर्च, पृ० १—[भव=संसार, उत्पत्ति, शिव। अर्णव=सागर, अन्तरिक्ष, इन्द्र, सूर्य, मणि।] संसार रूपी सागर, समुद्र के समान दुस्तर संसार।

भवन—तुल, पृ० ५०—घर, मकान, सदन, कक्ष, कमरा, आलय, महल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भव-पादप—तुल, पृ० ५८—संसार रूपी वृक्ष, सृष्टि-तरु ।

भविता—नप, पृ० ७३—भावी, होनेवाली, होनहार ।

भसका—अर्च, पृ० ४७—नष्ट हो गया, तिरोहित हो गया ।

भाँग—नप, पृ० १०१—गाँजे की जाति का लगभग पाँच फीट ऊँचा पौधा, जिसकी पत्तियाँ सुखा कर घोट कर पीने से नशा होता है। भाँग की पत्तियों को घोट कर बनाया गया पेय । होली के दिनों में दूध, बादाम, केसर, चीनी आदि मिला कर भाँग पीने-पिलाने का बहुत रिवाज़ है ।

भाण्ड—परि, पृ० २२८—बर्तन, घी तेल का कुप्पा, मसखरा । संदर्भार्थ—खाली बर्तन या कुप्पे के समान सारहीन नाशवान (अनेक ब्रह्माण्ड) ।

भाइयों के वीर—परि, पृ० २०६—अपने ही भाइयों पर शेर के समान आक्रमण करने वाला, भाइयों को मारने में शेर के समान वीर शक्तिशाली ।

भाग्यविधाता—परि, पृ० १२५—भाग्य बनाने वाला, ब्रह्मा, दान आदि दे कर सुखी बनाने वाला ।

भाटा—आरा, पृ० २—ज्वार का उतार । जलप्रवाह का विस्तार या कूलहीन होकर बहना ।

भान—तुल, पृ० ५४—ज्ञान, विश्वास, आभास, बोध ।

भानुकुल-भूषण—अना, पृ० १६२—आभूषण के समान सूर्य-वंश की शोभा बढ़ाने वाला—रामचन्द्र ।

भामिनी—अप, पृ० १६९—सुन्दर स्त्री, नारी, रमणी, सुन्दरी ।

भारत—परि, पृ० १६२—भरत की सन्तान, भरत पुत्र, भरतवंशी, अर्जुन, नट। संदर्भार्थ—अर्जुन के समान हवा के रथ में सवार इन्द्र ।

भारतिउर—अना, पृ० १७—विद्या और ज्ञान की देवी शारदा का हृदय ।

भारती—तुल, पृ० ५५—भारत सम्बन्धी, भारत की, विद्या, वाणी, सरस्वती, शारदा, ज्ञान और विद्या की देवी ।

भारती-रति—परि, पृ० १७९—[भारती=शारदा, ज्ञान की देवी, वाणी, सरस्वती । रति=प्रेम, अनुरक्ति ।] भारती का प्रेम, विद्या कला ज्ञान आदि में अनुरक्ति ।

भार-धरण—अना, पृ० १५८—बोझ रखना, बोझ सँभालना, बोझ धारण करना ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाव—तुल, पृ० १८, २३—भावना, अनुभूति, विचार, विश्वास, आस्था, सार, प्रयोजन, राग। पृ० १८, संदर्भार्थ—प्रकृति-दर्शन से उत्पन्न भावनाएँ अनुभूतियाँ और बोध आदि।

भावना—अना, पृ० १३—भाव, विचार, वृत्ति, संकल्प।

भावभंगी—अना, पृ० ७२—भौंहों, कटाक्षों, दैहिक अवयवों, चेष्टाओं, संकेतों आदि से भावों का प्रकाशन।

भावस्थ—अना, पृ० १६०—भाव में लीन, अनुभूति में डूबा हुआ।

भावातुर—तुल, पृ० ५२—किसी भाव या भावना की तीव्र अनुभूति के कारण आकुल, भावों के आवेग के कारण बेचैन या व्यथित।

भावित—अना, पृ० १५२—सोचा हुआ, प्रमाणित, व्यक्त किया हुआ, चिन्तित।

भावों के घन—तुल, पृ० ४४—उमड़ते और बरसते हुए बादलों के समान प्रेम की विह्वल अश्रुझड़ी लगाने वाले भाव।

भाष—अना, पृ० १२१; तुल, पृ० ९८—शब्द, वाणी, बातचीत, वार्तालाप, संवाद, बात, निर्णय, संकल्प।

भाषा—तुल, पृ० १७; परि, पृ० २९—परिभाषा, शैली, शारदा, बोली, भाव या विचार के आदान-प्रदान का साधन, किसी व्यक्ति या वर्ग के लिखने-बोलने का ढँग या साधन। संदर्भार्थ—चित्रकूट-दर्शन से प्राप्त मौन संकेत और प्रेरणा।

भाषाहीन—परि, पृ० १४२—वाणी-विहीन, मौन, बिना बोले, भाव-विचार आदि प्रकट करने में असमर्थ।

भाष्य—अप, पृ० १७२—भाषा में लिखित कोई ग्रन्थ, मूल ग्रन्थ की व्याख्या, किसी सूत्र या मूल ग्रन्थ की सुबोध भाषा और शैली में अभिव्यक्ति।

भास्वर—अना, पृ० ८५, १०१; तुल, पृ० ३५—चमकीला, दीप्तिमान, सूर्य, दिन, अग्नि, प्रकट, स्पष्ट रूप रंग आकार वाला।

भिन्न-भिन्न—तुल, पृ० ५८—अलग-अलग, पृथक-पृथक, खण्डित, बिखरे हुए, परस्पर उदासीन उपेक्षित और विपरीत।

भिन्न भी देह—तुल, पृ० २८—देह अलग भी हो जाय, प्राण भी चले जायँ, मारा भी जाय, शरीर भी छूट जाय।

भीत—तुल, पृ० ४६—डरा हुआ, आशंकित, आने वाले संकट की आशंका से दुखी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीतर—तुल, पृ० १३—कालिंजर गढ़ के अन्दर बन्दियों के समान दिन काटते हुए। बन्दीगृह में। तुल, पृ० ३५—अन्तरतम, मन और हृदय, आत्मा।

भीतरी रुई—आरा, पृ० १६—[भीतरी=अन्दर की, आन्तरिक, हृदय में विद्यमान, मानसिक, हार्दिक। रुई=बीज पृथक् किये जाने पर बची हुई कपास। रूई के समान कोमल, मुलायम हल्का।] आन्तरिक कोमलता, रूई के समान कोमल हृदय।

भीति—अना, पृ० ५३; परि, पृ० २०७—भय, डर, कम्प, आतंक, आने वाले अनिष्ट की आशंका से उत्पन्न दुख।

भीमा मूर्ति—अना, पृ० १५२—भयंकर विशाल मूर्ति, भीषण विस्तृत आकृति।

भीरू—परि, पृ० २०२; अना, पृ० १५०—कायर, डरपोक, भयभीत।

भुक्ति—तुल, पृ० ३६—भोजन, भोग, आहार, कब्जा, सीमा, ग्रह की दैनिक गति।

भुजैल—नप, पृ० १४—भूजंगा पक्षी।

भुनना—अर्च, पृ० ६८—जलना, ईर्ष्या करना, तपना, भौतिक कष्टों से पीड़ित होना।

भुवन—परि, पृ० ८५—संसार, लोक।

भूतगण—परि, पृ० १५६—पाँच तत्त्वों से बने सभी पदार्थ, पाँच तत्त्व, आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी।

भूना—तुल, पृ० ५७—जला हुआ, झुलसा हुआ, संतापित, पीड़ित।

भूप—नप, पृ० ६१; तुल, पृ० २८—राजा, नरेश, महीप, महिपति, सम्पत्तिशाली।

भूयोभय—गी, पृ० ८६—बार-बार।

भूरुज—गी, पृ० ७४—संसार भर के दुख, शोक या कष्ट, भौतिक आधि-व्याधियाँ।

भूषण—परि, पृ० ७८—आभूषण, शोभा बढ़ाने वाला। संदर्भार्थ—शोभा-सौंदर्य, लता-वीरुध, कुंज, फूल, पानी आदि।

भृंग—परि, पृ० ५४—भौंरा, भ्रमर, मधुकर।

भृकुटि-कुटिल—परि, पृ० ५१—भौंहों के समान टेढ़ा, तिरछी-टेढ़ी भौंहों वाला। संदर्भार्थ—अपलक नयनों और पूर्ण ध्यानमग्न होकर भौंह मिला कर प्रियतम की प्रतीक्षा करते हुए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भेक—अना, पृ० ११—मेंढक, दादुर।

भेद—परि, पृ० २२७—अन्तर, अच्छा-बुरा, छोटा-बड़ा समझने की धारणा।

भेद-कौशल-समूह—अना, पृ० १५२—[भेद=छेदना, परिवर्तन, पराजय, रहस्य, मर्म, प्रकार, फूट डालना। कौशल=दक्षता, मंगल, कल्याण, चतुरता।] शत्रुओं में फूट डालने में दक्ष लोगों का समूह। शत्रु सेनाओं का छेदन करने में प्रवीण लोगों का दल।

भेरी-गर्जन—परि, पृ० १६६—[भेरी=बीन, नफीरी, युद्ध का बाजा।] रणवाद्यों का गरजना, बीन नफीरी आदि का बजना।

भैरव—अना, पृ० २७, ६७—भयंकर, डरावना, भयानक, शिव, एक राग विशेष।

भैरवी—परि, पृ० ९२—भयंकर, उग्र, प्रचण्ड, भीषण।

भोग-वासना—परि, पृ० ११२—सुख ऐश्वर्य भोगने की तीव्र कामना।

भोग-संयोग—परि, पृ० २०२- भोगने का अवसर।

भोगावती—अना, पृ० १३०—एक नदी विशेष।

भोर—अना, पृ० ९४; परि, पृ० १०७—सवेरा, प्रभात, सूर्योदय का समय।

भौंर—अर्च, पृ० ३३—भौंरे, भ्रमर, पानी में पड़ने वाले भँवर।

भ्रम—तुल, पृ० २१, २९, ३५—धोखा, कपट, छल, माया, असत्य या अवास्तविक वस्तु को सत्य या यथार्थ मान लेना, भटकना, भूलना।

भ्रमर—तुल, पृ० ३५—भौंरा, मधुप, उद्धव, कामी, चाक, चकाचौंध, लड़का। संदर्भार्थ—भटकने वाला, भौंरों के समान आसक्त।

भ्रमर-भार-कम्पित—परि, पृ० २३४—भौंरों के बोझ से कांपती हुई। संदर्भार्थ—रसपान करते हुए भौंरों के बोझ से काँपती और झुकी हुई चमेली के समान प्रेम-चुम्बनों से कम्पित शूर्पनखा।

भ्रांत—तुल, पृ० १२; अना, पृ० १४१ भटके हुए, पथ भ्रष्ट। संदर्भार्थ—अपनी संस्कृति, स्वतंत्रता, गौरव-गरिमा भूले हुए।

भ्रान्ति—परि, पृ० ८०—माया, भ्रम, धोखा, छलना।

भ्रू विलास—अना, पृ० २१—भौंहों का संचालन, भौंहों द्वारा मधुर भाव व्यक्त करना, भौंहों से संकेत करना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

म

मंच—अना, पृ० ७४—खाट, मचान, रंगभूमि, व्याख्यान, नृत्य, नाटक, कथा, आदि करने के लिए बनाया गया धरती से ऊँचा चौरस चबूतरा।

मंजरित—अना, पृ० २—[मंजरी=बौर।] बौरों से लदी, मंजरी की गंध से सुवासित।

मंजरी की शाख—गीतगुंज पृ० ३६—बौरों से लदी हुई आम की डालियां।

मंजीर—परि, पृ० ४८; अना, पृ० ४०—पैरों में पहनने का एक घूंघरूदार आभूषण, नूपुर, पायल, पाजेब।

मञ्जु-गुञ्जर—गी, पृ० १०३—मृदुल गुंजार करते हुए, मधुर मधुर गूँजते हुए।

मंजुमुख—अना, पृ० १—सुन्दर मुख, सुन्दर मुख वाला।

मंजुल—तुल, पृ० ३०—सुन्दर, मनोहर, कुंज, सोता, कूप।

मण्डलाकार—परि, पृ० ७६—गोलाकार, गोल चक्कर काटते हुए, चक्राकार।

मंत्रपूत—अना, पृ० १५१—मंत्र के द्वारा पवित्र किया गया, मंत्र शक्ति से सम्पन्न।

मंत्र-मुग्ध—तुल, पृ० १६—[मंत्र=सलाह, गुप्त वार्ता, मंत्रणा, किसी देवता या अलौकिक शक्ति को सिद्ध करने वाला शब्द या शब्द समूह। मुग्ध=मोहित, मूढ़, भोला, सुन्दर, पागल।] मंत्र शक्ति के प्रभाव से मोहित या पागल, किसी जादू के असर से सुधबुध भूला हुआ।

मंदचरण—तुल, पृ० ६१—धीरे धीरे पैर रखते हुए, धीमी गति से, शांत भाव से।

मन्दर-सज्जित—परि, पृ० ३४—[मन्दर=स्वर्ग, समुद्र मंथन में मथानी बनाया गया पर्वत। सज्जित=सुशोभित, सजा हुआ।] स्वर्ग की सुषमा से शोभित। सुमेरू के समान जगमग।

मंदस्मित—तुल, पृ० १७—[मंद=धीरे-धीरे हौले-हौले, शिथिल, आलस, सुस्त। स्मित=मुसकान।] धीरे धीरे मुस्कराते हुए, मधुर-मधुर मुस्कराने वाला, हल्की मुस्कान।

मन्द्र—अना, पृ० १८, ६८—गम्भीर ध्वनि, मृदंग, गम्भीर, प्रसन्न, आह्लादकारी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन्द्रस्वर—अना, पृ० १५४—मृदंग के समान गम्भीर स्वर, आह्लादकारी ध्वनि।

मन्द्रितयन—अना, पृ० १६४—मृदंग के समान आह्लादकारी गम्भीर गर्जन करते हुए बादल।

मन्वन्तर—नप, पृ० ७२—(मनु+अन्तर) मनु का अधिकार काल, इकहत्तर चतुर्युगी। दुर्भिक्ष, अकाल।

मँहगा—नि, पृ० १०३—बहुत मूल्य पर प्राप्त, कठिनता से प्राप्त, कष्टसाध्य। संदर्भार्थ—सरलता से प्रभावित न होने वाला। कठिनता से हारने या वश में आने वाला।

मकबरा—अना, पृ० ६३—वह भवन, जिस में किसी की कब्र हो, समाधि, मज़ार।

मकर-संक्रान्ति—नप, पृ० ७६—सूर्य के मकर-रेखा से उत्तर की ओर आने का समय। विश्वत-रेखा से २३½ डिग्री दक्षिण की ओर मकर-रेखा मानी जाती है।

मख—गी, पृ० ८६—हवन, यज्ञ।

मग—तुल, पृ० २०—पथ, पंथ, रास्ता, साधन, ढंग, तरीका। सफलता, विजय, सिद्धि आदि प्राप्त करने का साधन या ढंग।

मगन (मग्न)—परि, पृ० ३३—लीन, डूबे हुए, तन्मय, प्रसन्न, बाहरी सुधबुध भूले हुए।

मजीरा—नप, पृ० ६३—बहुत छोटी तशतरी के समान काशी का बना हुआ बाजा। यह एक दूसरे पर आघात कर के जोड़ी में बजाया जाता है।

मज्जनावेदन—अना, पृ० ६९—जलविहार की प्रार्थना, जल में स्नान अवगाहन क्रीड़ा आदि का निमंत्रण।

मड़कर—नप, पृ० ६९—साफ होकर, नाल, भूसा आदि से पृथक् होकर, लद कर, भरे जाकर।

मति—तुल, पृ० ३७—बुद्धि, प्रतिभा, विवेक, ज्ञान, सूझ-बूझ।

मति-गति—तुल, पृ० ४९—बुद्धि की गति, सोचविचार, सूझ-बूझ। संदर्भार्थ—बुद्धि की पथ-भ्रष्टता, बुद्धि विवेक शून्यता, रीतिनीति, व्यवहार, मर्यादा आदि का अज्ञान।

मतिमन—अना, पृ० १६६—मतिमान, विवेकशील, बुद्धिमान, विचारक।

मत्त—परि, पृ० ५४—मस्त, नशे में चूर, सुधबुध बिसराये हुए।

मदन—परि, पृ० ८२—कामदेव, मनमथ, मनोज।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मद-विष-सम—तुल, पृ० २६—शराब और जहर के समान, बेसुध करने और मारने वाले पदार्थ के समान, बेहोशी और मौत के समान।

मदिर—अना, पृ० ४५—मद से युक्त, नशीला, मादक, सुधबुध भुला देने वाला।

मधु-ऋतु - गी, पृ० २०—[मधु=शहद, पराग, शराब, नशा। ऋतु=समय, काल, मौसम।] वसन्त काल, वसन्तु ऋतु।

मधुगंध-चयन – अप, पृ० ६५—मीठी गंध को एकत्र करना या करने वाला, मधुर सुगंधि की राशि।

मधुप—परि, पृ० ६९—भौंरा, भ्रमर, मधुकर।

मधुमास—परि, पृ० ८२—वह मास या समय जिसमें शहद, पराग, नशे का बाहुल्य रहता है—वसन्त ऋतु।

मधुर—तुल, पृ० १५—मीठा, प्रिय, सुन्दर, कोमल, सौम्य, सुखदायक।

मधुर-भार-भरण-छन्द—अना, पृ० १२—मधुरता और संगीत का भार वहन करती हुई (सुवास), अपने मिठास और स्वरों से जादू कर देने वाली सुवासित पवन।

मधुर-मन्द्र—परि, पृ०, १६४—मीठा, गम्भीर, धीमा नाद या स्वर। मीठी और गम्भीर ध्वनि।

मधुर-वादिनी—अना, पृ० ३३—मीठा बजाने वाली, मधुर स्वर निकालने वाली, कानों को प्रिय लगने वाली धुन बजाने वाली।

मधुराधर—अना, पृ० ५१—मीठे ओठ, सुकुमार सुन्दर मधुभाषी ओठ।

मधुरिमा—परि, पृ० ८१—मधुरता, मिठास।

मधु-लुब्ध—परि, पृ० ५४—पराग-लोभी, पराग या पुष्प-रज पान करने के लिये आकुल, पराग पर मोहित हो जाने वाला।

मधुवन—गीतगुंज, पृ० ४१—कृष्णकाव्य में वर्णित एक वन जिसमें कृष्ण गाय चराते, बाँसुरी बजाते और राधा और गीपियों के साथ क्रीड़ा किया करते थे। वह वन जिसमें मधुदैत्य रहता था। इसी स्थान पर शत्रुघ्न ने मथुरा नगर बसाया था। मथुरा। पुष्प-परिमल की गंध से भरा वन या वाटिका।

मधु-व्रत-में—गी, पृ० १६—यौवन-सुख का व्रत लिये हुए, पति-प्राप्ति के लिये तपस्या करने वाली—पार्वती। बसन्त के आने की प्रतीक्षा में साधना करती हुई—डाली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नध्य—ग्रना, पृ० २—वीच, बीचोबीच, दोनों सिरों से अन्दर की ग्रोर बराबर दूरी पर।

मध्याह्न—ग्रना, पृ० १४—दोपहर, दिन का वह समय जब सूर्य सबसे ग्रधिक तपता है। यह समय लगभग दिन के बारह बजे से तीन वजे तक माना जाता है।

मन—तुल, पृ० २३; परि, पृ० २२७—ज्ञान, संवेदन, संकल्प ग्रादि की साधन रूप ग्रन्तरिन्द्रय; चित्त, ग्रन्तःकरण की संकल्प-विकल्प करने वाली वृत्ति। मन का प्रयोग हिन्दी के ललित साहित्य में उसके दार्शनिक ग्रर्थ में नहीं किया जाता; वल्कि हृदय, चित्त, बुद्धि, विचार-शक्ति, अनुभूति ग्रादि के रूप में होता है।

मन-ग्रभिरामा—परि, पृ० १३७—मन को सुन्दर लगने वाली, इच्छानुसार सौंदर्यशालिनी।

मन-चिन्त्य-प्राण-धन—गी, पृ० ९८—प्राणों का धन, जिसकी चिन्ता मन सदा करता रहता है। प्राणों का प्रियतम जिसके ध्यान में मन निमग्न रहता है।

मन-मधुकर—तुल, पृ० ३०—मन का भौंरा, मन रूपी भौंरा। हृदय का भ्रमर।

मनमोहन—परि, पृ० ८१—मन को मोहित या मुग्ध करने वाला—कृष्ण।

मनस्काम-कल्पतरु—परि, पृ० २२२—[मनः=मन, हृदय। काम=इच्छा, ग्रभिलाषा, कामना। कल्पतरु= कल्पवृक्ष, ग्रक्षय वट, वह वटवृक्ष जो प्रलय में भी नष्ट नहीं होता ग्रौर सारी ग्रभिलाषाएँ पूरी करता है।] मन की सारी कामनाओं को पूर्ण करने वाला कल्पवृक्ष।

मनोनभ—तुल, पृ० २५—मन का ग्राकाश, हृदय की ग्रतल गहराइयां, भारतीय जनसमाज की भावनाएँ या हृदय।

मनोभिलाष—परि, पृ० २२२—मन की कामनाएँ, मन की इच्छाएँ।

मनोमोहिनी—परि, पृ० ८१—मन को मोहित करने वाली, हृदय को मुग्ध कर देने वाली।

मनोरंजना—परि, पृ० १४७—मन प्रसन्न होना, हृदय का हर्षित होना।

मनोरमा—परि, पृ० १४७—जिसमें मन रमता हो, लीन होता हो, सुन्दर, मोहक, मुग्धकारी।

मयूर-व्याल—ग्रना, पृ० ११—मोर ग्रौर साँप।

मर—गी, पृ० ५—मरणशील, मरने वाले, नष्ट हो जाने वाले।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मरकर— तुल, पृ० ४६—बहुत अधिक लज्जित होकर, लाज के कारण जैसे मरी जा रही हो, ग्लानि के कारण हतप्रभ और निष्क्रिय होकर।

मरजाद वाले —परि पृ० १६६—मर्यादा पालन करने वाले, सम्मानित, प्रसिद्ध यशस्वी गौरवशाली वंश वाले।

मरण-पाशि—अना, पृ० ५—मृत्यु-पाश, फाँसी, फंदा।

मराल-चाल—परि, पृ० ४६—हंस के समान चाल, हंस के समान चलने वाली।

मरीचिमाली—परि, पृ० १६२—[मरीचि=किरणें, रश्मियाँ। माली=माला धारण करने वाला।] किरणों की माला पहनने वाला, सूर्य, प्रभाकर।

मरु—अना, पृ० ६—रेगिस्तान, रेत या बालू वाली धरती।

मरुत-पुलक—गी, पृ० १५—वायु के झोंके ही जिसके रोमांच हैं, हवा की लहरों के समान पुलकों वाली।

मरु-मरीचिका—परि, पृ० ४६—[मरु=रेत, रेगिस्तान, बालू, रेणुका। मरीचिका=किरणें, रश्मियां।] बालू या रेत में पड़ने या चमकने वाली किरणें। किरणों से चमकने वाली रेत की लहरें, जो भ्रम से जल-तरंग समझ ली जाती हैं। तृप्ति या लाभ की झूठी आशा।

मरोर—अना, पृ० ४५—लचक, मरोड़ना, मोड़ना, टेढ़ापन, ऐंठन।

मर्त्य—अना, पृ० ५— मरणशील, नश्वर, नाशवान।

मर्दानगी—परि, पृ० १६६—पौरुष, वीरता, साहस, इन्सानियत।

मर्मवाणी—अना, पृ० ५८—हृदय को प्रभावित करने वाले वचन, रहस्यपूर्ण शब्द, सार वचन, आशय व्यक्त करने वाले शब्द।

मर्मस्पर्शी—परि, पृ० १४२—हृदय को छूने वाला, हृदय को प्रभावित या भावलीन करने वाला।

मर्मान्तिक—अना, पृ० ८८— हृदय-वेधक। हृदय को चोट पहुँचाने वाला।

मर्माभास—अना, पृ० १६६—रहस्य की झलक, जीवन के सार की झांकी, तात्विक बोध या ज्ञान।

मर्माहत—अना, पृ० ८५—[मर्म=हृदय, कोमल स्थान। आहत=चोट खाया हुआ, घायल।] घायल मन, आहत हृदय, हार्दिक या मानसिक रूप में व्यथित।

मर्यादागर्भित - तुल, पृ० ४४—[मर्यादा=सीमा, गौरव, गरिमा, शान, लाज। गर्भित=निहित, अन्तर्निहित जिसके भीतर हो, जो किसी के भीतर या अन्दर हो।] मर्यादा से पूर्ण, गरिमा से भरा हुआ, गौरव से सम्पन्न।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मर्ष—अना, पृ० १४—सहन, धैर्य, क्षांति, क्षमा, सहिष्णुता ।

मर्षण—गी, पृ० ७४—क्षमा या सहन करना । संदर्भार्थ—शांत, सुस्त या चुप बैठे रहना, निष्क्रिय होना ।

मर्षण-मन—तुल, पृ० ५८—संदर्भार्थ—विदेशी संस्कृति, कला, विलास में फँसा हुआ निष्क्रिय भारतीय समाज ।

मलय—अना, पृ० ३७—[मलय=तमिल भाषा में इसका अर्थ है पर्वत] वह पर्वत जिस पर चन्दन उत्पन्न होता है, चन्दन ।

मलार-कजली—गीतगुंज, पृ० ५४—वर्षा ऋतु में गाये जाने वाले गीत । कजली अधिकतर उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग में गाई जाती है और मलार प्रायः समस्त क्षेत्र में ।

मलिन—अना, पृ० २६—मैला, गन्दा, उदास, दुखी, नीच, पापी ।

मल्लिका—अना, पृ० २२—एक सफेद छोटा फूल, बेला, मोतिया ।

मसकदण्ड—अना, पृ० १५७—[मसक्=मच्छर । दण्ड=माप, नाप, आकार ।] मच्छर बन कर, बहुत छोटा आकार धारण करके, जिससे कोई देख न सके ।

मसकना (मसका)—अर्च, पृ० ४७—टूटना, फटना, दरार आना, मसलना ।

मसृण—तुल, पृ० १६; परि, पृ० ७४—चिकना, मुलायम, चमकदार, सुकुमार, मधुर ।

मस्तक—अना, पृ० १६—माथा, भाल, सिर, भाग्य, बुद्धि ।

महगू—नप, पृ० १०२—एक ग्रामीण मज़दूर का नाम ।

महत—तुल, पृ० ३५—महान्, बड़ा, बृहत, श्रेष्ठ, ऊँचा, भारी, प्रधान ।

महती—अर्च, पृ० ६०—अतिशय, महत्त्वपूर्ण, महान्, शक्तिशाली ।

महाकाश—अना, पृ० १०२—अनन्त आकाश, सीमाहीन ब्रह्माण्ड-व्यापक आकाश ।

महाजन—नप, पृ० ६६—श्रेष्ठजन, बड़ा आदमी, जाति या वर्ग का मुखिया । संदर्भार्थ—देन-लेन करने वाला, साहूकार, ऋणदाता ।

महाफलक—अना, पृ० १६४—[फलक=तीक्ष्ण धार वाला लोहे का फलका जो वाण में आगे लगाया जाता है ।] अलौकिक, दिव्य या महान् शक्तिशाली फलक ।

महानाद-ध्वनि—अना, पृ० १०२—नादरूप परब्रह्म का आकाशव्यापी स्वर-गुंजन ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महानिर्वाण—अना, पृ० १०१—परम मोक्ष । कर्म, कर्ता, कर्म-फल का तिरोभाव । विषय-बोध और विषय-बंधन के पूर्ण अभाव की स्थिति ।

महानिलय—अना, पृ० १५२—असीम आकाश, असीम आकाश के समान आलय ।

महाब्राह्मण—नप, पृ० १००—प्रेतकर्म कराकर उसका दान लेने वाला ब्राह्मण । हिन्दुओं में किसी व्यक्ति के मरने के पश्चात् गृहशुद्धि भूतप्रेत के प्रकोप से बचने के लिए धार्मिक क्रिया होती है, उसमें मृतक के नाम पर कपड़े, बिस्तर, चारपाई, जूते, बर्तन आदि दान दिए जाते हैं। यह दान लेने वाला महाब्राह्मण कहलाता है, इसे कटिया भी कहते हैं । ब्राह्मणों में यह वर्ग बहुत निम्न कोटि का माना जाता है ।

महाब्धि—अना, पृ० १८—महासमुद्र, महासागर ।

महाभारतीयता—नप, पृ० ७१—भारतीयता की व्यापक भावना, भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन, इतिहास आदि के प्रति आस्था ।

महाभूतसिंधु—अना, पृ० १०२—जगत-रचना के तत्त्वों की विशाल अनन्त राशि, उन तत्त्वों-सामग्रियों का असीम भण्डार, जिन से सृष्टिकी रचना होती है।

महामाया—अर्च, पृ० ८—जगत की कारणभूता अविद्या, जगत की अधिष्ठात्री दुर्गा । भगवान की वह आदि शक्ति, जिससे वह सृष्टि-रचना करता है।

महाराव—अना, पृ० १५३—महानाद, महाध्वनि, बहुत भारी ऊँचा स्वर ।

महाशून्य-पथ—अना, पृ० १०४—सूर्य चन्द्रमा ग्रह नक्षत्रों से रहित सर्वव्याप्त आकाश का मार्ग ।

महासद्म—अना, पृ० २०—बहुत बड़ा घर, महल, प्रासाद ।

महिमा—तुल, पृ० ५३—भारीपन, विशालता, गौरव, महत्त्व, शक्ति ।

महिमा-ज्योति-हिरण—अना, पृ० १६१—[हिरण=स्वर्ण, मृग, कौड़ी] महानता की सुनहरी ज्योति ।

महिमाधर—तुल, पृ० ६१—गौरव-गरिमा धारण करने वाली, महिमाशालिनी, विश्व की श्रद्धा भक्ति पूजा की अधिकारिणी ।

महिषासुर—अना, पृ० १६०—भैंसे की आकृति का एक राक्षस, जिसे काली दुर्गा ने मारा था।

महीप—अना, पृ० ६०—राजा, पृथ्वीपति, नराधिप।

महीयान—अना, पृ० १४८—अत्यन्त बड़ा, महान्, शक्तिशाली ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माघ—नप, पृ० ७६—एक भारतीय महीना, जिसमें भीषण शीत पाला कोहरा पड़ता है।

माख (ना)—आरा, पृ० ३२, ७६—अप्रसन्नता, रोष मा गर्व करना।

माची—आरा, पृ० ७४—जुआ, जिसमें बैल बाँधा जाता है।

माजर आरा, पृ० ८५—बौर, मंजरी।

माधवी—अना, पृ० २३—एक सुगंधित पुष्पलता, वासंती, शहद से बनी शराब, एक रागिनी, कुटनी, दुर्गा।

माधुरी—अना, पृ० ९—मिठास, मधुरता।

मान-उपमान—अर्च, पृ० ९७—मान की तुलना के लिए कोई अन्य पदार्थ।

मान के तन—अर्च, पृ० ८—प्रतिष्ठा के शरीर, आदर सम्मान के रूपआकार, पूजा-प्रतिष्ठा के आधार, ऐसा-प्राणी जिससे मान किया जाय।

मान-पान—तुल, पृ० ४९—मान में दिया जाने वाला पान, स्वागत के प्रतीक स्वरूप अर्पित किया जाने वाला पान।

मानस—गीतगुंज, पृ० ४०—हृदय, सरोवर। मानसरोवर के समान हृदय।

मानस-चकोर—तुल, पृ० ३४—[मानस=हृदय, मन, मानसरोवर, तालाब, झील। चकोर=एक पक्षी, जिस के विषय में प्रसिद्ध है कि वह अंगारे खाता और चन्द्रमा से प्रेम करता है।] हृदय रूपी चकोर।

मानस-तरंग—तुल, पृ० २७—मानसरोवर की लहर, मन या हृदय की लहर, मन की भावनाएँ, हृदय की विलासी भावनाओं की लहर।

मानस-धन—तुल, पृ० २७—हृदय का धन, मन के लिये बहुत मूल्यवान या महत्त्वशाली पदार्थ, रामचरितमानस का धन या नायक भगवान राम।

माया—तुल, पृ० १६, २५; अना, पृ० १०३; परि, पृ० ८१—धन-सम्पत्ति, लक्ष्मी, ममता, लीला, करामात, जादू, धोखा, इन्द्रजाल, परमेश्वर की बीजरूप शक्ति, जो सृष्टि की कारण है। धन, वैभव, सुख, ऐश्वर्य।

माया-कर—तुल, पृ० ५८—माया करने वाले राक्षस, माया की भुजाएँ, छल-कपट करके जीव को फँसाने वाली मायावी शक्तियाँ।

मायामंत्र—परि, पृ० ४७—जादू के समान प्रभावशाली मंत्र, जादू करने वाला मंत्र।

मायामत—अर्च, पृ० ८७—माया में फँसे, छलकपट में लीन, अविवेक-अज्ञान में डूबे हुए।

मायायन—तुल, पृ० ४०—मायागृह, सब कुछ विस्मृत कर देने वाला स्थान, सांसारिक आकर्षण आसक्ति से पूर्ण कक्ष।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मायावरण—परि, पृ० २३७—माया का पर्दा, भ्रम या धोखे का पर्दा, अज्ञान का अँधेरा।

मायाशय—तुल, पृ० ३१—माया से अभिभूत, प्राकृतिक शोभा से आत्म-विभोर, चित्रकूट की छटा में अनुभूति लीन।

मायिक—आरा, पृ० ५३—माया सम्बंधी, माया में फँसा हुआ, भौतिक कामनाओं में भटकता हुआ।

मारण—परि, पृ० २२४; आरा, पृ० २८—मारना, प्राण लेना। एक तांत्रिक अभिचार, जो किसी के मारने के लिये किया जाय। शत्रु के प्राण नाश के लिये तांत्रिक सिद्धि।

मारुत-प्रेरित—तुल, पृ० ५२—[मारुत=हवा, पवन, वायु। प्रेरित=प्रोत्साहित, प्रेरणा पाया हुआ, अनुप्राणित, डोलायमान, चालित, संचालित।] पवन के द्वारा उड़ाकर लाये गये, पवन द्वारा दोलित, वायु द्वारा एकत्र किये गये।

मारुति—अना, पृ० १५२—मारुत के पुत्र, पवनसुत हनुमान।

मार्ग-मृत्तिका—परि, पृ० १५६—रास्ते की मिट्टी, पथ की रेत, धूल या कीचड़।

मार्जित—अना, पृ० २०—शोधित, मँजी हुई, शुद्ध की हुई।

मालकौश—अना पृ० १२६—एक प्रकार की रागिनी।

मालती—परि, पृ० १२९—एक पुष्प विशेष।

मालमता—अर्च, पृ० ८४—धनसम्पत्ति, धनदौलत, असबाब-सामान।

मालिनी—आरा, पृ० ७—मालिन, दुर्गा, मन्दाकिनी, एक छन्द, एक नदी विशेष। चम्पा नगरी।

मिजराब—गी, पृ० २५—तार का बना छल्ला, जिसकी नोक के आघात से सितार, तानपूरा आदि बजाया जाता है।

मिताई—अर्च, पृ० ४९—मित्रता, आपसी प्रेम।

मिति—अर्च, पृ० १०२—नाप, सीमा, तोल, तारीख, तिथि, दिन।

मित्रप्रवर—तुल, पृ० ३२—संगी, साथी, सखा, मित्र।

मिथ्यापर—अना, पृ० १६६—झूठा व्यवहार या आचार करने वाला।

मिहिर—परि, पृ० २०७; अर्च, १६—सूर्य, प्रभाकर, दिवाकर।

मिहिर-द्वार—तुल, पृ० २८—[मिहिर=सूर्य, चन्द्रमा, बादल, आक, वायु। द्वार=दरवाजा, घर, लोक, स्थान, मार्ग।] सूर्य का द्वार या घर, सूर्य के समान ज्ञान या यथार्थ सत्य का आलोक, उज्ज्वल प्रकाश का स्थान।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मीड़—अर्च, पृ० ५२ ; गीतगुंज, पृ० ६२—संगीत कला के अनुसार एक स्वर से दूसरे स्वर पर जाने का सुन्दर ढंग। स्वर-परिवर्तन, विविध स्वर निकालना।

मीन-केतन—तुल, पृ० ३८—[मीन=मछली, मत्स्य। केतन=ध्वजा, पताका, झण्डा।] मछली के झण्डे वाला, कामदेव, मदन।

मीना—आरा, पृ० ६६—राजपूतों की एक युद्ध प्रिय जाति, वीर राजपूत। रत्नमणि आदि।

मीनार—अना, पृ० ६३—स्तम्भ, स्तम्भ रूप में निर्मित ऊँचा भवन।

मीलित=अर्च, पृ० ४१—बन्द, मुँदा हुआ, वेखिला, अविकसित, मिला हुआ।

मीसना—नप, पृ० ६—मसलना, रगड़ना, बालियों को हथेलियों से मसल कर दाने निकालना।

मुआ—आरा, पृ० ४३—मरा हुआ, निष्प्राण, अत्यन्त निर्बल।

मुकुलबंध—आरा, पृ० १३—कली के समान बन्द, बेसुध सोता हुआ।

मुकुलशयने—अना, पृ० १९८—कलियों पर शयन करने वाली, फूलों में निवास करने वाली, सुगंधि, सुरभित पवन।

मुकुलित—परि, पृ० ५८—कलियों से भरा, पुष्पित, खिला हुआ, कलियों के समान सुकुमार, मदिर और अभिनव।

मुक्त—तुल, पृ० ३८—बंधनहीन, स्वाधीन, चारों ओर फैले हुए।

मुक्त-कुन्तल—परि, पृ० १०३—बंधनहीन बाल, खुले हुए केश।

मुक्तकुन्तला—अना, पृ० ११३—खुले या बिखरे बालों वाली, बाल बिखराये विकराल रूप धारण किये।

मुक्तकेश—तुल, पृ० ३८—खुले हुए बाल, बेबँधे हुए कुंतल।

मुक्तभाल—तुल, पृ० २६—[मुक्त=छूटा हुआ, बंधन हीन, स्वतंत्र, स्वाधीन। भाल=मस्तक, माथा, सिर, भाग्य, बुद्धि, चिन्तन, मनन।] स्वतंत्रता से चिन्तन-मनन करने वाले, स्वाधीन विचार वाले, सोचने करने में स्वतंत्र।

मुक्तनभ—तुल, पृ० २२—खुला निर्मल मेघहीन आकाश। संदभार्थ=मन का असीम और विघ्नबाधा रहित आकाश, खुले विस्तृत आकाश के समान सीमाहीन अतल मन।

मुक्त-पुरुष—परि, पृ० ८१—किसी भी बंधन में न बंधने या रहने वाला, पूर्ण स्वाधीन व्यक्ति।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्तप्राण—तुल, पृ० २०— भौतिक मायावी बंधन से छूटे हुए प्राण। संदर्भार्थ—विकारों से स्वाधीन करने और स्वेचछा से विचरण करने वाला—तुलसीदास।

मुक्ता—तुल, पृ० ३६—वेश्या, रास्ता, जो मुक्त हो गई है। मोती।

मुक्तानन—अर्च, पृ० २५—अवगुण्ठन रहित मुख, आवरणहीन, निर्मल स्पष्ट मुख या मुखवाली।

मुक्ताकार—अना, पृ० १७०—शुद्ध स्वरूप, स्वतंत्र और निर्मल स्वरूप।

मुक्ता-त्याग में तागी—गी, पृ० ४—[तागी=तागे में पिरोयी हुई। तागे से क्रियाविशेषण बना लिया गया है।] त्याग के डोरे या धागे में पिरोये हुए मोती के समान प्रेयसी।

मुक्तादल—अना, पृ० १५६—मोतियों के दोने, मोतियों के समान स्वच्छ जगमगाते आँसू।

मुक्ति—तुल, पृ० २८—छुटकारा, उद्धार, निस्तार, स्वाधीनता, स्वतंत्रता, दासता के पाश से छूटना। संदर्भार्थ—भौतिक या विदेशी विलासी संस्कृति के बंधन से उद्धार।

मुक्त-दृष्टि-कलि—गी, पृ० ४२—आँखें खोले हुए कली, खुली आँखों वाली कली, कली पूरी तरह खिल गई है, लगता है जैसे जाग कर उसने आँखें खोल दी है।

मुक्ति-मणि—गी, पृ० २०—मुक्ति की मणि। शीत-संकोच से छुड़ाने वाला मणि रूपी सूर्य।

मुख-अम्बुज—परि, पृ० ५४—मुखरूपी कमल। कमल के समान सुन्दर सुकुमार प्रसन्न मुख।

मुख-कलकल—गी, पृ० २१—मुख से कलकल शब्द करती हुई।

मुखर—तुल, पृ० १७; परि, पृ० ७७—अधिक बोलने वाला, वाचाल, भाषण-प्रवीण, कोलाहलपूर्ण, गुंजित, बजता या शब्द करता हुआ।

मुखर-उर—अना, पृ० १—[मुखर=बोलता हुआ, ध्वनित। उर=हृदय।] धड़कता हुआ हृदय, ध्वनित हृदय, भावों को अभिव्यक्त करता हुआ हृदय।

मुखरता-वर्जित—परि, पृ० १४७—जिसे बोलने की आज्ञा न हो, जिसे बोलने का निषेध हो, हृदय के भाव प्रकट करने में असमर्थ।

मुग्ध—अना, पृ० ६१—लुभित, मोहित, आसक्त।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुग्धा—परि, पृ० ४६—मुग्ध या लुब्ध होने वाली, वह प्रेमलीन किशोरी, जिस में कामवासना कम और लज्जा अधिक हो, प्रेमानुरक्त लजीली युवती ।

मुट्ठीभर—परि, पृ० २०५—बहुत थोड़े, थोड़ी संख्या वाले ।

मुद्रितदृग—परि, पृ० ३७—बन्द आँखें, मुंदी आँखें । अज्ञान से बन्द हृदय की आँखें । अज्ञान में लीन बुद्धि ।

मुधार—अना, पृ० १७६—व्यर्थ, बेफ़ायदा, प्रयोजन-हीन, झूठमूठ ।

मुनाफ़ा—नप, पृ० १००—लाभ, फ़ायदा, बचत ।

मुन्नी-मुन्ने चुन्नी-चुन्ने टुन्नी-टुन्ने—नप, पृ० १३—बालिकाओं-बालकों के प्यार के नाम ।

मुरझी आस—अर्च, पृ० ३५—मुरझाई हुई आशा, नष्ट-प्राय आशा ।

मुहुर्मुहु—अना, पृ० ८८; गीतगुंज, पृ० ४३—बार-बार, पुनः-पुनः, लगातार ।

मुहोमुह—नप, पृ० २०—एक दूसरे की ओर मुंह किये हुए, आमने-सामने ।

मूंग—गीतगुंज, पृ० ५२—दाल वाला एक हरा अनाज । इसका दाना कुछ गोल और उड़द से छोटा होता है । इसकी भी बेल फैलती है और यह फलियों में पैदा होता है ।

मूक—अना, पृ० २—मौन, न बोलने वाला । विवश, अपने दुख-सुख कह सकने में असर्थ ।

मूकता—परि, पृ० २६—मौन, न बोलने या चुप रहने की स्थिति ।

मूकभाष—तुल, पृ० २५—[मूक=मौन, न बोलना, वाणी विहीन, निःशब्द । भाष=भाषा, शब्द, ध्वनि, वाणी, बोलना ।] मौन वाणी वाला, बेज़बान, वाणी-विहीन, जो कुछ भी कहने में असमर्थ हो, जो अपने अधिकारों की मांग और अपने ऊपर होते अत्याचारों का प्रतिरोध न कर सके ।

मूठ—गीतगुंज, पृ० ३९—जादू-टोना करने के लिए मुट्ठी भर कर उड़द या कोई अन्य पदार्थ फेंकना या मारना । जादू-टोना करना, जादू करके ।

मूदा—अर्च, पृ० ३५—जिस की पंखड़ियाँ मुंदी हुई हैं, बिना खिला हुआ ।

मूर्च्छना—अना, पृ० ३३—संगीत में ग्राम का सातवाँ भाग, सातों स्वरों का क्रम से अवरोहण-आरोहण । बेसुधि, बेहोशी ।

मूर्च्छित लिपटती थी जड़ों से—अना, पृ० ७५—इन्द्रिय-सुख की वासनाओं से लिपट कर बेहोश हो गई थी, भौतिक सुख लालसाओं या शारीरिक तृष्णा की तृप्ति की कामनाओं में फँसी हुई बेसुध हो रही थी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूर्त राग—अना, पृ० ७४—साकार प्रेम, प्रेम मूर्त रूप धर कर विद्यमान था।

मूर्ति—अना, पृ० २—प्रतिमा, आकार, पुतली, चित्र।

मूर्ति-धीति—अना, पृ० १३६—सन्तोष की मूर्ति, पूरी तरह सुखी संतुष्ट।

मूर्ति सुघर—तुल, पृ० ६१—कलाकुशलता से घड़ी हुई मूर्ति, अत्यन्त कौशल से निर्मित मूर्ति के समान सुन्दर सुगठित अवयवों वाली स्त्री रत्नावली स्वरूपा शारदा।

मूसलाधार—परि, पृ० १६६—बहुत तेज और घनी वर्षा, मूसलों के समान तीव्र और आघातकारी धाराएँ बरसना।

मृगदृग—परि, पृ० ४६—मृग के समान चंचल सुन्दर आँखें।

मृगतृष्णा—परि, पृ० १४५—मृग के समान प्यास से आकुल होकर भटकना और प्यास बुझाने को पानी न पा सकना। भयंकर आतप में किरणों की जगमगाहट पड़ने से रेत की लहरों को पानी की लहरें समझ प्यास बुझाने के लिये मृग का इधर-उधर भटकना। झूठी आशा जो मनुष्य को आकुल करती है पर कभी पूरी नहीं होती।

मृणाल—परि, पृ० ७६—कमल-नाल, कमल का डण्ठल। भसींडे, जो तरकारी के रूप में खाये जाते हैं।

मृणाल-वृन्त पर—गी, पृ० १०—कमलनाल के डण्ठल पर, मृणाल पर लगी हुई।

मृण्मरण—अर्च, पृ० ५—मिट्टी में मरना, मिट्टी में मिल जाना, नष्ट हो जाना।

मृत्तिका—तुल, पृ० ३६—मिट्टी, पंक, कीचड़, धूल।

मृत्युंजय—परि, पृ० १८०—मृत्यु को जीतने वाला, अमर।

मृत्यु जीवन ज्ञान तम के करण-कारण-पार—गी०, पृ० ४८—जीवन मरण ज्ञान प्रकाश अंधकार आदि के करने वाले, तो भी जो कारण से परे हैं। सृष्टि, प्रलय, ज्ञान, अज्ञान, आदि जिन के द्वारा उत्पन्न हैं, पर वह किसी से उदित नहीं हैं; स्वयंभू हैं—अनादि हैं—अजन्मा हैं।

मृदंग—नप, पृ० २६; परि, पृ० १३८—ढोलक के समान एक बाजा, मुरज।

मृदु—अना, पृ० ६५—सुकुमार, मुलायम, मधुर, चिकना।

मृदु-गम्भीर घोष—तुल; पृ० ४४—[मृदु=मुलायम, सुकुमार, चिकना, नर्म मधुर, प्रिय। गम्भीर=गहरा, स्थिर, अचंचल। घोष=शब्द, नाद, स्वर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवाज़, घोषणा, ऐलान, कोलाहल ।] मधुर सुकुमार अचंचल गम्भीर वाणी या ध्वनि ।

मृदुतर—तुल, पृ० ३०—कोमल, सुकुमार, चिकने, मुलायम ।

मृदुभंग—गो०, पृ० ६६—[मृद=कोमल, सुकुमार, मधुर । भंग=तोड़ना, मोड़ना । अवयवों को कोमलता से तोड़ती मरोड़ती हुई, कोमलता से लहराती-थिरकती हुई ।

मृदु-मंद-स्पन्द—तुल, पृ० १५—हृदय की कोमल मधुर मंद धड़कन । संदर्भार्थ-भौतिक सुख और विलास के कारण हृदय भी अत्यन्त कोमल, मधुर, रस-सिक्त और अलस धड़कनें अनुभव करने लगा था ।

मेघनियाँ—अर्च, पृ० ८४—घन-घटाएँ, छोटे-छोटे बादल ।

मेघमन्द्र—अना, पृ० १९४—मेघ के समान गम्भीर ध्वनि, मेघ-समान गम्भीरता से गरजते हुए ।

मेचक—गीतगुंज, पृ० ५९—श्याम, काला, तमिस्र ।

मेधा—परि, पृ० १९३— प्रतिभा, बुद्धि, विवेक, ज्ञान ।

मेरा पतझड़—गी, पृ० ४९—पतझड़ के समान उजड़ा रूखा, आहों से भरा जीवन ।

मेषमांस—नप, पृ० ९५—[भेड़=बकरी के आकार का एक दूधिया पशु, जिसके बालों से ऊन बनाई जाती है ।] भेड़ का मांस ।

मेषमाता—परि, पृ० १८१—भेड़ ।

मैं—परि, पृ० २३७—अहं, अहंकार, अभिमान ।

मैं लिखती या बहती स्रोत पर तुम्हारे ही रहती—गी, पृ० २३—चाहे मैं पत्रलेखन या चित्रांकन में लगी हूँ, चाहे अन्य किसी भाव में लीन हूँ; पर सदा तुम्हारे ही ध्यान या प्रेम के प्रवाह में बहती रहती हूँ ।

मैक्सिम-गन्—अना, पृ० १७६—एक प्रकार की तोप ।

मोगलदल—तुल, पृ० १२—मुगलों की सेनाएं । बाबर हुमायूं, अकबर आदि मुग़ल बादशाहों की सेनाएँ ।

मोह—तुल, पृ० ४२—ममता, प्यार, स्नेह, प्रेम, अज्ञान ।

मोह-अयन—गी, पृ० १८—मोह का घर, माया जाल में फँसना, मोह-ममता-आसक्ति से घिरा हुआ ।

मोहकर—अना, पृ० २—मोहित करने वाला, तन्मय करने वाला, अज्ञान में डुबाने वाला ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोहन—परि, पृ० ४३—मोह लेने वाला, मोहक, मोहित करने वाला कृष्ण ।

मोहन-पटल-मोचन—अर्च पृ० २—अज्ञान के पर्दे को हटाने वाला, अज्ञान के आवरण दूर करने वाला ।

मौन—अना, पृ० २—निश्शब्द, चुप रहना, न बोलना ।

मौनमुखी—परि, पृ० १८६—चुप रहने वाली, वाणीविहीन ।

म्लान-अधर—तुल पृ० ४६—मुरझाये ओठों वाली, कुम्हलाये सूखे ओठ, संदर्भार्थ—आग की लपटों में झुलसे, मुरझाए फूलों के समान सूखे-विरस अधर ।

य

यक्ष—अना, पृ० ६८—एक देवजाति, जो अलका या कुबेरपुरी में रहती है ।

यक्षविरही—परि, पृ० ६१—प्रिया के विरह में यक्ष, वियोगी यक्ष, वह विरही यक्ष जिसकी वियोग-पीड़ा चित्रित करने के लिये कालिदास ने "मेघदूत" नामक काव्य रचा ।

यतिहीन—अना, पृ० १३—प्रवाहरहित, गतिभंग । वर्ण, मात्रा, यति, लय आदि का दोषपूर्ण होना ।

यत्रतत्र—अना, पृ० १५—जहाँ-तहाँ, इधर-उधर ।

यथासूत्र—अना, पृ० ८५—प्रसंग के अनुसार, सिलसिलेवार, कथा-क्रम से, घटना-क्रम के अनुसार ।

यव—नप, पृ० ६७—एक मोटा सस्ता अनाज, जौ । इसका पौधा गेहूँ के समान होता है । जौ का दाना गेहूँ के दाने के आकार का, दोनों कोनों पर नुकीला, बहुल हल्के पीले रंग का होता है । यह यज्ञपूजा, हल्का मादक पेय बीयर बनाने और पशुओं तथा निर्धन लोगों के खाने के काम में आता है ।

यवन—परि, पृ० ११२—यूनान देश के, विदेशी । धीरे-धीरे यह शब्द मुसलमानों के लिये भी प्रयुक्त होने लगा ।

यवनिका—गी, पृ० ४८—पर्दा, पट, आवरण । अज्ञान अविद्या माया का पर्दा ।

यशोराशि—अना, पृ० ३०—अतिशय प्रशंसा या अत्यधिक प्रशंसा प्राप्त ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यशोलिप्सा—परि, पृ० १६४—प्रशंसा, प्रसिद्धि, सम्मान आदि की लालसा, लोभ या आकांक्षा।

यष्टि—तुल, पृ० ४०—लाठी, टेक, सहारा, आधार अवलम्ब।

याम—अना, पृ० १५—पहर, तीन घण्टे का समय।

यामिनी—गी, पृ० ४—रात, निशा, सूर्यास्त के बाद और सूर्योदय के पहले का समय।

यामिनी-गंधा—परि, पृ० १७७—रजनीगंधा, रातरानी, रात में गंध वितरण करने और खिलने वाला एक पुष्प विशेष।

युक्त—तुल, पृ० ३८—सहित, जुड़ा हुआ, सम्बद्ध, आसक्त, प्रवृत, अनुरक्त, पाशबद्ध।

युक्ति—तुल, पृ० ३९—तर्क, ऊहा, दलील, उचित विचार, हेतु, कारण, कौशल, चातुर्य, अनुमान, उपाय, योजना।

युगल कमल घट भर—गी, पृ० ४४—दो कमलों के घड़े भर कर, कमल के समान दोनों उरोजों के कलश भर कर।

युगकूल—तुल, पृ० ४०—दो किनारे, दोनों तट। संदर्भार्थ—जन्म-मरण, इहलोक-परलोक, सुखदुख, हित-अनहित।

युवाकुल—अना, पृ० १—युवकों का दल या समूह, यौवन के कारण आकुल या चपल।

यूथिका—परि, पृ० ८५—जूही (फूल पौधा), समुदाय, समूह।

यूथपति—अना, पृ० १५४; परि, पृ० १५०—सेना की टुकड़ियों का नायक।

योग—परि, पृ० ८०—जोड़ना, जुड़ना, मिलना, सहायता, वर्द्धन, मोक्ष या ब्रह्मप्राप्ति का एक विधान, जिस के आठ अंग माने गये हैं—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि।

योगिनी—तुल, पृ० ५२—योग साधने वाली, साधिका, ब्रह्मलीन रहने वाली। संदर्भार्थ—योगिनी के समान रत्नावाली।

योगी-रमता—तुल, पृ० ४२—इधर-उधर घूमता योगी, घर छोड़ कर घूमने वाला संन्यासी, जो आगे जीने की आशा न रखता हो, ऐसा घूमने फिरने वाला साधु जिससे भेंट होना अनिश्चित हो।

योजन-गंध-पुष्प—परि, पृ० २२४—[चार कोस तक सुगंधि फैलाने वाला फूल, वह फूल जिसकी सुगंधि बहुत दूर तक फैलती हो।

यौवन-उभार—परि, पृ० १७५—यौवनावस्था में उरोजों का विकास, यौवन काल में अंगों का गदराना, कठोर और मांसल हो जाना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यौवनतरंग —अना, पृ० ७१ —जवानी की लहर, जवानी की मौज। जवानी में उठने उमड़ने वाली लालसाएँ आकांक्षाएँ, वासनाएँ आदि।

यौवनधूम —परि, पृ० ६०—यौवन का धुंआ, जवानी का सुलग-सुलग कर जलना। जवानी की आशाओं, अभिलाषाओं, वासनाओं के पूर्ण न होने के कारण जीवन का सन्तापित होना।

यौवनप्रति—गी, पृ० ७२—यौवन की ओर, युवती होने लगना।

यौवनमद —अना, पृ० २२—जवानी का नशा, यौवनावस्था में रहने वाली मस्ती, लापरवाही, अभिमान आदि।

यौवन-वन-अभिसार-निशा—अना, पृ० ६४—जवानी के वन में शृंगार सज्जा करके प्रियतम में मिलने जाने वाली रात।

र

रंक—तुल, पृ० २८—निर्धन, कृपण, मंद, आलसी, दीन, भिखारी।

रङ्किणी—गी, पृ० ८—तुच्छ निर्धन दासी, दीनहीन। अभागिनी मूर्ख नादान।

रंग—तुल, पृ० २२, ३७—दृश्य, ढंग, तरीका, उल्लास, आनन्द, दशा, हालत, रूप, सुन्दरता, रौनक, प्रभाव। संदर्भार्थ—मन हृदय या आत्मा पर चढ़े हुए विभिन्न संस्कारों-विकारों के रंग या प्रभाव। छोड़ता रंग पर रंग—एक संस्कार के बाद दूसरे संस्कार के प्रभाव से मुक्त होता हुआ, क्रमशः पुरातन संस्कारों के रंगों को धोकर निर्विकार निर्मल बनता हुआ।

रंग बदलना—परि, पृ० २२१—विविध रूप धारण करना, स्वार्थ या लाभ के लिये चरित्र बदलना, अवसरवादी होना।

रंग पर जीवन—तुल, पृ० २२—इन रंगों, संस्कारों के बहुत ऊपर यथार्थ जीवन है, एक के बाद दूसरे संस्कार की तह कट जाने के बाद अगोचर चरम सत्य है, जिस की खोज में तुलसीदास ऊँचा और भी ऊँचा उड़ता चला जा रहा है।

रंगभरी—अर्च, पृ० २४—रंग में भरी हुई, प्रेम में लीन, मदमस्त, उमंग में भरी, उत्साहित-उल्लसित, क्रीड़ाशील।

रंगभाव—अना, पृ० १—रंगों के द्वारा भाव प्रकट करना, रूप सौंदर्य और हृदय के भाव प्रकट करने वाली चेष्टाएँ, संकेत और भंगिमाएँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रंगशाला—परि, पृ० १८३—नाट्यशाला, रंगमंच, अभिनय, नृत्य, संगीत आदि के लिये विशाल कक्ष या भवन।

रंग चीर—गीतगुंज, पृ० ५४—रंगे हुए कपड़े, रंगीन अंचल। संदर्भार्थ—रंग-बिरंगे वस्त्र धारण किये हुए नरनारी।

रंजित—तुल, पृ० ४७—रंगा हुआ, हर्षित, अनुरक्त।

रंजोग़म—परि, पृ० ६६—पीड़ा, वेदना, दुख, शोक, खेद।

रन्ध्र—अ:रा, पृ० १३—छिद्र, सूराख, अवकाश, दरार, आकाश, रिक्तता।

रंभाना (रंभाई)—आरा, पृ० ८५—गाय का बोलना, गाय की आवाज़।

रक्त—अना, पृ० २०; तुल, पृ० ४६—लहू, खून, शोणित। लहू के रंग का, अरुण, लाल।

रक्तवाह—अना, पृ० १५१—रक्तसंचालन, रक्त का प्रवाह।

रक्ताभ—अना, पृ० २२—लाल आभा वाला, लाल रंग का, गुलाबी।

रक्ताम्बर—अना, पृ० २२—लाल आकाश, लाल वस्त्र, सूर्योदय या सूर्यास्त के समय का आकाश।

रक्तोत्पल—गी, पृ० ९०—[रक्त=लाल। उत्पल=कमल।] लाल कमल, तामरस।

रक्ष-रक्ष—अना, पृ० १७—राक्षस, असुर, दैत्य। संदर्भार्थ—रक्षक, पहरेदार, रक्षा करने वाले।

रक्षण—तुल, पृ० २५—रक्षा, बचाना, रखवाली करना।

रक्षा—तुल, पृ० २४—बचाना, रखवाली, भस्म, विशेष अवसर पर कलाई में बाँधा जाने वाला सूत। संदर्भार्थ—समाज, धर्म और संस्कृति की रक्षा करने की शक्ति।

रखवाल—अर्च, पृ० ४९—रखवाले, रक्षक, पहरेदार।

रघुकुलमणि—अना, पृ० १५४—रघु के वंश को मणि के समान चमकाने वाला, रघुवंश में होने वाले राजाओं में मणि के समान चमकने वाला—भगवान रामचन्द्र।

रघुनन्दन—अना, पृ० १६५—रघु-कुल को आनन्दित करने वाला—रामचन्द्र।

रघुमणि—अना, पृ० १६१—रघु-वंश में मणि के समान उज्ज्वल और जगमगाते हुए—रामचन्द्र।

रचनाकरों-संचित—अर्च, पृ० ७७—सृष्टि के हाथों द्वारा एकत्र किया गया, निर्माणकारी उद्योगी कुशल हाथों द्वारा एकत्र किया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रचना-रहित—गी, पृ० ४४—कृत्रिमताविहीन, सीधा-सादा, सरल और स्वाभाविक।

रजनीचर—अना, पृ० १५६—रात को विचरने वाला, राक्षस, असुर।

रजोगुण—अना, पृ० ५३—प्रकृति का एक धर्म विशेष, तीन गुणों में से एक गुण जिसके कारण भोग, विलास, प्रदर्शन की रुचि पैदा होती है।

रज्जु—आरा, पृ० ३९—रस्सी, बंधन, पाश।

रण—तुल, पृ० २५—युद्ध, समर, लड़ाई, आक्रमण, संघर्ष।

रण-ताण्डव-उन्माद—परि, पृ० ८२—शिव के भीषण संहारकारी नृत्य की मादकता, रुद्र के सृष्टि-संहारकारी ताल-स्वरों से गूंजते हुए ताण्डव नृत्य का नशा।

रणन—आरा, पृ० ६०—नूपुरों की झंकार या शब्द।

रणनरण—अर्च, पृ० १०४—नूपुरों का शब्द, स्वर या नाद।

रणबाँकुरे—तुल, पृ० १४—[रण=युद्ध, लड़ाई, समर। बाँकुरा=टेढ़ा, चतुर, वीर, साहसी, पैना] साहसी योद्धा, दुर्धर्ष वीर।

रतन—तुल, पृ० ४९—हीरा, मणि, जवाहर। संदर्भार्थ—मणि-माणिक्य के समान बहुमूल्य रत्नावली।

रतनारे—अर्च, पृ० ४६—लाल, अरुण।

रति-रहित—तुल, पृ० ३७—[रति=शोभा, संभोग, कामदेव की पत्नी, काम भावना, लीनता, प्रेम, प्रवृत्ति। रहित=अभाव, हीन, बिना, वंचित।] प्रेम प्रवृत्ति के बिना, प्रेमाकर्षण से हीन, आसक्ति या संलग्नता से रहित।

रत्न चेतन—तुल, पृ० १७—[रत्न=मणि, हीरा। चेतन=सचेत, जागृत, प्रतिभावान, बुद्धिशाली।] जिस प्रकार हीरा अपनी आभा या ज्योति से जगमगाता है, उसी प्रकार अपनी प्रतिभा के आलोक से चमकता हुआ, रत्न के समान अपनी प्रतिभा से तेजस्वी और प्रसन्न—तुलसीदास।

रत्नधर—तुल, पृ० ४९—रत्नों को धारण करने वाला, हीरे-मणियों को रखने वाला, मणि-रत्नों का पारखी जौहरी। संदर्भार्थ—रत्नावली का स्वामी और उसके गुणों का पारखी तुलसीदास।

रत्नावलीहार—तुल, पृ० ३९—[रत्न=हीरा, पन्ना, मोती, लाल, जवाहर, माणिक, नगीना। अवली=पंक्ति, समूह, राशि। रत्नावली=तुलसीदास की पत्नी। हार=माला, लड़ी, पराजय।] हीरे-मोतियों-मणियों की माला। संदर्भार्थ—विविध मणियों-हीरों की माला में जैसे कोई रत्न पिरोये जाने पर और भी झिलमिला उठता है, उसी प्रकार रत्नावली की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शील-सुषमा आदि मणियों की माला में गुँथ कर तुलसीदास का हृदय आनन्द से जगमगा उठा।

रथी—अर्च, पृ० ४—रथ हाँकने वाला, रथ में बैठ कर युद्ध करने वाला, रथारोही योद्धा।

रबी—नप, पृ० ६८—क्वार-कार्तिक (अक्टूबर-नवम्बर) में बोई जाने वाली फ़सल, जिसमें गेहूँ, चना, सरसों, मटर, जौ, अरहर आदि बोये जाते हैं। यह फ़सल चैत्र-बैशाख (अप्रैल-मई) में काटी जाती है।

रब्बा—नप, पृ० ६४—एक प्रकार की सुन्दर बैलगाड़ी, जो सवारी के काम आती है।

रमा—तुल, पृ० ४९ ; परि, पृ० २२३—समुद्र-मंथन से प्राप्त एक रत्न लक्ष्मी, जो विष्णु की पत्नी बनी। —तुल, पृ० ४९, रमा के समान गुणों वाली रत्नावली।

रम्भा—परि, पृ० २२३; गीतगुंज, पृ० ५९—समुद्र के मंथन से प्राप्त चौदह रत्नों में से एक रत्न—एक अप्सरा। रम्भा के समानसुन्दर स्त्री।

रम्यता—परि, पृ० ९१—सुन्दरता, शोभा, आकर्षण।

रम्योद्यान—परि, पृ० २१६—सुन्दर उद्यान, मन मुग्ध करने वाली वाटिका, हृदय लीन करने वाला बाग।

रवि—तुल, पृ० १९—सूर्य, मार्तण्ड, प्रभाकर।

रवि-कर-तार—परि, पृ० ३५—सूर्य-किरणों का तार, सूरज की किरणों का डोरा या धागा।

रविकुल-जीवन-चुम्बन-कर—तुल, पृ० २७—सूर्यमंडल की किरणों के चुम्बन (स्पर्श) से वह चिरन्तन सत्य, चेतना और आनन्द का लोक प्राणवान है, सूर्यवंश की आत्मा भगवान राम के जीवन की रश्मियों से वह सत्य का लोक जगमग है।

रविरेखा—तुल, पृ० ६१—सूर्य की किरणें, प्रभात कालीन सूर्य का सुनहला प्रकाश, स्वर्णिल ज्योति में जगमगाता प्रातःकालीन सूर्य-मण्डल, सवेरे के समय का चमकता हुआ क्षीण-सा सूर्य बिम्ब।

रश्मि-चमत्कृत—परि, पृ० १५१—किरणों से चमकता हुआ, रश्मियों से झिलमिलाता हुआ।

रसना रसनाम रहित किन्तु रस-ग्राहिका—अना, पृ० ७५—यों तो रसना रसके नाम से भी वंचित थी, तो भी वह रस का स्वाद लेती थी। रस के नाम से अनजान जीभ रस के स्वाद को खूब जानती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रस—अर्च, पृ० ४१—आनन्द, स्वाद, ईख, नीबू संतरा आदि से निचोड़ा गया पेय। काव्य, नाटक, नृत्य, संगीत आदि से प्राप्त विविध भावों में मन की तल्लीनता।

रसर—आरा, पृ० ७८—रस्सी, नेजू, डोरी।

रससृष्टि—अना, पृ० २—[रस=भावानुभूति, स्वाद, आनन्द, लीनता।] रस उत्पन्न करना या होना। भावाभिव्यक्ति और लीनता।

रसा—अना, पृ० ८५—पृथ्वी, धरती।

रसाई—आरा, पृ० ३२—पहुंच, प्रवेश, रसूख, मेलजोल।

रसाराधना—अना, पृ० ३४—रस की आराधना। आनन्द, अनुभूति, भावलीनता आदि की प्रार्थना। सुख-विलास, कामनातृप्ति आदि की याचना।

रसाल—गीतगुंज, पृ० ४०—आम का पेड़ या फल।

रसावेश—परि, पृ० १२०—अनुभूति का आवेश, भाव का आवेग, भावानुभूति की तीव्रता, आनन्द की आकुलता या चंचलता।

रसिक—परि, पृ० २३५—प्रेमी, भावुक, शृंगार-प्रिय।

रस्में अदा करना—परि, पृ० १४३—रीतिरिवाज पूरे करना, समाज कुल गोत्र आदि के अनुसार पूजापाठ, लेनदेन क्रियाकलाप आदि पूरे करना।

रहसना (रहसा)—अना, पृ० ८५—प्रसन्न होना, आनन्दित होना, आनन्द में झूम उठना।

राई—नप, पृ० ६३—अचार में डाला जाने वाला एक बहुत छोटा गोल दाना। शाकभाजी छौंकने में भी यह जीरे की तरह काम में आता है।

राक्षसताल—नप, पृ० ९३—हिमालय पर स्थित एक झील का नाम।

राग—तुल, पृ० ४०—प्रेम, आसक्ति, अनुरक्ति, पराग, आकर्षण।

रागानुग—परि, पृ० ८०—[राग=प्रेम, रति। अनुग=पीछे चलने वाला, अनुचर, सेवक] प्रेम का अनुकरण करने वाला, रति या प्रेमभावना का अभिमान करना, रतिभाव की अनुभूति करना या करने वाला।

रागिनी—अना, पृ० ३३—गीत, तान, विशेष स्वर-ताल आरोह-अवरोह के साथ गाया जाने वाला गीत। तुल, पृ० ३४, ५९—तात्कालिक दुर्वृत्तियां, पाप कर्म, अज्ञान, अविवेक आदि जो रागिनी के समान समाज की सुध-बुध भुलाए थे।

राघव—अना, पृ० १६४—रघु-सम्बन्धी, रघुसंतान, रामचन्द्र।

राघवेन्द्र—अना, १५४—रघुवंश के स्वामी—रामचन्द्र।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस—परि, पृ० २१६—राजसी, राजा से सम्बन्ध रखने वाला, राजा का, रजोगुण से पूर्ण, धन वैभव ऐश्वर्य के भोग की प्रवृत्ति ।

राजाधिराज—परि, पृ० २३३—राजाओं का राजा, महाराज ।

राज्यलक्ष्मी —परि, पृ० १६२—राज्य का वैभव, प्रताप, समृद्धि, शक्ति आदि ।

राम—तुल, पृ० ८४; आरा, पृ० १०—दशरथ के पुत्र, जो भगवान के अवतार माने जाते हैं, जिन्होंने लंका के राजा रावण का वध किया । आरा, पृ० १०, संदर्भार्थ—राम के समान समाज-मंगलकारी पवित्र स्वभाव वाला मन, राम के समान शीलवान धर्मात्मा संयमी व्यक्ति ।

रामराज—नप, पृ० २२—भगवान राम के राज्य की व्यवस्था रीति-नीति और सुख-समृद्धि । जनता की सुख-समृद्धि, शान्ति, धर्म-परायणता और शासन की प्रजावत्सलता ।

राम श्याम भासि—आरा, पृ० ५८—राम और कृष्ण की दीप्ति धारण करने वाली, राम-कृष्ण का आभास देने वाली, वीरता तथा प्रेम को अभिव्यक्त करने वाली ।

रास—अर्च, पृ० २२—बागडोर, लगाम, चौपायों का समूह, ढेर, राशि । रास आना=अनुकूल होना ।

राहुग्रस्त—तुल, पृ० २३—[राहु=एक ग्रह, विप्रचित्ती और सिंहिका का पुत्र, एक दैत्य, जिस ने समुद्र-मंथन के बाद छल से अमृत पी लिया था। सूर्य-चन्द्र ने इस का भेद मोहिनी (विष्णु) से खोल दिया । रुष्ट हो कर विष्णु ने चक्र से इस का सिर काट डाला, जिससे इसके दो भाग हो गये—एक राहु और दूसरा केतु । राहु वैर शोधन के लिये चन्द्रमा का और केतु सूर्य का ग्रास करता है । ग्रस्त=निगला हुआ, खाया हुआ, अधीन, बेबस ।] राहु के द्वारा निगला गया । प्रकाशहीन, धुंधला ।

रिक्तहस्त—अना, पृ० १३४—खाली हाथ, निर्धन, दरिद्र ।

रिपु—तुल, १३—शत्रु, बैरी, दुश्मन । संदर्भार्थ—मुसलमान आक्रमणकारी आततायी शत्रु ।

रिपुदम्य—अना, पृ० १५४—शत्रु के द्वारा दबाया गया, शत्रु से पराजित, वैरी से हार माना हुआ ।

रीढ़ झुकना—नप, पृ० २८—कमर की हड्डी झुक जाना, बूढ़ा हो जाना, विनम्र हो कर विनय प्रार्थना-करना, कमर झुकाकर दीनता प्रकट करना ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रीति—ग्रना, पृ० ५३—शैली, तरीका, स्वभाव, परिपाटी, काव्य-शास्त्र के अनुसार विशिष्ट पद-रचना, जिसके कारण ओज, प्रसाद, माधुर्य की स्थिति हो। वैदर्भी, गौड़ी, पाँचाली—रीति के तीन प्रकार हैं। संदर्भार्थ—व्यवहार करने का ढँग। परिपाटा या नियम।

रुकमिन—नप, पृ० १४—एक चिड़िया विशेष।

रुग्ण—ग्रारा, पृ० ६१—रोगी, बीमार, विकारग्रस्त, काम क्रोध लोभ मोह मद ग्रादि में फँसा हुग्रा।

रुचि-रुचि—तुल, पृ० ३५—इच्छा, ग्रनुराग, प्रवृत्ति, शोभा, स्वाद, रूप। संदर्भार्थ—अनेक रूप, रंग, ग्राकार ग्रौर प्रवृत्तियों में फँसा या प्रकट।

रुचिर—तुल, पृ० ५१—रुचिपूर्ण, सुन्दर, प्रिय, मधुर, मोहक, श्रेष्ठ रुचि या ग्रभिलाषा के ग्रनुकूल।

रुद्ध—तुल, पृ० २८; ग्रना, पृ० ४०—रुका हुग्रा, बन्द, विघ्न-वाधाग्रों-भरा, विरोधों से पूर्ण।

रुद्रताल—ग्रारा, पृ० ५५—भयंकर ताल से, भीषण स्वर-ताल वाले।

रुबाई—नप, पृ० ४२—अरबी-फ़ारसी का एक छन्द विशेष। उमरखय्याम द्वारा फ़ारसी भाषा में रचित शराब-सम्बन्धी एक मुक्तक काव्य, जो रुबाई छन्द में लिखा गया है।

रूख—ग्रना, पृ० ११—पेड़, वृक्ष, पौधा।

रूखी—गी, पृ० १६—पत्र-पुष्पहीन, सूखी हुई, नीरस, मुरझाई। जिसका यौवन, सौंदर्य, आकर्षण, माधुर्य नष्ट हो चुका है।

रूढ़ि से विमुख—कविश्री, पृ० ३७—पुराने रीति रिवाज़ के प्रतिकूल, प्राचीन परम्परा रीति-नीति विधान-व्यवस्था को न मानना।

रूप—तुल, पृ० २८—ग्राकार, सुन्दरता, प्रकार, पहलू।

रूपक्षीण—तुल, पृ० ५५—रूपविहीन, निराकार, ग्राकारहीन, ग्रन्तर्धान, विलीन, ग्राँखों से ग्रोझल। संदर्भार्थ—शारदा के अन्तर्धान हो जाने के बाद, केवल उसका आभास ग्रौर प्रभाव मात्र रह गया।

रूपबाग—परि, पृ० ५७—सौंदर्य की वाटिका, जवानी का बगीचा। सूर का रूपबाग=राधा का रूप-यौवन चित्रित करने वाला गीत जिसमें उस के अंगों की उपमा फल-फूलों, पशु-पक्षियों से दी गई है—

ग्रद्‌भुत एक ग्रगोचर बाग।
जुगल कमल पर गजवर क्रीड़त तापर सिंह करत ग्रनुराग।
हरि पर गिरिवर गिरि पर सरवर तापर फूले कंज पराग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूपदर्शन—अना, पृ० २—रूप का देखना, सुन्दरता का देखना।

रूपविंदुदान—अना, पृ ७—सौंदर्य की क्षणिक झाँकी, अल्पकालीन रूपरस का पान करना।

रूप-हीन सब रूप-बिम्ब-धन—गी, पृ० ७४—रूपहीन होकर भी सब रूपों का बिम्ब ग्रहण करने वाला। परमात्मा निराकार होते हुए भी सभी रूप-आकार धारण करता है। निराकार ब्रह्म में सभी साकार पदार्थ समाए हैं।

रेणु—परि, पृ० ८१ ; तुल, पृ० ३७—धूलि, रेत, मिट्टी, गर्द।

रेणु का सुमेरु बनाना—परि, पृ० २०८—बालू कण को सुमेरू पर्वत बनाना, राई का पहाड़ करना, छोटी सी बात को बहुत बढ़ा चढ़ा कर बताना। तुच्छ पदार्थ को अतिशप महत्त्व देना।

रेणु-छाये—परि, पृ० १००—पुष्प-धूलि से भरे, पराग में सने हुए।

रोदन—परि, पृ० ३२—रोना, क्रन्दन करना, दुख-दैन्य प्रकट करना, चीत्कार।

रोध—अना, पृ० १५८—रुकावट, बाधा।

रोधप्रतिकूला—तुल, पृ० ५६—[रोध=बाधा, रोक, विरोध। प्रतिकूला= विरुद्ध, विपरीत, उल्टी।] बाधा-विघ्न-रहित, निर्विघ्न, मुक्त, स्वतंत्र।

रोम—नप, पृ० ६२—रोम-साम्राज्य और साम्राज्य की राजधानी। अब भी रोम नगर इटली की राजधानी है।

रोमांच—अना, पृ० ७६—पुलक, बाल, रोम, रोंआ। भय, आश्चर्य, आनन्द, प्रेम, शीत आदि के कारण रोमों का खड़ा हो जाना।

ल

लन्दन—नप, पृ० ६६—ब्रिटेन की राजधानी। यह टेम्स नदी के तट पर बसा हुआ है और संसार का सब से विशाल नगर है।

लकड़बग्घा—नप, पृ० ५१—मटमैला साँवली धारियों वाला चीते के आकार का मांसाहारी पशु, जो अधिकतर कुत्ते मार कर खाता है।

लकुटिया—परि, पृ० १२५—लकड़ी, लाठी, सहारा लेकर चलने के लिये बाँस या लकड़ी का डण्डा।

लक्षणासन—अर्च, पृ० ८८—[लक्षण=लक्ष्य, उद्देश्य, नाम, दर्शन, परिभाषा। आसनं=बैठना, एकाग्र चित्त होना।] निशाना लगाये हुए बैठना, एकाग्र चित्त होकर लक्ष्य वेधने के लिये तैयार रहना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लक्षपति—अना, पृ० ८७—विष्णु, लाखों रुपये का स्वामी, लखपति, बहुत सम्पन्न समृद्ध व्यक्ति।

लगान—नप, पृ० ३२—खेती की आय पर लगाया गया अंश। कर, टैक्स।

लग्न—अना, पृ० ७१—लगा हुआ, लीन, डूबा हुआ।

लघिमा—तुल, पृ० ३८—एक सिद्धि जिसे प्राप्त कर सिद्ध पुरुष बहुत छोटा और हलका हो जाता है, हलकापन, लघुत्व, लाघव, सरलता की प्रवृत्ति, सुगमता-सरलता।

लघुगति—तुल, पृ० १५—धीरे-धीरे चलना, अलस शिथिल गति। संदर्भार्थ—विलास के कारण जीवन में आलस और शिथिलता आ गई थी।

लढ़ा—नप, पृ० ४७—छोटी बैलगाड़ी, जो अधिकतर सवारी के काम आती है।

लतान्तराल—अना, पृ० १५५—लताओं के बीच से, लताओं के पीछे से।

लता-मुकुल-हार-गन्ध-भार-भर—गी, पृ० ५२—बेलों पर लगे फूलों के हार की सुगंध को निज में भर कर, लताओं-बेलों पर लगी कलियों की मालाओं की गंध फैलाते-लेजाते हुए।

लता लवंग—गी, पृ० ६६—लौंग की बेल।

लता-वारि-भ्रू-भंगे—अर्च, पृ० ९६—जल-तरंगों की वक्र भौहों वाली, जल की लहरें जिस की भौंहों की भंगिमा हैं।

लतिकाएँ—तुल, पृ० ४८—बेलें, लताएँ। वृक्ष आदि किसी आधार या धरती पर फ़ैलने-बढ़ने वाला पौधा।

लपट—अना, पृ० ५२—आग, आग की लहर, आग का झोका।

ललना—परि, पृ० ५६; तुल, पृ० ५२—युवती, स्त्री, रमणी, नारी, पत्नी—रत्नावली।

ललाम—परि, पृ० २२३; अना, पृ० १५—सुन्दर, शोभित, मोहक।

ललित-छन्द—तुल, पृ० १५—[ललित=सुन्दर, मधुर। छन्द=अभिलाषा, नियंत्रण, वश्यता, रुचि, अभिप्राय।] रसिक अभिलाषाएँ और मधुर बंधन। मनमुग्ध कर देने वाली राग रागनियाँ।

लली—आरा, पृ० ८४—लड़की, युवती, किशोरी।

लव-निमेष-कणिके—गी, पृ० १७—लव, पल और कणमात्र में रहने वाली, समय और पृथ्वी के अल्पतम अंश में रहने वाली, तीनों कालों और सम्पूर्ण संसार में व्यापक।

लवनी—अर्च, पृ० ९—मक्खन, शरीफ़ा (फ़ल या पेड़), काटने की मज़दूरी, काटने का औज़ार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लहरी—तुल, पृ० ३२; अना, पृ० १—लहर, लहर वाला, मौजी, तरंगी, मौज।

लांछन—अना, पृ० १६२—कलंक, कलुष, दाग़, चन्द्रमा पर दीखने वाले धब्बे।

लांछित—अना, पृ० १२४—कलंकित, कलुषित, कालिमा-पूर्ण।

लाग—आरा, पृ० ५०—लगन, अनुरक्ति, प्रेम।

लाघव—अना, पृ० १५२—लघुता, सरलता, कौशल, शीघ्रता तीव्रता क्षिप्रता फुर्ती से।

लाज—गी, पृ० ३३; अप, पृ० १६९—अपनी लघुता, हीनता या प्रेम के प्रकट हो जाने पर वृत्तियों का संकुचन। लज्जा रति का संचारी है। इसकी अनुभूति में गाल कान आदि लाल हो जाते और अंग शिथिल और सिमटे-से हो जाते हैं। मंगल अवसर पर बरसाई जाने वाली धान की खीलें। ज्वार, मक्का या धान की खीलें।

लार—नप, पृ० ३७—मुंह से बहने वाला तरल पदार्थ।

लाल—परि, पृ० २१४—लाल रंग की एक बहुमूल्य मणि, लालमणि के समान अनमोल—लक्ष्मण। प्रिय, बहुमूल्य।

लालसी—परि, पृ० १७५—अभिलाषी, लुब्ध। संदर्भार्थ—कामनापूर्ण मुस्कराते चिकने सुकुमार गाल।

लावण्य—अना, पृ० २—सौंदर्य, सुषमा, नमकपन।

लावण्यपाश—अना, पृ० ५०—सौंदर्य का बंधन, बंधन में कस लेने वाली सुन्दरता। वश में करने वाला रूप।

लावण्य-माधुरी-मदिरा—अना, पृ० २७—चुभीले तीखे और सौम्य मधुर रूप-सुषमा की शराब, ऐसे नैन-नख्श वाली सुन्दरता जिसमें विस्मृत कर देने वाला प्रभाव हो और जो रसेन्द्रियों को पूर्ण रूप से रसनिमग्न कर सके।

लास-अंक—परि, पृ० ५१—नृत्य, रास, रस। सुखद सुकुमार गोद।

लास-रंग-रस—गी, पृ० १३—नृत्यके हाव-भाव, नृत्यकी विविध भाव-भंगिमाएँ और अनुभूतियाँ।

लिया-दिया—अर्च, पृ० ५८—लेना-देना, आपसी व्यवहार। प्रेम-सम्बंध, सखा-भाव।

लीची—नप, पृ० ९८—विशेषकर देहरादून में ग्रीष्म ऋतु में उगने वाला खुरदरे शुष्क छिलके वाला गोल फल, जिसके छिलके के नीचे और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुठली के ऊपर सफ़ेद मुलायम मीठी तह होती है। यही तह खाई जाती है।

लीला-सहचर—अना, पृ० १५८—लीलाओं का साथी, सभी कार्यों में साथ निभाने वाला।

लुकुआ—नप, पृ० १०२—एक ग्रामीण किसान का नाम।

लुप्त—अना, पृ० २७—छिपी हुई, नष्ट हुई, खोई हुई, छिनी हुई।

लू—नप, पृ० ३५—जेठ-वैशाख (मई-जून) में चलने वाली जलती हुई हवा।

लेंडी जमींदार—नप, पृ० १००—खुशामदी, तुच्छ, चाटुकार, डरपोक ज़मीदार।

लेज—नप, पृ० ६८—एक राग या गीत विशेष।

लेती संग-संग—तुल, पृ० २७—साथ बहा कर ले जाती हुई, अपने वशीभूत करती हुई।

लेवारेवाला—नप, पृ० १४—[लेवारा, लवारा=ताजी व्याही हुई गाय या भैंस का बच्चा।] बछड़े वाला।

लेशावकाश—तुल, पृ० ६०—तनिक भी समय, थोड़ा-सा भी समय, थोड़ी सी भी फ़ुर्सत।

लोकोत्तर—अना, पृ० १२३—इस लोक से ऊपर का, अलौकिक, अभौतिक, जो इस लोक में प्राप्त नहीं।

लोभन—तुल, पृ० ४०—लुभावनी, आकर्षक, प्रिय, सुन्दर, प्रीति को उद्दीप्त करने वाली।

लोमड़ी—नप, पृ० १४—बिल्ली से कुछ बड़ा मटमैले सांवले रंग का एक जंगली पशु। लोमड़ी आकार में सियार से छोटी, पर रंग-रूप में समान होती है।

लोकनारी—नप, पृ० २५—सामान्य नारी, वह नारी जो राजघराने या धनी परिवार की न हो।

लोलुप—परि, पृ० २०२—लालची, लोभी, आसक्त।

लोहा बजना—नप, पृ० २५—घोर युद्ध होना, भीषण लड़ाई।

लोहार—नप, पृ० १००—लोहे का सामान बनाने और बेचने वाला।

लोहा लेना—परि, पृ० २००—भयंकरता से सामना करना, भीषण युद्ध करना।

लौकी—नप, पृ० ११—घीया कद्दू, लम्बा कद्दू, सफ़ेद फूल वाला कद्दू।

लौहपिण्ड—अना, पृ० १७०—लोहे का खण्ड, लोहे का ढिम्मा, लोहे की शिला।

लौहयंत्र—अना, पृ० १७५—लोहे की मशीनें, लोहे की कलें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व

वंकिम—परि, पृ० १७२—टेढ़ा, वक्र, तिरछा।

वंचक परि, पृ० २३४—धोखेबाज़, छली, कपटी।

वंचित—परि, पृ० १३०—उपेक्षत, जिसका अधिकार छिन गया है, ठगा गया, धोखा खाया हुआ, रहित।

वन्दन-ध्वनि—परि, पृ० ७१—वन्दना के स्वर, प्रार्थना-अर्चना के गीत।

वन्दना—अना, पृ० ७४—स्तुति, प्रार्थना, अर्चन, नमस्कार।

वन्दी—गी, पृ० ५—वन्दना गानेवाला, प्रशंसा करने वाला, सूत, मागध, भाट आदि। इस संदर्भ में पिक को वन्दी बनाया गया है।

वन्दीजन—तुल, पृ० १४—चारण, भाट, सूत, मागध, कैदी।

वन्य—आरा, पृ० ६१; तुल, पृ० ३१—वन-सम्बन्धी, वन में उत्पन्न होने वाला, जंगली, असभ्य, असंस्कृत, हिंसक, बुद्धि-विवेक-ज्ञान से शून्य, पशु, पशुवत।

वन्य वह्नि की तन्वि नवल—अना, पृ० ६१—वन की आग की नयी तरुणी, जंगल में लगी भयंकर विस्तृत आग की लपटों के समान युवती।

वंशी—परी, पृ० २२४—बाँस जो मछली फँसाने में काम आता है, बाँसुरी।

वकले—नप, पृ० ११—वकील, वैरिस्टर, मुखतार।

वक्षःस्थल—परि, पृ० ७७—छाती, सीना, हृदय, उर।

वक्षःस्थलार्गलित—परि, पृ० १०४—[वक्षस्थल=सीना, छाती, हृदय। अर्गलित=अगड़ी से बन्द किया हुआ, संकल या सिटकनी से बन्द।] वक्षस्थल से अवरुद्ध, विघ्न रूप में सीना जहाँ अड़ा है।

वज्र—तुल, पृ० १२—अत्यन्त भीषण, बहुत कठोर, अशनि, बिजली, इन्द्र का अस्त्र। मुसलमानों के वज्र के समान भीषण घातक विध्वंसकारी आक्रमण, आघात या वार।

वज्रद्वार—तुल, पृ० २६; अर्च, पृ० ७१—वज्र के समान कठोर दरवाज़ा, वज्र से बना हुआ फाटक, वज्र से बना दुर्भेद्य किवाड़, भयंकर सबल बाधा जो बहुत कठिनता से हटाई जा सके।

वज्रहुंकार—परि, पृ० १६६—वज्र या बिजली सी भीषण हुंकार।

वणिके—गी, पृ० १७—व्यापार करने वाली, बेचने-खरीदने वाली। संदर्भार्थ—धनसम्पत्ति की अधिष्ठातृ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वन-विहंग—तुल, पृ० २२—वन का पक्षी, स्वाधीन पक्षी, वह पक्षी जो पालतू या पिंजरे में बन्द न हो। संदर्भार्थ—तुलसीदास जो स्वाधीन वन-पक्षी के समान निर्बाध उड़ान भरने वाले थे।

वनश्री—तुल, पृ० ४८—वन की शोभा, कानन की सुन्दरता, जंगल की प्राकृतिक शोभा।

वनिता-लता—परि, पृ० ९१— स्त्री रूपी वेल, रमणी के समान वेल।

वर—तुल, पृ० २६, ६०—आशीर्वाद, मनोवांछना, अनुकम्पा, वरण करना, व्रत आदर्श कर्म-धर्म-कर्तव्य। श्रेष्ठ, अपेक्षाकृत उत्तम, सुन्दर, अच्छी तरह।

वरण मधुरा—तुल, पृ० ४६—[वरण=रूप, रंग, सौंदर्य। मधुरा=मीठी, सुकुमार, प्रिय, शहद के समान मीठा।] सौंदर्य-सुषमा और प्रेम की मधुरता से भरी रत्नावली।

वरण-लास-लसी—अर्च, पृ० ७४—[वरण=चुनना, रक्षण, निवारण, सत्कार, पूजन। लास=रास, नृत्य, स्त्रियों द्वारा कोमल भावमय नृत्य। लसी=चमकती, झलकती, सुशोभित, नाचती हुई।] पूजन सत्कार और कोमल भावमय नृत्य से सुशोभित, संगीत और नृत्य से सुशोभित।

वरदे—गी, पृ० ३—[वर=आशीर्वाद, विशेष शक्ति, सिद्धि। दे=देने वाली] वर देने वाली, विशेष शक्ति या सिद्धि का आशीर्वाद देने वाली।

वरमाला—तुल, पृ० ४९—सुन्दर माला, अभिनव सुन्दर कोमल सुगंधित फूलों का हार।

वरुणा—अर्च, पृ० १—[वरुण=जल का देवता, आकाश, समुद्र, जल। संदर्भगत वरुणा स्त्री-रूप में प्रयुक्त हुआ है।] वर्षा, जलधारा।

वर्ग—तुल, पृ० २४—समूह, दल, पार्टी, श्रेणी, विभाग, जाति, सम्प्रदाय।

वर्जन—अना, पृ० १८; अर्च, पृ० ७१—मना करना, निषेध करना, करने से रोकना।

वर्जिन-स्वॅल (अंग्रेजी शब्द).—नप, पृ० ३१—[वर्जिन=कुमारी, कन्या, ब्रह्मचारिणी, अक्षत-योनि, अविवाहित। संदर्भार्थ—बिना जोती-बोई हुई, इसलिये अत्यन्त उपजाऊ। स्वॅल (सौयल)=धरती, भूमि, ज़मीन, देश, मिट्टी।] बिना जोती-बोई हुई धरती, ऐसी भूमि जहाँ पहले खेती न की गई हो, इसलिये वह उत्पन्न उपजाऊ होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ण—तुल, पृ० २४, ३९—रंग, विभाग, ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र—चार वर्ण, अक्षर, लिखित ध्वनि-संकेत, यश, अंगराग, सोना ।

वर्ण-चमत्कार—गी, पृ० ९२—शब्दों का ऐसा प्रयोग जिस से विस्मयकारी ध्वनि या नाद उत्पन्न हो । अक्षरों का चमत्कारी चुनाव और प्रयोग जैसे अनुप्रास, पुनरुक्ति वदाभास, श्लेष आदि ।

वर्ण-दल—गी, पृ० —रंगों का समूह, विविध प्रकार के अनेक रंग ।

वर्णाधम—तुल, पृ० २५—अधम वर्ण के, शूद्र लोग, नीच या छोटी जाति के ।

वर्णाश्रम—तुल, पृ० २५—[वर्ण=ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र । आश्रम= ब्रह्मचर्य, ग्रहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास ।] हिन्दुओं में वर्ग या श्रेणी और आयु के विभाग, कर्तव्य, धर्म, जीवन-यापन आदि की व्यवस्था के लिये समष्टि और व्यष्टि [समाज और व्यक्ति] के जीवन के विभाग । संदर्भार्थ—हिन्दू धर्म के अनुसार जीवन-विधान, सम्पूर्ण हिन्दु जाति और संघटन ।

वर्णों का आभार—भना, पृ० १०७—रंगों का बोझ, रंगों का अंकन, रगों का लेप, अनेक रंगों से चित्रण करना ।

वर्षण—तुल, पृ० ५८; अना, पृ० ५—बरसाना, वर्षा करना, बिखराना, गिराना, छलकना, बरसना, गिरना ।

वर्ष के हर्ष—परि, पृ० १५९—वर्ष भर हर्ष, प्रसन्नता या आनन्द देने वाला, वर्ष भर दुख भोगने के बाद हर्ष देने वाला ।

वर्षा—परि, पृ० १४०—बरसना, ऊपर से गिरना, बिखरना, छिड़कना, ग्रीष्म के बाद आने वाली ऋतु जिसमें बादल उमड़ते और आकाश से पानी बरसाते हैं ।

वल्लरियाँ—परि, पृ० १४९—वेलें, लताएं ।

वल्ली—अर्च, पृ० ५०—बेल, लता ।

वशंवद—तुल, पृ० १४; आरा, पृ ८२—वश में रह कर बोलने वाले, हां में हाँ मिलाने वाले, अधीन होकर अधिकारी की-सी कहने वाले, चाटुकार, खुशामदी, दास ।

वशीकरण—अप, पृ० १७१; परि, पृ० २२४—वश में करना । एक तांत्रिक मंत्र की सिद्धि का अभिचार, जो पूर्ण होने से किसी व्यक्ति को वश में करने की शक्ति आ जाती है ।

वश्य—आरा, पृ० १५—वश में, अधीन, दास. आश्रित, लौंग ।

वसन—तुल, पृ० ३१—वस्त्र, कपड़े, परिधान, आवरण, निवास, मकान ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वसन्त—अना, पृ० १—एक ऋतु विशेष, जिसमें लताओं, पौधों, वृक्षों पर फूल खिलते हैं। यह शिशिर के बाद चैत्र-वैशाख में आती हैं। बहार, यौवन, विकास।

वसु—अर्च, पृ० २५; आरा, पृ० ८८—सबमें बसने वाला, मधुर, शुष्क, दीप्ति धन, रत्न, अमरावती, अलका, जल, सरोवर, शिव, कुबेर, अग्नि, सूर्य चन्द्रमा।

वांछित—अना, पृ० १२४—अभिलषित, इच्छित, मनचाहा।

वातायन—परि, पृ० ८६—वायु के आने का मार्ग, खिड़की, झरोखा।

वातास—परि, पृ० ५६—समीरण, पवन, वायु।

वाताहत—परि, पृ० १४४—वायु की चोट खाया हुआ, पवन से आहत, हवा के झोकों से छिन्न-भिन्न, पीड़ित।

वातुल—आरा, पृ० ९—वातग्रस्त, पागल, तूफ़ान, वातावर्त्त।

वानर—अना, पृ० २४—बन्दर, बन्दर जैसा, एक गंध द्रव्य।

वाम—तुल, पृ० २९—बायाँ, टेढ़ा, हानिकारक, विरुद्ध, निर्दय।

वामा—अना, पृ० ८३; परि, पृ० २२३; तुल, पृ० २९, ५४—नारी, स्त्री, सुन्दरी, बाँया भाग, वामांग, पत्नी, टेढ़ी, बाधक, अवरोधक।

वामालक-चुम्बित—अना, पृ० ९१—बाईं केश राशि जिसे चूमती हो, जिसके बायें गाल पर केशों की लट लहराती हो।

वायुपच्छिम—अर्च, पृ० ८३—पश्चिम से आने वाली वायु, पश्चिमी पवन, पछवा।

वारण—तुल पृ० २६; अर्च, पृ० ५१—रोकने वाले, बाधक, प्रतिरोध, हाथी, अंकुश, कवच। निषेध, प्रतिरोध या निवारण करने वाला।

वारना (वारो)—अर्च, पृ० १०८—उबारना, बचाना, मुक्त करना, उद्धार करना।

वारवनिता—अर्च, पृ० २६—[वार=मदिरापात्र, पानपात्र। वनिता=स्त्री, प्रिया, प्रेयसी] मदिरा पान कराने या करने वाली स्त्री, वेश्या।

वारा-न्यारा वन्दगी का—अर्च, पृ० ६६—[वारा=लाभ, बचत। न्यारा-पृथक्, अलग। वारा-न्यारा=फैसला, निपटारा। वन्दगी=नमन, अर्चना-वन्दना, सेवा, चाकरी।] सेवा-आराधना वन्दना-प्रार्थना सब का निपटारा हो गया - सब व्यर्थ हो गईं।

वारि—अना, पृ० ३१—पानी, जल, नीर, अम्बु।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वारिज—अना, पृ० १०—[वारि=पानी। ज=उत्पन्न होना।] पानी से उत्पन्न होने वाला, कमल, जलज।

वारित—अना, पृ० १५२; आरा, पृ० २४—रोके हुए या रोकते हुए, बाधा डालते हुए, निवारण किया गया। नियंत्रित या निषेधित।

वारि-धार-स्फुर—गी, पृ० १५—[स्फुर=स्फुरित होना, खिलना, फूटना, गतिशील होना। वारि=पानी, जल।] जलधारा बरसाता है, जलवर्षा करता हुआ।

वारि-विमोचन—आरा, पृ० ४१—[वारि=पानी। विमोचन=दूर करना, निकालना, गिराना, मुक्त करना।] आँसू गिराना, अश्रु बरसाना, रोना।

वाष्प—अना, पृ० ३१—भाप, खौलने या तपने पर पानी का धुआँ-सा बनकर उड़ना, बादल, आँसू, उष्मा।

वासन्तिका-वसन—आरा, पृ० ६४—[वासन्तिका=वसन्त सम्बन्धी, वसन्तकालीन, रंग-बिरंगे, पीले। वसन=कपड़े, वस्त्र, परिधान।] वसंतकालीन रंगबिरंगे (फूलों के) सुगंधित कपड़े या सुवासित पीले वस्त्र।

वासन्ती—अना, पृ० २२—वसन्त की, वसन्त सम्बन्धी। वसन्ती या पीले रंग की।

वासना—अना, पृ० ३१—इन्द्रिय सुख भोग की उत्कट आकांक्षा।

वासना-प्रेयसी—परि, पृ० ३७—इन्द्रिय सुख और तृप्ति की कामना, जो प्रेमिका के समान आकर्षित करती हैं। तृष्णा रूपी प्रेमिका।

वासना-मंजु—गी, पृ० ४२—प्रेम की तीव्र कामना के कारण सुन्दर बनी हुई, प्रेम की उत्कट अभिलाषा के कारण श्रृंगार-सज्जा से सजीधजी।

वासना-रण-प्रहर-खर-शर—अर्च, पृ० ८८—वासना के युद्ध का समय है और भयंकर तेज़ तीरों की वर्षा हो रही है। तृष्णा के भीषण युद्धकाल में काम मद मोह वासना आदि के तीक्ष्ण बाण बरस रहे हैं।

वासभूमि—अना, पृ० १०५—रहने का स्थान, जहाँ निवास किया जाता है।

वाहिनी—अना, पृ० १९—सेना, फ़ौज।

वाहिनी संस्कृति की—अना, पृ० ७०—[वाहिनी=सेना, नदी।] संस्कृति की नदी, शुभ संस्कारों की सरिता, सेना या भीड़, निर्मल संस्कारों विचारों, भावों, कर्मों आदि का समूह।

विकच—अना, पृ० ३—खिला हुआ, विकसित, फैला हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विकल—तुल, पृ० २३—व्याकुल, क्षुब्ध, खण्डित, असमर्थ, प्रभाव हीन, निस्तेज, बलहीन ।

विकार-रूप—अना, पृ० १०४—शुद्ध रूप त्याग कर सगुण रूप धरना, सत रज तम –तीन गुणों से सम्बद्ध रूप धारण करना, निरुपाधि अविकारी रूप न रहकर सोपाधि परिवर्तित रूप ग्रहण करना ।

विगत—अना, पृ० ३९—बीता हुआ, नष्ट हुआ, दूर हुआ ।

विगत-व्याधि—तुल, पृ० ३३—[विगत-दूर हो गई, बीत गई, नष्ट हो गई। व्याधि=पीड़ा, कष्ट, रोग, कुष्ठ, पीड़ा देने वाला व्यक्ति या पदार्थ ।] कष्टरहित, व्याधि-मुक्त, कष्ट भूल गये, थकान दूर हो गई ।

विगलित बल—परि, पृ० १९२—जिस का बल नष्ट हो चुका है, शक्तिहीन, निर्बल, पराजित ।

विघात—परि, पृ० १६४—चोट, आघात, निवारण, विरोध, तोड़ना-फोड़ना ।

विचक्षण—अना, पृ० ८८; अर्च, पृ० ५—विद्वान, चतुर, दूरदर्शी, चमकता हुआ ।

विचरण-निरत—परि, पृ० ३४—भ्रमण में लगा हुआ, घूमने-फिरने में लीन, क्रियाशील, प्रगति करता हुआ, निरन्तर चलते रहने वाला ।

विजित—अना, पृ० ५९—पराजित, हारा हुआ, परतंत्र, पराधीन ।

विज्ञापन—अर्च, पृ० ५६—समझाना, सूचना देना, निवेदन, प्रार्थना ।

विटप—अना, पृ० १६; तुल, पृ० ४८—वृक्ष, पेड़, तरु, पादप ।

विटपी—परि, पृ० ४२—झाड़ी, वटवृक्ष, शाखाओं वाला ।

वितत—अर्च, पृ० ८७—विस्तृत, फैला हुआ, ढका हुआ, खींचा हुआ, झुकाया हुआ, वीणा आदि तारों के बाजे, ढोल आदि का शब्द, ढोल, ढप, नगाड़े शंख आदि रणवाद्य ।

वितान—अर्च, पृ० २५—चँदोवा, शामयाना । संदर्भार्थ—विस्तार, फैलाव, राशि, समूह, पुंज ।

विच्छुर—अर्च, पृ० १०६—छिड़कना, लेपना, मलना, ढका हुआ ।

विच्छुरित वह्नि—अना, पृ० १५२—[विच्छुरित=छिड़का हुआ, लेपा हुआ, ढका हुआ ।] फैलाई हुई, छोड़ी हुई, बरसाई या छिड़की हुई आग । वह आग जिसने चारों ओर के वातावरण को ढक लिया है, या चारों ओर छा गई है ।

विजन—अना, पृ० ४८—जन-रहित, जहाँ मनुष्य न रहते हों, वन, जंगल, कानन ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विजय-करे—गी, पृ० ७३—विजय करने वाली, विजय प्रदान करने वाली ।

विजयिनी—अना, पृ० १९—विजय प्राप्त करने वाली, जीतने वाली, पराजित करने वाली ।

विद्या—अना, पृ० २—ज्ञान-विज्ञान, दुर्गा, मंत्र, जादू, किसी विषय की विशेष जानकारी ।

विद्याधर—अना, पृ० ८७—जादूगर, ज्ञानी, विद्वान, देवयोनि, गंधर्व, किन्नर आदि ।

विद्याध्ययनांतर—तुल, पृ० १७—[विद्या=ज्ञान, शिक्षा, पढ़ना-लिखा, मंत्र, जादू, दुर्गा । अध्ययन=पढ़ना, पढ़ाई । अनन्तर=पश्चात्, बाद में, समाप्त करने पर, अंत में ।] शिक्षा समाप्त करने के बाद ।

विद्युत—अना, पृ० ३१—बिजली, चपला, दामिनी ।

विधि—तुल, पृ० २४—ढंग, शैली, विधान, विधाता, ब्रह्मा, परमात्मा ।

विधु-चितवन—गी, पृ० ३३—चाँद के समान उज्ज्वल और शीतल सुधामयी चितवन ।

विधुप्लावित—अना, पृ० ९६—चाँदनी की बाढ़ में डूबी हुई ।

विधुर इमन—गीतगुंज, पृ० ६२—[इमन=एक मिश्रित राग - एमन । विधुर=वियोगी, दुखी, व्याकुल, अभावग्रस्त ।] विरह या करुणाके भावों से भरा हुआ गीत ।

विधृत—अना, पृ० १५२—धारण किये हुए, सँभाले हुए, स्वाधिकार में किया हुआ, समर्पित, सँभाला हुआ, रक्षित ।

विद्धांग—अना, पृ० १५२—घायल अंगों वाला, घायलतन ।

विनश्वर—गी, पृ० ५०—नाशवान, नष्ट हो जाने वाला ।

विनिद्र—गी, पृ० ६१—जागते हुए, न सोये, नींद-रहित ।

विनिमय—परि, पृ० ५५—किसी पदार्थ के बदले में उतने ही मूल्य का पदार्थ देना और लेना, आदान-प्रदान, समान लेन-देन ।

विनिर्जन—अना, पृ० १९०—जनहीन, वह स्थान जहाँ मनुष्य विद्यमान न हो, सूनी जगह ।

विनिर्मद—अर्च, पृ० ९९—अभिमान रहित, मद—नशे से रहित, हर्ष से रहित ।

विनिर्मल—अर्च, पृ० २७—उज्ज्वल, पवित्र, पावन, चमकीला, दीप्तिमान ।

विनिर्माण—कविश्री, पृ० ३७—कौशलपूर्ण रचना, कला-प्रवीणता या अच्छी तरह से बनाना ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनिस्तन्द्र— आरा, पृ० १३ —जागरूक, खुले हुए, तंद्रा निद्रा आलस विहीन, प्रबुद्ध, सचेत।

विनिस्तार—अर्च, पृ० ७५—छुटकारा, तरना, पार उतरना, मुक्त होना।

विनोद—अना, पृ० ३०, ७५—मनोरंजन, हास-परिहास, हंसी-मज़ाक।

विपंची—अर्च, पृ० ७१—वीणा, क्रीड़ा।

विपन्नाव—अर्च, पृ० ८५—[विपद्+नाव=विपन्नाव।] विपत्ति में पड़ी हुई नाव, भंवर या तूफ़ान में फंसी हुई नाव, टूटी-फूटी नवका।

विपथ—परि, पृ० ८६—पथ से अलग, मार्ग-भ्रष्ट, सही रास्ते से हट जाना, बुरा मार्ग, कुमार्ग।

विपरीत ज्वार—तुल, पृ० ५१—उलटा-प्रवाह, प्रतिकूल बहाव। संदर्भार्थ—रत्नावली के प्रेम का प्रवाह तुलसीदास की ओर न जाकर उनके प्रतिकूल बह रहा था। रत्नावली के हृदय में तुलसीदास के लिए प्रेम नहीं उमड़ रहा था; बल्कि रोष, घृणा, उपेक्षा, विरक्ति के भाव उमड़ रहे थे।

विपर्यस्त—अना, पृ० ८, १५३—बिखरा हुआ, छितराये हुए, अस्तव्यस्त, परिवर्तित, उलटा-पलटा हुआ, कुछ का कुछ समझा हुआ।

विपिन—अर्च, पृ० ४०—वन, निर्जन, जंगल।

विपुल—अना, पृ० ७२; तुल, पृ० ४४—बहुत अधिक, पुष्कल, अतिशय, अमित, अतुल।

विप्रवर—अना, पृ० २४—श्रेष्ठ ब्राह्मण।

विप्लव के प्लावन—परि, पृ० १६०—[विप्लव=विद्रोह, विनाश, अशांति, अराजकता, उपद्रव। प्लावन=बाढ़, सैलाव, जलका उमड़ कर बहना, डुबोना।] उपद्रव, अशान्ति, विनाश की बाढ़ ला देने वाले।

विभक्त—अना, पृ० १५६—बँटा हुआ, पृथक् हुआ, विभिन्न प्रकार का, एकांतवास।

विभात— आरा, पृ० ९२—सबेरा, चमकता हुआ।

विभावरी—अना, पृ० १४८—रात, निशा, तारों वाली रात।

विभुगान—परि, पृ० ७५—[विभु=सर्वव्यापक, महान्, स्वामी, प्रभु, ब्रह्मा, शिव, विष्णु, सूर्य, चन्द्र, सक्षम। गान=गीत, बखान, कथन।] प्रभु का गुण-कथन, भगवान का गुणगान।

विभूति-रज—अना, पृ० २९—ऐश्वर्य सुख समृद्धि गौरव आदि की धूल या राख, जिसे मल कर गौरव वर्द्धन होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभ्रम—तुल, पृ० ३५—भटकना, अस्थिरता, घबराहट, संदेह, भ्रान्ति, सौन्दर्य, शोभा, प्रणय-क्रीड़ा, शृंगार रस के अन्तर्गत एक हाव। संदर्भार्थ—हृदय को भ्रमित कर देने वाली सुन्दरता-शोभा, सब कुछ विस्मृत करा देने वाली प्रणय-क्रीड़ाएं।

विमन—अना, पृ० १६०—उदास, खिन्न, बेमन से, उन्मना।

विमर्ष—परि, पृ० ११८—विचारणा, आलोचना, उद्वेग, व्याकुलता, क्षोभ।

विमल—अना, पृ० २६; तुल, पृ० ३०—मलरहित, निर्मल, स्वच्छ, कान्तिपूर्ण, धुले हुए।

विमलतया—अर्च, पृ० ४—उज्ज्वलता से, दोष-रहित होने से, निर्मलता के कारण।

विमल वायु—परि, पृ० ३८—[विमल=स्वच्छ, जिसमें धूल, दुर्गंधि, धुंआ आदि न मिला हो।] शीतल मंद सुगंध स्वच्छ पवन।

विमुख—अना, पृ० ५—दूसरी ओर मुंह किये, प्रतिकूल, मुंह फेरे हुए।

विरज—परि, पृ० १५७—धूल रहित, स्वच्छ, शुद्ध, तमो-रजोगुण से हीन, सत्त्वगुण सम्पन्न।

विरथ—अर्च, पृ० ४—रथहीन, पैदल, अरक्षित, साधनहीन।

विरस—आरा, पृ० ११—नीरस, रसहीन, स्वादहीन, आनन्दहीन।

विरह-विदग्धा—परि, पृ० १७८—विरह की आग में जलती हुई, वियोग से संतापित।

विरह-विधुर—परि, पृ० ४४—[विरह=वियोग, प्रिय से दूर या अलग होना। विधुर=व्याकुल, वंचित, वियोगी, प्रियाविहीन।] वियोग के दुख से व्याकुल, विरह के कारण पीड़ित।

विरह-वृन्त—गी, पृ० ६—वियोग या जुदाई का डण्ठल, विरह की टहनी।

विराज—आरा, पृ० ३१—चमकीला, एक प्रजापति, एक पौधा, बैठा, स्थित, शोभित, वर्तमान होना।

विराजित—अना, पृ० १९—बैठे हुए, आसीन, शोभित।

विराट—अना, पृ० ६८; परि, पृ० १६०—महान्, विशाल, विस्तृत।

विराम—तुल, पृ० ५३; अना, पृ० १४—पड़ाव, ठहराव, ठहरना, रुकना, लक्ष्य, आदर्श, विश्राम, अन्त।

विराम-अलसित—परि, पृ० ५५—[विराम=ठहरना, रुकना, विश्राम या आराम करना, कार्य बन्द करना। अलसित=शिथिल, निष्क्रिय, थकी हुई।] शिथिल विश्राम करती हुई, थकान के कारण शिथिल पड़ी हुई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विरामहीन—ग्रना, पृ० ६१—बिना ठहरे, अनन्त, निरंतर, चिर क्रियाशील।

विरोध—तुल, पृ० २८—शत्रु, बाधक, रोकने वाले, विपक्ष, विपरीत शक्ति।

विरोधाभास—अर्च, पृ० ७१—देखने में विरोध पर ग्रर्थ में विरोध न हो, विरोधी गुण स्वभाव कर्म ग्रादि। विरोध न होने पर भी प्रकट में विरोध मालूम होना।

विलास—तुल, पृ० ३५—चमकना, व्यक्त होना, प्रणय-क्रीड़ा, क्रीड़ा, हाव-भाव, सजीवता, सौंदर्य, सुखोपभोग, लम्पटता, अंगभंगी।

विलोल—परि, पृ० ५४—चंचल, अस्तव्यस्त, सुन्दर, ढीला। संदर्भार्थ—लचकते-मटकते हुए, चपल चेष्टाग्रों से युक्त।

विलोड़ित—परि, पृ० ५४—चपल, चंचल, क्षुब्ध, ग्राकुल।

विवर्ण—अना, पृ० ५६—उदास, उतरे हुए रंग वाला, बिना रंग वाला, फीका, मलिन।

विविध विश्व-दर्शन-प्रणयन—ग्रना, पृ० ६५—[प्रणयन=लाना, ले जाना, निबद्ध करना, निर्माण करना, रचना, लिखना। दर्शन=जीवन-जगत-विषयक-ज्ञान।] संसार के विभिन्न दर्शनों का निर्माण, जगत की विभिन्न विचार-धाराग्रों का निबंधन, संसार भर की विविध ग्राध्यात्मिक ज्ञान-धाराग्रों का समन्वय, सामंजस्य या एकत्रीकरण।

विंशति—ग्रना, पृ० १८—बीसवीं।

विशद—ग्रना, पृ० २०—स्वच्छ, स्पष्ट, चमकीला, सुन्दर, शांत, चिन्तारहित, श्वेत।

विशदाशय—ग्रर्च, पृ० ५०—[ग्राशय=शयन-स्थान, ग्राधार, ग्राश्रय, अभिप्राय, तात्पर्य, ग्रभ्युदय, भाग्य, सम्पत्ति।] स्वच्छ सुन्दर ग्राश्रय या निवास-स्थान, सुन्दर जगमगाता कोश, ग्राधार या ग्रालय, स्पष्ट अभिप्राय, स्वच्छ पावन उद्देश्य।

विशाल—तुल, पृ० २६—विस्तृत, बहुत बड़ा, महान्, प्रख्यात, शक्तिशाली, वृहत।

विशिख—अर्च, पृ० १०२—भाला या बाण, जिस की धार ग्रौर नोक घिस गई हो, ग्राग जिसमें लपटें न हों, शिखाहीन या गंजा। संदर्भार्थ—धारहीन घिसे बाणों के समान पंख, लपटहीन ग्राग के समान जगमगाते पंख।

विशृंखल—ग्रना, पृ० ६—ग्रस्तव्यस्त, क्रमविहीन, ग्रसम्बद्ध, बेसिलसिले, परम्परा से खण्डित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशोक—गीतगुंज, पृ० ३९—शोकरहित, सुखी, प्रसन्न ।

विश्रम-कर—अर्च, पृ० ९२—[विश्रम=आराम, विश्राम ।] आराम करने वाला, आलसी, निष्क्रिय ।

विश्राम—तुल, पृ० ३२; अना, पृ० १६—आराम, थकान दूर करना, निवास-स्थान, सुस्ताना, श्रम-परिहार, शयन करना ।

विश्रामधाम—अना, पृ० १५६—जहाँ मन चंचलता छोड़ कर स्थिर हो जाता है, आत्मा का चिरन्तन आवास, परमपद, मुक्तिधाम ।

विश्व—तुल, पृ० ३६—समग्र ब्रह्माण्ड, संसार, विष्णु, शिव, आत्मा, जीव, समग्र, सकल, प्रत्येक, सर्वव्यापक, नागर, नगर-निवासी ।

विश्व-ऐश्वर्य—अना, पृ० १—संसार भर का वैभव सुख सम्पत्ति ।

विश्वगाथ—अर्च, पृ० ६— विश्व जिसका यश गान करे, विश्व में जिसकी गाथा गाई जाय ।

विश्वजन देखी मणि—गी, पृ० ७९—संदर्भार्थ—संसार के मनुष्यों ने गगन-सर्प का चमकता हुआ मनका रूपी सूर्य देखा ।

विश्वजिद्दिव्यशर—अना, पृ० १५२—संसार भर को जीतने वाला अलौकिक बाण ।

विश्व-नभ-पलकें—गी, पृ० ८२—संसार और आकाश की पलकें, धरती और अम्बर की आंखें, आकाश लोक और संसार के समस्त प्राणियों की दृष्टि-आँखें ।

विश्व-पण्य-प्रिय—गी, पृ० १७—जिसे संसार भर के द्रव्य प्यारे हैं, संसार भर के बेचने-खरीदने के पदार्थों को प्यार करने वाली ।

विश्वभरणा—अर्च, पृ० ३—संसार का पालन-पोषण करने वाली । संसार को सुखसमृद्धि से भरने वाली ।

विश्व-वयन—अर्च, पृ० १०—[वयन=बुनना, बुनने की क्रिया ।] विश्व की बुनाई, विश्व की बनावट, संसार का उलझनों-भरा पसारा ।

विश्वसृज—गी, पृ० १५—[सृज=बनाना, रचना, निर्माण करना । उत्पन्न करना ।] संसार की रचना करने वाली, संसार को उत्पन्न करने वाली, संसार को जीवित रखने वाली ।

विश्वाश्रय—तुल, पृ० ६१—संसार भर के प्राणियों को शरण देने वाली, मानव-मात्र की एकमात्र शरण, मानवों के भटकते हृदयों को शान्ति और विश्राम देने वाली ।

विश्वोपवीत—अना, पृ० १७५—[उपवीत=जनेऊ या उपनयन संस्कार ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपनयन=गुरु के पास ले जाना।] संदर्भार्थ—जैसे यज्ञोपवीत संस्कार होने पर बालक विद्याध्ययन करने के लिये गुरु के पास जाता है, वैसे ही समस्त संसार अपने पूर्व अविद्या-अज्ञान के संस्कार छोड़ नवीन ज्ञान-प्राप्ति के लिये गुरु [रामकृष्ण परम हंस] के चरणों में आ गया।

विषण्ण—आरा, पृ० ३१; तुल, पृ० ४६—विषादयुक्त, शोकलीन, दुखी, पीड़ित, व्यथित।

विषण्णानन—अना, पृ० १५६—उदास मुख, क्लान्त मुख।

विषद वासों के विभूषण—अर्च, पृ० ८६—[विषद=विषैला, सफ़ेद रंग, बादल। वास=गंध, सुगंध, निवास, लोक, नगर। विभूषण=सजाना, कांति, शोभा, अलंकार।] विषैले घातक दुर्गंध-भरे लोकों को भी अपने अमृत-प्रभाव से विभूषित कर मंगलमय बनाने वाले।

विषम—तुल, पृ० २६—जो सम न हो, ऊँचानीचा, भयंकर, भीषण, कठिन, उग्र, प्रचण्ड, दुर्गम।

विषाद—अना, पृ० ४६—शोक, दुख, वेदना।

विसम्भार—गीतगुंज, पृ० ४३—न सँभलने वाला, निर्बाध, न रुकने वाला।

विसमय विषमय सलिल-अनिल चल—गी, पृ० ८८—[बिस=कमलनाल, मृणाल, लक्षणार्थ—कमल।] जिस जल (सरोवर) में पहले कमलों का समूह खिला करता था, आज वह जल विषैला और हवा के समान चंचल है या हवा से चंचल है, जिससे उस का विष बाहर भी फैल जाने की आशंका है।

विस्तृत—अना, पृ० २—दूर तक फैला हुआ, विशाल, बहुत बड़ा।

विस्मय कुण्ठन—गी, पृ० ४१—आश्चर्य-संकोच, आश्चर्य और झिझक या हिचक।

विस्मित—तुल, पृ० १८—आश्चर्य-चकित, आश्चर्य और प्रसन्नता में डूबा।

विस्मृति—अना, पृ० २६—भूल जाना, बेसुधि, स्मरण न रहना, लीनता की दशा।

विस्मृति-मदिरा—परि, पृ० ४५—विस्मरण, जिसने ऐसे सब कुछ भुला दिया जैसे शराब का नशा सब कुछ भुला देता है।

विहंग—तुल, पृ० २०—पक्षी, पखेरू, विहग। संदर्भार्थ—पक्षी के समान बंधनों से मुक्त होकर स्वाधीनता स्वेच्छा से विचरण करने वाला—तुलसीदास।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विहाग—परि, पृ० १२७—एक राग विशेष, जो करुण प्रभाव उत्पन्न करने के लिये गाया जाता है।

विहार—तुल, पृ० २१, ३३—घूमना-फिरना, सैर करना, अटन करना, निवास स्थान।

विह्वल—अना, पृ० ३३—क्षुब्ध, अशांत, व्याकुल, घबराया हुआ, भयाभिभूत।

वीक्षण—अर्चं, पृ० ११०—देखना, निरीक्षण करना, परीक्षण करना, परखना, जाँचना।

वीक्षण—आरा, पृ० ७१; अना, पृ० १८—देखना, दृष्टि, समझना। सूक्ष्मता से निरीक्षण करना।

वीचि-चितवन—परि, पृ० ४६—लहर रूपी चितवन, लहर के समान चंचल और तरल कटाक्ष।

वीचियाँ—अना, पृ० ६८—लहरें, तरंगे, उर्मियाँ।

वीणानन्दित—अना, पृ० २६—वीणा के समान बजता हुआ, वीणा की मधुर झंकार के समान प्रसन्न करने वाला।

वीणापाणि—अना, पृ० ६६—वीणा जिसके हाथ में हो, सरस्वती, शारदा, वाणी।

वीणावादिनि—गी, पृ० ३—वीणा बजाने वाली, शारदा, सरस्वती।

वीतराग—अना, पृ० ७३—जिसका राग नष्ट हो चुका है, रागद्वेष से रहित, विरक्त।

वीर—तुल, पृ० ३३—बहादुर, निर्भय, साहसी, शक्ति-शाली, धीरता और उत्साह से भरा। संदर्भार्थ—हनुमानजी, हनुमानजी की मूर्ति।

वीरासन—अना, पृ० १६४—वीर के समान बैठने का ढँग, बायां घुटना धरती पर टिकाए, दाँया पैर धरती पर जमाए, बायें हाथ में धनुष बाण थामे, दाँये हाथ से प्रत्यंचा खीचें—बाण ताने किसी भी आशंका का सामना करने के लिये प्रस्तुत सीध तन कर बैठना—इस प्रकार बैठकर पहरा देना।

वीरुध—तुल, पृ० १६— लता, बेल, टहनी, शाखा।

वृन्त—तुल, पृ० १३—डंठल, ढेंढी, डाली, टहनी, फुंगल। पेड़-पौधे की डाल, शाखा, उपशाखा, टहनी आदि का वह अन्तिम छोर जिस पर फूल-फल लगते हैं। संदर्भार्थ—बुंदेलखण्ड या भारतीय क्षात्र धर्म और आदर्श का प्रतीक या उपमान है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृन्तहीन—परि, पृ० ३७; गी, पृ० ४२—डाली के बिना, टहनी से टूटा हुआ। आधारहीन, बेसहारे, अवलम्बहीन, निराश्रित।

वृहण—अप, पृ० १७०—पुष्ट या मोटा करने वाला पदार्थ, एक प्रकार की मिठाई, हाथियों का चिंघाड़ना।

वृद्ध—अना, पृ० १६३—बूढ़ा, बढ़ा हुआ, चतुर, अधिक अवस्था वाला, योग्य या सम्मानित व्यक्ति। संदर्भार्थ—आयु में सबसे बड़ा चतुर जाम्बवान।

वृद्धकरी—अर्च, पृ० २४—वर्द्धन करने वाली, सुख-सम्पत्ति बढ़ाने वाली।

वृहत—तुल, पृ० २३—महान्, बहुत बड़ा। संदर्भार्थ—महान् भारतीय संस्कृति और परम चेतन परमात्मा।

वेगवान—परि, पृ० २०१—तेज़ चलने वाला, शक्तिशाली। है यदि अश्व वेगवान=अगर युद्ध करने की शक्ति, उत्साह और संकल्प है।

वेणी—अना, पृ० ६४—बालों की चोटी या गुँथी हुई लट, धारा।

वेणु—परि, पृ० ८१—बाँसुरी, बंसरी, मुरली।

वेणु वादन—तुल, पृ० ४८—बाँसुरी बजाना। बंशी बजाना।

वेद—गी, पृ० ६४—ज्ञान, उद्बोधन, प्रबुद्धता, आर्यों के आदि-धर्मग्रंथ, जो ईश्वरीय कहे जाते हैं।

वेदांत-केसरी—अना, पृ० १७८—वेदांत के क्षेत्र में शेर के समान सबको परास्त तरने वाला, वेदांत का महान् पंडित।

वेला—अना, पृ० ८६—सीमा, मर्यादा, समुद्र और स्थल की सीमा, अवसर, समय, अवकाश, तरंग, प्रवाह, वाणी।

वेश्या—नप, पृ० २६—विविध वेश बना और रूपसज्जा कर जो लोगों को अपने रूप-जाल में फँसाती, नाच-गा कर तथा शरीर का उपभोग कराकर जीविका चलाती है।

वैतरण—अर्च, पृ० २६—नदी पार करने का इच्छुक, वैतरणी नदी पार करने वाला साधन—जैसे, तीर्थाटन, गोदान, नवधा भक्ति आदि। पौराणिक वर्णन के अनुसार, यमलोक और पृथ्वी के बीच एक नदी। इस में खून, अस्थि, बाल आदि और खोलता पानी भरा रहता है। पापी इसमें पड़ कर बहुत दिन तक दुख भोगते हैं और पुण्यात्मा सहज ही पार हो जाते हैं।

वैदिक-समता—अप, पृ० १६६—वेदों के अनुसार समानता, वेदों ने भेदभाव-हीनता का आदेश दिया या प्रतिपादन किया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैभव—अना, पृ० १६—धन, सम्पत्ति, गौरव, शक्ति, महत्त्व, सम्मान, ऐश्वर्य आदि ।

वैशिष्ट्य—अना, पृ० २०—विशेषता, असाधरण गुण होना ।

वोहित—परि, पृ० ४६—बड़ी नाव, नौका, जहाज़ ।

व्यंग्य—तुल, पृ० ४६; अना, पृ० ६—मज़ाक, उपहास, परिहास, ताना, उपालम्भ, वाच्यार्थ की उपेक्षा करके कोई अन्य अर्थ प्रकट करने वाली शक्ति ।

व्यंग्यदाम—अना, पृ० १४—[व्यंग्य=उपहास, परिहास, अर्थ-बोध का एक साधन, विशेष भाव या अर्थ । दाम=माला, मूल्य, द्रव्य, फंदा, रस्सी, समूह ।] संदर्भार्थ—विशेष अर्थविचार, असामान्य असाधारण भाव का समवर्द्धन ।

व्यंजित—अना, पृ० २२—प्रकट, लक्षित होना, किसी छिपे सांकेतिक अर्थ या भाव का व्यक्त होना ।

व्यंजित-नयन—तुल, पृ० ४७—विविध भावों से भरे नयन, विविध भावों को प्रकट करने वाली चितवन, अनेक भावों को अभिव्यक्त करने वाले कटाक्ष ।

व्यष्टि—परि, पृ० २२७; तुल, पृ० ४०—एक, इकाई, व्यक्तित्त्व, एक मनुष्य ।

व्यस्त—अना, पृ० १५—फेंका हुआ, उछाला हुआ, बिखेरा हुआ, उलझा हुआ, कार्य में संलग्न, व्याप्त-निहित, घबराया हुआ ।

व्यवसाय-प्रचुर—तुल, पृ० १६—[व्यवसाय=उद्योग, व्यापार, कारोबार, प्रयास । प्रचुर=बहुत अधिक, प्रभूत, पूर्ण, बहुत बड़ा, भरापूरा ।] जहाँ पर बहुत अधिक उद्योग-व्यापार होता है । काररोज़गार उद्योग व्यापार में भरा पूरा, इसलिए धन वैभव से पूर्ण ।

व्यवहार-ज्ञान—तुल, पृ० ४७—रीति-नीति का ज्ञान, पारस्परिक सम्बन्ध-मर्यादा का ध्यान या समझ-बूझ ।

व्याकुल—तुल, पृ० २२, ३२—परेशान, उद्विग्न, चंचल, आतुर, आकुल । संदर्भार्थ—नशीली गंध से मस्त कर देती है, मदिरा-पराग की सुगंधि पिला कर नशे में झुमा देती है ।

व्याकुल-पनघट—अरि, पृ० ४३—[व्याकुल=आकुल, आतुर, उत्कण्ठित । पनघट=जलाशय, कुआँ, बावड़ी ।] कुआँ या बावड़ी, जहाँ स्त्रियाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पानी भरने आया करती थीं और कृष्ण की प्रतीक्षा बड़ी आकुलता से किया करती थीं; जलाशय पर एकत्र होने वाली आकुल रमणियाँ।

व्याकुल सुख—तुल, पृ० ३७—सुख से चंचल, सुख में नाचता हुआ, सुख के लिये उत्कण्ठित।

व्याधि—अना, पृ० ५२—पीड़ा, रोग, कष्ट देने वाला व्यक्ति।

व्याधि-विशीर्ण—परि, पृ० १५६—कष्ट से जर्जर, पीड़ा से आहत।

व्याप्त—अना, पृ० ६०—फैला हुआ, पूरित, भरा हुआ, स्थापित, अन्तर्भूत, परिवेष्ठित, आच्छादित, ढकने वाला।

व्याप्ति—परि, पृ० ८२—विद्यमानता, फैलाव, आच्छादन, अन्तर्भाव, परिवेष्टन।

व्याल—अर्च, पृ० ४०—साँप, सर्प।

व्यूह—अना, पृ० १४६—अस्त-व्यस्त करना, समूह, रचना, स्थान-परिवर्तन, सैनिकों को युद्ध-क्षेत्र में यथोचित स्थान पर रखना। विस्तृत व्याख्या, अध्याय, अंग, तर्क। बाधाओं से पूर्ण दुर्ग की रचना।

व्योम—तुल, पृ० ३४—आकाश, गगन, अवकाश।

श

शंकाकुल—परि, पृ० ७७—शंका से आकुल, अनिष्ट के भय से परेशान।

शक—अप, पृ० १६६—चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य के शासनकाल में पश्चिमी घाटियों से होकर भारत पर आक्रमण करने वाली एक जाति। इसे विक्रमादित्य ने परास्त किया था।

शंकरपाले—नप, पृ० ३२—शकर में पले या पगे हुए, घी या तेल में पके और चीनी में पगे मैदा के छोटे-छोटे चौकोर टुकड़े।

शकल—अना, पृ० ३८—चमड़ा, छाल, खण्ड, टुकड़ा।

शकुन्तला—परि, पृ० १६१—कण्व ऋषि द्वारा पालित विश्वामित्र-मैनका की लड़की, दुष्यन्त की पत्नी। शकुन्तला के समान भोली-भाली सुन्दर सुकुमार किशोरी।

शक्त—अना, पृ० १५१—सबल, मज़बूत, समर्थ, बलशाली।

शक्ति—परि, पृ० ८१; तुल, पृ० ३०—बल, पौरुष, जोश, क्षमता, सामर्थ्य, दुर्गा, भवानी, पार्वती, प्रकृति।

शक्ति-खेल-सागर—अना, पृ० १५७—शक्ति की क्रीड़ा से चंचल समुद्र, चपल तरंगों में खेलता हुआ शक्ति का सागर। संदर्भार्थ—समस्त जड़चेतन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकृति में ऐसे तीव्र कम्पन और हलचल मच गई जैसे महासागर में ज्वार आने पर ऊँची-ऊँची पठारें उठती-गिरती टकराती हैं और सागर में मंथन-सा उत्पन्न कर देती हैं।

शक्तिमान—अना, पृ० ५६—शक्तिशाली, बलवान, समर्थ।

शक्ति-रूपा—अना, पृ० १०५—शक्ति के रूप वाली, शक्ति का रूप धारण करने वाली। सामर्थ्य, बल, योग्यता, कौशल आदि का समन्वित रूप।

शतदल—तुल, पृ० ११; परि, पृ० १०२—[शत+दल=सौ पत्तों वाला] कमल। भारतीय जीवन का प्रतीक।

शतद्रु-तन-उर्मिल—गी, पृ० ५५—[शतद्रु=सतलुज, पंजाब की एक नदी।] सतलज का लहराता हुआ पानी। सतलज के लहराते नीले स्वच्छ पानी को प्रकृति-रूप भारत-भूमि का वसन [परिधान] कल्पित किया गया है।

शतपथ—गीतगुंज, पृ० ४८; अर्च, पृ० ८८—महर्षि याज्ञवल्क्य रचित एक प्रसिद्ध ब्राह्मण। धर्मशास्त्र, धर्मग्रंथ।

शतमुख-शत-रव-मुखरे—गी, पृ० ७३—सैकड़ों मुखों से सैकड़ों ध्वनियाँ गुंजित करने वाली। भारतीय मनीषियों, ऋषियों, कवियों द्वारा रचित सैकड़ों दर्शन, धर्म, भक्ति, योग, ज्ञान, काव्य आदि के ग्रंथ शारदा की वाणी हैं जो विश्व भर में गूंज रही हैं।

शत-शत—तुल, पृ० ५६—सैकड़ों, अगणित, असंख्य।

शतशुद्धि-बोध—अना, पृ० १६२—सैकड़ों प्रकार के परिष्कार, शोध या संशोधन करने का विवेक या ज्ञान। सैकड़ों दोषों को दूर कर नवीन सांस्कृतिक धार्मिक संस्कार उत्पन्न करने की बुद्धि।

शतशैल-संवरण-शील—अना, पृ० १५२—[संवरण=रोकना, बन्द करना, चुनना, छिपाव, आवरण।] सैकड़ों पर्वतों को रोकने की शक्ति रखने वाला।

शताब्दि—अना, पृ० १८—सौ वर्ष का समय, शती, सदी।

शफरी-अलकें—तुल, पृ० ५२—[शफरी=मछली। अलकें=बालों की लटें, बाल, कुन्तल।] मछली के समान चंचल और चिकने बाल।

शब्द-रस-रूप-गंध—अना, पृ० ७५—आकाश, जल, अग्नि और पृथ्वी के धर्म या गुण। प्रकृति के आकाश, जल, अग्नि, पृथ्वी आदि तत्त्व।

शब्दोच्छल—तुल, पृ० ५७—उछलती हुई शब्दावली, आकुलता से उमड़ते शब्द, उत्साह आवेगभरी वाणी या नाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शम—तुल, पृ० ३५—मानसिक स्थिरता, मुक्ति, अन्तःकरण और मन का संयम, सांसारिक कार्यों से निवृत्ति, शांत रस का स्थायी भाव।

शमन-प्रशमन—अर्च, पृ० १००—शांत, संतुष्ट, विलीन होना। विकार और वृत्तियों का दमन करने वाला।

शमा—परि, पृ० १४७—प्रकाश, ज्वाला, आग, दीपशिखा। उर्दू फार्सी काव्य में प्रेयसी का प्रतीक।

शय—अर्च, पृ० ७५; आरा, पृ० ३४—सामग्री, पदार्थ, वस्तु, चीज़, बात, घटना, शक्ति। शय्या, निद्रा, दाँव, शाप।

शयन—तुल, पृ० ४०—विश्राम, आराम, लेटना, सोना।

शयन-तुमुल—अर्च, पृ० ४२—[तुमुल=कोलाहल, भयंकर, घबराया हुआ, घमासान युद्ध। शयन=शय्या, सेज, घर, स्थान]। भयंकर कोलाहल का स्थान, घमासान युद्ध का मैदान।

शय-निश्चय—अर्च, पृ० १०—[शय=शय्या, निद्रा, साँप, दाँव, हाथ, शाप। निश्चय=संदेह रहित ज्ञान, निर्णय, जाँच, विश्वास, निबटारा।] विश्राम और दुविधाहीनता। अशंकित शांत सुरक्षित स्थान।

शयानक—अना, पृ० २२—गिरगिट, एक प्रकार का सर्प।

शयित—तुल, पृ० १४—लेट गये, बलिदान हो गये, वीरगति पा गये, मारे गये।

शय्या-शिरोभाग—अना, पृ० ६६—खाट के सिराहने।

शर—तुल, पृ० २०—तीर, वाण। प्रस्तुत संदर्भ में कामदेव के शर होने के कारण ये फूलों के हैं। ये तीर लाल कमल, अशोक, आम्रमंजरी, चमेली और नीलकमल के माने जाते हैं।

शर—तुल, पृ० ५६—तीर, वाण। संदर्भार्थ—घातक परिवेश-परिस्थितियाँ, समय की तेज़ तिलमिला देने वाली पुकार, तात्कालिक समाज की दीनहीन-दयनीय अवस्था जो प्रबुद्ध और भावुक हृदय में तीर के समान चुभती थी।

शर-खरतर—तुल, पृ० १२—[शर=तीर, वाण, हिंसा, चिता। खर=तीक्ष्ण, तेज़ धार वाला, कड़ा, अशुभ, गधा। तर=अपेक्षाकृत अधिक। यह प्रत्यय परिमाण की तुलना के लिए लगाया जाता है।] बहुत तीक्ष्ण धार वाले वाण, बहुत पैनी चुभीली धार वाले और तेज़ी से आने वाले तीर। वर्षा के रूपक में संदर्भार्थ—वाणों के समान तीक्ष्ण चुभीली बूंदें या जलधाराएँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरण-विमुख—परि, पृ० ५४—शरण के विपरीत, शरण में न रहने वाला, शरण-त्यागना।

शरण-शारण—अर्च, पृ० ८९—शरण आये को शरण देने वाला, शरण में आये की रक्षा करने वाला। शरणागत की रक्षा करने वाला।

शरत-शिशिर—परि, पृ० १४०—वर्षा के बाद और हेमन्त से पूर्व आने वाली दो ऋतुएँ।

शरदिन्दुवर—गी, पृ० ११—शरद कालीन सुन्दर चन्द्रमा। शरद की पूनम का चाँद।

शरनिकर—अना, पृ० १६२—तीरों का समूह, वाणों की राशि। निरन्तर सघन वाण-वर्षण।

शराबोर—परि, पृ० १९५—पूरी तरह डूबा हुआ, भीगा हुआ, सना हुआ।

शरासन—अना, पृ० १६५—धनुष, कमान।

शर्मद—अना, पृ० १९७—[शर्म=सुख, गृह, आशीर्वचन, सुखी, सम्पन्न। द=दायक, देने वाला।] आनन्ददायक, प्रसन्न करने वाला।

शर्वरी—परि, पृ० ७५; अर्च पृ० १७—रात, निशा, शाम, चन्द्रमा, विष्णु।

शशधर—तुल, पृ० १५—[शश=शशक, खरगोश, खरहा। धर=धारण करने वाला।] खरगोश धारण करने वाला, चन्द्रमा, शशि, राकेश। संदर्भार्थ—मुस्लिम संस्कृति कला और विलास का शीतल जगमगाता चन्द्रमा, जैसे श्यामल सघन घटाओं वाली अँधियारी पावस के बाद उदित शरद शरदकालीन राकेश। आक्रमण अत्याचार के आतपकाल और दमन विध्वंस की घोर वर्षा के बाद उदित विलास का चाँद।

शशांक—अना, पृ० ७२—[शश+अंक=जिस की गोद में खरगोश हो, ऐसा विश्वास है कि चन्द्रमा पर जो काले धुंधले धब्बे दीखते हैं, ये उसकी गोद में बैठा खरगोश है] चन्द्रमा, शशि।

शशि के लांछन—आरा, पृ० २—चन्द्रमा पर दिखाई देने वाले काले धब्बे। संदर्भार्थ—चन्द्रमा के उज्ज्वल शीतल प्रकाश के समान चरित्र या व्यक्ति में पाये जाने वाले अमिट अवगुण या छोटे-मोटे दोष।

शशि-तारा-हर—तुल, पृ० ५५—चाँद-सितारों को डुबाता हुआ, ग्रहनक्षत्रों को आवृत्त करता या विलीन करता हुआ, चाँद-तारों को आँखों से ओझल करने वाला।

शशिप्रभा-दृग—गी, पृ० ५२—चन्द्रमा की ज्योति ही मानों नेत्र हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शशिशेखर—अना, पृ० १६४—शशि जिनकी चोटी में है—शिव। जिसकी जटाओं में चन्द्रमा है—शंकर।

शस्य—तुल, पृ० २५—घास, फ़सल, अन्न, धान्य, योग्यता, गुण, प्रशंसनीय, श्रेष्ठ।

शस्य—आरा, पृ० १५; परि, पृ० १६६—प्रशंसनीय, श्रेष्ठ, नयी घास, फ़सल, अन्न, फल, फूल।

शहनाई—नप, पृ० ४३—बाँशुरी के समान अपेक्षाकृत आकार में कुछ बड़ा लोहे का बाजा। प्रसंगार्थ—बैलों को हाँकते हुए रामलाल का भद्दा स्वरालाप।

शाख—अर्च, पृ० १३—डाली, टहनी, शाखा।

शाखा—अना, पृ० ६७; तुल, पृ० २२—टहनी, डाली, भाग, विभाग, शरीर का अवयव, भेद, अंग, अध्याय, अंश, टुकड़ा, पक्षान्तर। संदर्भार्थ—जीवन का भौतिक आधार, निवास, अवलम्ब, आश्रय।

शागिर्द—नप, पृ० १०२—चेला, शिष्य, विद्यार्थी।

शातक्रतव—आरा, पृ० ६१—इन्द्रधनुष।

शाप—अना, पृ० २८; आरा, पृ० १६—आक्रोश, बददुआ, किसी के अशुभ-अमंगल की कामना करना।

शारदघन—आरा, पृ० ३३—शरद के मेघ, जाड़ों के बादल।

शारदा—तुल, पृ० ५४—ज्ञान-विद्या की देवी, सरस्वती, वाणी।

शारदीय चन्द्रिका—परि, पृ० १६१—शरद की चाँदनी।

शाल—अना, पृ० ११—एक वृक्ष विशेष।

शालि—गीतगुंज, पृ० ५५—चावल या चावल के पौधे।

शाश्वत—अना, पृ० १६०—चिरन्तन, अक्षय, अनन्त।

शाश्वत-समुद्र-जग-मज्जन—गी, पृ० ५५—अनन्तता, अनश्वरता, चिरन्तनता के महासागर में विश्वभर का निमग्न हो जाना। ब्रह्म या परमात्मा ध्वनि रूप से अनिश्वर और अनन्त व्यापक है, उसके नाद स्वरूप महासागर में निमज्जित होकर विश्व जीवन भी चिरन्तन या अविनश्वर रूप धारण कर लेता है।

शासन—तुल, पृ० ३०—नियंत्रण, आज्ञा, राज्यादेश, निदेश, निर्देश, वश में करना।

शास्त्र—तुल, पृ० १७—ज्ञान की कोई शाखा, धर्म, दर्शन, विज्ञान, कला, साहित्य आदि के सम्बन्ध में सिद्धान्त-ग्रन्थ, जिनमें मनुष्य समाज और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन की रक्षा, स्थिति, विकास आदि के संबन्ध में निरूपण हो। शास्त्र छै माने जाते हैं—मीमांसा (जैमिनि), न्याय (गोतम) वैशेषिक (कणाद), पातंजल (पतंजलि), सांख्य (कपिल) और वेदान्त (वेदव्यास)।

शाही अंगना—अना, पृ० ६२—राज-परिवार की स्त्रियाँ, शाहज़ादियाँ, राजकुमारियाँ, राजरमणियाँ।

शिंजन—अना, पृ० ४८—नूपुर, किंकणी, कंकण, करधनी आदि के बजने का स्वर, झंकार, रुनझुन।

शिंजित—अर्च, पृ० ८१—ध्वनि करता हुआ, बजता हुआ, झनझनाता हुआ।

शिखि—तुल, पृ० ५२—मोर, मयूर।

शिति—अर्च, पृ० १०—सफ़ेद, काला।

शिप्रावात—अप, पृ० १६६—नर्मदा नदी से आती हुई पवन, नर्मदा के शीतल जल से भीगी वायु।

शिरस्त्राण—तुल, पृ० ११—[शिर=सिर। त्राण=रक्षा करने वाला।] कूंड, लोहे की टोपी जो युद्ध करते समय सैनिक सिर पर पहनते हैं। संदर्भार्थ—मुसलमानों का उत्पीड़क अत्याचारी सैनिक शासन।

शिराएँ—अना, पृ० ३७, १५१—नस-नाड़ियाँ।

शिरोधार्य—अप, पृ० १६६—सिर पर रखा हुआ या रखने योग्य, मानने योग्य, अनुसरण करने योग्य।

शिरोरत्न—परि, पृ० २१७—शिरोमणि, मणि के समान शीश की शोभा बढ़ाने वाली, सर्वोच्च।

शिल्पी—परि, पृ० २२३—कारीगर, कलाकार, मूर्तिकार।

शिव—परि, पृ० ८१—मंगलकारी, अद्वैत ब्रह्म, हिन्दुओं के तीन देवताओं में से एक देवता। महेश, महादेव, शंकर, महाकाल, रुद्र, भोलानाथ आदि जिसके अनेक नाम हैं।

शिविर—अर्च, पृ० ११—सेना-निवेश, तंबू, दुर्ग, डेरा।

शिशिर—अना, पृ० १—वसन्त से पहले आने वाली ऋतु, शीत, पाला, ओस, हिम।

शिशिरभार-व्याकुल—परि, पृ० १७८—पाले के बोझ से संकुचित पीड़ित, ओस-बिन्दुओं के बोझ से झुके हुए।

शिशिरबिन्दु—परि, पृ० ८६—[शिशिर=माघ और फ़ागुन में पड़ने वाली ऋतु। बिन्दु=बूंदे।] ओस की बूंदे, नीहार-कण।

शीकर—तुल, पृ० ५०—बूंदे, बिन्दु, कण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शीकर-शीकर—आरा, पृ० ३—बूंद-बूंद, जलकण ।

शीतलच्छाय—तुल, पृ० ११—[शीतल:+छाया=शीतलच्छाय । शीतल= शांत, ठण्डा, तापनाशक । छाय (छाया का विशेषण)=छाया वाला, छाया देने वाला ।] शीतल छाया देने वाला, राग-द्वेष, द्रोह, ईर्ष्या, घृणा आदि भौतिक तापों से बचाकर शांति, सन्तोष, आध्यात्मिक सुख आदि की छाया देने वाला । छाया का अर्थ है, प्रतिबिम्ब । प्रकाश का प्रतिबिम्ब भी प्रकाश होगा, इसलिए छाया का अर्थ यहाँ प्रकाश, प्रभा, आभा, ज्योति होगा ।

शीर्ण—तुल, पृ० ५२—कुम्हलाया हुआ, सड़ा-गला, नष्ट, टूटा-फूटा, चिथड़े-चिथड़े हुआ, विकीर्ण, कृश, शुष्क, छितराया हुआ ।

शीर्ण-काय-कारण—तुल, पृ० २०—[शीर्ण=पतला दुबला, निर्बल, कुम्हलाया हुआ, टूटा-फूटा, चिथड़े-चिथड़े हुआ, सड़ा-गला, विकीर्ण । काय=शरीरवाला, देहवाला, तनधारी । कारण=साधन, उपकरण, कर्ता ।] शरीर के पतले ,दुबले होने का कारण, कम पानी रह जाने या उथला हो जाने का कारण, सूख जाने का कारण । बल-वैभव-गौरव मान से हीन हो जाने का कारण ।

शील—अना, पृ० ७—चरित्र, स्वभाव, संकोची प्रकृति, प्रवृत्त, उन्मुख, स्वभाव वाला, नैतिक व्यवहार, तटस्थ व्यवहार, रागद्वेषहीनता ।

शुक—अर्च, पृ० ६—तोता, वस्त्र, शिरस्त्राण, महर्षि व्यास के पुत्र शुकदेव मुनि ।

शुक्ति—तुल, पृ० ३६—सीपी, सीप, छोटा शंख ।

शुचि—तुल, पृ० ३५—पवित्र, निर्दोष, निरपराधी, निश्छल, उजला, चमकदार ।

शुचिता—परि, पृ०, ८०—पवित्रता, पावनता, शुद्धता, मन की विकार हीनता ।

शुचिदृष्टि—अना, पृ० २—स्वच्छ, पवित्र, निर्मल दृष्टि ।

शुद्ध-परमाणु-काय—अना, पृ० १०३—सूक्ष्मतम परमाणु रूप, पूर्ण अगोचर रूप ।

शुद्धसत्व—आरा, पृ० २४—[शुद्ध=सत्य, यथार्थ, विकारहीन, निर्मल । सत्त्व=चैतन्य, मूल तत्त्व, बुद्धि, सहजात प्रकृति या स्वभाव, गुणधर्म ।] निर्मल निर्विकार चैतन्य, आत्मा के यथार्थ गुणधर्म ।

शुभ्र—अना, पृ० २, ३५—उज्ज्वल, निर्मल, पवित्र चमकीला, सफ़ेद ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शूद्रगण—तुल, पृ० २५—चौथे वर्ण के मनुष्य, छोटी जात वाले, जिन्हें हरिजन नाम दिया गया है।

शून्य—अना, पृ० ६४—खाली, रिक्त, निराकार, उदास, निर्जन।

शूर—परि, पृ० १३२—वीर, बहादुर, शक्तिसम्पन्न।

शृंखला—तुल, पृ० ३६; परि, पृ० ६८—जंजीर, संकल, परम्परा, बन्धन, कड़ियां।

शृंखलित—परि, पृ० १०५—क्रमिक, सिलसिलेवार, निरन्तर, जंजीर में बंधा, नियम में बंधा।

शृंगार—अना, पृ० २—शोभा, सजावट।

शृंगार-युग्म-गत—अना, पृ० १५—दाम्पत्य शृंगार में लीन।

शेफालिका—अना, पृ० २—पारिजात, हारसिंगार। सफ़ेद रंग का पांच पंखड़ियों वाला एक छोटा फूल, जिसकी पंखड़ियों का मूल तथा नाल पिलाई लिये हुए होता है।

शेरमर्द—परि, पृ० १६७—शेर के समान वीर बलशाली मनुष्य, शेर के समान शक्तिशाली निडर योद्धा।

शेषशयन—अना, पृ० १५६—शेषनाग की शैया पर शयन करने वाला—विष्णु।

शेषश्वास—तुल, पृ० २५—केवल सांस बाकी रह गई है जिसकी, श्वासमात्र, अत्यन्त शक्तिहीन, नितान्त जीर्ण-शीर्ण।

शैवाल—परि, पृ० ७६—सेवार, नदी सरोवर आदि के पानी में उगी एक प्रकार की लम्बी घास।

शैवालिनी—गी, पृ० १५—नदी, सरिता।

शैशव—अना, पृ० ३०—बचपन, बालावस्था, आठ वर्ष तक की आयु।

शोक-सारण—अर्च, पृ० ८८—शोक बहा देने वाला, कष्टों का नाश करने वाला।

शोचन—अर्च, पृ० २—चिन्ता, शोक, दुख।

शोध—अना, पृ० ६; तुल, पृ० ५६—तलाश, खोज, अनुसंधान, सुधारना, शुद्ध करना।

शोध-शक्ति—तुल, पृ० ३७—[शोध=तलाश, खोज, सुधारना, अनुसंधान, शुद्ध करना।] अनुसंधान करने वाली शक्ति, परिष्कृत या शुद्ध करने वाली शक्ति, नवीन खोज करने-कराने वाला उत्साह, बल, धैर्य और विवेक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शोभा—तुल, पृ० ३६—सजावट, सुन्दरता, शृंगार।

शोभाकर—तुल, पृ० २१—शोभा बढ़ाने वाला, सौंदर्य वर्द्धन करने वाला, सुशोभित करने वाला, सौंदर्य की किरणों वाला, सुन्दरता की आभा से युक्त, बाहरी या कृत्रिम शोभा देने वाला। माया की नाशवान झूठी सुन्दरता प्रदान करने वाला।

शोभाप्रिय—तुल, पृ० १६—[शोभा=सौंदर्य, सुन्दरता। प्रिय=रुचिकर, अच्छा लगने वाला, जिसे प्यार किया जाय, प्यारा।] सौंदर्य जिसे प्रिय हो, सुन्दरता का उपासक। संदर्भार्थ—सौंदर्य की यह उपासना मिथ्या है, यथार्थ सुन्दरता के प्रति यह प्रेम नहीं।

शोभा-वलयित—गी, पृ० ८८—सुषमा से लदी हुई, शोभा के भार से अवनत सुषमित यौवन के भार से झुकी।

श्मशान—अना, पृ० ५६—मसान, मरघट, जहाँ शवदाह किया जाता है।

श्याम—परि, पृ० ४३—काला, अँधियाला, साँवला। कृष्ण, वसुदेव-देवकी का पुत्र।

श्याम-मोह-कज्जल-अभियुक्त—परि, पृ० ५०—श्याम के प्रेम रूपी काजल की अपराधिनी, कृष्ण का काला रंग मोह का काजल बन कर आंखों में समाया है, जिसके लिए वह बदनाम हैं। जिन्हें कृष्ण के श्यामल सौंदर्य को नयनों का नशीला काजल बनाकर रखने की अपराधिनी समझा जाता हो।

श्यामा—अना, पृ० ८३; परि, पृ० १३७—षोडशवर्षीया युवती, तपे हुए सोने के रंग की सुन्दरी जो शीत में ऊष्णता और ग्रीष्म में शीतलता देती है। तरुणी, जिसे सन्तान न हुई हो। महाकाली, दुर्गा, चण्डी। भवानी।

श्यामा-विभावरी—अना, पृ० १५७—काली रात, अँधेरी रात, अमावस।

श्र

श्रम—आरा, पृ० ६१; अना पृ० ५५—परिश्रम, दौड़धूप, खेद, श्रान्ति, थकान। अशान्ति, अस्थिरता।

श्रम-निस्तार—गी, पृ० २४—परिश्रम से बचने वाला, परिश्रम से छुड़ाने वाला। आवागमन के श्रम कष्ट आदि से मुक्त करने वाला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रम-सञ्चित—गी, पृ० २२—परिश्रम से कमाए हुए, ईमानदारी और परिश्रम से प्राप्त किये हुए ।

श्रमसीकर—अना, पृ० १५१—परिश्रम के कारण झलकती हुई बूंदें । पसीने की बूंदें । स्वेदकण ।

श्रमितप्रवास—परि, पृ १६३—कष्ट पूर्ण विरह, परदेस जहाँ रहकर परिश्रम किया ।

श्रांत—अना, पृ० ४२—थका हुआ, शांत, शिथिल ।

श्रांति—अना, पृ० १८८—थकावट, शिथिलता ।

श्रावण—अना, पृ० १२२—सावन, पावस ऋतु का एक मास ।

श्री—तुल, पृ० ३१; गी, पृ० ३२—शोभा, सुषमा, सौंदर्य, विभूति, सजावट ।

श्रीमन्नारायण—अना, पृ० २५—[श्री+मत—नारायण] भगवान का नाम ।

श्रीवीरजी—तुल, पृ० ४२—श्री दूल्हेजी, पतिजी—तुलसीदास ।

श्रुत—गी, पृ० ५०—सुना जाने वाला, सुनाई देता हुआ, सुना हुआ ।

श्रुतिधर—गी, पृ० ४४—वेदों को धारण करने वाले । वेदों के पंडित, ज्ञानवान विद्वान ।

श्रुति-मधुर—परि, पृ० ३७—कानों को मधुर या प्यारी लगने वाली, कानों को मोहित करने वाली ।

श्रेयसी—आरा, पृ० ५२—मंगलमयी, कल्याणकारिणी ।

श्रेयस्कर—परी, पृ० २२१—मंगलकारी, कल्याणप्रद, श्रेष्ठ, पुण्यवान, यशस्वी ।

श्लथ—अना, पृ० ७, तुल, पृ० ४७—दुर्बल, ढीला, शिथिल, बिखरा हुआ ।

श्लेषहीन—परि, पृ० २४०—विविध अर्थ देने वाले साधनों से रहित, एक ही अर्थ व्यक्त करने वाला, यथार्थ अभिधात्मक अर्थ ।

श्वसित—परि पृ० १०४—श्वास-प्रश्वास लेता हुआ, उच्छ्वास छोड़ता हुआ, बहुत अधिक थका हुआ ।

श्वशुरपरिजन—तुल, पृ० ४९—ससुर के घर वाले । तुलसीदास की सास, ससुर साली, साले, सहलज आदि ।

श्वेत—तुल, पृ० ४६—सफ़ेद, स्वच्छ, निर्मल, विमल, धवल ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्वेत पटल—तुल, पृ० ६१—[श्वेत=सफ़ेद, स्वच्छ, विमल, पवित्र, पावन, उजला। पटल=तह, स्तर, पर्त, वस्त्र।] संदर्भार्थ—ज्ञान के पावन विमल पर्त, ज्ञान से आलोकित विविध स्तर, जो लक्ष्मी के स्वच्छ उजले वस्त्रों के रूप में थे।

श्वेतोत्पल—गी, पृ० ५३—श्वेत कमल, सफ़ेद सरोज।

ष

षटपद—अना, पृ० २२; अर्च, पृ० १०२—छै पैरों वाला, भौंरा, भ्रमर, मधुकर।

षटपदावलियाँ—अना, पृ०३५— मधुकरियाँ, भ्रमरियाँ, भौरों का समूह।

षोडशी—परि, पृ० १८२—सोलह वर्ष की आयु वाली युवती।

षष्ठ—अना, पृ० १६६—छठवाँ, छवाँ।

स

संकर्षण—अप, पृ० १७१—खींचना, आकर्षित करना। एक तांत्रिक मंत्रसिद्धि जिसे प्राप्त कर किसी को भी अपनी ओर आकर्षित किया जा सकता है या किसी पदार्थ को खींचकर निकाला जा सकता है। एक स्त्री के पेट से बच्चे को निकाल कर अन्य स्त्री के पेट में रखने की विद्या।

संकीर्ण—अना, पृ० ३४—सँकरा, तंग, अनुदार।

संकुचित—तुल, पृ० ६१—सुकड़े हुए, बन्द, अनखिले, सिमटे हुए।

संकुल—परि, पृ० १११—सँकरा, तंग, घिरा हुआ, भरा हुआ।

संगर—अना, पृ० १०८—युद्ध, लड़ाई, घमासान।

संगिनी-सहेलियाँ-भवानी की—परि, पृ० ११३—दुर्गा की संगिनी सखियाँ डाकिनी-पिशाचिनी आदि जो युद्ध-भूमि में दुर्गा के साथ रहकर रक्तपान करती और मांस मज्जा खाती हैं।

संचरण अना, पृ० २९—गमन, भ्रमण, प्रयोग में लाना, गतिमान करना, फैलाना, चलना-चलाना।

संचित तुल, पृ० २४, ५८—एकत्र, इकट्ठा किया हुआ, संघटित, चयन किया हुआ, राशिकृत, शक्तिशाली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संचित जीवन—तुल, पृ० १४—[संचित=एकत्र, संघटित, समूचा, सम्पूर्ण रूप में। जीवन=जीविका, प्राण धारण किये रहना, जल, वायु] अनेक नदियों, नालों, जल-स्रोतों, धाराओं के मिलकर एक हो जाने के समान विभिन्न वर्ग, समाज, जाति, राज्य के मिल जाने से बना भारतवासियों का एक सम्पूर्ण रूप, सभी प्रकार के मनुष्य और समाज एकत्र होकर या मिलकर।

संचिति—अर्च पृ० १०२—प्राप्ति, उपलब्धि, कमाई, एकत्रीकरण, राशि, ढेर।

संचेतन—गीतगुंज, पृ० ४६—ज्ञान, विवेक, चेतना, दैहिक, बौद्धिक और मानसिक प्रगतिशीलता।

संजीवन—तुल, पृ० १५—साथ रहना, पुनर्जीवित करना, आहार, एक बूटी, अमृत।

संज्ञापन—अप, पृ० १७२—सूचित करना, बतलाना, सिखलाना, ज्ञान या बोध प्रदान करना।

संज्ञाहीन—अना, पृ० ५६—बेहोश, नामहीन, बेसुध।

सन्तुल—अर्च, पृ० ७—ठीक प्रकार से तुला हुआ, अडोल, स्थिर।

संत्रासन—अप, पृ० १७१—तांत्रिक मंत्र-सिद्धि, जिसे पाकर अन्य व्यक्ति को त्रस्त किया जा सकता है। शत्रु को भयभीत करने के लिए एक तांत्रिक अभिचार।

संदर्शन—तुल, पृ० ३३—दर्शन करना, देखना। देखकर पूजा या सम्मान का भाव प्रकट करना।

सन्दिग्ध—अना, पृ० १५३—अनिश्चित, शंकापूर्ण, द्विधापूर्ण।

सन्दीपन—आरा, पृ० २७; अर्च, पृ० ४६—उद्दीपन, काम के पाँच वाणों में से एक वाण, उद्दीप्त करने वाला।

सन्देशवाहक—अना, पृ० ८—सन्देश लाने-लेजाने वाला।

संध्या-ज्योति—तुल, पृ० २२—सूर्यास्त के समय का अरुण प्रकाश, सायंकालीन सुनहरी आभा।

सन्नाटा—अना, पृ० ३६—निस्तब्धता, नीरवता, निर्जनता, सनसनाहट।

संन्यास—अना, पृ० १७०—हिन्दूसमाज या जीवन-व्यवस्था के अनुसार आयु का अन्तिम भाग, जिसमें मनुष्य गृहस्थ छोड़कर विरक्त जीवन व्यतीत करता है।

संयत—अना, पृ० ६८—नियंत्रित, सीमित, मर्यादित, नियमित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयुक्ता—तुल, पृ० ३९—जुड़ी हुई, संलग्न, चिपकी हुई, अच्छी तरह या दृढ़ता से जुड़ी हुई ।

संलग्न—तुल, पृ० १३—लगा हुआ, सम्बद्ध, सटा हुआ, चिपका हुआ, लीन ।

सँवार की—नप, पृ० ६८—अच्छे ढँग की, श्रेष्ठ प्रकार की, कला-कुशलता और सरसता से ।

संवृत—अना, पृ० १६२—अलग किया हुआ, रुद्ध किया हुआ, हरण किया हुआ, मन्द किया हुआ ।

संशय—परि, पृ० १००—सन्देह, आशंका, भ्रम, दुविधा ।

संशय-अंधकारमय—अना, पृ० २६—सन्देह या भ्रम के अंधकार से पूर्ण । सन्देह या भ्रम के कारण यथार्थ को न देख पाना ।

संसरण—परि, पृ० २२९—आगे बढ़ना, चलना, संचरण ।

संसारी—परि, पृ० २१५—संसार में रहने या जनमने वाला, संसार के धंधों में फँसा, सांसारिक माया-मोह राग-द्वेष में फँसा ।

संसृति—अना, पृ० ७—संसार, सृष्टि, प्रवाह, आवागमन, जन्ममरण की परम्परा ।

संसृति की सरितातर—गी, पृ० ४३—संसार की नदी को पार करके, संसार के मायामोह, राग-वासना, प्रलोभन आदि की नदी को तैर कर ।

संसृति-भीति—गी, पृ० ३३—संसार में जन्म लेने और मरने का भय । आवागमन के कष्ट से डरना ।

संस्कार—तुल, पृ० ५४—हृदय या मन पर स्थायी रूप से जमा प्रभाव, शुद्ध या अच्छा प्रभाव, सद्वृत्तियाँ, शुद्धिकरण, संशोधन, परिष्कार ।

संस्कृति—अना, पृ० ५९—परिष्कार, पवित्रीकरण, आचार-विचार-भावना आदि की परम्परा, शुद्धीकरण, सभ्यता, परिशोधन ।

संस्तुत—परि, पृ० १६५—प्रशंसित, आदरित, पूजनीय, जिसकी सिफारिश की गई है ।

संस्थित—तुल, पृ० १७—अच्छी तरह स्थित, ठहरा हुआ, रखा हुआ, पड़ा हुआ, भावी, टिकाऊ, स्थापित किया हुआ, राशीकृत, पूरा किया हुआ, नष्ट, मृत । संदर्भार्थ—गृहस्थ जीवन में प्रतिष्ठित ।

संस्मारक—तुल, पृ० १७—स्मरण कराने वाला, याद दिलाने वाला, स्मारक, यादगार ।

संहत—गीतगुंज, पृ० ४३—घना, संयुक्त, दृढ़, आहत, जुड़ा हुआ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकल—तुल, २४, ३६—सब, सभी, हरेक, प्रत्येक। संदर्भार्थ—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, चारों वर्ण, सभी जातियों उपजातियों के मनुष्य।

सकल अंग—तुल, पृ० ४६—सब अंग, प्रत्येक अंग, सारा शरीर, तन-मन हृदय सब।

सकल तान—तुल, पृ० ६०—सभी राग-रागिनियाँ, समस्त स्वरताल, सम्पूर्ण संगीत-कला। कला सुन्दरता सुषमा मुग्धता, तल्लीनता आदि। समस्त गुण-सामर्थ्य, समस्त ज्ञान, विज्ञान, दर्शन, धर्म, कला आदि।

सकल-भ्रम-शेष—गी, पृ० २४—सब प्रकार के भ्रमों को निर्मूल कर देने वाला, सारे अज्ञान को नष्ट करने वाला।

सकाल—परि, पृ० ८६; गी, पृ० ८०; आरा, पृ० ३३—सवेरा, प्रभात, समयोचित, ठीक समय पर; सुख-समृद्धि का काल।

सकेल—अना, पृ० १३३—एक साथ, फुर्ती से, क्रीड़ा करते हुए, खेलते-खेलते, सरल सहज भाव से।

सक्षम—तुल, पृ० ४७, ५९—शक्तिशाली, सामर्थ्यवान, क्षमाशील।

सगर्व—तुल, पृ० २४—घमण्डी, अभिमानी, अन्य को अपने से नीचे और अपने को औरों से उच्च समझने वाला।

सगाई—अर्च, पृ० २०; आरा, पृ० ९४—सगापन, घनिष्ठ सम्बन्ध, मित्रता, रिश्ता, विवाह से पूर्व कन्यापक्ष की ओर से की जाने वाली एक रस्म, जिसमें वर निश्चित हो जाता है।

सघन—तुल, पृ० ४४—बादलों-सहित, घना, गहरा, मोटा, अविरल, ठोस।

सच्चिदानन्द—अना, पृ० १५६; परि, पृ० ८१—[सत=सदा विद्यमान, अविनाशी, चिरन्तन। चित=चैतन्य, ज्ञानसम्पन्न, चेतनाशील। आनन्द=सुख-दुख से मुक्त, द्वन्द्वात्मक अनुभूति से स्वाधीन] चिरन्तन चैतन्य आनन्द स्वरूप ब्रह्म।

सजता सुवेश—तुल, पृ० २२—नये-नये वेश सजाता हुआ, नवीन सजीले संस्कारों के परिधान धारण करता हुआ, पुराने संस्कारों के रंग धोकर नये संस्कारों के रंगों से शोभित होता हुआ। फिर-फिर सुवेश जीवन पर=पश्चात् उन संस्कारों को त्याग कर और भी नवीनतम संस्कारों से जीवन को सजाता हुआ, इसी प्रकार अनगिनत संस्कारों-विकारों संकल्प विकल्पों के आवरणो को चीरता हुआ, वह ऊपर उड़ता जा रहा है!

सजल—अना, पृ० ७८—पानी से भरा, अश्रु-पूर्ण, द्रवणशील, स्निग्ध, तरल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सतचितप्रकाश—अनां, पृ० १०२—अविनाशी और चेतनाशील प्रकाश, चिर विद्यमान और सक्रिय ज्ञान की ज्योति।

सतभैया—नप, पृ० १४—एक प्रकार की मैना।

सत-श्री-अकाल—परि, पृ० १८०—अविनाशी ब्रह्म ही सत्य है, सिखों का नारा, सिखों द्वारा किया जाने वाला अभिवादन।

सती—परि, पृ० २१६—पतिपरायणा, पतिव्रता।

सत्—तुल, पृ० ३५—वर्तमान, विद्यमान, सदा रहने वाला, अविनाशी, उचित, श्रेष्ठ, शुभ।

सत्तम—अर्च, पृ० ३२, ३६—सर्वश्रेष्ठ, परमपूज्य।

सत्य—तुल, पृ० २८; अना, पृ० ६८—सही, यथार्थ, चिरन्तन, वास्तविक, निर्विवाद, विद्यमान, वर्तमान।

सत्य नीलिमा—परि, पृ० ८५—सत्य का नीलापन, यथार्थ निर्मल नीलापन। प्रलय के बाद भी रहने वाला शून्य आकाश।

सत्य मार्ग—तुल, पृ० २८—सही रास्ता, सत्पंथ, अपनी आवस्था के अनुसार जीवन-दर्शन, धर्म-सिद्धांत आदि।

सत्य-सुन्दर-शिव—अना, पृ० १४१—[सत्य=चिरस्थायी, अविनाशी, सदा विद्यमान। सुन्दर=नित्य मनमोहक रूप धारण करने वाला, जिसकी शोभा क्षीण न हो। शिव=मंगलकारी, कल्याणकारी, हितकारी।] अक्षय सौंदर्यशाली और मंगलमय।

सत्वर—आरा, पृ० २०; तुल, पृ० ४१—शीघ्र, तुरन्त, तत्काल, जल्दी।

सदया—अना, पृ० २३—दयालु, करुणा करने वाली।

सदल—तुल, पृ० ३७—[स=सहित, युक्त, साथ। दल=सेना, पार्टी, वर्ग, संघ, गिरोह, पक्ष, सम्प्रदाय, पत्ता, पत्र, पाँखुरी, तह, मोटाई, स्तर।] पंखुड़ियों सहित, पल्लवों के साथ।

सदियाँ—अना, पृ० ६७—शताब्दियाँ, सैकड़ों वर्ष, बहुत लम्बा काल।

सदी—नप, पृ० २८—सौ वर्ष का समय, सैकड़ा, शताब्दी, शती।

सदृश—अना, पृ० २२—समान, एक जैसा, समान दीखने वाला।

सदैव—अना, पृ० ५८—सदा, हमेशा, निरन्तर, सर्वदा।

सदोष—तुल, पृ० ४४—दोषपूर्ण, दोष सहित, अपराधिनी, अवगुण सहित। अभियुक्त, कलंकित।

सद्ध्वनित—तुल, पृ० २०—[सत्, सद्=वर्तमान, विद्यमान, सत्य, स्थायी, उत्तम, उच्च, श्रेष्ठ, पवित्र, उचित, सुन्दर। ध्वनित—ध्वनि वाला, बजता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ, शब्दित, मुखरित, विशेष अर्थ देने वाला, सार सम्पन्न, व्यंग्य-पूर्ण, व्यंग्यार्थ पूर्ण, लय और स्वर से भरा हुआ।] विशेष अर्थ और प्रयोजनों का संकेत करने वाला, मधुर श्रेष्ठ स्वरों से युक्त, उज्ज्वल प्रेरक चिरन्तन और जीवन-आदर्शों को मुखरित करने वाला।

सद्म—तुल, पृ०४६—घर, मकान, सदन, आलय, केन्द्र, निवास।

सद्य—अर्च, पृ ६८—शीघ्र, तुरन्त। अभिनव, ताजा।

सध—तुल, पृ० ३६—सँभल कर, जमकर दृढ़ता से, अडिग, अकम्पित, चतुराई से।

सन—नप, पृ० ८८—पतली सीधी शाखाओं वाला एक झाड़ या पौधा, जिसकी छाल कूट कर रेशे बनाए जाते हैं। यह सफेद और चिकना होता है। इन रेशों से रस्सियाँ, टाट और बान बनते हैं।

सनातन-धर्म-धारा—परि, पृ० २१०—भारतीय धर्म की वह धारा जो आदि काल से बहती चली आ रही है। धर्म के वे आदि और चिरन्तन सत्य सिद्धान्त जो आज तक मान्य हैं।

सप्तम सोपान—परि, पृ० १७५—सातवीं सीढ़ी। सातवां स्वर्ग—सत्यलोक।

सप्त-सागर-तरंग-दल-मत्त-माल—अना, पृ० १९—सातों समुद्रों की लहरों के समूह की मतवाली माला, सातों समुद्रों में उठने वाली भीषण पछारें—तरगें। क्षार, रक्षु, सुरा, घृत, दधि, क्षीर, अमृत—पुराणों के अनुसार सात सागर। हिन्दमहासागर, अंधमहासागर, प्रशांत महासागर, दक्षिणी महासागर और उत्तरी महासागर—भूगोल के अनुसार ये पांच समुद्र हैं।

सप्तावरण-मरण-लोक—परि, पृ० ८१—सात आकाशों से ढका मर्त्य लोक। भूलोक, भवलोक, स्वर्गलोक, महलोक, जनलोक, तपलोक और सत्यलोक नामक स्वर्गों से ढका हुआ या ब्रह्म, बैकुन्ठ, शिव, सुर, सूर्य, पितृ और सिद्ध—इन सात लोकों से ढका संसार।

सप्रयास—अना, पृ० २३—प्रयत्न या कोशिश करते हुए।

सफल चाह—तुल, पृ० १९—अभिलाषा सफल हो गई, मनोकामना पूरी हो गई।

सब छाया से छाया—गी, पृ ५४—सब संसार भर में धोखा ही धोखा छाया हुआ है, इसमें सत्य या वास्तविकता कुछ भी नहीं।

सब्जा—नप, पृ० १३—हरियाली, हरे भरे खेत, घास, लता, विरुध, शाकभाजी आदि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभंग—तुल, पृ० २७—[भंग=टूटना, ध्वंस, ग्रास, कुटिलता, भय, सोता, बाधा, पराजय, संकोच।] ध्वंसकारी, विनाशक, पराजित करने वाली, कुटिलतापूर्ण, ग्रास करने वाली।

सभ्यता—अना, पृ० ५९—शिष्टता, नम्रता, भद्रता, कुलीनता, आचार-व्यवहार में सुरुचिसम्पन्नता, सुन्दरता, स्वच्छता, कलाप्रियता आदि।

समन्वय—अना, पृ० ५८—सामंजस्य, मिलाना, सानुपातिक मिश्रण।

सम—तुल, पृ० ४२; अना, पृ० ३६—समान, बराबर, समान अधिकार रखने वाली, समान आदर-मान पाने वाली।

समक्ष—तुल, पृ० १३—आँखों के सम्मुख, गोचर, उपस्थित, सामने। संदर्भार्थ—युद्ध में सामना करने में, शत्रुओं का प्रतिरोध करने में।

समधीत—तुल, पृ० १७—अच्छी तरह पढ़ा हुआ, गहन और विस्तृत अध्ययन किया हुआ।

समनुरक्ति—अना, पृ० १६१—दोनों ओर से समान प्रेम, समान आकर्षण।

समनुसारि—अर्च, पृ० १००—ठीक अनुसरण करना, अनुसरण करने वाला। संदर्भार्थ— दोनों किनारों तक समान रूप से वहता हुआ।

समय के समधीत—अर्च, पृ० ७७—[समधीत=अच्छी तरह पढ़ा हुआ, अध्ययन किया हुआ] जिसमें समय के अनुसार ज्ञान और अनुभव व्यक्त हो, तात्कालिक अध्ययन से भरपूर।

समर—तुल, पृ० १४—युद्ध, लड़ाई, रण, संघर्ष।

समर्थ—तुल, पृ० ३६—शक्तिशाली, बलवान, योग्य, उपयुक्त, योग्यता, बोधगम्यता, समान अर्थ का वाचक।

समल़—परि, पृ० २३७—मल से भरा हुआ, दूषित, कीचड़ से पूर्ण, विकार-ग्रस्त।

समवेत—नप, पृ० ६८— एकत्र होना, जमा होना, एकत्रित, समूह बनाकर।

समष्टि—तुल, पृ० ४०; अना, पृ० ३; परि, पृ० २२७—समूह, समाज, सम्पूर्ण।

समाधि—अना, पृ० ३१—वह भवन, चबूतरा आदि जो चिता-स्थान या मृतक की राख आदि पर बनाया जाता है, ब्रह्म में लीन होने की अवस्था, चुप्पी साध लेना, एक स्थान पर जमना, स्वीकृति, प्रतिज्ञा, परिशोध।

समारब्ध—अना, पृ० १६७—आरम्भ किया हुआ, कार्य आरम्भ करने वाला, घटित।

समाराध्य—अना, पृ० ३८—जिसकी आराधना की जाय, पूज्य, इष्टदेव।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाश्वासि—आरा, पृ० ५—आश्वासन देने वाली, धीरज बँधाने वाली, विश्वस्त करने वाली।

समासीन—तुल, पृ० ४४—भली प्रकार बैठी हुई, दृढ़ता से जमी हुई, दृढ़ता से स्थित, सुशोभित, पालन करने वाली, निभाने वाली।

समाहित—अना, पृ० १६६—शांत, लीन, प्रवृत्त।

समीप—अना, पृ० ३—पास, निकट, सटकर।

समीर—तुल, पृ० १५, २२—वायु, पवन, शमीवृक्ष, प्राणवायु। पृ० १५, संदर्भार्थ—बहती समीर=वातावरण सुखकर हो गया, मुसलमान शासकों का व्यवहार नम्र हो गया, शीतल मंद पवन का स्पर्श जैसे लुओं से पीड़ित शरीर को सुख देता है, वैसे ही मुस्लिम-अत्याचार-पीड़ित प्रजा उनके उदार व्यवहार से सुख का अनुभव करने लगी।

समुच्च—तुल, पृ० ५२—एकत्र, सामूहिक, समस्त, संकलित, संगृहीत।

समुत्सन्न—अना, पृ० १७५—नष्ट, विनष्ट, ध्वस्त।

समुत्सुक—अना, पृ० १—उत्कण्ठित, आतुर, आकुलता से प्रतीक्षा करता हुआ।

समुदभासमान—परि, पृ० २३९—यथार्थ रूप में व्यक्त, स्पष्टता से प्रकट, चमकता या दिखाई देता हुआ।

समुदय—अना, पृ० १५५—ढेर, राशि, समूह, विकास, उत्थान, चेष्टा, युद्ध।

समुद्यम—आरा, पृ० ४८—प्रयत्न, पुरुषार्थ, परम पुरुषार्थ, जिसे पाने के लिए पुरुषार्थ किया जाय।

समूल—तुल, पृ० ३८—[स=सहित, साथ, संग, सम्बद्ध। मूल=जड़, कन्द, आदिकारण, उत्पत्तिस्थान, उद्‌गम, उपाद्य, प्रधान, आधार, नींव, बुनियाद।] जड़ के सहित, जड़ के साथ (जुड़ा हुआ, सम्बद्ध), आधार पर टिका हुआ। सम्पूर्ण रूप में।

समृद्धि—तुल, पृ० १६; परि, पृ० ८०—[सम=एक सा, बराबर, सब, अभिन्न, समान, निष्पक्ष। ऋद्धि=सम्पन्नता, वृद्धि, उत्कर्ष, सिद्धि, लक्ष्मी।] अतिशय धन-सम्पत्ति सुख-वैभव, सब प्रकार की सम्पन्नता, पूर्णता, अधिकता।

सम्पदा—परि, पृ० ९४—धन, सम्पत्ति, वैभव।

सम्पात—परि, पृ० १४३; आरा पृ०, ५८—एक साथ गिरना, भिड़न्त, पतन, गमन, संगम, मिलन-स्थान, घटित होना।

सम्पूर्ण—अना, पृ० ७१—पूरी तरह, समस्त, जो शेष न हो, समाप्त, अन्त।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्बद्ध—तुल, पृ० १४—संघटित, जुड़ा हुआ, अखण्ड, अटूट, सबलता से सम्बद्ध ।

सम्बर—अना, पृ० १५३—सेतु, पुल, नियंत्रण, रोक, जल, बाँध ।

सम्बरो-देवि—अना, पृ० १५८— एक देवी का नाम ।

सम्बल—अना, पृ० १३८—आधार, सहारा, पाथेय, यात्रा में खाने-पीने की सामग्री ।

सम्भाषण—अना, पृ० १५५—बातचीत, बोल-चाल, वार्तालाप ।

सम्भ्रम—अना, पृ० २१—चक्कर खाना, उतावली, घबराहट, उत्साह, सम्मान, अज्ञान, होहल्ला, शोभा, सौंदर्य, क्षुब्ध घूमता हुआ ।

सम्मुख—तुल, पृ० ५४— सामने, प्रत्यक्ष, साकार ।

सम्मोहन—परि, पृ० ४३; अप, पृ० १७१—मुग्ध करना, बहकाना । एक तांत्रिक मंत्रसिद्धि, जिसे प्राप्त कर किसी को बेसुध किया जा सकता है ।

सम्यक—तुल, पृ० २३, २४, ३०—साथ जाने वाला, सही, उपयुक्त, मनोनुकूल, प्रिय, पूर्णतः, उचित, स्पष्टतः, एक रूप, समग्र ।

सम्राट—अना, पृ० १८—राजेश्वर, अनेक देश जिसके शासनाधिकार में हों ।

संवर—अना, पृ० १४९—स्मरण, स्मृति, याद आना ।

सम्वलित—अर्च, पृ० ९९—अच्छी तरह बल खाया हुआ, घेरा हुआ, लिपटा हुआ, बँटा हुआ, पूर्ण रूप से गठित ।

सम्वादन—नप, पृ० ७२—सहमति, वार्तालाप, कथन, कुशलता से बजाना, निरूपण, सांमजस्य, सम्मिश्रण, एकरूपता ।

सयानी—न०प० पृ० ९—युवती, समझदार ।

सर—गी, पृ० १४—चलना, गतिशील, गमन, उड़ता हुआ ।

सर गया—परि, पृ० १२१—[सरना=काम बनना, काम सँवरना, काम पूरा होना, काम सुधारना ।] काम सँवर गया या पूरा हो गया, कल्याण या उद्धार हो गया।

सरण—आरा, पृ० ६—गमन, सरकना, जाना, क्रियाशील हो जाना ।

सरण-द्वार—गी, पृ० ५३—बाहर जाने का मार्ग ।

सरणि-सरणि-पर—गी, पृ० ८८— एक-एक पौड़ी पर होती हुई, प्रत्येक सीढ़ी पर पग धरती हुई ।

सरनी—आरा, पृ० ६६—रास्ता, मार्ग, प्रसारिणी, निरन्तरता, लगातार तालियाँ बजना या तालियाँ बजाकर ताल देते रहना ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरस—अना, पृ० १०—रसपूर्ण, सुस्वादु, भावलीन करने वाला ।

सरस ज्ञान अनवरोध करता नर रुधिर-पान—गी, पृ० ७०—बाहरी रूप में मधुर लगने वाला ज्ञान स्वच्छन्दता से मानव-हत्या का साधन बना हुआ है । बौद्धिक विकास और वैज्ञानिक आविष्कार का दुरुपयोग निर्बाध रूप से मनुष्य का वध करने के लिये ही हो रहा है, लगता है, ज्ञानी-विज्ञानी मनुष्य का रक्त पीना चाहते हैं ।

सरसाई—गीतगुंज, पृ० ४१—सरस हो गई, सुगंधित और शीतल हो गई ।

सरसिज—परि, पृ० ८०—[सरसि=तालाब, सरोवर, तलैया । ज=उत्पन्न होना, जन्म लेना ।] सरोवर में उत्पन्न होने वाला, कमल, पंकज, जलज ।

सरसो—नप, पृ० ६३—पीला गोलदाना, जिससे तेल निकाला जाता है । सरसों के पत्तों का साग भी बनाया जाता है । तेल शरीर में मलने, अचार और नमकीन खाद्य-पदार्थ तलने में काम आता है ।

सरस्वती—अना, पृ० १६६—विद्या की देवी, शारदा ।

सरि—तुल, पृ० २०—सरिताएँ, नदियाँ, जल-स्रोत, माला, समता, पर्यन्त । संदर्भार्थ—विविध जीवन या समाज के वर्ग ।

सरिउद्गम—तुल, पृ० ३४—नदी का उदगम, नदी के निकलने का स्थान, किसी स्रोत, झरने या जल धारा के निकलने की जगह, जन्म लेने या पैदा होने का स्थान ।

सरिगम—परि, पृ० १३८—संगीत के सात स्वर—षडज, ऋषभ, गांधार, मध्यम, पंचम, धैवत, निषाद जिनको सा, रे, गा, मा, पा, धा, नी कहा जाता है ।

सरि-तरि—अर्च, पृ० १७—नदी और नाव, नदी की नाव के समान, नदी में तैरती नाव के समान ।

सरिता-मज्जन—अना, पृ० २५—नदी में स्नान करना या हाथ-पाँव-मुंह आदि धोना ।

सरितोपम—तुल, पृ० २६—[सरित+उपम=सरितोपम] सरिता के समान, नदी की तरह ।

सरोज-अंक—परि, पृ० १३६—कमल की गोद, कमल जैसी सुकुमार शीतल सुगंधित गोद ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरोज-दाम—तुल, पृ० २९—[सरोज=तालाब से उत्पन्न कमल। दाम=समूह, रुपया-पैसा, रस्सी, लड़ी, माला, रेखा, फंदा।] कमलों की माला, वनमाला, कमलों का हार।

सरोवर—अना, पृ० ६१—तालाब, झील, ताल।

सर्व—तुल, पृ० २४—सब, समस्त, सम्पूर्ण, सकल, प्रत्येक।

सर्वत्र—तुल, पृ० २४—सदा, हमेशा, सब जगह।

सर्वस्व—अना, पृ० ६, ८३—समस्त, सबकुछ।

सलिल—अना, पृ० २४—पानी, जल।

सलिल-सार—अर्च, पृ० ७२—[सलिल=पानी, वर्षा का जल, अश्रु। सार=विस्तार, परमावश्यक, सर्वोत्तम, यथार्थ, शक्तिशाली, शौर्य।] जल का फैलाव या विस्तार, विश्वव्यापक ज़ल, जल का यथार्थ स्वरूप, जल का शक्तिशाली रूप।

सलील—अना, पृ० १३०—लीला करता हुआ, क्रीडा करता हुआ, लहराता ठाठें मारता हुआ।

सविते—आरा, पृ० १—सूर्य, शिव, इन्द्र, स्रष्टा, सृष्टिकर्ता।

सव्यसाची—परि, पृ० १६२—दोनों हाथों से समान कौशल और वेग से वाण चलाने वाला—अर्जुन।

सशक्तिक—अना, पृ० ९७—शक्तिशाली, सबल।

सशरीर—अना, पृ० २४—शरीर सहित।

ससर्ग—अना, पृ० १३५—त्याग के साथ, पूरे कार्यक्रम के साथ, समस्त रचना के साथ, आदि से अन्त तक, समस्त क्रियाओं और विधान के साथ।

ससुराल—नप, पृ० १३—पति या पत्नी के माता-पिता का घर, सास-ससुर का घर।

सस्मित—अना, पृ० २२—मुस्कराते हुए, प्रसन्न।

सहज—अना, पृ० ५५; तुल, पृ० ३६—स्वाभाविक, सामान्य अवस्था में, आसान, सुगम, सरल, बिना किसी पक्षपात या पूर्वाग्रह के, सीधा-सादा।

सहधर्मिणी—परि, पृ० २१०—धर्म में साथ देने वाली, समान धर्म का पालन करने वाली, पत्नी।

सहस्रार—अना, पृ० १६७; परि, पृ० १८१—सहस्र पत्तों का एक कल्पित कमल, जो मनुष्य के मस्तक में उलटा लटका हुआ माना ज़ाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहस्राब्दि—अप, पृ० १६६—हज़ार वर्ष का समय, हज़ार वष पूरा होने पर मनाया जाने वाला उत्सव, हज़ारवीं बरसी।

सहास—तुल, पृ० ४१—हास के साथ, हँसती हुई, मुस्कराती हुई, प्रसन्नवदन, मुस्कराकर।

सहेलरियां—परि, पृ० १०३—संगिनी, साथी, सखी, सहेली।

सहोच्छवास—तुल पृ० १८—[सह=साथ, साथ में, सहित।] उच्छवास (उत+श्वास) ऊपर खींची या छोडी जाने वाली सांस, आह भरना, प्रोत्साहन, ढ़ाढ़स, प्रोत्साहन, थकी साँस।] संदर्भार्थ—प्रसन्नता और उत्साह के साथ।

सहोदर—परि, पृ० १६३—एक ही पेट से जन्मे, सगे भाई।

साँकलें—परि, पृ० २०५—जंजीरें, बंधन-पाश।

सान्त—परि, पृ० ५५—सीमित, अन्त सहित, नाशवान।

सान्ध्य—अना, पृ० ५६—सन्ध्या समय का, शाम का, अंधकार पूर्ण, धूमिल।

सान्ध्यकाल—तुल, पृ० १२—सायंकाल, शाम का समय, सूर्यास्त और रात्रि के बीच का समय। संदर्भार्थ—भारतीय सांस्कृतिक पतन, पराजय, दासता, घोर विवशता और निराशा का युग।

सांवरा—परि, पृ० २३३—श्याम, सांवले रंग वाला, रामचन्द्र।

सांवलिया—नप, पृ० ४३—साँवला, काला।

साँस-बल-उर-सरिता उमगी—गी, पृ० ३३—[साँस=उच्छवास। बल=शक्ति तीव्रता। उर=उर की भावना, प्रेम। सरिता=नदी, धारा, प्रवाह।] तीव्र साँसों के द्वारा हृदय से प्रेम की धारा उमड़ पड़ी। उच्छवासों से प्रकट होता है जैसे हृदय से प्रेम की नदी बही चली आ रही है।

सांस्कृतिक—तुल, पृ० ११—[संस्कृति=परिशोध, परिष्कार, शुद्धिकरण। मानव के आन्तरिक और बाह्य जीवन का संस्कार-युक्त होना। ज्ञान भाव, कर्म—सभी का परिष्कृत स्वरूप। संस्कृति में कला, साहित्य, दर्शन, धर्म, समाज-व्यवहार सभी का समावेश है।] संस्कृति का, संस्कृति-विषयक।

साकार—तुल, पृ० २४—[स=सहित। आकार-रूप, शकल, बनावट, लम्बाई-चौड़ाई, फैलाव, मनका भाव बताने की देह-चेष्टा, इशारा, एक रूपता।] दिखाई देने वाला, देहधारी, सदेह, सशरीर, प्रकट, प्रत्यक्ष।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांख—(ना) अना, पृ० ३२—गवाही, गवाह, गवाही देना, विश्वास, दबदबा, अंग, भाग, डाली।

साख-साख—अर्च, पृ० ६४—अंग, अवयव, प्रत्येक भाग, हर प्रकार से।

सागराभिमुखऽपार—तुल, पृ० १४—[सागर=समुद्र, जल का विशाल भण्डार। अभिमुख=उन्मुख, सामने, ओर, तरफ। अपार=जिसका पार या अन्त न पाया जाय, अनन्त, असीम] असीम या विशाल समुद्र की ओर। अपार (क्षिप्रधार का विशेषण माना जाने पर) का अर्थ हो जायगा—अनेक, अनगिनत, असंख्य।

सागराम्बरा—परि, पृ० १६५ समुद्र और आकाश वाली, सागर का परिधान पहने।

साज—अना, पृ० २६; परि, पृ० ७६—सामान, सजावट, सजाने की सामग्री, प्रबंध, योजना, विधान।

सात प्रभंजन—परि, पृ० १६५—सात प्रकार की पवन, सात प्रकार की प्रचण्ड वायु—अनुवह, दिवह, सम्वह, आवाह, प्रवाह, परावह, परिवाह।

सातों-ऋषि—परि, पृ० १२६—सात नक्षत्र, जो सप्तऋषि कहलाते हैं।

साथी अकूलका—अना, पृ० ६६—किनारे न लगने वाला, मँझधार में बहने वाला।

साधना-भार—परि, पृ० ८६—[साधना=बनाना, संभालना, किसी उद्देश्य पूर्ति के लिये कष्ट सहन करना। भार=बोझ, उत्तरदायित्व।] किसी मंगलकारी प्रयोजन की सफलता के लिये कष्ट सहने से ऐसे दबे रहना जैसे भारी बोझ उठाने से प्राणी दब जाता और थक जाता है।

साधनामध्य—अना, पृ० १५६—साधना में, साधना करते हुए।

साधनासीन—गी, पृ० ४२—बैठी साधना कर रही हूँ, सिद्धि पाने के लिये तपस्या लीन हूँ।

साधारण—तुल पृ० २८—सामन्य, साधारण हैसियत या आयवाला, मामूली साधनों से आजीविका कमाने वाला, मध्यम आमदनी वाला।

साधिका—अर्च, पृ० १—साधना करने वाली, साधने-सँवारने वाली, सफलता प्राप्त करने या कराने वाली।

सानु—अना, पृ० १५३—पहाड़ का शिखर, शृंग, चोटी, सिरा, पर्वत के ऊपर समतल भूमि।

साम—आरा, पृ० २०—मधुर वचन, कोमलता, वेद के गेय मंत्र, शांत-सन्तुष्ट।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामग्री—तुल, पृ० ४६—सामान, उपकरण, पदार्थ । संदर्भार्थ—आटा, दाल, घी, मिर्च-नमक, दूध-मिठाई, फल आदि खाने-पीने की वस्तुएं ।

सामगान—अना, पृ० ३०—सामवेद के मंत्रों को गाना ।

सामाजिकता दी—नप, पृ० ६७—असभ्य बिखरे हुए जनसमुदाय को समान शील, रहन-सहन, आचार-व्यवहार आदि सिखाकर समाज का रूप दिया ।

साम्राज्य—अना, पृ० १६—सार्वभौम सत्ता, पूर्ण प्रभुत्व, अनेक देशों पर शासन, शासनीय, बहुत बड़ा क्षेत्र जिसमें अनेक देश सम्मिलित हों ।

साम्राज्यवादी—परि, पृ० ११२—अन्य देशों पर राज्य करने की मनोवृत्ति वाला, अन्य राष्ट्रों को पराधीन बनाकर अपना साम्राज्य स्थापित करने वाला ।

साम्य—अना, पृ० १५६—समानता, बराबरी, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक ऊँचनीच भावना और व्यवहार का अभाव ।

साम्यवादी—अना, पृ० ८७—मार्क्स और लेनिन के समाज-शास्त्र और अर्थ-व्यवस्था को मानने वाले, कम्युनिस्ट ।

साम्यव्यवहार—परि, पृ० १५३—सबको समान मानना, सबसे समान व्यवहार करना, ऊँच-नीच की भावना न रखना ।

सायक—नप, पृ० ७०—तीर, बाण, शर ।

सार—तुल, पृ० ३६—तत्त्व, मुख्य उद्देश्य, प्रयोजन या अर्थ, परमावश्यक, यथार्थ, परमोत्तम, पूर्ण प्रमाणित, सत, शक्ति ।

सार्थक—अना, पृ० ५८—सफल, प्रयोजन पूरा होना, अर्थ सहित, लाभदायक ।

साला—नप, पृ० १६—पत्नी का भाई । साला गाली के रूप में भी प्रयुक्त होता है ।

सावन—तुल, पृ० ४४—एक भारतीय महीना, जिसमें वर्षा होती है । सावन में होने वाली वर्षा, सावन में उमड़ने-बरसने वाली घटाएँ । नप, पृ० १२, ६२, सन्दर्भार्थ—सावन में गाया जाने वाला एक विशेष जनगीत या ग्रामगीत ।

सावाँ—नप, पृ० ६१—एक निम्न कोटि का चावल, जो बिना बोए उग आता है । इसलिए इसे अन्न नहीं माना जाता और व्रत-उपवासों में खाया जाता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्यिकता—नप, पृ० ७२—मानवहृदय की भावनाओं, अनुभूतियों की अभिव्यक्ति, मानवी उद्वेगों और प्रवृत्तियों का सहृदयता से चित्रण।

सिंचन—अना, पृ० ७४—सींचना, पानी में तर करना, पानी छिड़कना, हरा-भरा या सरस रखना।

सिंधुरा—अर्च, पृ० १००—हथिनी, हस्तिनी।

सिंधु-राग—परि, पृ० १३७; अर्च, पृ० ३०—समुद्र का गाना, पठारों या तरंगों के टकराने से उत्पन्न भीषण शब्द-गुंजार।

सिंह—परि, पृ० ९१७—शेर, शार्दूल, शेर के समान निर्भय, वीर योद्धा।

सिंहनाद—अना, पृ० ५८—शेर की दहाड़, शेर की दहाड़ के समान निर्भय और भयभीत करने वाली आवाज़, घोषणा, ध्वनि, ललकार।

सिक्त—परि, पृ० ३५—भीगा हुआ, पानी में तर, गीला, सींचा हुआ।

सिताभरणे—आरा, पृ० ६—[सित=श्वेत, चमकीला, साफ़। आभरण= आभूषण, अलंकार] स्वच्छ, चमकीले, श्वेत, आभूषण।

सिद्धि—परि, पृ० ८०—सफलता, प्राप्ति, उपलब्धि, उद्देश्य की पूर्ति, योग साधन द्वारा प्राप्त विशेष शक्तियाँ—अणिमा, लघिमा, गरिमा, महिमा, प्रकाम्य, प्राप्ति, ईशत्व, वशित्व।

सीझकर—आरा, पृ० २६—पक कर, उबलकर, गर्म होकर।

सीत—अर्च, पृ० ८५—शीतल, आलसी, निद्रालु, जाड़ा, तुषार। हाथियों को होने वाला शीतजन्य एक रोग।

सीता—परि, पृ० ८२—मिथिला नरेश जनक की पुत्री और भगवान राम की पत्नी। विशेष 'नाम-कोश' में देखिए।

सीमा-संसृति—गी, पृ० ६५—सीमा में बंधा समस्त संसार, ससीम विश्व।

सीला—नप, पृ० ९—गीला, भीगा हुआ। संदर्भार्थ—नाल या डांडे से झड़ी हुई बालियाँ जो फ़सल कटने पर खेत में पड़ी रह जाती हैं। निर्धन व्यक्ति इन्हें चुन कर ले जाते और इन में से दाने निकाल लेते हैं।

सुन्दरतम—तुल, पृ० २९—सबसे अधिक सुन्दर, सर्वाधिक सुन्दर।

सुआ—आरा, पृ० ७२—शुक, तोता, बड़ी सुई।

सुए—अर्च, पृ० ९४—तोते, शुक, बड़ी सुइयां।

सुकराकर—आरा, पृ० १—[सुकर=सरल, सहजसाध्य, दान, परोपकार। आकर=घर, आलय, भण्डार, खान, श्रेष्ठ, दक्ष, अधिक, उत्पत्ति-स्थान।] संदर्भार्थ—कल्याणकारी, मंगलों का भण्डार, शुभ, सौभाग्यशाली।

सुकुमार—अना, पृ० ६०—कोमल, नर्म, कृश, उदार हृदय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुकृत-कूल—गी, पृ० १६—पुण्यों के किनारे, शुभकर्मों के तट ।

सुकृत-पुञ्ज-अशना—गी, पृ० ३४—पुण्यों का समूह जिसका भोजन है । शुभकर्म ही जिसे जीवित रखते हैं । शुभकर्म जिसके जीवन प्राण हैं ।

सुकृत-स्नेह—गी, पृ० ७१ पुण्य प्रेम, पवित्र प्रेम, शुभ कर्म करने की चाह, शुभकर्मों में प्रवृत्ति ।

सुखकर—तुल, पृ० ३२—सुखदायी, आनन्द देने वाले, श्रुति-मधुर, रसीला ।

सुख-मुक्ति—अना, पृ० ७८—सुख या आनन्द देने वाली मुक्ति, मोक्ष की स्थिति में प्राप्त होने वाला निर्विकार आनन्द ।

सुखलुण्ठन—गी, पृ० ४१—सुख-लूटना, मनमाना सुख पाना ।

सुखशायी—गी, पृ० ६९—सुख वाली, सुखद, सुख से पूर्ण ।

सुख-सारिका—गी, पृ० ६७—सुख-संचार करने वाली, सुख का विस्तार करने वाली, सब प्रकार के सुखों को देने वाली ।

सुख-स्वरित-जाल—तुल, पृ० १५—सुख के स्वरों से बुना हुआ जाल । चारों ओर गूंजते हुए सुख-विलास के स्वर या कोलाहल । चारों ओर सुख-ऐश्वर्य-विलास के गीत गाये जा रहे थे ।

सुखहिमकर—अना, पृ० १०५—सुख का चन्द्रमा, सुखदायक चन्द्रमा ।

सुगन्ध—अना, पृ० १—अच्छी गन्ध, सुवास, खुशबू ।

सुघर—तुल, पृ० २६, ३६,—सुन्दरता से गढ़ा हुआ, कुशलता से निर्मित, अच्छी तरह, सुन्दरता से, उपयुक्तता-अभेद्यता से ।

सुचारुतम—आरा, पृ० ४२—सुन्दरतम, अनन्त सौन्दर्य-सुषमा से पूर्ण ।

सुचिक्कण—गी, पृ० ७४—तेल आदि लगाये जाने के कारण चिकने, स्निग्ध और सुकुमार ।

सुथरे—अर्च, पृ० १७—साफ़, समतल, धूल-कंकर-काँटे से रहित ।

सुधाकर—अना, पृ० २६—अमृत की किरणों वाला, चन्द्रमा, राकेश ।

सुधावृष्टि—तुल, पृ० ३१—अमृत की वर्षा, सुधा बरसना । अतिशय सुख, शांति, सन्तोष, समृद्धि मिलना ।

सुधी—अना, पृ० १६६—ध्यानमग्न, ज्ञानी, प्रतिभाशाली, बुद्धिमान, विवेकी ।

सुनिर्धार—अना, पृ० ८८—पूर्णरूप से निश्चित, बिना किसी सन्देह के ।

सुपरिसरा—गी, पृ० ५१—विस्तृत क्षेत्र में फैली हुई, दूर-दूर तक फैलने वाली ।

सुपीन—आरा, पृ० ३१—बहुत मोटा, बड़े आकार वाला ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुप्त—तुल, पृ० २०—सोये हुए, दबे हुए, बेसुध, छिपे हुए, अप्रकट, गुप्त, अस्पष्ट।

सुप्ति-विरम—तुल, पृ० २१—[सुप्ति=नींद, सोना, अचेत होना, अज्ञान में लीन रहना। वि=नहीं, हीन, रहित, अभाव। रम=रमण करना, चलना-फिरना, विहार करना। विरम=ठहरना, पड़ाव डालना, आश्रय लेना।] नींद या अज्ञान का विराम, नींद में अचेत हो जाना, नींद में आश्रय लेना, अज्ञान की नींद में निष्क्रिय होकर पड़े रहना।

सुब्हो-शाम—नप, पृ० २६—सायं और प्रातः, हर समय, रातदिन।

सुनन्द—अना, पृ० ७२—धीरे-धीरे, धीमी-धीमी, शिथिल चरण।

सुमनमाल, सुमनहार—तुल, पृ० ४८; अना, पृ० २—फूलों की मालाएँ, पुष्पों के गुच्छे, पुष्पों की लड़ियाँ।

सुमेरू—परि, पृ० १९८—एक पर्वत जो सभी पर्वतों से श्रेष्ठ माना जाता है।

सुर—तुल, पृ० ४९—देवता, स्वर, संगीत, गान, वादन।

सुरतरु—अर्च, पृ० ४१—देवताओं का वृक्ष, देव लोक में वर्तमान वृक्ष, कल्पवृक्ष। कल्पतरु, सभी कामनाओं को पूर्ण करने और प्रलय में भी वर्तमान रहने वाला माना जाता है।

सुरति—तुल, पृ० ३७—प्रेम, कामक्रीड़ा, विहार, आसक्ति, संलग्नता, आकर्षण, लगाव।

सुरधुनी—अना, पृ ५३; अर्च पृ०, ११२—गंगा, भागीरथी।

सुर-पल्लव-दल—गी, पृ० ९—कल्पवृक्ष के पत्तों का समूह, सुख शान्ति समृद्धि देने वाले अक्षयवट या कल्पवृक्ष के पत्ते।

सुरबहार—नप, पृ० २९—वीणा या सितार के ढंग का तारों वाला एक बाजा।

सुरभि—तुल, पृ० १३; अना, पृ० ७४—सुगंधि, सुगंधित, मनोरम, बसन्त ऋतु, प्रसिद्ध। तुल, संदभार्थ—प्रताप, वल-विक्रम, युद्ध-पराक्रम आदि के कारण ख्याति और गौरव-सम्मान आदि।

सुरभिसंसार—अना, पृ० ४१—सुगंधि भरा हुआ विस्तृत भूभाग, सुगंधि का विशाल आगार, दूर-दूर तक उड़ती हुई सघन पुष्प-गंध।

सुरललना—परि, पृ० २१५; अना, पृ० ३५—देवनारी, देवबाला, देवांगना, देवताओं की स्त्रियाँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुरलोक-विधान-विमान—आरा, पृ० ५१—[सुरलोक=देवलोक, स्वर्ग। विधान=प्रबंध, योजना, प्रयत्न। विमान=यान, सवारी, पहुँचने का साधन।] स्वर्ग या देवलोक में पहुँचने की योजना का साधन या सवारी। स्वर्ग प्राप्त कराने वाले साधन—ज्ञान, योग, भक्ति आदि।

सुर-संगीत—अना, पृ० २८—देवताओं का गाना, स्वरों के साथ गाना।

सुरसरिता—परि, पृ० ८०—देवनदी, स्वर्ग की नदी, गंगा।

सुरा—अना, पृ० ३५—मदिरा, शराब, आसव।

सुरापान—परि, पृ० ८०—[सुरा=मदिरा, शराब। पान=पीना, सेवन करना।] मदिरापान, शराब पीना, मदिरा पीकर बेसुध होना।

सुरा-स्वर—परि, पृ० १७३—शराब के नशे में मस्त कर देने वाले स्वर।

सुरित—आरा, पृ० ३४—स्वर से पूर्ण, गुंजित, शब्दित।

सुलसो—आरा, पृ० २६—सुशोभित होओ, चमको, झिलमिलाओ, उपस्थित होओ, विराजो।

सुवातास—अना, पृ० ९०—शीतल मंद सुगंध पवन, सुखद शीतल समीर।

सुवादित—तुल, पृ० ५४—मधुर-मधुर बजने वाले, संगीत की कला-कुशलतासे बजने वाले।

सुवास—अमा, पृ० १२—सुगंध, नासिका को सुखद लगने वाली गंध, मधुर वास।

सुवासना—गी, पृ १०२—सुन्दर वस्त्र धारण किये हुए रमणी। कोमल रंगीन परिधान पहनने वाली।

सुवास यौवन—गी, पृ० १५—[सुवास=अच्छे वस्त्र, मधुर भीनी गंध।] सुन्दर वस्त्रों का यौवन, सुन्दर परिधान ही जिसका यौवन है, मधुर मादक भीनी सुगंध जिसकी जवानी है, जिसके यौवन से मधुर मादक सुगंधि फूट रही है।

सुवासाह्वान—गी, पृ० ६६—[सुवास=मधुर गंध। आह्वान=पुकारना, बुलाना] अपनी मधुर मादक गंध से बुलाने वाली या निमंत्रित-आकर्षित करने वाली।

सुषम—अना, पृ० ८९—सुन्दर, सुडौल, बोधगम्य।

सुषमता—अर्च, पृ० ८३—सुन्दरता, सुडौलपन, सुघरता, अतिसमता।

सुषमा—परि, पृ० ४३—सुन्दरता, शोभा।

सुष्ठु—परि, पृ० १८४—अतिशय, सुन्दर ढंग से, ठीक-ठीक।

सुसिंचित—गी, पृ० २४—भली प्रकार सिंचा हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुहसने—अर्च, पृ० ६०—मधुर मुसकाना ।

सुहाग के तार—अना, पृ० १०७—सौभाग्य के स्वर, प्रिय-मिलन के राग, आनन्द आमोद के कलरव ।

सुहाग-गाथा—अना, पृ० ३६—विवाह के जीवन-काल की कहानी, वैवाहिक जीवन की कथा । प्रेम, आनन्द, उल्लास, यौवनभोग, विस्मृति, सौंदर्य, मुस्कान आदि से भरा जीवन ।

सुहागभरी—परि, पृ० १७१—सोहाग की सारी शृंगार-सज्जा किए हुए । सोहागिनी के समान प्रेम, उल्लास, आनन्द, मुस्कान, सुषमा से पूर्ण ।

सुहृद—तुल, पृ० ४४—अच्छे या उदार हृदय वाला, सखा, मित्र, पति—तुलसीदास ।

सूक्ष्म—तुल, पृ० २५—बहुत बारीक, बहुत छोटा, तह तक पहुँचने वाला, कठिनाई से समझ में आने योग्य ।

सूक्ष्मातिसूक्ष्म—परि, पृ० २२८—लघु से भी लघु, छोटे से भी छोटा, अतिशय सूक्ष्म ।

सूत—तुल, पृ० १४, ५३—रथ हाँकने वाला, दास, पुराण की कथा कहने वाला, वन्दी, भाट । संदर्भार्थ—खुशामदी, चाटुकार, पराजित परतंत्र दास ।

सूत्रधर—तुल, पृ० ३५—[सूत्र=सूत, डोरी, रस्सी, धागा, योजना, अर्थगर्भ वाक्य जिनमें दर्शन शास्त्रों की रचना हुई, कारण, निमित्त, संकेत-साधन । धर=पकड़ना, धारण करना, संभालना ।] संचालक, निदेशक, अनुशासक ।

सूर्य—तुल, पृ० ११—एक प्रधान ज्वालापिण्ड, आग का गोला, पृथ्वी और अन्य ग्रह-नक्षत्र जिसकी प्रदक्षिणा किया करते हैं । धरती को प्रकाश और ताप मिलने का साधन और ऋतु परिवर्तन का कारण । प्रभाकर, सूरज, दिवाकर ।

सृति (सुख की)—गी, पृ० ७६—गति, गतिशीलता, गमन, प्रसारण, विस्तार ।

सृष्टि—तुल, पृ० ३१—रचना, निर्माण, प्रकृति, समस्त ब्रह्माण्ड, दृश्य-अदृश्य जगत । सृष्टि नव लेती=सृष्टि नवीन सुन्दरता धारण करती है, प्रकृति नवीन छटा से सुशोभित हो जाती है ।

सृष्टि-रशना—तुल, पृ० ५४—संसार की वाणी, विश्व भर का ज्ञान, सम्पूर्ण संसार को कला, ज्ञान, विद्या, भाषण आदि की शक्ति देने वाली ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सृष्टि-स्थिति-प्रलय—परि, पृ० २२८—संसार की रचना, उसका विद्यमान रहना और नाश होना। रचना, रक्षण और विध्वंस।

सेधों—नप, पृ० ३२—नमक। सम्भवतः यह सिंधु-प्रदेश या समुद्र से मिलने के कारण सैन्धव कहलाता था।

सैन्धव-तुरंग—परि, पृ १८०—[सैन्धव=सिंधु प्रदेश का। तुरंग=घोड़ा।] सिंधुदेश का घोड़ा।

सैकत—अना, पृ० १२५; परि, पृ० ११६—रेत, रेतीला, बालुका, रेत का।

सोने की जंजीर—परि, पृ १४६—सोने की माला, सोने के समान सुन्दर और अनमोल बंधन।

सोम—तुल पृ० ३४; गी, पृ० ७७—चन्द्रमा, चन्द्रवार, अमृत, कपूर, वायु, जल, आकाश, प्रकाश की किरण, कुबेर, शिव, यम, सुग्रीव। एक लता, जिसका रस आर्य पान किया करते थे।

सोहना—अना, पृ० २२—सुन्दर लगना, शोभित होना, सजना, फबना।

सौख्य—अना, पृ० १८८—सुख, आनन्द कल्याण।

सौदामिनी—अर्च, पृ० ११२—बिजली, विद्युत, चपला।

सौमित्र—अना, पृ० १५२—सुमित्रा का पुत्र, लक्ष्मण।

सौरजगत—तुल, पृ० ३५—[सौर=सूर्यसम्बन्धी, सूर्य से उत्पन्न, सूर्योपासक, सूर्य की गति का अनुसरण करने वाला, देवता-संबन्धी, मदिरा-सम्बन्धी। जगत्=संसार, विश्व, लोक।] सूर्यलोक, सूर्य के साथ घूमने वाले चन्द्रमा, पृथ्वी, मंगल, शनि आदि ग्रह-नक्षत्रों का मण्डल, सौर-मण्डल।

सौरब्रह्माण्ड—परि, पृ० २२७-सूर्य के आस-पास चारों ओर घूमने वाले ग्रह-नक्षत्र, चन्द्र, पृथ्वी, शनि, मंगल आदि लोक, सूर्य से सम्बद्ध जगत्।

सौरभ—तुल, पृ० ३०—सुगंधि, पराग, परिमल, पुष्पधूलि, मधु।

सौरभ-ज्ञान—गी, पृ० ७६—सौरभ रूपी ज्ञान, सौरभ के रूप में वोध हो रहा है।

सौरभ-वसना—अना, पृ० २३—सुगंधि या पराग का वस्त्र पहने हुए, पराग ही जिस का परिधान हो।

सौरभोत्कलित—तुल, पृ० १७—[सौरभ=सुगंधि, पराग, परिमल, पुष्पधूलि। उत्कलित=उन्नतिशील, विकसित, बंधनमुक्त] अपार सुगंध से भरा हुआ, उन्मुक्त होकर चारों ओर उड़ते हुए पराग से सुरभित।

स्कन्ध—अना, पृ० ६१—कंधा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्खलन—अना, पृ० ६६—भूल, मार्ग से विचलित होना, लड़खड़ाना, गिरावट, टपकना, बहना।

स्खलित—परि. पृ० ५४—खिसक जाना, ढीला होकर उतर जाना या सरक जाना।

स्टीमर—अना, पृ० १८०—भाप से चलने वाला छोटा जलयान।

स्तब्ध—अना, पृ० ३; तुल, पृ० ५०—निस्तब्ध, निःशब्द, मौन, सन्नाटे-भरा, सुनसान, हक्का-बक्का।

स्तब्धान्धकार—अना, पृ० १२२—सन्नाटे से भरा अँधेरा, अंधकार से पूर्ण निस्तब्धता, निर्जनता।

स्तम्भ—अना, पृ० १६६—खम्भा, मीनार।

स्तर—तुल, पृ० ३२, ३७—तट, पर्त, आवरण, पर्दा।

स्तव—अना, पृ० १२—प्रशंसा, स्तुति, स्तोत्र।

स्तवक—अना, पृ० २३—गुच्छा, समूह, फूलों का गुलदस्ता।

स्तव के अवनम्र स्तवक—गी, पृ० ८६—याचना और स्तुति के लिये चरणों पर अवनत या अर्पित फूलों के गुच्छे। स्तुति और प्रार्थना के लिये देवचरणों पर अर्पित पुष्प-समूह के समान जो मनुष्य स्वाभिमानहीन होकर याचना करते हैं।

स्तुतिगीत—अना, पृ० १—प्रशंसा के गीत।

स्थविर—अना, पृ० १५३—दृढ़, अचल, वृद्ध, भिक्षु, आदरणीय। स्थविर-दल=बूढ़े सन्यासियों का समूह।

स्थित—तुल, पृ० ५३—प्रतिष्ठित, ठहरा हुआ, नियुक्त, नियम-आदेश पालन में रत, कर्तव्य-परायण, पुण्यात्मा, अवलम्बित, आसीन। संदर्भार्थ—शांत, भावावेश को रोक कर, उत्तेजित न होकर।

स्थिति—तुल. पृ० ३२—दशा, अवस्था। सामान्य अवस्था, पहले जैसी दशा।

स्थिर—तुल, पृ० २८, ५१—अचल, अडिग, डटे रहना, पथभ्रष्ट न होना। चिरन्तन, दृढ़।

स्नानांत—तुल, पृ० ३३—स्नान करने के पश्चात्। नहाने-धोने के बाद।

स्नेह—अना, पृ० ६०—प्रेम, प्यार, अनुरक्ति, अनुराग।

स्नेह-उपवन—तुल, पृ० ४४—प्रेम की वाटिका, प्रेम का बगीचा। अपने पीहर वालों के प्रति रत्नावली की उत्कट और उत्कण्ठित प्रेम की भावनाएँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्नेहक्षीरण—तुल, पृ० ४४—प्रेम रहित, बिना स्नेह के, ममताहीन, जिसका प्रेम नष्ट हो गया हो।

स्नेह-पाश-कसना—गी, पृ० ३४—प्रेम के जाल में कस लेने वाली, प्रेम के बंधनों में बाँध लेने वाली।

स्पन्द—अ्रना, पृ० २२—धड़कन, कम्पन, थिरकन।

स्पर्धागत—तुल, पृ० २४—ईर्ष्यालु, परस्पर द्वेषी, एक दूसरे को पराजित करने या नीचा दिखाने में तत्पर।

स्पर्द्धाधीर—परि, पृ० १६६—सामना या मुकाबला करने में डटे हुए, दृढ़ता पूर्वक प्रतिस्पर्द्धा करने वाला।

स्पर्श—तुल, पृ० २१—छूना, अ्रनुप्राणित करना, प्रेरित करना, प्रोत्साहित करना, नवीन शक्ति-साहस देना, आशीर्वाद देना, शुभकामना करना।

स्पर्श-चकित—गी, पृ० १५—परस या छूने से आनन्द-आश्चर्य में डूबी। छूने मात्र से लाज आश्चर्य उल्लास से चपल।

स्पष्ट—अ्रना, पृ० ६८—जो अच्छी तरह देखा जा सके, सरल-सुबोध, व्यक्त, प्रत्यक्ष, विकसित, वास्तविक।

स्पृहाहत—परि, पृ० २३७—आकांक्षा तृष्णा कामना वासना से घायल या मारा हुआ।

स्फटिक शिला—तुल, पृ० ३४—[स्फटिक=बिल्लौर, सूर्यकांत मणि, कपूर, फटकरी। शिला=पत्थर।] बिल्लौर पत्थर, बिल्लौर की शिला।

स्फारित—तुल, पृ० ५१—फैले हुए, फटे हुए, खुले हुए, विकसित, विशाल (नेत्र) अपलक (नयन), टकटकी लगाए हुए (आंखें)।

स्फीतवक्ष—अ्रना, पृ० १५५—[स्फीत=बढ़ा हुआ, फूला हुआ, समृद्ध, प्रसन्न, बहुत अधिक।] उभरा हुआ सीना, फूली या उठी हुई छाती, विशाल वक्षस्थल।

स्फुरित—अ्रना, पृ० १; तुल, पृ० ५१—निकलता हुआ, फूटता हुआ, प्रवाहित। कम्पित, चमकता हुआ, मानसिक उथल-पुथल सहित।

स्मर—तुल, पृ० १२१—कामदेव, मदन, मन्मथ, मनोज। रतिभाव। स्त्री-पुरुष में शारीरिक उपभोग की वासना। इसी भावना की नारी रूप में रति कहा जाता है।

स्मर-शर—आरा, पृ० २—कामदेव के बाण, कामोत्तेजना की अनुभूति, काम वासना की सिहरन, व्रीड़ा और आकुलता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्मर-शर-हर—गी, पृ० ६—कामदेव के तीरों को हरने वाला, मदन-वाणों को भी पराजित करने वाला। संदर्भार्थ—काम-पीड़ा वढ़ाने में कामदेव के वाणों से अधिक प्रेरक, प्रभावशाली।

स्मर-सर—परि, पृ० ५०—[स्मर=स्मरण, प्रेम, कामदेव। सर=सरोवर, तालाब।] स्मरण, प्रेम या कामदेव का सरोवर।

स्मरहर को वरेगी—गी, पृ० १६—[स्मरहर=कामदेव को नष्ट करने वाला, शिव।] कामदेव को नष्ट करने वाले शिव को पति के रूप में वरेगी, देखने वालों का काम विकार नष्ट होगा, वे यथार्थ आनन्द पायेंगे।

स्मितनयन—अना, पृ० ७६—मुस्कान से भरी स्निग्ध उज्ज्वल दृष्टि।

स्मिति-आशा-चल-जीवन-धारण—गी, पृ० ५५—मुस्कान को आशा का अवलम्बन बनाकर चंचल जीवन धारण किये रहते हैं। मुस्कान ही नश्वर जीवन को धारण करने के लिए आशा का अवलम्बन वनती है।

स्मृति की पृथ्वी—तुल, पृ० २०—अपनी पावन गरिमाशाली परम्पराओं के कारण स्मरण किये जाने योग्य, चिरस्मरणीय, सदा याद की जाने वाली चित्रकूट। व्यंगार्थ—गौरवशाली परम्पराओं, धर्म-साधना, ज्ञान-प्रचार के कारण वन्दनीय भारतभूमि।

स्मृति-रेखाएँ—अना, पृ० ७१—क्षीण-सी स्मृतियां, स्मरण दिलाने वाले चिन्ह, अवशेष आदि।

स्यंदन—अना, पृ० ६४—रथ, घोड़े या बैलों द्वारा चालित यान।

स्यार—परि, पृ० १६७—एक डरपोक कायर जंगली पशु—गीदड़। गीदड़ के समान कायर, डरपोक मनुष्य।

स्याह—अर्च, पृ० ६६—काला, कलुषित, कलंकित।

स्रक—तुल, पृ० ३७—पुष्पमाला, फूलों का हार।

स्रस्त—अना, पृ० ५६; गी, पृ० ६२—ढीला पड़ा हुआ, सरका हुआ, पतित, लटकता हुआ, शिथिल, अलग किया हुआ, विच्छिन्न।

स्वप्नसंस्कारागर—तुल, पृ० १८—[स्वप्न+संस्कार+आगर=स्वप्न संस्कारागर। आगर=खान, कोश, घर, छप्पर, अमावस्या, अधिक, कुशल, चतुर।] सपनों के समान अस्पष्ट धुंधले संस्कारों का कोश। संदर्भार्थ—तरंगों के उठने-गिरने घात-प्रतिघात से जैसे समुद्र आतुर हो जाता है, इसी प्रकार तुलसीदास का मानस स्वप्नवत अस्पष्ट संस्कारों के जागने से चंचल हो उठा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वप्नोत्पल—तुल, पृ० ५१—स्वप्नों के कमल, पहले सुखविलास की स्मृतियां, नई-नई अभिलाओं के कमल।

स्वर-गौरव—गी, पृ० ८३—संगीत और भाव का गौरव बढ़ाने वाला, गौरवशाली लय-संगीत-भरी काव्य-रचना।

स्वरसप्तक—परि, पृ० ४२—संगीत के सात स्वर—षडज, ऋषभ, गांधार, मध्यम, पंचम, धैवत, निषाद। संक्षिप्त में—सा, रे, गा, मा, पा, धा, नी।

स्वरवर्षा—अना, पृ० १९७—स्वरों की झड़ियां, अनगिनत स्वरों का गुंजन।

स्वर-सरित-हिलोर—अना, पृ० ४५—स्वरों की नदी की लहरें, स्वरों की धारा की तरंगें।

स्वरारोह—परि, पृ० १६४—स्वर का ऊपर उठना या चढ़ना, स्वर की उठान।

स्वरित—तुल, पृ० ५३—गुंजित, शब्दित, मुखरित, बजता हुआ, बोलता हुआ।

स्वरूप-मद-मंजुल—परि, पृ० ५२—सौन्दर्य के नशे से शोभित, रूप का नशा पान करने के कारण सुन्दर।

स्वरोर्मियों-मुखर—गी, पृ० ८३—संगीत की लहरों से गुंजित, गीत की स्वरताल झंकार से ध्वनित।

स्वर्गंगा—तुल, पृ० ४०—आकाश-गंगा, स्वर्ग की गंगा।

स्वर्गदामिनी—अर्च, पृ० २—स्वर्ग की बिजली, स्वर्ग की बिजली के समान।

स्वर्गीयाभा—तुल, पृ० ५३—[स्वर्गीय=स्वर्गसम्बंधी, स्वर्ग का, ईश्वरीय, अलौकिक, जो भौतिक न हो, पावन, अनश्वर। आभा=ज्योति, प्रकाश।] स्वर्ग की पवित्र और अनश्वर ज्योति या सुषमा, ईश्वरीय सौन्दर्य आलोक। संदर्भार्थ—स्वर्ग की पवित्र सुषमा और ज्योति से जगमगाती हुई रत्नावली।

स्वर्ण-किरण-कल्लोल—परि, पृ० ११४—उषा-कालीन सुनहरी किरणों की लहरें, प्रातःकाल की सुनहरी आभा की तरंगें।

स्वर्णच्छटा—परि, पृ० १८३—सुनहरी शोभा, सुनहरी जगमगाहट।

स्वर्ण-प्रतिमा—अना, पृ० ५८—सोने की मूर्ति। संदर्भार्थ—भारतीय अतिशय धन-वैभव, सोमनाथ-मंदिर में प्रतिष्ठित अनेक हीरों-मणियों से जड़ी भगवान शिव की सोने की मूर्ति।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर्णालंकृत—परि, पृ० १५१—सुनहरी आभा से सुशोभित, सोने के आभूषणों से सजा हुआ।

स्वं सरित—अर्च, पृ० ८—स्वर्ग की नदी, गंगा। अलौकिक शीतलता मधुरता शांति की धारा।

स्वस्ति—नप, पृ० ८२—कल्याण, मंगल, भलाई।

स्वयं—तुल, पृ० ५४—अपने आप, निजी रूप में, खुद, आप, अकेले।

स्राव—अना, पृ० १५२—बहना, प्रवाहित होना, धारा।

स्रोत—अना, पृ० ७०—धारा, सोता, झरना, प्रपात, प्रवाह।

स्वच्छन्द—परि, पृ० २९—बंधनहीन, स्वतंत्र, निर्बाध, स्वाधीन।

स्वच्छभास—तुल, पृ० ३५—शुद्ध निर्मल आभास, अमल धवल आभा से चमकाने वाला, निर्मल प्रकाश से कान्तिमान या दैदीप्यमान करने वाला।

स्वतन्त्र-रव—गी, पृ० ३—[स्वतंत्र=मुक्त, स्वाधीन, बन्धनहीन। रव=स्वर, नाद, शब्द, ध्वनि, आवाज़] स्वाधीन स्वर से भरा हुआ।

स्वप्न-जागृति-सुघर—गी, पृ० ११—स्वप्न में भी शुभ्र जागरण बनकर, सूर्य-विरह में सोते और स्वप्न देखते हुए तुम कमल को शुभ्र प्रकाश में रखोगी, वह जागृति का सुख पाता रहेगा।

स्वाती-जल—गी, पृ० १३—स्वाति नक्षत्र के उदयकाल में बरसने वाला जल। कहते हैं, सीप में पड़ने पर यह मोति, केले पर पड़ने पर कपूर और बाँस पर पड़ने पर बंसलोचन बन जाता है। इसको पीकर चातक अपनी वर्ष भर की प्यास बुझाता है।

स्वाद-तोष-दल—गी, पृ० १६—[स्वाद=रस, आनन्द। तोष=सन्तोष, तृप्ति। दल=समूह, पत्ते, फल का भीतरी खाद्यांश, गुद्दा, मोटाई, घनता।] अलौकिक आत्मिक आनन्द और सन्तोष का मधुर फल प्रदान करेगी—पार्वती। डाली—रसीले सुस्वादु गदरे फल प्रदान करेगी, जिन्हें खाने वाला आनन्दित और तृप्त होगा।

स्वीकार—अना, पृ० ८३—अंगीकार करना, ग्रहण करना, मान लेना, अपना बना लेना।

स्वेच्छाचारी—परि, पृ० ८१—अपनी इच्छानुसार चलने वाले, पूर्ण स्वाधीन, बंधन-मुक्त, निरंकुश।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ह

हंत—तुल, पृ० ४६—खेद, दुख, शोक, पछतावा, विवशता, असहाय-अवस्था आदि के प्रकट करने के लिए शब्द ।

हक़—परि, पृ० ६९—अधिकार, पारिश्रमिक, पुरस्कार, प्राप्य ।

हट रहा मेला—कविश्री, पृ० ३८—भीड़-भाड़े कम होना, खेल-तमाशे, उत्सर्व, नाच-गाने, हाट-बाजार, नरनारियों का जमाव कम हो जाना । जीवन के राग-रंग, आमोद-प्रमोद, अभिलाषाएँ-आशाएँ समाप्त हो जाना । बुढ़ापा, शिथिलता, उदासीनता, विरक्ति, अवसाद, निराशा आदि आ जाना ।

हड़—नप, पृ० ५१—हरड़, हर्र, परवल या बेर की तरह का कड़ा कसैला फल जो औषधियों और मुरब्बे में काम आता है ।

हत—तुल, पृ० २४—घायल, मृत, ताड़ित, निराश, भग्नहृदय, ध्वस्त, विलुप्त, निकम्मा, सदोष, बाधित, विफल प्रयास, फोड़ा हुआ ।

हतचेतन—अना, पृ० १६४—चेतनाहीन, बेसुध, ज्ञान-रहित ।

हताश्वास—तुल, पृ० १९, २५—[हत=चोट खाया, घायल, नष्ट । आश्वास=ढाढ़स, दिलासा, रक्षा या अभय का वचन, खुल कर साँस लेना] जिसे आश्वासन या ढाढ़स देने वाला कोई न हो, नितान्त हताश, प्रोत्साहन, सहायता, सहारा न पा सकने वाला ।

हनती—तुल, पृ० २०—बध करती हुई, आघात करती हुई, नष्ट करती हुई, चोट मारती हुई ।

हमजोली—अर्च, पृ० ३४; आरा, पृ० २५—साथी, संगी, समान आयु वाला, बचपन में साथ खेला हुआ ।

हमरकाब—परि, पृ० १९५—साथ-साथ घोड़े चलाने या दौड़ाने वाला, दुख-सुख का साथी, साथ युद्ध करने वाला । युद्ध और संघर्ष का साथी ।

हरगिज (नहीं)—परि, पृ० १९५—कभी नहीं, किसी प्रकार भी नहीं, किसी मूल्य पर नहीं ।

हरती—तुल, पृ० ५०; गीतगुंज, पृ० ४३—मोहित करती हुई, मुग्ध करती हुई, प्रसन्न करती हुई, हृदय हरती हुई ।

हरसाना—अर्च, पृ० १०२—हर्ष मनाना, प्रसन्न होना ।

हरसिंगार--परि, पृ० १४०—एक फूल या उसका पोधा, शेफाली ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरहर—तुल, पृ० १२—जल के गिरने या लहरों के टकराने का शब्द। हरहर शब्द, जिस से हरलो-हरलो (सब-कुछ छीन लो—छीन लो) का संकेत मिलता था।

हर हर हरती समीर—गीतगुंज, पृ० ४३—[हर हर=प्रत्येक। हरना=हरण करना, आकृष्ट करना।] पवन हरेक प्राणी को मुग्ध कर देती है। हर हर स्वर करती हुई हवा मन को चुरा रही है—मोहित कर रही है।

हरहों के डगले—आरा, पृ० ८९—[हरहा=भागा फिरने वाला पशु, हरिया पशु। डगले=मार्ग पर, रस्ते, डग भरते हुए।] हरिया पशुओं के समान तेज़ी से, हरिया पशुओं के रास्ते पर।

हरा (हृदय)—गी, पृ० ४६—हरा-भरा, लहलहाता हुआ, प्रफुल्लित, प्रसन्न।

हरित—तुल, पृ० ४८—हरी, हरियाली से भरी, हरी-भरी।

हरित (दिन)—अना, पृ० १८३—हराभरा, लहराता, प्रसन्नता-भरा।

हरीतिमा—अना, पृ० १४६—हरियाली, लता वीरुध घास आदि।

हरे—अना, पृ० १—खोये गये, लीन हो गये, सुधबुध भूल गये।

हरे भरे (स्तन)—अना, पृ० १८७—स्वस्थ, पीन, गदरे।

हर्फ़—नप, पृ० २६०—अक्षर, वर्ण, शब्द, दोष, ऐब।

हर्षण-अलि-हर-स्पर्श-शर—गी, पृ० १४—हर्ष का भौंरा स्पर्श का चुभा तीर निकाल रहा है, हर्ष का भौंरा रूप के स्पर्श का चुभा हुआ तीर बाहर खींच रहा है, जिस से वह और भी हर्षित हो रहा है।

हर्षण-क्षण—अप, पृ० ६५—प्रसन्नता के क्षण, हर्ष का समय। आनन्द-उत्सव का अवसर।

हर्ष-हरण-हृदय—परि, पृ० ३९—[हर्ष=प्रसन्नता, आनन्द, रोमांच। हरण=छीनना, चुराना, ले लेना।] सुख आनन्द हर लेने वाला हृदय, प्रसन्नता छीन लेने या नष्ट कर देने वाला व्यक्ति।

हल-चलवाई—आरा, पृ० २३—हल चलाना, हल जोतना, जुताई।

हलाहल—अना, पृ० ११०; परि, पृ० २३५—गरल, विष, जहर, वह पदार्थ जिसके खाने या पीने से प्राणी मर जाता है।

हवाबाज—नप, पृ० ५४—हवा में उड़ने वाला, पक्षी, वायुयान-चालक।

हवा में गिरह लगाना—नप, पृ० २०—अनहोनी बात करना, असम्भव काम कर दिखाना।

हवि—अना, पृ० १९२—यज्ञ की अग्नि में डाली जाने वाली सामग्री, घी, कपूर, अगरु आदि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हवेली—नप, पृ० ४७—बड़ा मकान, भवन, महल, प्रासाद ।

हस्ति-दंत-वलय—अना, पृ० १४१—हाथी दाँत का कड़ा या कंकन ।

हाँक—नप, पृ० १०१—बुलावा, आवाज़ लगाना, घोषणा, ऐलान ।

हाईकोर्ट—नप, पृ० ११—उच्च न्यायालय, वह कचहरी जहाँ ज़िला-न्यायालयों की अपील (याचिका) का निर्णय किया जाता है ।

हाट—तुल, पृ० ४५—बाज़ार, दुकानें, मण्डी ।

हाड़—नप, पृ० ५४—हड्डी, हड्डियां ।

हारण—आरा, पृ० २०—हरण करने या चुराने वाला, मोहक, शिव-विष्णु-सम्बन्धी ।

हासिल—नप, पृ० ८२—प्राप्त होना, मिलना ।

हासोच्छल—अना, पृ० १२२—हंसी में उछलती हुई, हंसी से खिलखिलाती थिरकती हुई ।

हास्यमय—परि, पृ० १५७—हंसी से पूर्ण, हँसते हुए, प्रसन्न मन, हर्षित हृदय ।

हाहाकार—अना, पृ० ६७—शोक, चीत्कार, दुख भरा कोलाहल ।

हिंडोले—गीतगुंज, पृ० ५३—झूलने, झूले ।

हिंस्र—परि, पृ० ११२—हिंसा करने वाला, हिंसक, वध करने वाला, माँस खाने वाला ।

हिम-अरि—तुल पृ० २०—[हिम=बर्फ़, पाला, शीत । अरि=शत्रु, बैरी, नाशक] सूर्य, मार्तण्ड, प्रभाकर । संदर्भार्थ—शांत और शीतल जीवन के शत्रु या विनाशक तत्कालीन उत्पीड़क मुसलमान शासक ।

हिमकण—परि, पृ० ३५—बर्फ के कण, ओस की बूंदे ।

हिलगी—नप, पृ० ११—उलझी हुई, फँसी हुई, रूकी हुई, गाँव का नाम ।

हिलोर—अना, पृ० ६४—लहर, तरंग, उमंग ।

हिल्लोल—परि, पृ० ५४—हिलोर, लहर, तरंग, उत्साह, उमंग, क्रीड़ा ।

ही—गीतगुंज, पृ० ५६—हृदय, मन, मानस ।

हीरक—अना, पृ० २—हीरा, हीरे के समान जगमगाता हुआ ।

हीर-कसी-समीर-माला जप—गी, पृ० १६—हीरों में कसी हुई पवन की माला, पवन के धागे में तुषार-बिन्दुओं के हीरे पिरो कर बनाई गई माला ।

हीरक-हिम-हार—गी, पृ० ३६—हीरों के समान झिलमिलाता ओसबिन्दुओं का हार, हीरों के समान उज्जवल बर्फ की माला ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हीरकाभरण—अर्च, पृ० ११०—हीरों के आभूषण, हीरों के समान झिल मिलाती ओस की बूंदें।

हीरे—तुल, पृ० ३१—मणि, जवाहर। संदर्भार्थ—बहुमूल्य हीरों के समान जगमगाते और प्यारे।

हुक्म की तामीली—नप, पृ० ५७—आज्ञा का पालन, हुक्म के अनुसार काम करना, आज्ञा पूरी करना, आदेश का अनुसरण करना।

हुताशन—अना, पृ० ७२४—ज्वाला, आग।

हुस्न और जमाल—नप, पृ० १३—सुन्दरता और शोभा, सौंदर्य और माधुर्य।

हृत्तल—अना, पृ० ४६—हृदय की तलहटी, हृदय की गहराई, हृदय का भीतरी भाग।

हृदयवेग—अना, पृ० ६६—हृदय के भावों की तीव्रता, हृदय के भावों का उमड़ना।

हेमकान्ति—परि, पृ० २३४—सोने की चमक, सोने सा चमकना।

हेमन्त—परि, पृ० १२६—एक ऋतु, जिसमें वृक्ष-लताओं के पत्ते झड़ जाते हैं। पत्ते झड़ने का मौसम, पतझड़।

हेमन्त पद्म—तुल, पृ० ४६—[हेमन्त=पतझड़, बसन्त से पूर्व और शिशिर के बाद आने वाली ऋतु। पद्म=कमल।] पतझड़ का कमल, पाले से मारा हुआ कमल। शीत के कारण म्लान हुआ कमल।

हेय—आरा, पृ० ५२—घृणित, तुच्छ।

हेरना—परि, पृ० ७१—देखना, राह देखना।

हेला—अना, पृ० १४५—धक्का, ठेलना, केलि-क्रीड़ा, प्रसन्नता, रति की प्रबल अभिलाषा (स्त्रियों में)। एक हाव जिसमें शृंगार की सहज अभिव्यक्ति होती है—कहत ग्यारहों हाव सों, हेला नाम प्रकास। दे जु ढिठाई नाह संग, प्रगटै विविध विलास। (जगद्विनोद पृ० ४५६)।

हेषा—अप, पृ० १७०—हिनहिनाना।

होली—नप, पृ० ६८—फागुन-चैत्र में गाये जाने वाला जनगीत या राग विशेष।

होश मुरझाये—गीतगुंज, पृ० ६१—सुध-बुध न रही, बेसुधी आने लगी।

होशियार—परि, पृ० ७८—बुद्धिमान, चतुर, विवेकी।

हौसला पस्त होना—परि, पृ० ११८—हिम्मत हार जाना, साहस टूट जाना, हताश होना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नामकोश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अ

अंगद—अना, पृ० १५३

ताराके गर्भ से उत्पन्न सुग्रीवके बड़े भाई बाली का पुत्र। राम के वाण से प्राण देते हुए बाली ने इसे राम को सौंप दिया था। सुग्रीव की कोई सन्तान न होने से यही युवराज बनाया गया। रीक्ष-बानरों की सेना सहित समुद्र पार कर लंका में पहुँचने पर राम ने अंगद को विशेष दूत बनाकर रावण को समझाने भेजा। रावण की सभा में दूतकार्य करते हुए अंगद ने अनुपम वीर चरित्र और प्रतिभा का परिचय दिया। रावण की कूटनीति इसे जाल में न फँसा सकी, प्रलोभन इसे विचलित न कर सका। अपना पग रोप कर इसने प्रतिज्ञा की कि अगर रावण का कोई भी वीर मेरा पैर हटा देगा तो राम अपनी सेनाओं सहित वापस लौट जायँगे और सीता को हार देंगे। इसका पग कोई हिला भी न सका। जब रावण इसका पग हटाने आया तो इसने उसको लज्जित करते हुए व्यंग्य किया कि मूर्ख मेरे चरण पड़ने से क्या लाभ, राम के चरण पर गिर, जिससे तेरा उद्धार हो जाय। रावण खिसिया कर लौट गया। अंगद का पग दृढ़ता सबलता अचलता का एक उदाहरण बन गया है। इसकी भीषण हुंकार सुनकर रावण इतना भयभीत हुआ कि उसके अनेक मुकुट गिर पड़े, जो इसने उठाकर राम के शिविर में फेंक दिये। अंगद वीरता, निर्भयता, राजनीति, बल-विक्रम, स्वामिभक्ति आदि का प्रतीक है। यह राम के प्रमुख यूथपतियों में से है।

अखण्डानन्द—अना, पृ० १७८

इनका नाम गंगाधर घटक था। चौदह वर्ष की आयु में, जब यह दूसरे स्टैण्डर्ड में पढ़ते थे, १८८४ ईस्वी में श्री रामकृष्ण से इनकी भेंट हो गई। यह बड़े कट्टर धार्मिक विचारों के थे। १५-१६ वर्ष की अवस्था में एक साधू के साथ तीर्थ-यात्रा के लिये निकल गये। लौट कर फिर परमहंस के दर्शन किये। धीरे-धीरे इन पर परमहंस जी का प्रभाव बढ़ता गया। नरेन्द्र नाथ (विवेकानन्द) से इनका विशेष प्रेम हो गया। थोड़े समय बाद यह सब-कुछ त्याग ब्रह्मसाधना में लग गये। एक वार नदिया (नवदीप) की यात्रा पर निकले तो वहाँ महामारी फैली हुई थी। इन्होंने रोगपीड़ितों की सेवा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की। इसी समय से रामकृष्ण मिशन तथा विवेकानन्द ने समाज-सेवा-कार्य आरम्भ किया। परमहंस के स्वर्गवास (१८८६ ई०) के बाद यह संन्यासी हुए। यह अपनी निष्ठा, साधना, त्याग, मानव-सेवा आदि गुणों के कारण रामकृष्ण मिशन के तीसरे अध्यक्ष बनाये गये।

अद्भुतानन्द—अना, पृ० १७८

इनका बचपन का नाम लाटू था। यह छपरा (बिहार) जिले के एक साधारण परिवार में जन्मे। यह कलकत्ते में श्रीरामचन्द्र दत्त के परिवार में नौकर हो कर आये। दत्त महाशय के द्वारा भेजे गये मिष्ठान्न आदि लेकर यह परमहंस के पास आया करते थे। बचपन से ही धार्मिक प्रवृत्ति के कीर्तन-प्रिय व्यक्ति थे। इतने कट्टर हिन्दू कि कई बार स्वामी रामकृष्ण द्वारा दिया गया भात खाने से भी इन्होंने इन्कार कर दिया। जब रामकृष्ण जी ने समझाया कि यह पवित्र गंगाजल में पकाया गया मा काली का प्रसाद है, तब कहीं वह प्रसाद लिया। यह पढ़े-लिखे नहीं थे। परमहंस ने इनको पढ़ाने का प्रयास भी किया, पर सफलता न मिली। यह अक्सर परमहंस के उपदेश सुना करते, कीर्तन में सम्मिलित होते, उनके वैयक्तिक परिचय में आते। एक दिन सब कुछ छोड़ परमहंस की सेवा में आ गये। स्वामी रामकृष्ण परमहंस के स्वर्गवास के बाद अन्य गुरु भाईयों के साथ यह भी संन्यासी हो गये।

अनसूया-अनुसूया—परि, पृ० २१६

यह अत्रि ऋषि की पत्नी थी। भारतीय पौराणिक विदूषियों और पतिव्रताओं में इनका नाम गौरव से लिया जाता है। चित्रकूट त्याग कर राम लक्ष्मण सीता अत्रिऋषि के आश्रम में आये। अनसूया देवी ने सीता के माध्यम से नारी-समाज को पतिव्रत धर्म का उपदेश दिया। सीता को अनेक आभूषणों से सुशोभित किया। रामचरित-मानस के अरण्य-काण्ड के दोहा ५ की ३-१० अर्धालियों में यह प्रसंग देखा जा सकता है।

अनसूयावन—तुल, पृ० ३४

चित्रकूट की एक छोटी सी वनखण्डी। इसका नाम महर्षि अत्रि की पत्नी देवी अनसूया के नाम पर रखा गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अफ़गानिस्तान---नप, पृ० ६१

पाकिस्तान के पश्चिम में चीन, रूस, ईरान की सीमाओं से मिला, २५०००० वर्ग मील में फैला देश। इसकी जनसंख्या १ करोड़, बीस लाख है, जिसमें २० लाख निवासी भेड़ बकरियाँ पालकर जीविका चलाते हैं। भेड़ यहाँ का मुख्य पशुधन है—इससे दूध, मांस, ऊन और खाल मिलती हैं। अंगूर, सेव, अंजीर, अखरोट, खूबानी, आड़ू आदि फलों की अच्छी उपज होती है। काबुल, कंधार और हिरात प्रसिद्ध नगर हैं। गांधार (कंधार) भारतीय इतिहास में प्रसिद्ध नगर तथा राज्य के रूप में वर्णित है। दुर्योधन की माता गांधारी यहीं की राजकुमारी थी। गांधार-कला भी भारतीय कला-विकास में मुख्य स्थान रखती है। प्राचीन काल में गांधार आर्य सभ्यता के केन्द्रों में से था। प्राचीन काल से ही भारत और अफगानिस्तान के सांस्कृतिक व्यापारिक और राजनीतक सम्बन्ध रहे हैं। आज भी वह भारत का मित्र देश है।

अफ़जलखाँ—परि, पृ० १६८

बीजापुर का एक सेनानायक। बीजापुर दरबार ने शिवाजी की गति-विधियों से तंग आकर अफ़जलखाँ को उसे दण्ड देने के लिये भेजा। उसे आदेश दिया गया कि जीवित या मृतक किसी रूप में शिवाजी को पकड़ लाया जाय। बड़े अभिमान के साथ यह एक सैनिक दल लेकर पहुँचा तो मालूम हुआ कि उसे बन्दी बनाना आसान नहीं। इसने कृष्णाजी भास्कर नामक ब्राह्मण को मैत्री का सन्देश देकर भेजा। शिवाजी ने कृष्णा जी को धनादि देकर फुसला लिया और अफ़जलखाँ के कपट की बात जान ली। नियत स्थान पर दोनों की भेंट हुई। अफ़जलखाँ एक लम्बा चौड़ा व्यक्ति था। शिवाजी उसके कंधों तक आता था। परस्पर आलिंगन करते हुए पतले दुबले छोटे शिवाजी को उसने अपनी बलिष्ठ बाँहों में कस लिया। शिवाजी का दम घुटने लगा। अफ़जलखाँ ने एक बाँह में उसकी गर्दन दबाए, दुसरे हाथ से उसे मारने के लिये खंजर निकाला। इधर शिवाजी ने तीव्रता से उसकी छाती बघनखे से फाड़ डाली। वह घायल होकर धरती पर गिर पड़ा। शिवाजी भाग निकला। बीजापुरी सैनिक, जो कुछ दूर पर तैनात थे, यह सब काण्ड देख रहे थे, दौड़े और अपने सरदार को पालकी में डाल कर ले जाने लगे तो मरहठा सैनिकों ने अफ़जल का सिर काट लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमेरिका-धर्म-महासभा—अना, पृ० १७८

११ सितम्बर, १८९३ ईस्वी को अमरीका के शिकागो नगर में "पार्लियामेण्ट ऑफ़ वर्ल्ड रिलीजन्स" के नाम से एक विश्वधर्म सम्मेलन किया गया। इसमें ईसाई, मुस्लिम, बौद्ध, मूसाई, जैन, ब्रह्मसमाज, थियोसोफ़िकल सोसायटी आदि संसार के सभी प्रमुख धर्म और मतों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया और अपने-अपने धर्म की विशेषताएँ बताईं। स्वामी विवेकानन्द भी उन दिनों अमरीका में थे। इन्होंने इस सभा में हिन्दूधर्म का प्रतिनिधित्व किया। इसी "पार्लियामेण्ट ऑफ़ वर्ल्ड रिलीजन्स" को लेखक ने अमरीका-धर्मसभा कहा है।

अराल—नप, पृ० ९३

सोवियत संघ के पश्चिमी भाग में आर्कटिक सागर तट से अरलसागर तक फैला हुआ १५०० मील लम्बा पर्वत। यह पर्वत योरुप के पूर्वी देशों तथा रूस के बीच सीमा बनाता है; लेकिन आवागमन में बाधक कभी नहीं रहा। उत्तर दक्षिण में यह ५००० फ़ीट तक ऊँचा है और मध्य में लगभग २६०० फ़ीट तक ऊँचाई है। रूस की अधिकतर खनिज सम्पत्ति यूराल की खानों से ही प्राप्त होती है। लोहा, ताँबा, चाँदी, सोना, प्लैटिनम, सीसा, नमक, तेल, रासायनिक पदार्थ आदि यूराल-क्षेत्र से प्राप्त होते हैं।

आ

आर० एस० पण्डित—नप, पृ ७७

श्री रणजीतसिंह पण्डित संस्कृत और अंग्रेज़ी के बहुत अच्छे विद्वान थे। इन्होंने कादम्बरी का अंग्रेज़ी में अनुवाद किया। यह पण्डित मोती लाल नेहरू के दामाद, जवाहर लाल नेहरू के बहनोई और विजयलक्ष्मी पण्डित के पति थे। श्रीमती विजयलक्ष्मी के गर्भ से इनकी दो लड़कियाँ—नयनतारा और चंद्रलेखा—उत्पन्न हुईं। नेहरू परिवार के अन्य लोगों के समान इन्होंने भी भारतीय स्वाधीनता-संग्राम में भाग लिया और अनेक बार जेल-यात्रा की।

आल्प्स—नप, पृ० ९३

इटली के उत्तर में एक सिरे से दूसरे सिरे तक फैले हुए पर्वत। यह फ्रांस, स्वटिज़रलैण्ड और आस्ट्रिया के दक्षिणी भागों तक गये हैं, ग्रौस ग्लौकनर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(आस्ट्रिया) १२४६१ फ़ीट, मैंटरहौर्न १४७०५ फ़ीट (स्वटिज़रलैण्ड) एल्प्स की दो चोटियाँ प्रसिद्ध हैं। ये चोटियाँ वर्ष के अधिकांश में हिमाच्छादित रहती हैं। यह पर्वत दक्षिण में इटली और पश्चिम उत्तर पूर्व में फ्रांस जर्मनी आस्ट्रिया के लिये ऐसे ही महत्त्वपूर्ण हैं, जैसे भारत के लिये हिमालय। राइन, रोन, एल्ब डैन्यूब, पो आदि नदियों का उद्‌गम यहीं है। प्राचीन काल में इटली और शेष योरुप के मध्य रुकावट रहा है; पर अब यह बाधक नहीं। इसकी अनेक घाटियों और सुरंगों के मार्ग से आवागमन, व्यापार, परिवहन होता है।

आल्हा—नप, पृ० १२

मोहबा के राजा परमाल (परमार्दि देव) के सामन्त आल्हा ऊदल मलखान आदि के वीरतापूर्ण युद्धों, आक्रमणों और विजयों के विषय में लिखा गया काव्य। आल्हा सबसे बड़ा भाई होने के कारण इस काव्य का नाम आल्हा पड़ गया। उनके समकालीन और दरबारी भाट कवि जगनिक द्वारा लिखा यह काव्य माना जाता है। राजा परमार्दिदेव कन्नौज के राजा जयचन्द के मित्र थे। दिल्लीसम्राट पृथ्वीराज से जयचन्द की शत्रुता होने के कारण मोहबा वालों की लड़ाई पृथ्वीराज से लगी रहती थी। पृथ्वीराज से भी आल्हा ऊदल की अनेक लड़ाइयाँ आल्हा में वर्णित हैं। आल्हा-ऊदल को ही हर युद्ध में विजयी दिखाया गया है। इनमें इतिहास की यथार्थता नहीं, वर्णन अतिशयोक्तिपूर्ण हैं। वीर रस का इतना परिपाक इसमें है कि आज तक यह उत्तर-प्रदेश और आस-पास के क्षेत्रों में अत्यन्त लोक-प्रिय है। इसे सुनने के लिये सैकड़ों लोग जमा होते हैं। मूल-रचना अप्राप्य होने के कारण अनेक आल्हाखण्डों की रचना लोककवियों द्वारा हुई। जिस छन्द में यह मूल वीर गीत लिखा गया था, उसे भी आल्हा-छन्द कहा जाता है।

आषाढ़

एक भारतीय महीना। इसमें वर्षा आरम्भ होती है। इसका समय अंग्रेज़ी महीने जून के उत्तरार्ध से जुलाई के पूर्वार्ध तक माना जा सकता है। यह महीना ज्येष्ठ के बाद और सावन से पहले आता है।

इ

इन्द्र—नप, पृ० ३१

ऋग्वेद में वर्णित प्रमुख देवता, जिसकी स्तुतियों से ऋग्वेद का चतुर्थांश भरा पड़ा है। यह आकाश, पृथ्वी, जल, पर्वत—सबका शासक बताया गया है। वैदिक कालीन आत्मवाद का प्रतिनिधि। वैदिक काल में वरुण की प्रतिष्ठा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घटा कर इन्द्र ने अपनी सत्ता स्थापित की; इसी प्रकार इन्द्र को सत्ताच्युत करके कृष्ण की प्रतिष्ठा हुई। पौराणिक साहित्य में इन्द्र अत्यन्त निम्न कोटि का देवता रह गया। वाल्मीकीय रामायण के अनुसार यह रावण-पुत्र मेघनाद द्वारा पराजित हुआ और बन्दी बनाया गया। इसकी मुक्ति के लिये देवताओं ने रावण को अमर होने का वर दिया। महाभारत में गौतम-पत्नी अहल्या के साथ इसके बलात्कार करने की कथा मिलती है, जिसके कारण इसके शरीर पर एक हजार योनियों के चिह्न बन गये थे, जो बाद में नेत्रों में परिवर्तित हो गये। इसीलिए यह सहस्राक्ष कहलाया। वृत्रासुर को मारने के लिये इसने दधीचि की हड्डियाँ लेकर वज्र बनाया था। समुद्रमंथन से प्राप्त रत्नों में से इन्द्र को ऐरावत हाथी, उच्चैःश्रवा घोड़ा और पारिजात वृक्ष दिये गये थे। जयंत इनका पुत्र, वैजयंत इनका भवन और अमरावती इनकी पुरी का नाम है। देवराज, सुरपति, सुरेन्द्र, पुरन्दर, वज्री, वृत्रघ्नी, वृत्रहा, पर्वतारि भी इसके नाम हैं।

ई

ईसा –अप, पृ० १७२

जैसस क्राइस्ट भारतवर्ष में ईसा कहलाते हैं। इन्ही के नाम पर ईसाई या क्रिस्चियन धर्म का नाम पड़ा। जैसस, गैलिली राज्य के नैज़रथ नामक नगर के एक बढ़ई परिवार में पैदा हुए थे। इस समय यहाँ हैरोड राज्य करता था। जैसस का जन्म बुद्ध के लगभग ५६० वर्ष बाद माना जा सकता है, वैसे इतिहास में निश्चित काल नहीं मिलता। यह भी कहा जाता है कि इनका जन्म मरियम या मेरी नामक एक कुमारी कन्या से हुआ था। यह युवावस्था में ही घर-बार छोड़ कर रोगियों, पीड़ितों, दीनों की सेवा के लिये भ्रमण करने लगे, इनकी साधना, सेवा, विनम्रता, दैन्य आदि गुणों के कारण जनता की भीड़ की भीड़ इनके उपदेश सुनने के लिये उमड़ पड़ती। इनका उपदेश था कि दीन हीन की सेवा करो। अपने शत्रु को प्यार करो। जो तुम्हें अभिशाप दे, उसे तुम आशीर्वाद दो, जो तुम से घृणा करे, उसका भी उपकार करो। उनके लिये भी भगवान से प्रार्थना करो, जो तुम से ईर्षा या द्रोह करें। अपनी सम्पत्ति बेचकर धन दीन हीनों दुखियों की सेवा में लगादो। इनका धर्म करुणा दैन्य और वैराग्य प्रधान है। ईसा के उपदेशों और तेज़ी से बढ़ते हुए प्रभाव से यहूदियों में खलबली मच गई और इनको मिटा देने के प्रयत्न होने लगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पैलेस्टाइन में इसी प्रकार तीन-चार वर्ष तक घूमते और नवीन जीवनदर्शन का प्रचार करते हुए जैरूशलम में आये। दोपहर को भोजन करने के बाद यह पकड़ कर नगर के मुख्य यहूदी पुजारी कैआफेस (Caiaphes) के पास लाये गये, उसने इन्हें जैरूशलम के गवर्नर पिलेट (Pilate) के पास भेज दिया। इन पर यहूदी धर्म के विरुद्ध निन्दात्मक प्रचार और रोमन शासन के विरुद्ध राज द्रोह का अभियोग लगाया गया और इन्हें कैलेवरी पहाड़ी पर दो चोरों के बीच सूली दे दी गई। इनकी गिरफ्तारी के समय पीटर, जेम्स, जॉन आदि जिन मित्रों ने कायरता दिखाई थी, इनके वध से उनमें नया जोश भर गया। यहूदियों और रोमन शासकों के उत्पीड़न की परवाह न करके उन्होंने जैसस के सिद्धान्तों का प्रचार किया। महात्मा ईसा मसीह कितने वर्ष जीवित रहे, इसका उल्लेख नहीं मिलता। अनेक इतिहासों में उनका युवावस्था में गृहत्याग और तीन-चार वर्ष तक धर्म प्रचार का उल्लेख मिलता है। इससे केवल यह अनुमान लगाया जा सकता है कि वह लगभग ३५-४० वर्ष तक ही जीवित रहे होंगे।

उ

उज्जयिनी—अप, पृ० १६६

उज्जैन का प्राचीन नाम। कहा जाता है, यह सम्राट विक्रमादित्य की राजधानी थी। पर सम्राट विक्रमादित्य (जिसका समय ईसा से लगभग ६० वर्ष पूर्व माना जाता है, जिसने ईस्वी सन् से ५७ वर्ष पहले अपने नाम पर संवत् भी चलाया) ऐतिहासिक सत्य नहीं। बुद्ध के समय से ही उज्जयिनी आर्यावर्त की प्रसिद्ध नगरी रही है। यह अवन्ती राज्य (पश्चिमी मालवा) की राजधानी थी। मौर्यकाल में भी यह प्रदेश महत्त्वपूर्ण स्थान रखता था। राजवंश के व्यक्ति ही इसके शासक नियुक्त होते थे। सम्राट बनने से पूर्व अशोक उज्जयिनी का गवर्नर रहा था। शकों के आक्रमणों को रोकने के लिये गुप्तसम्राट स्कन्द्रगुप्त ने उज्जयिनी को दूसरी राजधानी बनाया था। ईसा पूर्व तीन सौ वर्ष से लेकर ७०० ईस्वी तक उज्जयिनी अनेक राजनीतिक उथल-पुथल, युद्ध, साम्राज्य-स्थापना, काव्य, कला, साहित्य, धर्म आदि की चर्चा का केन्द्र रहा है। उज्जैन आज कल भी एक तीर्थ और उद्योग-व्यापारिक नगरी के रूप में भारत भर में प्रसिद्ध है। यहाँ कपड़े की कई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ी-बड़ी मिलें हैं। यहाँ विक्रमादित्य के नाम पर विक्रम-विश्वविद्यालय भी स्थापित है। यहाँ का महाकाल का मंदिर अत्यन्त प्राचीन काल में निर्मित हुआ माना जाता है।

उदयशंकर—नप, पृ० २०

बचपन से इनकी रुचि चित्रकला की ओर थी; लेकिन चित्रकला में यह विकास न कर सके और शीघ्र ही उसे त्याग कर नृत्य-कला की ओर झुके। अल्पकाल में ही नृत्य-कला में यह अत्यन्त कुशल हो गये। जहाँ इनका नृत्य-प्रदर्शन हुआ, इनको आशातीत सफलता और ख्याति मिली। पर ख्याति के शिखर पर यह योरुप और अमरीका के भ्रमण के समय पहुँचे। वहाँ इनकी धूम मच गई और धन की भी बाढ़ आ गई। इनकी कला के विषय में कहा जाता है कि उसमें शुद्ध भारतीय शास्त्रीय निर्देशों का अनुसरण इतना नहीं रहता, जितना ध्यान भावों के सूक्ष्म प्रदर्शन की ओर रहता है। अमला नन्दी नामक एक बंगाली लड़की से इनका विवाह हुआ। वह भी एक विख्यात नर्तकी है। इससे इनकी भेंट पेरिस में हुई थी। अलमोड़ा (उत्तर प्रदेश) में इन्होंने कल्चर सेण्टर नामक एक नृत्य-शिक्षण-केन्द्र भी खोला जो कुछ दिन चल कर बंद हो गया। "कल्पना" नाम की इन्होंने एक फ़िल्म भी बनाई, जो भारतीय फ़िल्म के इतिहास में अपने ढंग की पहली फ़िल्म थी। उसमें कथा, चरित्र, भाव आदि सब नृत्यों के द्वारा अभिव्यक्त किये गये थे। कहते हैं यह चित्र अलमोड़ा कल्चर सेण्टर के आन्तरिक प्रेमकाण्ड, पारस्परिक मतभेद और स्पर्धा का ही प्रकाशन था।

उमर खय्याम

हकीम उमर खय्याम का जन्म १८ मई, सन् १०४८ ई० में नीशापुर में हुआ। इनका देहान्त सन् ११३२ ईस्वी में माना जाता है। कई विद्याओं में पारंगत होने के कारण यह 'हकीम' के लक़ब से प्रसिद्ध हुए। फ़ारसी साहित्य के अन्य प्रख्यात कवियों की भाँति उनके जीवन-वृत्त के विषय में भी बहुत कम जानकारी प्राप्त है।

उनकी रुबाइयों का अनुवाद विश्व की अनेक भाषाओं में हो चुका है। ईरान में उमर खय्याम की प्रसिद्धि एक गणितज्ञ, ज्योतिषी, चिकित्सक एवं विचारक के रूप में अधिक है, कवि के रूप में कम। परन्तु अन्य देशों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनकी ख्याति उनकी लोकप्रिय रुबाइयों के कारण एक उच्च कोटि के कवि के रूप में है। उनकी रुबाइयों का अनुवाद अंग्रेज़ी में फ़िट्ज़जेरेल्ड (Fitzgerald) ने क़िया है, जो इंग्लैंड और अमेरिका में जन-प्रिय हुआ है। उमर खय्याम ने अरबी भाषा में एक पुस्तिका 'जब्र व मुक़ाबला' लिखी और एक छोटा-सा ग्रन्थ भी रचा, जिसमें अक़्लीदस (रेखागणित) की परिभाषाएँ आदि दी गई हैं। कहते हैं कि उन्होंने ज्योतिष-विद्या विषयक एक पुस्तक भी लिखी, जो 'ज़ीजे मलिकशाही' के नाम से प्रसिद्ध है।

ऐ

ऐवरेस्ट—नप, पृ० ९२

यह हिमालय और संसार का सर्वोच्च शिखर है, इसकी ऊँचाई २९२४१ फ़ीट है। तिब्बती भाषा में ऐवरेस्ट को "चोमो लुंगमा" कहा जाता है, जिस का अर्थ है "धरती की देवी माता" ? हिमालय का यह उत्तर-पश्चिमी स्तम्भ है। हिमालय की मुख्य श्रृंखला से, इसे किशन गंगा तथा अस्तोर नदियाँ अलग करती हैं। उत्तर पूर्व में सिंधु इसे पृथक् करती है। २९ मई, १९५३ को तेनसिंह नामक एक भारतीय ने ब्रिटिश पर्वतारोही दल के एक सदस्य हिलेरी के साथ इस शिखर पर चढ़ाई की। यह शिखर वर्ष भर हिमाच्छादित रहता है। यह नैपाल में स्थित है और इसका पिछला भाग तिब्बत की ओर पड़ता है।

औ

औरंगज़ेब औरंगशाह, आलमगीर—परि, पृ० १९६, १९८

मुहीउद्दीन मुहम्मद औरंगज़ेब का जन्म धूद नामक स्थान पर, जो अहमदाबाद-मालवा के सूबों की सीमा पर स्थित था, २४ अक्तूबर, १६१८ ईस्वी को हुआ। मुम्ताज़ महल की चौदह सन्तानों में से छठवां था। दाराशिको और शुजा से छोटा और मुराद से बड़ा था। १७०७ ईस्वी में अहमदनगर में इस की मृत्यु हुई। यह दक्खिन और गुजरात का सूबेदार रहा और इन स्थानों के अतिरिक्त पश्चिमोत्तर सीमा तथा अफ़गानिस्तान तक में युद्धों का संचालन किया। यह अत्यन्त कष्टसहिष्णु, कुशल योद्धा, धूर्त राजनीतिज्ञ, दृढ़संकल्प निर्भय सेना-संचालक, कठोर शासक और धर्मान्ध कट्टर मुसलमान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शासक था। मुराद को अपनी ओर मिलाकर शुजा को अराकान की ओर खदेड़ा, दारा को परास्त किया। मुराद, दारा, दारा के पुत्र सुलेमान और अपने पुत्र मुहम्मद सुल्तान का नृशंसता से वध कराया। पिता शाहजहाँ को आजीवन बन्दी बनाए रखा। २१ जुलाई, १६५८ में सिंहासन पर बैठा। ५ जून, १६५९ में विधिवत राज्याभिषेक करवाया। इसने हिन्दुओं पर निरंकुश अत्याचार किये। जज़िया तथा विशेष कर लगाया, अनेक मंदिर विध्वंस कर मस्जिदें बनवाईं, धार्मिक उत्सवों-पर्वों-मेलों, विद्यालयों, धार्मिक शिक्षा पर प्रतिबंध लगाये। इसकी धर्मांधतापूर्ण नीति तथा अत्याचारों के कारण साम्राज्य-निर्माता अनेक राजपूत राजा भी इसके विरुद्ध हो गये। आतंक, प्रताप, विस्तार की दृष्टि से मुगलसाम्राज्य चरम शिखर पर पहुँचा; लेकिन वह लड़खड़ा भी गया। दक्षिण, राजस्थान, पंजाब की ओर से इसपर भयंकर आघात हुए। और इसकी मृत्यु के बाद ही साम्राज्य खण्ड-खण्ड हो गया।

क

कबीर—नप, पृ० ६४

पन्द्रहवीं शताब्दी के एक प्रसिद्ध सुधारक, संत, साधक और धर्म-प्रवर्त्तक। इनका जन्म एक विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से, जेठ सुदी पूर्णिमा, सोमवार, संवत् १४५६ विक्रमी को काशी में हुआ। कहते हैं, इनकी माँ ने समाज के भय से नवजात शिशु को लहरतारा नामक तालाब में फेंक दिया। वहाँ से नीरू-नीमा नामक जुलाहा दम्पति ने इन्हें उठा लिया और इनका पालन-पोषण किया। मृत्यु के समय यह मगहर चले गये और संवत १५७५ में १२० वर्ष की अवस्था में इनका देहावसान हुआ। कहा जाता है, लोई नामक किसी साधनी से इन्होंने विवाह भी किया, जिससे कमाल तथा कमाली पुत्र-पुत्री भी उत्पन्न हुए। कबीर ने अपनी रचनाओं में रामानन्द को अपना गुरु माना है। उपनिषदों के वेदान्त और अद्वैतवाद, वैष्णवों और सूफ़ियों के माधुर्यभाव और प्रपत्तिवाद, नाथ पंथियों की यौगिक साधना आदि का समन्वय करके इन्होंने कबीरपंथ या ज्ञानमार्ग की नींव डाली। कबीरदास अपने युग के सबसे महान् क्रान्तिकारी समाजसुधारक, स्वाधीनचिंतक, मानवी एकता तथा समानता के प्रचारक हैं। इनके शिष्य धर्मदास ने संवत १५२१ में इनकी वाणी का संग्रह किया, जो बीजक कहा जाता है। रमैनी, सबद और साखी—इसके तीन अंग हैं। बाहरी आडम्बरों, जात-पात, छूत-छात, ऊँचनीच की भावना आदि का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अत्यन्त कड़ा विरोध इनकी वाणी में है। मानव-मात्र के लिये सरल-सीधा सदाचार-मूलक भक्तिमार्ग इन्होंने निकाला।

कपिल (सांख्य)—

इनका समय ईसापूर्व १०० वर्ष से २५० ईस्वी तक माना जाता है। कपिल ने सांख्य-सूत्र या सांख्य-प्रवचन-सूत्र रचा। योग और पूर्व-मीमांसा के समान सांख्य भी छः धर्म-शास्त्रों में से एक प्रसिद्ध धर्मशास्त्र है ? सांख्य में आत्मा को मोक्ष प्राप्त कराने का निरूपण है। सृष्टि-रचना और विकास के सिद्धान्त का इस में अत्यन्त युक्ति-युक्त विवेचन है। सृष्टि के उद्‌गम, मानवप्रकृति, भौतिक संसार से मानव के सम्बन्ध और उसके भावी लक्ष्य आदि का सांख्यकार ने बहुत अच्छा विवेचन किया है। प्रकृति और पुरुष दो तत्त्व सांख्य में माने गए हैं। पुरुष (आत्मा) अनेक हैं। प्रकृति अनादि है। ईश्वर को इसका कर्ता नहीं माना गया, न ही ईश्वर को सांख्य में कोई स्थान दिया गया। इसलिये इसे नास्तिक दर्शन कहा जाता है। सत्व, रजस, तमस—प्रकृति के तीन गुण हैं। यही पुरुष (आत्मा) को संसार में बांधे हुए हैं। पुरुष जब अपना और प्रकृति का भेद जान लेता है—तीनों को समझ लेता है, तो मुक्त हो जाता है। ज्ञान की यह बौद्धिक स्थिति ही मोक्ष है। सांख्य ने योगशास्त्र को भी प्रभावित किया। पतंजलि ने भी कपिल के समान दृश्य जगत को वास्तविक माना है। आत्मा की अनेकता, परिवर्तनहीनता, अनन्तता, प्रकृति के तीनों गुणों और उनके स्वरूप को योग में भी सांख्य के समान स्वीकार किया गया है। अन्तर इतना है कि योगसूत्रकार ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करता है; इसलिए सेश्वर सांख्य कहा जाता है। साथ ही योगसूत्रकार प्रकृति और पुरुष के स्वरूप और पारस्परिक अन्तर को समझ लेने मात्र से सन्तुष्ट नहीं; वह प्रकृति के बन्धन को छिन्न-भिन्न करने के लिए एक सुसम्बद्ध कार्यक्रम भी प्रस्तुत करता है। सांख्य ज्ञान की चरम स्थिति है। और योग ज्ञान निदेशित कर्म की चरम स्थिति। त्रिगुणात्मक प्रकृति ही सभी विकारों का मूल है। और इसी से आत्मा को आच्छादित करने वाले क्लेशों का जन्म होता है। तीनों गुणों का तिरोभाव हो जाय तो आत्मा सारे मलों से मुक्त हो जाय। मल या विकार ही जन्म के कारण हैं। योग के आठों अंग भी इन्हीं विकारों को निर्मूल करने के साधन हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्म—परि, पृ० २३०

काम, धन्धा, व्यवसाय, भाग्य, शास्त्रविहित नित्य नमित्तिक कर्म। दर्शन-क्षेत्र में कर्म का अर्थ है, वेद और आगम ग्रंथों में निरूपित विधान, अनुष्ठान, क्रिया आदि, जिन्हें करते हुए साधक मोक्ष प्राप्त करता है, भगवान के स्वरूप में लीन होता है। वेद के कर्मकाण्ड में इन कर्मों विधानों का पूर्ण निरूपण है। वैदिक युग के यज्ञ, संस्कार आदि कर्मकाण्ड के विशेष अंग थे। महर्षि जैमिनी रचित पूर्वमीमांसा में वैदिक यज्ञयाग आदि की विस्तृत विवेचना कर्मकाण्ड का शुद्ध रूप उपस्थित करती है। कालांतर में गोमेध अश्वमेध यज्ञ आदि का स्वरूप बिगड़ गया और इनमें पशुबलि दी जाने लगी। तांत्रिक साधना में कर्मकाण्ड का रूप और भी विकृत हो गया—पशुहिंसा, मदिरा-पान, नारी-संभोग आदि का वीभत्स-रूप कर्मकाण्ड बन गया। भक्ति क्षेत्र में मंदिरों की सेवा, देवमूर्तियों का दर्शन, स्नान, धूपदीप पुष्प अर्पण, चन्दन-तिलक धारण करना, तीर्थों का दर्शन और स्नान आदि कर्म के रूप हैं। गीता का निष्काम कर्मयोग कर्मदर्शन के विकास का चरम रूप है। अनासक्त भाव से, फल की कामना से रहित होकर, सुख-दुख इष्ट-अनिष्ट में समभाव रख, स्थित-प्रज्ञ होकर कर्तव्यकर्म करना और सभी कर्मों को भगवत-चरणों में अर्पित कर देना ही निष्काम कर्म है। कर्मदर्शन को समझने के लिये गीता का अध्ययन किया जा सकता है।

कांग्रेस—नप, पृ० ७५

इटावा (उत्तरप्रदेश) के कलक्टर श्री ए० ओ० ह्यूम को कांग्रेस की स्थापना का श्रेय है। मार्च १८८५ में बंगाल, मद्रास और बम्बई के प्रसिद्ध राजनीतिक सामाजिक और राजकीय प्रशासन के जानकार व्यक्तियों को ह्यूम महोदय ने एक सरकूलर भेजा कि २५ से ३१ दिसम्बर १८८५ को पूना में इण्डियन नेशनल यूनियन का एक सम्मेलन होगा। बंगाल, बम्बई और मद्रास के अंग्रेज़ी ज्ञान सम्पन्न राजनीतिज्ञ प्रतिनिधि इसमें भाग लेंगे। इस सम्मेलन का प्रयोजन है कि राष्ट्रीय विकास के लिये कार्य करने वाले व्यक्तिगत रूप में परिचित हों और भावी वर्ष के लिये राजनितिक कार्य-क्रम निश्चित किया जाय। यह सम्मेलन पूना में न होकर, बम्बई के गोकुलदास तेजपाल संस्कृत कालिज हाल में, दिन के १२ बजे, २८ दिसम्बर, १८८५ ईस्वी को हुआ। श्री ह्यूम द्वारा प्रस्तुत, एस० सुब्रह्मण्य ऐयर द्वारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुमोदित और के० टी० तैलंग द्वारा समर्थित प्रस्ताव के अनुसार श्री उमेश चन्द्र बनर्जी इण्डियन नेशनल कांग्रेस के पहले सभापति निर्वाचित हुए। दूसरा अधिवेशन दादाभाई नोरोजी की अध्यक्षता में, २८ दिसम्बर, १८८६ को कलकत्ता के टाउनहाल में हुआ। इस अधिवेशन में स्वागताध्यक्ष डा० राजेन्द्रलाल मैत्रेय, श्री सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, पंडित मदनमोहन मालवीये और राजा रामपालसिंह की वक्तृताओं में बृटिश सरकार की तीखी आलोचना और उमड़ती हुई देशभक्ति का बाहुल्य था। प्रस्तावों में प्रशासन में सुधार और भारतीय प्रतिनिधित्व की माँग की गई थी।

१९१९ ईस्वी तक कांग्रेस प्रस्तावों द्वारा प्रशासन-सुधारों, स्वायत्त-शासन, प्रशासन में अधिकाधिक प्रतिनिधित्व, उपनिवेशों के समान सम्मान और अधिकारों की माँग करती रही—साथ ही बृटिश सरकार को अपनी राजभक्ति का विश्वास भी दिलाती रही। स्थान-स्थान पर कांग्रेस की स्थापना, बृटिश सरकार की अनीति और आर्थिक शोषण का प्रचार, देश-प्रेम की भावना जगाना, स्वराज्य और स्वायत्त-शासन आदि के लिये जन-समर्थन प्राप्त करना आदि का काम भी करती रही। कई बार कई मसलों पर परस्पर फूट भी पड़ी—नरम-गरम दलों में भी कांग्रेस बँटी। सन १९१९ ई० में अमृतसर के जलियाँ वाला बाग में जनरल डायर ने गोलियाँ बरसाकर सैकड़ों निहत्थे लोगों की हत्या कर दी। इस घटना से देश भर में शोक और क्षोभ की लहर दौड़ गई। कांग्रेस की नर्मदलीय नीति बदल गई। और गाँधी जी के सभापतित्व में नागपुर के अधिवेशन में पूर्ण स्वराज्य की माँग की गई। कांग्रेस अंग्रेज़ी सरकार के साथ खुले रूप में संघर्ष में उतर आई। १९१९ के बाद कांग्रेस अत्यन्त शक्तिशाली, प्रभावशाली, भारत-राष्ट्र की आकांक्षाओं का सही प्रतिनिधित्व करने वाली संस्था बन गई। १९१९ से १९३० तक पूर्ण स्वाधीनता तक पहुँचाने वाले औपनिवेशिक स्वराज्य की माँग करती रही। खिलाफत, शराब बन्दी, विदेशी वस्तु बहिष्कार, सविनय अवज्ञा, सत्याग्रह आदि अनेक आन्दोलन इसने किये। मोतीलाल नेहरू ने नेहरू-रिपोर्ट में औपनिवेशिक स्वराज्य का विधान प्रस्तुत किया। कांग्रेस के जीवन में नया मोड़ आया। १९३० में, लाहौर के अधिवेशन में, श्री जवाहर लाल नेहरू की अध्यक्षता में पूर्ण-स्वाधीनता की माँग की गई। इस माँग का सक्रिय रूप १९४२ का "भारत छोड़ो" आन्दोलन है। १९४७ में देश का विभाजन हुआ और पाकिस्तान और भारत दो पूर्ण स्वाधीन देश बन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गये। स्वाधीनता-प्राप्ति से १९६६ तक, केरल के सिवा, समस्त राज्यों में कांग्रेस-शासन करता रहा। लेकिन १९६७ के चुनाव में बंगाल, उड़ीसा, बिहार, मद्रास, उत्तरप्रदेश, हरयाना, पंजाब, केरल में कांग्रेस शासन समाप्त हो गया। शासन हाथ में आते ही कांग्रेसी नेताओं में त्याग भावना तो जाती ही रही, साथ ही पदों और धन की वासना भी बढ़ी। पारस्परिक षड्यन्त्र भी बढ़े—राष्ट्रनिर्माण गौण बन गया, अधिकार-प्राप्ति मुख्य हो गयी। अनेक मुख्य-मंत्रियों के भ्रष्टाचार की चर्चा भी संवाद-पत्रों में खुले आम हुई। देशव्यापी भ्रष्टाचार भी चरम सीमा पर पहुंच गया। जिन नेताओं ने त्याग कष्टसहिष्णुता, सादगी, देशभक्ति के आदर्श समस्त विश्व के सामने उपस्थित किये थे, आज उनके उत्तराधिकारियों द्वारा भ्रष्टाचार, पदलोलुपता, स्वार्थ, पक्षपात और पारस्परिक गुप्त संघर्ष और षड्यंत्र और उखाड़-पछाड़ के आदर्श प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

कांचनजंघा—नप, पृ० ९२

हिमालय का एक प्रसिद्ध शिखर। ऊँचाई में यह संसार का दूसरा सर्वोच्च-शिखर है—ऊँचाई २८१४६ फीट।

काकेसस—नप, पृ० ९३

ईरान के उत्तर में कैस्पियन सागर तट से ब्लैक सागर तक जाने वाला पर्वत। इसकी सबसे ऊँची चोटी माउण्ट एलब्रस की ऊँचाई १८४८१ फ़ीट है। तेल, कोयला, मैंगैनीज़ और क्रोमाइट यहाँ से प्राप्त खनिज पदार्थ हैं। इरानी और अरबी साहित्य में काकेसस पर्वत परियों का निवास माना जाता है। प्राकृतिक और जलवायु सम्बन्धी समृद्धि के वरदान स्वास्थ्य सौंदर्य और सुकुमारता ने यहाँ की नारियों को सम्भवत: यह रहस्यात्मक महत्त्व प्रदान किया हो।

कान्यकुब्ज—अप, पृ० १७३; अना, पृ १३२

उत्तर-प्रदेश का पूर्वी क्षेत्र, जहाँ कन्नौज नगर है। इस भूभाग में रहने वाले ब्राह्मणों की एक शाखा। सम्भवत: कान्यकुब्ज-ब्राह्मण नाम इसीलिए पड़ा, क्योंकि ये लोग कान्यकुब्ज क्षेत्र, कन्नौज के आस-पास के रहने वाले थे। कान्यकुब्ज ब्राह्मण "नौ कनौजिया तेरह चूल्हे" के लिये प्रसिद्ध हैं। छूत-छात, दहेज-प्रथा, जाति-पाति के भेदभाव आदि सामाजिक बुराइयों के लिये ये लोग बड़े बदनाम रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: रि—तुल, पृ० ३४

चित्रकूट की एक चोटी, जिसकी परिक्रमा करने से मनोकामनाएँ पूर्ण होनी मानी जाती हैं।

कार्तिक—नप, पृ० ७५

क्वार के बाद, अगहन के पहले आने वाला भारतीय महीना। शरद ऋतु का उत्तरार्ध। इस मास में अच्छी सर्दी पड़ने लगती है। कार्तिक अमावस को दीपावली मनाई जाती है और पूर्णिमा को स्थान-स्थान पर गंगास्थान के मेले लगते हैं। गढ़मुक्तेश्वर (उत्तरप्रदेश) का मेला विशेष प्रसिद्ध है, जहाँ भारत-भर से दूकानें आती हैं और लाखों आदमी एकत्र होते हैं। कार्तिक का समय १५-२० अक्तूबर से १५-२० नवम्बर तक माना जा सकता है।

कालिदास—अप, पृ० १७०; नप, पृ० ७०

संस्कृत के विश्वविख्यात महाकवि और नाटककार। इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं—अभिज्ञानशाकुंतल, विक्रमोर्वशीय, मालविकाग्निमित्र (नाटक) और रघुवंश, कुमारसम्भव, मेघदूत, ऋतुसंहार, नलोदय (काव्य)। शकुन्तला ने सर्वाधिक ख्याति अर्जित की। संसार की सभी समृद्ध भाषाओं में इस का अनुवाद हुआ। इसका सर्वप्रथम अनुवाद अंग्रेजी में सर विलियम जोन्स ने किया था। जर्मन महाकवि गेटे तो शकुन्तला पर मुग्ध थे—उन्होंने इसे फूल और फल तथा स्वर्ग और मर्त्य दोनों का मिलन बताया है। परम्परा के अनुसार कालिदास को महाराज़ विक्रमादित्य की राजसभा के नवरत्नों में से माना जाता है। इनका समय ईसा की प्रथम से तीसरी शताब्दी तक माना जाता है। इनके जन्म-स्थान के विषय में कुछ निश्चय नहीं हो पाया। प्रसाद जी के अनुसार स्कन्दगुप्त विक्रमादित्य द्वारा नियुक्त कश्मीर का प्रशासक मातृगुप्त ही कालिदास है।

कुमारिलभट्ट—अप, पृ० १७१

मीमांसा-दर्शन के मानने वाले, शंकराचार्य और मण्डन मिश्र के समकालीन विख्यात विद्वान। इनका समय ईसा पश्चात ६५० से ७०० तक माना जाता है। जनश्रुति के अनुसार यह मण्डनमिश्र के बहनोई थे। ऐसा भी कहा जाता है कि इन्होंने एक बौद्ध शिक्षालय में शिक्षा पाई थी। कालान्तर में इन्होंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने गुरु का विरोध किया। प्रायश्चित स्वरूप इन्हें धान की भूसी की आग में धीरे-धीरे जलना पड़ा। जिस समय यह जल रहे थे, शंकराचार्य अपने वेदांतसूत्रों के भाष्य पर वार्तिक लिखाने के लिये इनके पास आये थे। इन्होंने उन्हें सलाह दी थी कि मण्डन मिश्र से वार्तिक लिखायें। कुमारिलभट्ट ने बौद्ध तथा जैन धर्म का विरोध करके पुनः हिन्दु-धर्म की प्रतिष्ठा करने में भारी योग दिया। पूर्व-मीमांसा पर शबर द्वारा किये गये भाष्य पर इन्होंने श्लोक-वार्तिक लिखी, जिसमें ४००० पद हैं। पूर्व-मीमांसा पर "तंत्र वार्तिक" की रचना की। टुपटीका, मध्यमटीका और वृहतटीका भी इनके प्रसिद्ध ग्रंथ हैं।

कृष्ण

वसुदेव-देवकी के पुत्र, कंस के भानजे, जिनका जन्म कंस के कारागार में हुआ, कहा जाता है। इनके जन्मते ही कारागार के फाटक खुल गये और प्रहरी बेहोशी की नींद में सो गये। वसुदेव ने इनको जमुना पार नन्द गाँव में गोप नन्द के घर पहुँचाया। नन्द-यशोदा ने इनका पालन-पोषण किया। पुराणों के अनुसार कृष्ण विष्णु के लीला पुरुषोत्तम अवतार हैं। कृष्ण-भक्त इनको स्वयं-रूप ब्रह्म मानते हैं। भागवत पुराण के अनुसार यह पूर्ण परब्रह्म हैं—भक्तों को लीलाका आनन्द देनेके लिये अवतरित हुए हैं। परवर्ती साहित्य में कृष्ण-राधा तथा अन्य गोपांगनाओं के साथ लीला-विलास करने वाले चित्रित हुए हैं। राधा इनकी आह्लादिनी शक्ति है—उसके साथ शृंगार-क्रीड़ाएं करके भक्तों को आनन्द देना ही इनके अवतरण का प्रयोजन है। बाल्यावस्था में कृष्ण ने कंस द्वारा भेजे गये अनेक राक्षसों का वध किया। अंत में धनुषयज्ञ में कंस का भी वध किया और कंस के पिता उग्रसेन को सिंहासन पर बैठाया। कंस के दामाद जरासंध के आक्रमणों से तंग आकर यह गुजरात की ओर चले गये। द्वारिका नगर बसा कर वहीं रहने लगे। महाभारत में कृष्ण पाण्डवों के साथी बने और अर्जुन के सार्थी के रूप में काम किया। युद्ध के आरम्भ में अर्जुन को मोह हो जाने पर इन्होंने गीता का उपदेश अर्जुन को दिया। अपने युग के यह सबसे बड़े राजनीतिज्ञ, योद्धा, दार्शनिक, योगी, समाज-सुधारक और धर्म-नेता थे। भारतीय साहित्य में कृष्ण का उल्लेख सर्वाधिक है—केवल यही योगेश्वर दार्शनिक और साथ ही सर्वोपरि रतिविलासी दोनों रूपों में वर्णित है। कृष्ण से अधिक आकर्षक, प्रभावशाली, प्रिय, मनोमुग्धकारी, मधुर और सशक्त व्यक्तित्व शायद ही अन्य कोई हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्वार—नप, पृ० ७४

आश्विन-भादो के बाद और कार्तिक से पहले आने वाला भारतीय महीना। इसमें ऋतु परिवर्तन होता है। गर्मी कम हो जाती है। सुब्रह-शाम हल्की-हल्की सर्दी पड़ने लगती है। इसी महीने शुक्ल-पक्ष की दशमी को राम की रावण पर विजय मानी जाती है, इसलिये इस दिन को विजय दशमी कहा जाता है। क्वार की पूर्णिमा अत्यन्त उज्ज्वल और निर्मल होती है। इस रात को सहस्रों नर-नारी ताजमहल की शोभा देखने जाते हैं। क्वार का समय सितम्बर का उत्तरार्ध और अक्तूबर का पूर्वार्ध माना जा सकता है। यह महीना शरद ऋतु का पूवार्ध है।

ख

खर—अना, पृष्ठ १५६—

रावण और सूर्पनखा का भाई। सुमाली राक्षस की कन्या राखा तथा विश्ववसु मुनि का पुत्र। पंचवटी में जब लक्ष्मण ने सूर्पनखा के नाक-कान काट लिये, तब यह अपनी बहन के अपमान का बदला लेने के लिए राम लक्ष्मण से युद्ध करने आया। इस युद्ध में यह रामचन्द्र द्वारा मारा गया। दूषण भी खर का भाई था और खर के साथ ही राम के बाण से मारा गया था।

ग

गज—आरा, पृ० १४

इन्द्रद्युम्न नाम का एक प्रतापी राजा था। राजपाट त्याग कर भगवद् भजन में लीन रह और मौन धारण कर वह मलय-पर्वत पर तपस्या करने लगा। एक बार अगस्त्य ऋषि अपने शिष्यों सहित उधर आ निकले। वह ध्यानमग्न था। इसलिये उनका स्वागत-सत्कार न कर सका। अगस्त्य ऋषि ने रुष्ट होकर उसे शाप देते हुए कहा—तू राजा होकर तपस्या कर रहा है—अपने कर्तव्य को भूल बैठा है। हाथी के समान जड़बुद्धि, जा तू हाथी हो जा। वह हाथी बन कर क्षीर सागर में चित्रकूट पर्वत की तराई में स्थित वरुण के ऋतुमान उद्यान में बने एक सरोवर के पास रहने लगा। एक दिन गर्मी से व्याकुल होकर सरोवर में प्रवेश कर उसने पानी पिया और स्नान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया। फिर अपनी हथनियों और बच्चों को सूंड से पानी बरसाकर स्नान कराने लगा। तभी एक ग्राह ने उसकी टाँग पकड़ ली। शक्ति भर संघर्ष करने के बाद भी वह ग्राह से न जीत सका, तब भगवान विष्णु को पुकारा। भगवान गरुड़ पर सुशोभित प्रकट हुए। उसकी करुण पुकार सुनकर गरुड़ से कूद पड़े और ग्राह सहित गजेन्द्र को बाहर निकाल लिया। मगर का मुंह सुदर्शन चक्र से काट, गज का उद्धार किया। यह ग्राह भी "हूहू" नामक गंधर्व था, जो देव-शाप से ग्राह बन गया था। हूहू तथा इन्द्रद्युम्न दिव्य देह धारण कर गंधर्व लोक तथा विष्णु लोक को चले गये।

गणेश—अना, पृ० १६६

पौराणिक धर्म और परम्पराओं के विश्वासी हिन्दुओं में हरएक धार्मिक, सामाजिक, व्यावसायिक अनुष्ठान में सर्वप्रथम गणेश-पूजन होता है। किसी भी कार्य के आरम्भ को इसीलिए 'श्रीगणेश' कहा जाता है। यह शिव-पार्वती के पुत्र हैं। इनके जन्म के विषय में अनेक कथाएँ प्रचलित हैं। एक दुर्बल वृद्ध याचक के रूप में विष्णु कैलास पर स्थित शिव-पार्वती के महल में आये और शिव-गौरी के पूछने पर कि वह क्या चाहते हैं, उन्होंने उनका पुत्र बनने की याचना की। दोनों ने कक्ष में आकर देखा तो एक बालक शैया पर पड़ा खेल रहा है। बालक अत्यन्त सुन्दर और आकर्षक था। सभी देवता उसके दर्शन करने आये। ब्रह्मा ने उसे उच्च ज्ञान, ख्याति और पूजा; धर्म ने धार्मिकता और दया; शिव ने उदारता, शान्ति, आत्मसंयम, प्रतिज्ञापालन; लक्ष्मी ने प्रतिभा और नित्य उसके साथ निवास करने; सरस्वती ने वाक्-शक्ति, काव्य, स्मृति; सावित्री ने चातुरी; हिमावत ने कृष्ण के सभी गुण प्राप्त होने का आशीर्वाद दिया। शनि भी आया, पर वह नीची दृष्टि किये रहा। पार्वती के अनुरोध करने पर उसने गणेश की ओर देखा तो गणेश का सिर उड़ गया। पार्वती तो शोकातुल होकर बेसुध हो गई। विष्णु तुरन्त गरुड़ पर सवार हो एक नदी तट पर घूमते हाथी का सिर काट लाये और गणेश के कन्धे पर लगा दिया। एक बार शिव द्वारा कश्यप के पुत्र सूर्य का सिर काटे जाने पर कश्यप ने शिव को शाप दिया था कि उसके पुत्र का सिर भी नहीं रहेगा। उसी शाप के कारण गणेश का सिर-उड़ गया था। गणेश के बारे में यह भी प्रचलित है कि शिव की अनुपस्थिति में पार्वती ने अपने मैल से तैयार किया था। शिव जब वापस आये तो वह और कार्तिकेय बाहर पहरा दे रहे थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गणेश ने शिव को भीतर जाने से रोका था, इसलिए शिव ने त्रिशूल से उसका सिर काट डाला। पार्वती के द्वारा बताये जाने पर कि वह उन्हीं का पुत्र है, शिव ने किसी का सिर लाने को अपने गण भेजे। वे हाथी का सिर ले आये, जिसे गणेश के धड़ पर जोड़ कर शिव ने उसमें प्राण डाल दिये।

गणेश का विवाह प्रजापति की पुत्री बुद्धि और सिद्धि से हुआ। उनके दो पुत्र भी हुए ज्ञान और समृद्धि। गणेश के चार हाथ हैं और एक दांत। एक दाँत परशुराम के साथ युद्ध करते हुए टूट गया था। गणेशजी प्रतिभी, ज्ञान, पवित्रता, विद्या के प्रतीक और अमोघ वरदाता, समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाले माने जाते हैं। तुलसीदासजी "विनय-पत्रिका" का आरम्भ करते हुए कहते हैं :

गाइये गनपति जगवंदन
संकर सुवन भवानी नंदन
सिद्धि-सदन गजवदन विनायक
कृपा-सिंधु सुन्दर सब लायक
मोदक प्रिय मुद मंगल दाता
विद्यावारिधि बुद्धि विधाता।
माँगत तुलसिदास कर जोरे
बसहिं रामसिय मानस मोरे।

गवाक्ष-गय—अना, पृ० १५२

राम की सेना के दो सेनापति।

गांधार—नप, पृ० ९२

एक प्राचीन आर्यगणराज्य और उसकी राजधानी। गांधारी यहीं की राजकन्या थी, जिसका विवाह हस्तिनापुर के आर्य राजकुमार धृतराष्ट्र से हुआ था। सिकन्दर के साम्राज्यवादी अभियान में गांधार भी पराजित हुआ था। बाद में मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त ने सिकन्दर के क्षत्रप-सेनापति सेल्युकस को पराजित करके सन्धि में राजकन्या कार्नेलिया या हैलेन से विवाह किया और काबुल, गांधार, हिरात को दहेज में पाया। कनिष्क-साम्राज-काल में भी यह प्रसिद्ध प्रदेश और नगर रहा। तेरहवीं शताब्दी में इस प्रदेश के राजा जयपाल को पराजित करके महमूद गज़नी ने इस पर अपना अधिकार कर लिया। तबसे यह देश अफ़गानिस्तान कहलाता है। गांधार का वर्तमान नाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कंधार है। यह अफ़गानिस्तान के पूर्वी-दक्षिणी भाग में स्थित है। बौद्ध, मौर्य और गुप्तकाल में भारतीय संस्कृति और कला के विकास में गांधार का महत्त्वपूर्ण योग रहा है। गांधार-मूर्ति-कला प्राचीन भारतीय कला में विशेष महत्त्व रखती है।

गीता—परि, पृ० १८१

महाभारत के युद्ध के आरम्भ में अर्जुन को मोह हो गया। उसे युद्ध की प्रेरणा देने के लिये उसके सारथी कृष्ण ने उसे निष्काम कर्म योग का उपदेश दिया। प्रसंगवश आत्मा, परमात्मा, जन्म-मरण, मोक्ष आदि का विवेचन भी उस उपदेश में आ गया। यही उपदेश गीता के नाम से संकलित है। गीता विश्वभर में महान दर्शन-ग्रन्थ के रूप में विख्यात है। निष्काम कर्मयोग मोक्ष पाने का राजमार्ग समझा जाता है। इसमें अठारह अध्याय और कुल ७०४ श्लोक हैं। प्रत्येक अध्याय में क्रमशः ४७, ७२, ४३, ४२, २९, ४७, ३०, २८, ३४, ४२, ५५, २०, ३४, २७, २०, २४, २८, और ७८ श्लोक है।

गोदावरी—परि, पृ० २२४

दक्षिणी भारत की एक प्रसिद्ध नदी, यह पश्चिमी घाट से निकल कर बम्बई और आंध्र प्रदेश में बहती हुई बंगाल की खाड़ी में गिरती है। इसके डेल्टा पर कई बांध बना कर नहरें निकाली गई हैं। कूर्म, वायु, मत्स्य और वामन पुराण में गोदावरी का वर्तमान नाम से उल्लेख है।

गोमती—अना, पृ० २३

एक नदी, जो कमायू की पहाड़ियों के उत्तर से निकल कर बनारस के नीचे गंगा में मिलती है। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ इसी के तट पर बसा है। ऋग्वेद में भी गोमती नाम आता है, पर यह संम्भवतः गोमल हो, जो पश्चिम से सिंध नदी में आकर मिलती है।

गोलकुण्डा—परि, पृ० ११२

कुत्ब उलमुल्क ने गोलकुण्डा को स्वतंत्र राज्य बनाया। महमूदशाह के सचिवालय में यह एक उच्च पदपर नियुक्त था। अपने कौशल से तिलंगाना का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गवर्नर बनाया गया। इसकी मृत्यु (१५४३ ईस्वी) के बाद गोलकुण्डा में निर्बल और अयोग्य शासक होते रहे। सन् १६८७ में औरंगजेब ने कुतुब शाही को समाप्त कर दिया और गोलकुण्डा को अपने साम्राज्य में मिलाया। इसके दक्षिण में विजयनगर, पूर्व और उत्तर में उड़ीसा, पश्चिम में बरार, अहमदनगर और बीदर थे। क्षेत्र की दृष्टि से यह बीजापुर अहमदनगर से छोटा और बरार तथा बीदर से बड़ा था। [इस सम्बन्ध में बीजापुर भी देखिए]।

गोविन्दसिंह—परि, पृ० २००

सिखों के छठे गुरु हरगोविन्द के दूसरे पुत्र गुरु तेगबहादुर थे। गुरु तेगबहादुर कुछ दिन पटना में रहे थे, वहीं गुरु गोविन्दसिंह का जन्म १६६६ ईस्वी में, १५ जनवरी को हुआ। गुरु तेगबहादुर ने आनन्दपुर में गद्दी की स्थापना की। १६७५ ईस्वी में औरंगजेब द्वारा दिल्ली में गुरु तेग बहादुर का वध कराये जाने के बाद, ९ वर्ष की अवस्था में यह गुरु बनाये गये। गुरु गोविन्दसिंह ने पानी में कृपाण घुमाकर सिखों को खालसा बनाने की परम्परा का आरम्भ किया। केश, कृपाण, कंघा, कच्छा और कड़ा—पाँच चिह्न धारण करना सिखों के लिये अनिवार्य किया। कहा जाता है कि यह बहादुरशाह को गद्दी प्राप्त करने में सहायता देने के लिए उसके साथ दक्खन गये। तब १७०८ के अन्त में एक अफगान धर्मान्ध ने, गोदावरी के तट पर बसे नन्दूर या नान्देड़ नामक स्थान पर छुरे से इनका वध कर दिया।

गुरु गोविन्दसिंह बहुत ही उच्च कोटि के संत और सैनिक थे। इन्होंने सिखों को सिंह बना दिया। सिखों की सेना का इतना सबल संघठन किया कि उन्होंने मुगल साम्राज्य से लोहा लिया। मुगलों के सहायक अनेक पहाड़ी राजाओं से भी इनका युद्ध हुआ। यह हिन्दी के श्रेष्ठ कवि भी थे। दशमग्रंथ, जिसमें इनकी विविध रचनाएँ संगृहीत हैं, ब्रज-भाषा का एक बहुत बड़ा ग्रंथ है। अनेक विद्वान इस ग्रंथ की अनेक रचनाओं को गुरु गोविन्दसिंह की कृति नहीं मानते। भारतीय इतिहास में गुरु गोविन्दसिंह का व्यक्तित्व अत्यन्त प्रभावशाली, दैदीप्यमान सशक्त और प्रेरक है। संत सैनिक साहित्यिक—तीनों का अत्यन्त उज्ज्वल मिश्रण इन में हुआ। गुरु गोविन्दसिंह के दो लड़के फतहसिंह और जोरावरसिंह सरहिन्द के सूबेदार द्वारा पकड़ लिये गये और मुसलमान धर्म स्वीकार न करने के कारण दीवार में चुनवा दिये गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोर-ग़ज़नी—आरा, पृ० ५८

शाहबुद्दीन मुहम्मद गौरी और मुहम्मद गज़नी। शाहबुद्दीन का बचपन का नाम था—मुइज़उद्दीन बिन साम। ग़ौरी गज़नी का बादशाह था। इसने धन और अपने राज्य की सीमाएं बढ़ाने के लोभ से भारतवर्ष पर अनेक हमले किये। ११९१ ईस्वी में अनेक स्थानों को लूट, विध्वंस कर और जीत कर यह गज़नी वापिस जा रहा था। दिल्ली का सम्राट पृथ्वीराज २ लाख अश्वारोही और तीन हज़ार गजारोही लेकर उसका सामना करने चला। तराई या तरावड़ी के मैदान में गौरी बुरी तरह परास्त हुआ। लेकिन ११९२ में वह और भी जोश के साथ चढ़ आया और इसी मैदान में सरस्वती नदी के तट पर पृथ्वीराज पराजित हुआ और मारा गया। ११९४ में कन्नौज का जयचंद भी मारा गया। इस तरह चार वर्ष में अनेक आक्रमण, लूटमार, कत्लेआम, गाँवों के गांवों में अग्निकाण्ड, हत्याएं करके वह लाखों रुपया, हज़ारों हाथी घोड़ें ऊँट और सम्पति गज़नी ले गया। बनारस पर हमला करके इसने लगभग सौ मन्दिरों का ध्वंस किया और उनके स्थान पर मस्जिदें बनवाईं। विजित विशाल प्रदेश पर शासन करने के लिये यह अपने गुलाम और सेनापति कुतुबुद्दीन ऐबक को दिल्ली में नियुक्त कर गया। सिंधु तट पर बने एक शानदार मंच पर आराम करते हुए १२०६ ई० में इस्माइली मुसलिम सम्प्रदाय के तीन व्यक्तियों द्वारा मार डाला गया।

गज़नी—महमूद गजनी अफ़गानिस्तान के एक नगर गज़नी का बादशाह होने के कारण गज़नी महमूद का उपनाम या गोत्र का नाम बन गया। पंजाब, महाराष्ट्र, मद्रास, आंध्र आदि राज्यों में नाम के साथ स्थान का नाम लगाने की परम्परा प्रचलित है।

सुबुक्तगीन ने जो गज़नी के शासक अलप तगीन का गुलाम था, ९७६ ईस्वी में गज़नी पर अधिकार कर लिया। खुरासान और पेशावर जीत कर गज़नी राज्य में मिला लिया। ९९७ ई० में सुबुक्तगीन का लड़का महमूद गज़नी बादशाह बना। इसने १००० से १०२६ ईस्वी तक भारतवर्ष पर १७ आक्रमण किये। पहला आक्रमण भटिण्डा के राजा जयपाल पर किया, जिसका राज्य कश्मीर से मुल्तान और भटिण्डा से लमगान तक फैला था। २८ नवम्बर, १००१ में पेशावर के युद्ध में जयपाल पराजित हुआ। जयपाल की पराजय ने भारत में अभियान का मार्ग खोल दिया—एक के बाद दूसरा हमला होने लगा। १०२५-२६ में सोमनाथ मन्दिर पर आक्रमण हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोमनाथ की मूर्ति को महमूद ने अपनी गदा के प्रहार से तोड़ डाला। गज़नी एक भयंकर कट्टर मुसलमान था—इस्लाम के प्रचार और मूर्तिपूजा को निर्मूल करने के अन्धविश्वास ने इसे पागल बना दिया था। धन के लोभ ने उस पागलपन को और भी बढ़ा दिया। यह भारत भूमि से करोड़ों रुपया लूट कर ले गया। साम्राज्य संस्थापक के रूप में नहीं, एक डाकू-हत्यारे धर्मांध के रूप में भारत इसे अधिक जानता है। १०३० ईस्वी में ६२ वर्ष की आयु में इस की मृत्यु हुई। धार्मिक अत्याचारी होते हुए भी यह साहित्य का प्रशंसक था। फिरदौसी और अलबरूनी इसके दरबारी विद्वान थे।

गौरीशंकर—नप, पृ० ६३

हिमालय का एक प्रसिद्ध शिखर, जो बारहो महीने हिमाच्छित रहता है। इसकी ऊँचाई लगभग २७ हज़ार फ़ीट है।

च

चंगेज़खाँ—नप, पृ० ६२

मध्य एशिया की बर्बर जाति मंगोलों का नेता। इसका जन्म ११५५ तथा मरण १२२७ ईस्वी में हुआ। अपने पिता के बाद १३ वर्ष की आयु में गद्दी पर बैठा। अपनी माता हौलूम (Houlum) की बुद्धिमत्ता और राजनीतिक पटुता के कारण उसने विरोधियों का दमन करके मंगोल राज्य की सीमाओं का विस्तार किया और १२०६ में खान की उपाधि धारण की। इसी वर्ष इसने यास्सा (yassa) नामक कानून-ग्रंथ प्रचारित किया। कराकोरम के बादशाह को पराजित कर कराकोरम को अपनी राजधानी बनाया। हिरात में कत्लेआम करके १५ लाख लाशों से धरती पाट दी। ६० वर्ष की अवस्था में अपनी राजधानी से दो हज़ार मील दूर भीषण प्राकृतिक बाधाओं को पार कर खरमियन साम्राज्य का विध्वंस कर खुरासान और परशिया को अपने साम्राज्य में मिलाया। अरल सागर से चीनी सागर तक इसका साम्राज्य फैला हुआ था। उत्तरी चीन भी इसके साम्राज्य का अंग था। इसके चार लड़के थे—जूची Juchi, चितागाई Chitagai, ओगोताई Ogotai और तुली Tuli। इसके साम्राज्य में कठोर नियंत्रण, धार्मिक सहिष्णुता और जाति-संघठन कायम रहा। इसके लड़कों और पोतों—हलाकू और कुबलाई ने साम्राज्य की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीमाएँ और भी बढ़ाईं। चंगेज़ख़ाँ इतिहास का एक अत्यन्त कठोर शासक कुशल सेनानायक, दुस्साहसी सैनिक और अद्वितीय विजेता है। मुसलमानों की मस्जिदें गिराना, स्त्री बालकों का भी वध करना, गाँव के गाँव जलाकर राख बना देना इसके आक्रमण के विशेष अंग थे। आज भी चंगेज़ख़ाँ का नाम अत्याचार, उत्पीड़न, निर्दयता, विनाश आदि के लिए प्रसिद्ध है।

चित्तौर गढ़--परि, पृ० २०२

"चन्द्रगुप्त" नाटक में मौर्यवंश का विवरण देते हुए लिखा है कि चित्रांग मौर्य ने चित्रकूट (चित्तौर) का पवित्र दुर्ग बनवाया। यह दुर्ग संभवतः ६७५ ईस्वी के आसपास बना होगा। यह पहाड़ के ऊपर बना है—शिलाओं को काट कर बनाई गयी प्राचीर अत्यन्त दृढ़, सबल और दुर्भेद्य है। यहाँ तक जाने का मार्ग अत्यन्त दुर्गम, विषम, टेढ़ातिरछा, सघन बन से अच्छादित है। चित्तौर वास्तुकला, दुर्गमता और अजेयता की दृष्टि से ही नहीं; ऐतिहासिकता, भारतीय वीरत्व, अनुपम बलिदान आदि के कारण भी यह एक महान् स्मारक है। चित्तौर के उत्थान-पतन से मध्यकालीन हिन्दु-गरिमा सम्बद्ध रही है। बिना चित्तौर-विजय के, चाहे समस्त भारत भी अधीन हो, साम्राज्य सुरक्षित नहीं समझा गया—न अखण्ड माना गया। इसी चित्तौर के मौर्यराज मान सिंह ने खलीफ़ा वलीद को राजस्थान से भगाया था। १३०३ में महाराज रतन सिंह के वीरगति प्राप्त करने पर महारानी पद्मिनी सैकड़ों राजपूत ललनाओं सहित दहकती ज्वाला में भस्म हुई थी। राजस्थान में यह पहला जौहर था। इन्द्रिय लोलुप नृशंस अलाउद्दीन ने दुर्ग में प्रवेश करके ३० हज़ार राजपूतों का वध करवाया था। वीर हमीर इसकी रक्षा के लिए बलिदान हुआ था। कुम्भा ने मालवा के महमूद खिलजी को परास्त कर के १४४० में विजयस्तम्भ बनवाया था। चित्तौर के उद्धार के लिये ही प्रताप ने धरती पर शयन और पत्तों में खाने का प्रण किया। चित्तौर का दुर्ग सहस्रों सतियों के जौहर की पावन ज्वाला से सुषमित हैं, असंख्य वीर बलिदानों से गरिमा-शाली है, अनगिनत आक्रमणों से आहत है—और फिर भी आज उसी गौरव से मस्तक उठाये खड़ा है।

चैतन्यदेव—अना, पृ० १७९

फाल्गुन, १४०७ शंकाब्द, १८ फ़रवरी, १४८६ ईस्वी में चैतन्य महाप्रभु का जन्म नवदीप में एक वैदिक ब्राह्मण परिवार में हुआ। यह अपने माता-पिता (श्रीमती शचीदेवी और श्री जगन्नाथ मिश्र या पुरन्दर मिश्र) की सब से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोटी तथा दसवीं सन्तान थे। इनका जन्म चन्द्रग्रहण समाप्त होने पर पूर्ण चन्द्रोदय के समय हुआ। यह ५-६ वर्ष के थे, जब इनके अग्रज श्रीविश्वरूप ने संन्यास ले लिया। अतिशय गौरवर्ण होने और "हरि-हरि" जाप के समय जन्म लेने के कारण का नाम गौरहरि रखा गया। संयास लेने तक यह निमाई नाम से प्रसिद्ध थे। गंगादास पंडित के विद्यालय में शिक्षा पाई। पढ़ कर अपना विद्यालय खोला। युवावस्था में एक पड़ौसी वल्लभाचार्य की लड़की लक्ष्मी देवी से इनका प्रेम हो गया और इसी से विवाह हुआ। न्याय, व्याकरण, अलंकार आदि के यह विख्यात विद्वान बन गये। नवदीप विश्व-विद्यालय के युवक शिक्षक के रूप में निमाई ने अनेक पंडितों को परास्त किया। तात्कालिक भारत के सर्वोच्च विद्वान कश्मीर के दिग्विजयी आचार्य केशव भट्ट को भी इन्होंने हराया। पहली पत्नी के सर्पदंशन से मरने के कुछ दिन बाद निमाई ने, नवदीप के राज पंडित श्री सनातन मिश्र की लड़की विष्णुप्रिया देवी से विवाह कर लिया। कुछ दिन तक विद्यालय चलाने और वैष्णव धर्म का प्रचार करने के बाद २४ वर्ष ११ महीने की अवस्था में फरवरी, १५१० ईस्वी में निमाई ने कातवा (वर्धमान) में श्रीकेशवभारती से संन्यास की दीक्षा लेली। और तब से यह चैतन्य महाप्रभु के नाम से विख्यात हुए। संन्यासी होने के बाद अपने साथियों-शिष्यों सहित चैतन्य देव ने कीर्तन-मण्डली बना भारत-भ्रमण किया। महाप्रभु माधुर्यभाव की भक्ति करते थे। चण्डीदास और विद्यापति के पद गाते गाते बेसुध हो जाते थे। चैतन्यदेव ने भक्ति पर न उपदेश दिये, न सैद्धान्तिक पुस्तकें लिखीं; प्रभावित किया तो अपनी साधना या भावलीनता से। इनके कीर्तनसे समस्त बंगाल में कृष्ण-भक्ति की लहर दौड़ गई। अनेक हिन्दु मुसलमान इन से प्रभावित हुए। इलाहबाद से कुछ दूर जमनातट पर आदाइल या आदेली नामक ग्राम में महाप्रभु वल्लभाचार्य ने चैतन्यदेव तथा उनकी मण्डली को अपने घर निमन्त्रित किया था। उनके चरण धोकर उस जल को अपने सिर पर और परिवार के लोगों पर छिड़का था। सोते हुए उनके पैर भी दबाए थे। जगन्नाथ (पुरी) के मंदिर में, ४८ वर्ष की अवस्था में, फरवरी, १५३४ ईस्वी को चैतन्यदेव का स्वर्गवास हा गया। इनके कुछ भक्त मानते है, यह जगन्नाथ की मूर्ति में समा गये। और कुछ कहते हैं, अन्तर्धान हो गये। एक दो विद्वानों का यह भी मत है कि कृष्ण-प्रेमोन्माद में नाचते हुए इन के पैर में एक पत्थर से घाव हो गया, जिससे शरीर विषाक्त हो गया और तीव्र ज्वर में इनकी मृत्यु हो गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज

जयसिंह—परि, पृ० १९३

आमेर (जयपुर) का कछवाहा-वंशी राजा। औरंगज़ेब के प्रमुख सेनापतियों में से एक। साम्राज्य-सेवाओं के लिये इन्हें 'मिर्ज़ा राजा' की उपाधि मिली थी। रीतिकालीन प्रसिद्ध कवि बिहारीलाल इन्हीं के आश्रय में रहता था। बिहारी को प्रत्येक दोहे पर यह एक अशर्फ़ी प्रदान किया करते थे। जयसिंह अत्यन्त अनुभवी सेनासंचालक, वीर योद्धा और कूट-नीतिज्ञ थे। जब शिवाजी का आतंक बढ़ने लगा, शाइस्ताखां और मुअज्जम भी उसे न दबा सके तो दिलेर खाँ और जयसिंह उसका दमन करने के लिये भेजे गये। ४ लाख घुड़सवार, ५०० हाथी, ३० लाख ऊंट और एक करोड़ बैलों की विशाल वाहिनी लेकर शिवाजी पर आक्रमण किया। अंत में शिवाजी पुरंधर की सन्धि करने को विवश हुआ। जयसिंह ने शिवाजी को बहुत से झूठे वचन दिये और औरंगजेब के दरबार में जाने के लिये राज़ी कर लिया। वहाँ उसका अपमान हुआ। दक्षिण से वापस आते हुए २ जुलाई, १६६७ ईस्वी को बुरहानपुर में इनकी मृत्यु हो गई। जयसिंह ने बीच में पड़कर महाराजा जसवंतसिंह और औरंगजेब का मेल कराया था। यह भी कहा जाता है कि जयसिंह को औरंगज़ेब ने विष दिलवाकर मरवाया था। राजा जयसिंह की वीरता, रणकुशलता, कूटनीति अपने भाइयों के विनाश करने में काम आई—औरंगज़ेब की सहायक बनी।

जसवन्तसिंह—परि, पृ० २०७

यह महाराज गजसिंह के दूसरे पुत्र जोधपुर (मारवाड़) के प्रसिद्ध महाराजा थे। इनका जन्म सन १६२६ ईस्वी में हुआ, १६३८ ईस्वी में गद्दी पर बैठे। यह अपने समय के सबसे प्रतापी हिन्दू राजा थे। औरंगज़ेब भी इनसे भयभीत रहता था और उसने स्वयं इनसे सुलह का हाथ बढ़ाया और गुजरात का सूबेदार बनाया। यह उत्तराधिकार-युद्ध में दारा शिकोह की ओर से औरंगज़ेब से युद्ध कर चुके थे। इन्होंने मुगल साम्राज्य के वर्द्धन और रक्षण के लिए अनेक युद्ध किये। शिवाजी का दमन करने के लिये भी इन्हें और शाइस्ताखां को भेजा गया। शिवाजी के दमन में इन्होंने विशेष तत्परता न दिखाई और शाइस्ताखां की दुर्गति कराई। औरंगज़ेब इनसे पिण्ड छुड़ाना चाहता था। इसलिये इनको अटक के पार अफ़गानिस्तान में युद्ध करने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए भेज दिया। जमरूद में १० दिसम्बर, १६७८ ईस्वी में इनकी मृत्यु हो गई। यह हिन्दी के प्रसिद्ध आचार्य और कवि थे। इनका लिखा "भाषा-भूषण" नामक अलंकार ग्रंथ बहुत प्रसिद्ध है। इनके लिखे ये ग्रन्थ भी हैं—'अपरोक्ष-सिद्धान्त', 'अनुभव-प्रकाश', 'आनन्द-विलास', 'सिद्धान्त-बोध', 'सिद्धान्तसार', 'प्रबोध-चन्द्रोदय'। रहीम के सिवा इतिहास में अन्य व्यक्ति ऐसा कोई नहीं हुआ, जो तलवार और लेखनी का समान रूप से धनी हो। इनके उत्तराधिकारी पृथ्वी सिंह को औरंगज़ेब ने दिल्ली बुला कर विषैली पोशाक पहनाकर मरवा दिया। इसके नवजात शिशु अजीतसिंह और महारानी को बन्दी बनाने का षड़यंत्र किया। जोधपुर पर आक्रमण और राजपूतों पर अत्याचार किये। अन्त में सेनापति दुर्गादास के साहस और युद्ध-कौशल से अजीतसिंह और विधवा महारानी की रक्षा हो गई और राजकुमार अजीतसिंह जोधपुर का राजा बना। ऐसा भी सन्देह किया जाता है कि औरंगज़ेब ने महाराजा जसवंतसिंह को भी विष देकर मरवाया था।

जानकी कुण्ड—तुल, पृ० ३४

चित्रकूट पर स्थित एक छोटा-सा जलाशय, जिस में स्नान करना पुण्य माना जाता है।

जाम्बवान, जामवन्त अना, पृ० १५३

यह रीछों की सेना के नायक थे। इनका रूपाकार रीछ के समान माना गया है। यह वयोवृद्ध अनुभववृद्ध सेनापतियों में माने गये हैं। राम बहुधा सबसे पहले इनसे ही सलाह लेते पाये जाते हैं। इन्होंने नलनील को उनकी शक्ति और सामर्थ्य की याद दिलाई और राम को सलाह दी कि इन दोनों भाइयों के स्पर्ष से पत्थर तैरने लगते हैं। ये लंका और भारत के बीच समुद्र पर सेतु बना सकते हैं। जामवंत का उल्लेख कृष्ण-कथा में भी आता है। सूर्य के द्वारा सत्राजित को दी गई स्यमन्तमणि धारण करके उसका भाई प्रेमसेन वन में शिकार के लिये निकला। वह एक शेर द्वारा मार डाला गया। जामवन्त शेर को मार कर वह मणि अपनी गुफा में ले गया। मणि की चोरी का आरोप कृष्ण पर लगाये जाने पर वह इसे खोजते-खोजते इधर आ निकले। प्रेमसेन, उसके घोड़े और शेर को मरा देख तथा रीछ के पैरों के निशान पाकर वह गुफा में पहुंच गये। जाम्बवान के बच्चे उस मणि से खेल रहे थे। कृष्ण को गुफा में आया देख जामवन्त ने उन्हें ललकारा। दोनों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२८ दिन तक भीषण युद्ध हुआ। अंत में कृष्ण के मुष्टिका-प्रहार से उसकी हड्डियाँ चूर-चूर हो गईं। वह पहचान गया कि कृष्ण विष्णु के अवतार हैं। अपनी लड़की जाम्बवन्ती का विवाह कृष्ण से कर दिया और स्यमन्तमणि कृष्ण के अर्पण कर दी। मणि लेकर कृष्ण वापिस अपनी राज्य सभा में आये और अनेक सभासदों की उपस्थिति में वह मणि सत्राजित को दे दी। सत्राजित बड़ा लज्जित हुआ। उसने अपनी पुत्री सत्यभामा का विवाह कृष्ण के साथ कर दिया और मणि भी अर्पित की; पर कृष्ण ने वह उसे ही लौटा दी।

जैमिनि—अना, पृ० ३०

इनका समय ईसा से ४०० से २०० वर्ष पूर्व तक माना जाता है। जैमिनि पूर्वमीमांसा-दर्शन के प्रवर्तक माने जाते हैं। वेदांत-सूत्र भी इन्होंने रचा। महाभारत तथा पुराणों में जैमिनि को पाराशर्य व्यास (वेद-व्यास—महाभारत के रचयिता) का शिष्य बताया गया है। कहा जाता है, वेद-व्यास ने जैमिनि को सामवेद आत्मसात कराया। कई जगह बादरायण को भी जैमिनि का गुरु बताया गया है; पर ये दोनों ही मत विद्वानों द्वारा अस्वीकृत हैं। पूर्वमीमांसा सब दर्शनशास्त्रों में विशाल है। इसमें २७०० सूत्र तथा ९०० अनुबंध हैं। एक सूत्र की कई स्थानों पर ३० या २४ बार तक आवृत्ति हुई है। पूर्वमीमांसा में यज्ञ-याग आदि का निरूपण है, जिन्हे मोक्ष का साधन माना गया है। अनेक प्रकार के यज्ञ, उनका मुख्य और गौण भेद, सहायक अनुष्ठान, अनिवार्य और ऐच्छिक अनुष्ठान, संस्कार, मंत्र, बाधा, तंत्र, आदि का निरुपण बहुत विस्तार से किया गया है। वेद को अनादि, निर्दोष, सृष्टि को चिरन्तन माना है। शबर ने पूर्वमीमांसा पर भाष्य लिखा, मण्डन ने पूर्वमीमांसा और वेदांत सूत्र पर भाष्य लिखे। पूर्वमीमांसा का प्रभाव लौकिक आध्यात्मिक दोनों क्षेत्रों में देखा जाता है। हिन्दुओं में कोई संस्कार या अनुष्ठान, पूजा-पाठ पर्वत्यौहार नहीं होता, जिसमें यज्ञ का विधान न हो। "जैमिनीय ब्राह्मण" "जैमिनीय श्रौतसूत्र" और "जैमिनीय गृहसूत्र" नामक ग्रन्थ भी जैमिनी के साथ जोड़े जाते हैं; लेकिन ये पूर्वमीमांसाकार जैमिनी के नहीं; किसी अन्य जैमिनी के हैं। "वेदांतसूत्र" को शंकराचार्य भास्करकृत और परम्परा वेदव्यास कृत भी मानती हैं; लेकिन ये दोनों ही मत विद्वानों द्वारा मान्य नहीं हैं।

ज्ञान—परि, पृ० २३०

पदार्थ को ग्रहण करने की मन की वृत्ति, यथार्थ बोध, सच्ची जानकारी, शास्त्रानुशीलन आदि से आत्म-तत्त्व का अवगम, आत्म-साक्षात्कार, वेद,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परब्रह्म । भगवान को पाने, उसमें लीन होने या आवागमन के चक्र से मुक्ति पाने का ज्ञान भी भक्ति, योग आदि के समान एक साधन है । वैसे तो भक्ति, कर्म, योग आदि में भी सामान्य अर्थ या रूप में ज्ञान का उल्लेखनीय अंश रहता ही है; लेकिन ज्ञान अपने में पूर्ण एक स्वतंत्र दर्शन भी है । वेदों से लेकर आज तक ज्ञान के स्वरूप का स्वतंत्र विवेचन होता रहा है । वेदान्त या अद्वैतवादी दर्शन ज्ञान का चरम विकास या स्वरूप स्थापित करता है । मान, दम्भ, मन की चंचलता, विषयों में आसक्ति, अहंकार, जन्ममरण, जरा, व्याधि में सुख-दुख की अनुभूति, स्त्री-पुत्र घरबार आदि में आसक्ति, ममता, इष्ट-अनिष्ट में हर्ष-शोक, विषयी मनुष्यों की संगति में प्रेम—इनके पूर्ण अभाव, इन सब विकारों से इन्द्रियों और मन का पूर्ण छुटकारा और इन्द्रिय तथा मन का निग्रह, नित्य आत्मा में मन की स्थिति रहना, भगवद्भक्ति, पवित्रता, आचार्य-सेवा, क्षमाशीलता, ब्रह्मकी सर्वव्यापकता का बोध तथा अनुभूति, तत्त्वज्ञान के द्वारा भगवान के स्वरूप का बोध और प्राप्ति आदि को ज्ञान कहा जाता है । इस निरूपण का मतलब यही है कि आत्मा का नितान्त राग-विराग रहित होकर भगवान के स्वरूप को जानना और उसमें ध्यानावस्थित होना । ज्ञान बौद्धिक प्रक्रिया की उपलब्धि है । इसलिये सामान्य जनता में यह शुद्ध दर्शन के रूप में लोकप्रिय नहीं बन पाता, भक्ति की ओर अधिक लोग आकर्षित होते हैं । हिन्दी में ज्ञान को लेकर भक्ति-क्षेत्र में जो ज्ञानाश्रयी या ज्ञान-मार्गी शाखा चली, वह विशुद्ध ज्ञान-मार्गी नहीं कही जा सकती । उसमें भी बल भक्ति पर ही दिया गया है। ज्ञान भक्ति का ही साधन है, शुद्ध-बुद्ध हो कर जीवात्मा, परमात्मा, प्रकृति के यथार्थ स्वरूप को जानना और आत्मा को माया-मुक्त करना, भगवान के निर्गुण, निरुपाधि, निराकार, निर्विकार परब्रह्म स्वरूप में लीन होना ज्ञान की दशा है । इस संदर्भ में गीता, श्लोक ७-११ अध्याय १३; रामचरितमानस, उत्तरकाण्ड, दोहा ११५-१२१ (क) भी देखे जा सकते हैं ।

त

ताड़का [ताटका]—अना, पृ० १५६

यक्ष सुकेतु या दैत्य सुन्द की पुत्री तथा मारीच सुबाहु की माता । अगस्त्य ऋषि के शाप के कारण यह राक्षसी हो गई और सरयू-तट पर ताड़क नामक वन में निवास करने लगी । यह अपने पुत्रों सहित विश्वामित्र का यज्ञ विध्वंस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया करती थी। इसके उत्पात से आस पास के तपोवन में हाहाकार मचा था। इसका वध कराने के लिये ऋषि विश्वामित्र महाराज दशरथ से उनके पुत्र राम लक्ष्मण को ले गये। पहले स्त्री जानकर राम ने उसका बध करना उचित न समझा; पर जब उसने राक्षसी माया से पत्थर बरसाने आरम्भ किये और बहुत उत्पात मचाया, तब विश्वामित्र की आज्ञा से राम ने इसका वध कर दिया।

तुलसीदास—नप, पृ० ६४

विक्रम की सत्रहवीं शताब्दी के भक्ति-आन्दोलन के सर्वाधिक प्रभावशाली, शक्तिशाली और समर्थ साधक, समाजनिर्माता, मानव-मंगल-विधायक और कवि, विश्वविख्यात रामचरित-मानस के लेखक। जार्वग्रियर्सन तथा रामगुलाम द्विवेदी के मतानुसार राजापुर में जन्मे, संवत १५८९ वि०। पिता का नाम आत्माराम दुबे, माता का नाम हुलसी। रत्नावली नामक भारद्वाज गोत्री कन्या से विवाह। कहते हैं तुलसीदास रत्नावली पर इतने आसक्त थे कि उसके पीहर चले जाने पर बिना बुलाए वह ससुराल पहुंच गये। रत्नावली से फटकार और भर्त्सना पाकर उन्हें वैराग्य हो गया। शेष समस्त जीवन राम भक्ति और तीर्थाटन में लगाया। मानस के अतिरिक्त इनके ये ग्रंथ भी प्रसिद्ध हैं: दोहावली, कवित्त-रामायण, गीतावली, विनयपत्रिका, रामललानहछू, पार्वतीमंगल, जानकीमंगल; बरवैरामायण, वैराग्य-संदीविनी, कृष्णगीतावली, रामाज्ञा-प्रश्नावली। इन की मृत्यु के विषय में प्रसिद्ध है:

संवत सोरह सै असी, असी गंग के तीर।
श्रावण कृष्णा तीज शनि, तुलसी तज्यो शरीर।

तैमूर—नप, पृ० ९२

चौदहवीं शताब्दी के अन्तिम और पन्द्रहवीं के प्रथम दशक का संसार का सब से भयंकर, नृशंस, हत्यारा, आक्रमणकारी विशाल साम्राज्य-संस्थापक और कुशल सेनानायक। भारत पर आक्रमण से पहले यह ईरान, एशिया-माइनर, मैसोपटामिया, अफ़गानिस्तान को पद-दलित कर चुका था। सन १३९९ में इसने लगभग ९२ हज़ार घुड़सवारों की सेना लेकर भारत पर आक्रमण किया। दिल्ली तक पहुँचते हुए रास्ते में जो भी नगर पड़े, सब का विध्वंस करता गया। इसने एक लाख बन्दी बना कर सब का वध करा दिया। दिल्ली को इसके बर्बर सैनिक रात भर जलाते और लूटते रहे, कत्ले आम करते रहे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल्ली की गलियों में हिन्दुओं के सिरों के ढ़ेर लग गये। मार्च १३९९ ईस्वी में यह नगरकोट और जम्मू होता हुआ समरकन्द वापिस चला गया। बहुत से राज-मिस्तरियों को गुलाम बना कर समरकंद में मस्जिद बनाने के लिये अपने साथ ले गया। जिधर इसके पैर पड़े, उधर विध्वंस, विनाश, कत्लेआम, अग्निकाण्ड, लूट-खसोट, महामारी, दुर्भिक्ष, अराजकता का आतंक छा गया। हलाकू और चंगेज़ भी इसकी नृशंसता पाशविकता और धार्मिक कट्टरता के सामने तुच्छ हैं। तैमूर जैसे लुटेरे आक्रमणकारी मानवता के अमिट कलंक हैं—इतिहास ऐसे लोगों की जितनी भर्त्सना करे, वह कम है।

दादू—नप, पृ० ७३

राज़पूताने के विख्यात संत, जन्म १५४४ तथा मृत्यु १६०३ ईस्वी। ब्राह्मण, धुनिया और मोची—इनकी जाति के विषय में तीन मत प्रचलित हैं। धुनिया होना अधिक प्रामाणिक लगता है। आचार्य क्षितिमोहन सेन के अनुमान के अनुसार इनका नाम दाऊद था, जो आगे चलकर दादू हो गया। कहा जाता है कि ११ वर्ष की अवस्था में इन्होंने किसी अज्ञात संत बुड्ढन या वृद्धानन्द से दीक्षा ली और तीस वर्ष की अवस्था में साँभर आकर ब्रह्म सम्प्रदाय की स्थापना की। भगवद्भक्ति विषयक इनके पद सरसता और मधुरता के कारण बड़े लोक-प्रिय हैं। पश्चिमी राजस्थानी और गुजराती भाषा का इसकी भाषा पर स्पष्ट प्रभाव है। सूफी ढंग का इश्क इनकी वाणी में स्पष्ट झलकता है।

दाहिर—अप, पृ० १७३

सिंध के राजा राई साहसी की मृत्यु के बाद उसके ब्राह्मण मंत्री छछ ने सिंहासन हस्तगत कर लिया और सिंध में छछ-वंशी राज की नींव डाली। राई साहसी की विधवा रानी से इसने विवाह कर लिया। छछ के पश्चात् उस का छोटाभाई चन्द्र उत्तराधिकारी बना और चन्द्र के बाद छछ का पुत्र दाहिर सिंध का राजा बना। दाहिर पर मुहम्मद बिन कासिम ने बारह हज़ार सैनिकों के साथ आक्रमण किया। दाहिर बड़ी वीरता से लड़ा। हाथी पर सवार हो इसने युद्ध का नेतृत्व किया। हाथी बिचक गया और सिंधु नदी में ले दौड़ा। इसकी सेनाओं ने समझ लिया कि उनका राजा मारा गया और सेना के पैर उखड़ गये। यद्यपि इसने हाथी को छोड़ एक घोड़े पर सवार हो फिर युद्ध की बागडोर संभालली; लेकिन अरबी सेनाओं के सामने न टिक सका।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड़ते-लड़ते वीर गति को प्राप्त हुआ। कुछ समय तक इसके लड़के जयसिंह ने युद्ध किया, पर वह भी युद्ध में मारा गया। उसके बाद दाहिर की रानी ने भी डटकर मोर्चा लिया। अंत में सैकड़ों वीरांगनाओं ने जौहर करके अपने धर्म की रक्षा की। इस युद्ध में दाहिर की लड़कियाँ सूरज और परिमल बन्दी बना कर खलीफ़ा की भेंट की गईं। लेकिन उन्होंने खलीफ़ा को बताया कि वे बिन कासिम द्वारा भ्रष्ट कर दी गईं हैं। इस पर कुपित होकर खलीफ़ा ने बिन कासिम को मृत्यु-दण्ड दिया। दाहिर की मृत्यु के साथ ही सिंध का ब्राह्मण राजवंश समाप्त हो गया।

दुष्यन्त—परि, पृ० ६१

एक कुरुवंशी राजा, जिसने महर्षि कण्व द्वारा पालित, विश्वामित्र-मेनका की पुत्री शकुन्तला से गंधर्व विवाह किया था। शकुन्तला से उत्पन्न भरत के नाम पर इस देश का नाम 'भारत' पड़ा। शकुन्तला-दुष्यन्त की कथा को ले कर महाकवि कालिदास ने "अभिज्ञान शाकुन्तल" नाटक लिखा। इस नाटक के अनुसार दुष्यन्त अत्यन्त प्रतापी, वीर, संगीत-चित्रकला-प्रवीण, भावुक प्रेमी, विलासी राजा है। इसे धीरललित नायक कहा जा सकता है।

देविकारानी—

यह बॉम्बेटाकीज़ के स्वामी और डाइरैक्टर श्री हिमांशुराय की पत्नी थी। बॉम्बेटाकीज़ की अनेक फ़िल्मों में इन्होंने नायिका का अभिनय किया। हिमांशुराय का देहावसान होने के कुछ दिन बाद इन्होंने अभिनय-व्यवसाय त्याग दिया और विश्वविख्यात रूसी चित्रकार श्री निकोलस रोरिक के पुत्र से विवाह कर लिया। अब यह अपने पति के साथ श्रीनगर (कुल्लू घाटी) में रहती हैं।

द्रौपदी

पांचाल देश के राजा द्रुपद की पुत्री। (द्रुपद का नाम यज्ञसेन भी था।) ऊपर घूमती हुई मछली की परछाइं देखकर अर्जुन ने मछली का नेत्रवेधन कर स्वयंवर में द्रौपदी को प्राप्त किया। कहते हैं, जब पाण्डव द्रौपदी को जीत कर घर लाये तो कुन्ती ने बिना देखे आशीर्वाद देते हुए कहा कि सब मिल बांट कर इस सामग्री का सेवन करो। माता की आज्ञा पालनार्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्रौपदी पाँचों पाण्डवों की पत्नी बनी। युधिष्ठिर दुर्योधन के साथ जुआ खेलते हुए सारी सम्पत्ति के साथ द्रौपदी को भी हार गया। इसे भरी राज-सभा में नंगा नचाने का प्रयत्न किया गया। दु:शासन इसे बालों से पकड़ कर घँसीटता हुआ लाया था और दुर्योधन ने इसको अपनी जांघ पर बैठने का प्रस्ताव पेश किया था। भीम ने इसके अपमान का प्रतिशोध लेने के लिये प्रतिज्ञा की कि दु:शासन के रक्त से द्रौपदी के बाल धोयेगा और अपनी गदा से दुर्योधन की जाँघ तोड़ेगा। भीम ने दोनों ही प्रतिज्ञायें पूर्ण कीं। पाँचों पाण्डवों से द्रौपदी को पाँच पुत्र हुए, जो रात को सोते हुए अश्वत्थामा के द्वारा शिविर में मार डाले गये। महाभारत का एक कारण द्रौपदी भी कही जा सकती है।

न

नलनील—अना० पृ० १५३

ये बानर भाई-भाई थे। राम के प्रमुख सेनापतियों में इनकी भी गणना है। बचपन में इनको किसी ऋषि से वरदान मिला था कि ये जिस पत्थर को स्पर्ष करेंगे वह पानी में डूबेगा नहीं। लंका पर चढ़ाई करते समय जामवन्त ने इन्हें इसका स्मरण दिलाया। इन्होंने लंका और भारत के बीच समुद्र पर सेतु बनाया जिससे होकर राम का कटक लंका में पहुँचा। राम-रावण संग्राम में ये दोनों भाई बड़ी वीरता से लड़ते दिखाये गये हैं।

नवद्वीप

नवद्वीप को नदिया भी कहते हैं। वर्तमान नवद्वीप भागीरथी और जलांगी नदियों के संगम के नीचे की ओर है और प्राचीन नवद्वीप इन नदियों के संगम के उत्तर में था, जो बामनापुकुर, श्री मायापुर, श्री नाथपुर, भारूइदांगा और बल्लालदिघी इन पाँच गावों तक फैला था। प्राचीन नवद्वीप वहाँ था, जहाँ बल्लाल के महल के खण्डहर, बल्लाल झील, चाँद काज़ी का मकबरा है। श्री मायापुर में श्री चैतन्य महाप्रभु के जन्म-स्थान पर बंगाल का सबसे बड़ा मन्दिर बना है। इसी प्राचीन नवद्वीप में चैतन्य महाप्रभु का जन्म हुआ था। नवद्वीप शास्त्रज्ञों, पंडितों, विद्वानों, धर्मसाधकों, भक्तों के कारण सदा भारत-विख्यात रहा है।

नृग—आरा, पृ० ९०

एक बार एक यदुवंशी राजकुमार भ्रमण को निकला। प्यास लगने पर एक कुँए पर पानी पीने गया तो उसमें एक विशाल गिरगिट पड़ा देखा। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की खबर राजकुमार ने श्रीकृष्ण को दी। श्रीकृष्ण ने वहाँ पहुँच कर गिरगिट को बाहर निकाला। कृष्ण का स्पर्श पाते ही उसे दिव्य देह प्राप्त हो गई और वह विमान पर सवार हो विष्णुलोक को चला गया। नृग पूर्व जन्म में इक्ष्वाकु वंश का महादानी राजा था। सींगों पर सोना मढ़वाकर सुन्दर और बहुमूल्य वस्त्रों और आभूषणों से सजाकर नित्य सैंकड़ों गाय दान दिया करता था। एक दिन तपस्वी की गाय इसकी गायों से आ मिली। भूल से वह गाय भी नृग ने एक ब्राह्मण को दान कर दी। उस तपस्वी ने गाय पहचान ली। दोनों राजा के पास आये; लेकिन न तो वह तपस्वी अन्य गाय लेने को राजी हुआ और न ब्राह्मण वह गाय छोड़ने को। मरने के बाद जब नृग यमराज के पास ले जाया गया तब यमराज ने पूछा कि वह पहले पाप का फल भोगना चाहता है या पुण्यों का सुख। नृग ने पहले पाप-दण्ड भोगना स्वीकार किया। इस पर नृग गिरगिट बन कर धरती पर आ गिरा।

पं

पतंजलि—अना, पृ० ३०

इनका समय ईसा १०० वर्ष पूर्व से ३०० वर्ष बाद तक माना जाता है। १०० वर्ष का समय अधिक विद्वानों द्वारा मान्य है। पतंजलि ने योगसूत्र की रचना की। यह दर्शन ग्रन्थ सभी दर्शनों से छोटा है। इसमें १९५ सूत्र हैं। इसमें चार पाद हैं—समाधि, साधन, विभूति और कैवल्य—क्रमशः ५१, ५५, ५५ और ३४ सूत्रों के हैं। डाक्टर राधाकृष्णन इसे ३०० वर्ष के बाद का नहीं, मानते और श्री एस० एन० दासगुप्त २०० वर्ष पूर्व का मानते हैं। योगसूत्र का विषय है—मोक्ष, जन्ममरण से छुटकारा। मन और इन्द्रियों का निरोध करके ईश्वर में लीन होना ही मोक्ष है, प्रयोजन को समझाने के लिये यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि का अत्यन्त विस्तृत, सांगोपांग विवेचन इसमें हुआ है—इसलिये इसे अष्टांग योग भी कहते हैं। क्षिप्त, मुग्ध, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र, निरुद्ध—मन की पाँच भूमियाँ प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा, स्मृति—पांच वृत्तियों; प्रत्यक्ष, अनुमान, आगम—तीन प्रमाणों; तप, स्वाध्याय, रागद्वेष, अभिनिवेश; आदि का निरूपण भी है। पतंजलि कर्म और पुनर्जन्म में विश्वास करते हैं। कपिल के सांख्य का योगदर्शन पर पूरा प्रभाव है। प्रधान (प्रकृति), पुरुष (आत्मा), तीनगुण आदि को योगसूत्रकार स्वीकार करते हैं। सांख्य में ईश्वर को स्थान नहीं; पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पतंजलि ईश्वर को मानते हैं। आत्मा का लक्ष्य दोनों ही मोक्ष मानते हैं। लेकिन सांख्य की मोक्ष है—प्रधान, पुरुष, गुणों के स्वरूप का शुद्ध ज्ञान हो जाना। योगसूत्र मोक्ष प्राप्ति के लिये मानसिक शारीरिक प्रक्रिया भी प्रस्तुत करते हैं। सांख्य के समान योग में विश्वोद्भव तथा विकास का कोई सिद्धान्त नहीं मिलता। योग ने भारतीय धर्म अध्यात्म को पूर्व मीमांसा से भी अधिक प्रभावित किया। कोई मत, धर्म, साधना, अध्यात्म ऐसा नहीं; जिसमें योगसूत्र द्वारा निर्देशित दैहिक मानसिक अभ्यास न किये जाते हों। ४००-५०० ईस्वी पश्चात् व्यास ने योगसूत्र भाष्य लिखा।

पाटलीपुत्र—अप, पृ० १६६

पटना का प्राचीन नाम। मगध की राजधानी। आजकल बिहार राज्य की राजधानी है। ईसा से ५०० वर्ष पूर्व से ५०० वर्ष बाद तक पाटलीपुत्र भारतीय बल-वैभव, शक्ति-शौर्य, पराक्रम, गौरव-गारिमा, साहित्य-कला-संस्कृति, राज-नीति का केन्द्र रहा। नन्द, मौर्य, शुंग, गुप्त आदि वंशों के विशाल-साम्राज्यों की राजधानी होने के कारण एक हज़ार वर्ष तक विश्व के अनेक विशाल देशों की नज़र भी पाटलीपुत्र पर लगी रही और मस्तक भी झुकते रहे। मौर्य कालीन पाटलीपुत्र गंगा और शोण (सोन) नदियों के संगम पर बसा था। इसके दुर्ग की प्राचीर पत्थर, ईंट और लकड़ी की बनी थी। नगर ८० स्टेडिया लम्बा, ३० स्टेडिया चौड़ा था, इसमें ६४ द्वार और ५७० बुर्ज़ थे। चौड़े सुन्दर राजमार्ग, विशाल प्रासाद, कुसुमों से भरपूर वाटिकाएँ, सुसज्जित बाज़ार इसमें बने थे। पाटलीपुत्र ने आर्य राष्ट्र के उद्दाम और अपराजित शौर्य का युग देखा है, वैभव, शान्ति, साहित्य की चरम विकास भी देखा है। पाटलीपुत्र का एक प्राचीन नाम कुसुमपुर भी है।

पामीर—नप, पृ० ४६

समुद्री धरातल से १२००० फ़ीट की ऊँचाई पर एक पठार है। इसे संसार की छत कहा जाता है। पामीर का पठार कश्मीर के उत्तर, तिब्बत के पश्चिम, अफ़गानिस्तान उत्तरपूर्व में स्थित है। इसके दक्षिण में आमू दरिया और उत्तर की ओर सायर दरिया बहते हैं। पामीर की घाटियों से अफ़गानिस्तान काश्मीर और तरीमबेसिन की ओर व्यापारी काफ़िले आते-जाते हैं। पामीर पठार पर नगर नहीं बसे हैं, गडरियों के छोटे-छोटे गाँव में यहां की आबादी रहती है। प्रायः बारहों महीने बर्फ जमी रहती है—पिघल कर ग्लेशियर भी बहते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहते हैं। पामीर के दो पर्वत शिखर माउण्ट स्तालिन २४५८४ फ़ीट और माउण्ट लेनिन २३३७७ फ़ीट ऊँचे हैं।

पार्वती—अना, पृ० १४१

मैना के गर्भ से उत्पन्न हिमाचल या हिमालय की पुत्री। शिव-पत्नी सती की यह अवतार है। एक बार वन में जाते हुए शिव को राम-नाम जपते देख सती को मोह हुआ और उसने राम के ब्रह्मत्व पर शंका की। राम की परीक्षा लेने जाने पर सती ने चारों ओर अनेक सीता-राम-लक्ष्मण देखा तो वह घबरा गईं; लेकिन उसने शिव से आकर झूठ बोला कि "कछु न परीक्षा लीन गुसाईं, कीन्ह प्रनाम तुम्हारई नाईं"। इस पर शिव को बहुत खेद हुआ और वह सती से उदासीन रहने लगे। इसी समय सती अपने पिता प्रजापति के यज्ञ में सम्मिलित होने के लिये गई। वहाँ उसकी उपेक्षा हुई। शिव का यज्ञ-भाग भी प्रजापति ने नहीं निकाला। शिव का अपमान देखकर उसने योग-अग्नि में अपने को भस्म कर दिया। समाचार पाते ही शिव ने अपने गण वहाँ भेजे, जिन्होंने यज्ञ विध्वंस कर दिया और प्रजापति को मार डाला। यही सती हिमाचल के घर जन्मी। पार्वती ने शिव को पति-रूप में पाने के लिये हज़ारों वर्ष तपस्या की, एक हज़ार वर्ष फल फूल, अनेक वर्ष जल और पवन, तीन हज़ार वर्ष सूखे पत्ते, फिर सूखे पत्ते भी त्याग कर तपस्या की। पत्ते त्याग देने के कारण अपर्णा नाम पड़ा। घोर तप से द्रवित होकर शिव ने पार्वती से विवाह कर लिया। शिव-पार्वती अनादि और अनन्त हैं। पार्वती से उत्पन्न कार्तिकेय द्वारा तारकासुर का वध हुआ। दुर्गा, भवानी, शक्ति, शिवा आदि अनेक नामों से भी पार्वती को अभिहित किया जाता है। शाक्त साधना में शक्ति को ही उत्पादक, पालक, रक्षक और विनाशक—ब्रह्म की सम्पूर्ण शक्तियों से पूर्ण माना जाता है। शक्ति के संयोग से ही शिव वास्तविक शिव हैं, शक्ति के बिना शिव को भी शव कहा जाता है।

पृथ्वी—अना, पृ० ५९

पृथ्वीराज या राय पिथौरा। दिल्ली के चौहान राजा, जो भारतवर्ष के अन्तिम हिन्दू सम्राट थे। यह कलचुरी राजकुमारी कर्पूर देवी के गर्भ से उत्पन्न साँभर के चौहान राजा सोमेश्वर के लड़के थे। सोमेश्वर की मृत्यु के बाद सन् ११७७ ईस्वी में यह बाल्यावस्था में सिंहासन पर बैठे। इनके नाना दिल्ली के तोमर राजा अनंगपाल के कोई पुत्र न होने के कारण, गोद लिये जाने पर वहाँ के भी अधिपति बन गये। यह अत्यन्त वीर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहसी और निर्भय योद्धा थे। अपने जीवन में भारतीय राजपूत राजाओं और पश्चिमी घाटियों से आने वाले मुसलमान आक्रमणकारियों से अनेक युद्ध किये। इन्होंने शाहबुद्दीन गौरी को ११९१ ईस्वी में तराई या तरावड़ी के मैदान में युद्ध में पराजित किया और भारत-भूमि से उसे भगा दिया। इसी मैदान में सन् ११९२ में युद्ध में यह पराजित हुए और चौबीस वर्ष की अवस्था में मारे गये। चन्द्रबरदाई कृत रासो के अनुसार बन्दी बनाकर इन्हें गज़नी ले जाया गया, और इनकी आँखें निकलवा दी गईं। चंद वहाँ पहुँचा और इसके शब्दवेधी-लक्ष्य की प्रशंसा करके गौरी को इनकी परीक्षा लेने को उकसाया। चंद ने "चार बाँस चौबीस गज अंगुल अष्ट प्रमान्। ता उप्पर सुलतान है मत चुक्के चौहान", कहके पृथ्वीराज को संकेत कर दिया। पृथ्वीराज ने अपने बाण से गौरी को मार डाला और तुरन्त चंद और पृथ्वीराज एक दूसरे को छुरा मार कर मर गये। यह कथा सत्य नहीं मानी जाती।

प्रेमानन्द—अना, पृ० १७७

इनका नाम था बाबूराम घोष। यह राखालचन्द्र घोष (स्वामी ब्रह्मानन्द) के सहपाठी थे। इनकी पहली भेंट स्वामी रामकृष्णदेव से हरिसभा, कलकत्ता में हुई। स्वामी रामकृष्ण वहाँ भागवत की कथा सुनने गये हुए थे। इसके बाद परमहंस जी के पास इनका आना-जाना आरम्भ हो गया। उस समय यह २० वर्ष के थे। एक शाम को इन्होंने देखा कि राखाल श्री परमहंस को सहारा दिये ला रहा है, और वह प्रेमावेश की दशा में लड़खड़ाते चले आ रहे हैं। राखाल द्वारा इनका परिचय नरेन्द्रनाथ दत्त (स्वामी विवेकानन्द) से कराया गया। रामकृष्ण की साधना का इतना प्रभाव पड़ा कि सदा के लिए इन्होंने अपना जीवन परमहंस की सेवा में अर्पित कर दिया। इनकी साधना, भगवद्भक्ति, कष्टसहिष्णु, त्यागपूर्ण, संयमी जीवन से परमहंस इतने प्रसन्न थे कि वह इन्हें नव्यसिद्ध और ईश्वर कोटि नाम से अलंकृत किया करते थे। कहा जाता है, एक बार परमहंस ने इनको हार पहने हुए एक देवी के रूप में स्वप्न में देखा था। यह रामकृष्ण के निकटस्थ सेवकों और भक्तों में से थे। परमहंस के महासमाधिलीन होने पर इन्होंने भी अन्य साथियों के साथ संन्यास ले लिया और ब्रह्मानन्द नाम रखा।

फ

फलातूँ—नम्र, पृ० १४

प्लेटो को अरब-देशों में अफ़लातून कहा जाता है। यही अरबी संस्करण भारत में प्रचलित है। फ़लातूँ इसी का छोटा रूप है। प्लेटो का जन्म

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४२८-२७ ई० पू० में एथेन्स (यूनान) में हुआ और देहावसान हुआ ३४८-४७ ई० पू० में। यह सुकरात (सौक्रेटीज़) का विख्यात शिष्य था। सुकरात के मृत्युदण्ड के कारण राजनीति में नहीं पड़ा, बल्कि इसने विज्ञान और दर्शन के विकास और शिक्षण के लिये एक अकैडमी ३८७ बी० सी० में स्थापित की। अपने युग का दार्शनिक और समाजशास्त्री माना जाता है। इसका विश्वास था कि दार्शनिक शासक ही जनता को अधिकतम सुख दे सकता है। यह भी इसका कहना था कि सत्य, सौंदर्य, न्याय की पूर्णता परमात्मा में ही है। राज्य और समाज का प्रयोजन अच्छे नागरिक उत्पन्न करना होना चाहिए। यह स्वस्थ समाज का निर्माण केवल आध्यात्मिक बुनियाद पर ही मानता था, दूसरी बात यह कि शासन का कर्तव्य जनता को शिक्षित बनाना है। समाज-सेवा कार्य में नारी को भी पुरुष के समान ही अधिकार मिलने चाहिए—इस महान् सिद्धान्त की घोषणा करने वाला यह अपने समय का पहला मनीषी था। अपने अनुपम विचारों के द्वारा इसने योरुप को वह प्रकाश दिया, जिसके सहारे योरुप ज्ञान के पथ पर अग्रसर होता रहा।

ब

बलदेव—नप, पृ० ३१

वसुदेव के पुत्र, कृष्ण के सौतेले भाई। रोहिणी के गर्भ से गोपराज नंद के घर इनका जन्म हुआ था। कहा जाता है, पहले यह देवकी के गर्भ में आये, कंस के द्वारा मारे जाने के भय से विष्णु की आज्ञा से माया ने इनको देवकी के गर्भ से निकालकर रोहिणी के गर्भ में रख दिया। गर्भकर्षण द्वारा दूसरे स्थान पर जाने के कारण इनका नाम संकर्षण रखा गया। विपुल बलशाली होने के कारण बलराम कहलाये। बाल्यकाल में प्रलंब और धेनुक राक्षसों का वध भी बलराम ने किया। यह स्वभाव से उद्दण्ड और मद्यप्रिय कहे जाते हैं। हल इनका आयुध है, इसजिए इनको हलधर भी कहा जाता है। यह अपने समय के एक कुशल गदाधारी थे। दुर्योधन को भी इन्होंने गदा-युद्ध सिखाया था।

बाबर—पवि, पृ० १६३; नप, पृ० ६२

मुगल वंशी साम्राज्य का संस्थापक, हुमायूं का पिता, अकबर का दादा। इसका पूरा नाम जहीरुद्दीन बाबर था। इसका जन्म अंदिजान (रूसी तुर्किस्तान) में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फरवरी सन् १४८३ ईस्वी को हुआ। इसके पिता का नाम उमर शेख और माँ का नाम कुतलुग निग़ार था। एक का रक्तसम्बन्ध तैमूर से दूसरी का चंगेज़खां से था। ८ जून, १४६४ ईस्वी में उमर शेख की मृत्यु के बाद बाबर बारह वर्ष की अवस्था में फरगाना का शासक बना और अपने मामा तथा चाचा के आक्रमण का सामना किया। उत्थान-पतन हार-जीत बाबर के जीवन की विशेषताएँ रहीं हैं। कई बार फरगाना हाथ से गया, कई बार समरकन्द, खुरासान, बुखारा हाथ में आये। अंत में इसे अपने बाहुबल से प्राप्त विशाल राज्य को त्यागना पड़ा। भारत पर इसने पाँच आक्रमण किए। अन्तिम युद्ध दिल्ली के सुलतान इब्राहीम लोदी और बाबर के बीच पानीपत के मैदान में २१ अप्रेल, १५२६ ईस्वी को हुआ, जिसने बाबर को दिल्ली का बादशाह बना दिया। १६ मार्च १५२७ में शनिवार को राणा सांगा को पराजित करके बाबर ने गाज़ी की उपाधि धारण की और मुग़ल साम्राज्य की बुनियाद डाली। २६ दिसम्बर १५३० ईस्वी को आगरा में इसकी मृत्यु हुई। बाबर वीर योद्धा, साहसी, कुशल सेनापति, योग्य शासक, कला प्रिय, लेखक और कवि था। धार्मिक रूप में भी उदार था।

बीजापुर—परि, पृ० ११२

अन्तिम बहमनी बादशाह महमूद शाह की मृत्यु (१५१८ ई०) के बाद बहमनी राज्य पाँच भागों में बँट गया : बरार में इमाद शाही, अहमदनगर में निज़ामशाही, बीजापुर में आदिलशाही, गोलकुण्डा में कुतुबशाही और बीदर में बरीदशाही की स्थापना हो गई। महमूदशाह के मंत्री महमूद गावाँ के खरीदे हुए गुलाम यूसुफ़ आदिल खाँ ने, जो गावाँ की कृपा से ऊँचे पद पर पहुँच गया था, बीजापुर की स्वाधीनता की घोषणा कर दी। पाँचों राज्यों में बीजापुर सबसे बड़ा राज्य था और इसके कई बादशाह भी अच्छे प्रशासक, वीर, योद्धा और कुशल शासक हुए। इसके पश्चिम में अंरब सागर हनोवर से चौल दभोलनगर तक, उत्तर में अहमदनगर, दक्षिण में विजयनगर पूर्व में बीदर राज्य था। शिवाजी के पिता शाह जी को यहाँ जागीर मिली हुई थी। प्रधान सेनापति मुस्तफ़ा ने उन्हें बन्दी बना कर जागीर छीन ली, जो कुछ दिन बाद लौटा दी गई थी। शिवाजी की योजना इसी में प्रारम्भ हुई और तोरण, रायगढ़, सिंहगढ़, पुरन्धर, कोनडण के दुर्ग हस्तगत किये। सन् १६८६ ईस्वी में औरंगज़ेब ने बीजापुर को मुगल-साम्राज्य में मिला लिया और आदिलशाही वंश के राज्य का अंत कर दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्मपुत्र—नप, पृ० ९४

यह नदी हिमालय में स्थित मानसरोवर के पास से निकलती है और घाटियों के बीच से बहती हुई उत्तरपूर्वी सीमा के पास आसाम में प्रवेश करती है। पूर्वी पाकिस्तान में बहती हुई गंगा में आ मिलती है। इसकी लम्बाई २९०० क्लोमीटर है। बहुत तेज़ तथा वक्र गति से बहने के कारण इसे साँपू भी कहते हैं। जब कभी पर्वतों पर बहुत वर्षा हो जाती है, तो इसमें बाढ़ आ जाती है, जिससे असाम प्रदेश को जान-माल की बहुत हानि उठानी पड़ती है। प्राचीन साहित्य में इसे लोहित्य या लौहित्य भी कहा गया है।

ब्रह्मानन्द—अना, पृ० १७

इनका नाम राखाल चन्द्र घोष था। इन का जन्म बसीरहाट (चौबीस पर्गना) में १८६३ ईस्वी में हुआ। इनके पिता एक सम्पन्न ज़मीदार थे। स्वामी राम कृष्ण के विषय में इन्होंने अपने मनोमोहन मित्रा से सुना और उनके दर्शन के लालायित होकर १८८० में स्वामी रामकृष्ण से भेंट की। तब से बराबर रामकृष्ण की सेवा में रहने लगे। इनके विषय में परमहंस ने एक बार कहा था कि राखाल के मिलने से पहले एक दिन स्वप्न में माँ काली ने मेरी गोद में बच्चा दिया और कहा कि यह तेरा पुत्र है। एक बार एक स्वप्न भी उन्होंने देखा कि एक सरोवर के एक खिले कमल पर कृष्ण खड़े हैं और उन्हीं के पास खड़ा राखाल उन की ओर आनन्द-विस्मित हो ताक रहा है। राखाल से परमहंस को इतनी ममता थी कि जब यह एक बार वृन्दावन गये, परमहंस इन के विरह में रोये थे। रामकृष्ण के स्वर्गवास के बाद यह भी संन्यासी हो गये और स्वामी ब्रह्मानन्द बन गये।

भ

भक्ति—अना, पृ० ५८

भक्ति शब्द भज् धातु से बना है। इस का अर्थ है भजना। कीर्तन, स्मरण, वन्दन, स्तुति, प्रार्थना, अर्चन, श्रवण, आत्मनिवेदन-सभी कुछ "भजना" के अन्तर्गत हैं। पाराशर पुत्र व्यास ने पूजादि में अनुराग को और गर्ग ने कथादि में अनुरक्ति को भक्ति बताया है। नारद भक्ति को परमप्रेमरूपा और अमृतस्वरूपा कहते हैं। इसे प्राप्त कर मनुष्य सिद्ध अमर और तृप्त हो जाता है। उपासना (उप=पास; आसन=बैठना) को भी भक्ति कहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जा सकता है। भगवान के समीप बैठ कर उसका चिन्तन, उसके अनुग्रह और महत्त्व का ध्यान, उसकी सर्व शक्तिमत्ता पर आस्था, सामीप्य की आनन्दानुभूति आदि भी भक्ति है। भगवान के चरणों में बिना शर्त निष्काम और निस्स्वार्थ आत्म समर्पण या पूर्ण प्रपत्ति ही भक्ति है। आचार्य शुक्ल ने धर्म की रसात्मक अनुभूति को भक्ति बताया है। भगवान के साथ निश्छल अडिग भावात्मक सम्बधानुभूति को भी भक्ति कहा जा सकता है। शास्त्रकारों ने श्रवण, कीर्तन, स्मरण, अर्चन, पादसेवन, वन्दन, दास्य, सख्य और आत्मनिवेदन को नवधा भक्ति का नाम दिया है। वैष्णव शास्त्रकारों ने पाँच प्रकार की रति मान कर भक्ति को भी पाँच प्रकारों में बाँटा है—शांत, प्रीति, सख्य, वात्सल्य और माधुर्य। श्री चैतन्य महाप्रभु के शिष्य रूप गोस्वामी ने "भक्ति रसामृत सिंधु" में भक्ति के दो भेद माने हैं गौणी और परा। गौणी के दो भेद: वैधी और रागानुगा। वैधी शास्त्रोक्त विधिनिषेध का पालन करते हुए भक्ति करना जैसे तुलसी की भक्ति। रागानुगा=प्रेम प्रधान रागानुगा भी कामरूपा और सम्बंध रूपा दो प्रकार की होती है। और सम्बंध रूपा के चार प्रकार हैं—दास्य, सख्य, वात्सल्य और दाम्पत्य। कामरूपा भक्ति गोपियों की, दाम्पत्यरूपा राधा की, वात्सल्य रूपा यशोदा की, सख्य रूपा उद्धव श्रीदामा की, दास्य रूपा तुलसी कबीर आदि की। रागानुगा भक्ति का एक और भी रूप है; जिसे रागात्मिका कहा जाता है। गोपियों या राधा का अभिमान करने वाले या निज को राधा या गोपी मान कर माधुर्यानुभूति करने वालों की भक्ति का रागात्मिका कहा जाता है। कर्म, ज्ञान, योग और भक्ति भगवान को प्राप्त करने के ये चार मार्ग हैं। भक्ति इन सबमें सहज और सरल मार्ग हैं। भक्ति को छोड़ तीनों मार्ग कष्ट सांध्य हैं, क्योंकि इनमें कठिन बौद्धिक और दैहिक साधना करनी पड़ती है। भक्ति के लिये केवल अनुभूति और आत्म-समर्पण चाहिए। इसीलिये जितना प्रचार भक्ति का हुआ, उतना अन्य साधनाओं का नहीं।

भादों—

भाद्रपद—सावन के बाद और क्वार से पहले आने वाला एक भारतीय महीना। इसमें खूब वर्षा होती है। हवा रुक जाने से कभी-कभी असह्य गर्मी और घुटन होती है। धूप भी ऐसी तीक्ष्ण और जलती हुई लगती है, जैसे चिंगारी। कहते हैं, इस मास की तपन और घुटन के कारण ही मृग काले पड़ जाते हैं। इसी महीने की कृष्णपक्ष की अष्टमी को कृष्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का जन्म हुआ माना जाता है। इसका समय अगस्त के उत्तरार्ध से सितम्बर के पूर्वार्ध तक माना जा सकता है।

भीमार्जुन—अना, पृ० ५८

भीम और अर्जुन। भीम युधिष्ठिर से छोटा और अर्जुन से बड़ा, कुन्ती के गर्भ से उत्पन्न पाण्डु का पुत्र। यह अत्यन्त बलशाली, पराक्रमी, वीर और उद्धत स्वभाव का मनुष्य था। इसे धीरोद्धत नायक कहा जा सकता है। इसने हिडम्बा नामक राक्षस-कन्या से विवाह किया था, जिसके गर्भ से इसका घटोत्कच नामक पुत्र हुआ। यह कर्ण के बाण से मारा गया। अर्जुन के बाद महाभारत युद्ध के पाण्डव योद्धाओं में भीम का ही नाम आता है। द्रौपदी के चीरहरण के समय इसने प्रतिज्ञा की थी कि जिन खुले केशों को पकड़ कर दुश्शासन द्रौपदी को घसीटता हुआ, राज सभा में लाया है, दुश्शासन के हृदय के रक्त से द्रौपदी के वे खुले केश सींचूंगा और उसके हृदय का रक्त पिऊँगा। द्रौपदी का अपमान करते हुए जिस जाँघ पर बैठने का अश्लील प्रस्ताव द्रौपदी से दुर्योधन ने किया था, उसे अपनी गदा के भीषण प्रहार से चूर-चूर कर अपमान का प्रतिशोध लेने की प्रतिज्ञा भी भीम ने की। दोनों ही प्रतिज्ञाएँ इस ने पूरी कर दिखाईं।

अर्जुन पाण्डवों में तीसरा, महाभारत युद्ध का नायक। महाभारत की अधिकतम घटनाएँ अर्जुन से सम्बद्ध हैं। अपने युग का सर्वोच्च धनुर्धर और योद्धा अर्जुन ही है, इसे ही युद्ध-विजय का श्रेय प्राप्त है। प्रथम बनवास काल में द्रौपदी स्वयंवर में तेल से भरे पात्र में ऊपर घूमती मछली की आँख वेंध कर इसने द्रौपदी को प्राप्त किया, जो कुन्ती के अनजान आशीर्वाद के कारण पाँचों की पत्नी बनी। कृष्ण की बहन सुभद्रा से भी इसका विवाह हुआ, जिसके गर्भ से अभिमन्यु उत्पन्न हुआ। अभिमन्यु द्रोणाचार्य द्वारा निर्मित व्यूह में फँस कर मारा गया। जयद्रथ ने उसका सिर काटा था, इस लिये अर्जुन ने दूसरे दिन सूर्यास्त से पूर्व उसका बध करने की प्रतिज्ञा निभाई। कर्ण, द्रोणाचार्य, भीष्म आदि सभी महारथी अर्जुन के गाण्डीव से मारे गये। अपने युग के सर्वाधिक कुशल राजनीतिज्ञ, क्रान्तिकारी समाज-सुधारक और दार्शनिक श्री कृष्ण इसके सारथी थे। अर्जुन को मोह होने पर कृष्ण ने गीता का उपदेश दिया। इस तरह गीता के प्रादुर्भाव का श्रेय अर्जुन को भी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्योधन के मामा शकुनि द्वारा छल से जुए में सब कुछ हार कर और द्रौपदी को वापस पाने के बदले में विराट के यहाँ पाण्डव जब तेरहवें वर्ष का अज्ञातवास कर रहे थे, उस समय भीम ने विराट की रसोई बनाने का काम लिया था और अर्जुन ने वृहन्नला बनकर विराट-कन्या उत्तरा को नाच-गान सिखाया था। बाद में उत्तरा का विवाह अभिमन्यु से हुआ।

भीष्म—अना, पृ० ५८

इनका नाम देवव्रत था। गंगा के गर्भ से उत्पन्न पुरुवंशी महाराज शान्तनु के सब से बड़े पुत्र थे। अपने पिता शान्तनु के लिये इन्होंने आजीवन ब्रह्मचारी रहने की प्रतिज्ञा की थी, इसलिये (भीषण प्रतिज्ञा करनें के कारण) यह भीष्म कहलाये। आठ वसुओं को किसी अपराध वश शाप मिला कि वे मर्त्यलोक में जन्म लें। उनको शाप मुक्त करने के लिये गंगा मर्त्यलोक में आई। गंगा तट पर शिकार करते हुए शांतनु से उसकी भेंट हुई। शांतनु ने विवाह-प्रस्ताव किया तो इस शर्त पर कि वह कुछ भी करे, शांतनु उसमें बाधक न होगा, उसने इनसे विवाह कर लिया। लगातार सात पुत्रों को वह मार कर गंगा में फेंकती रही। जब आठवें पुत्र को वह मारने चली तो शांतनु ने ऐसा न करने दिया। शर्त तोड़ने के कारण वह स्वर्गलोक में वापस चली गई। इसी आठवें पुत्र का नाम देवव्रत रखा गया। कुछ दिन बाद गंगा तट पर नाव चलाने वाली एक धीवर कन्या सत्यवती पर वह मोहित हुए। उस के पिता ने यह शर्त रखी कि सत्यवती का पुत्र ही राज्याधिकारी बने, तब विवाह हो सकता है। इस पर देवव्रत ने आजन्म अविवाहित रहने की प्रतिज्ञा की। सत्यवती से विचित्र वीर्य और चित्रांगद दो पुत्र उत्पन्न हुए। उनके विवाह के लिये काशी-नरेश की तीन कुमारियों को यह उठा लाये। अम्बिका और अम्बालिका की शादी तो दो भाइयों से करा दी। अम्बा को उस के आकांक्षी प्रेमी चेदि नरेश ने स्वीकार न किया।

अपमानित कर उसने तपस्या करके भीष्म के वध का वर माँगा। वह द्रुपद के यहाँ शिखण्डी के रूप में जन्मी। महाभारत के युद्ध में शिखण्डी से युद्ध करने में अपना अपमान समझ कर भीष्म ने धनुषवाण फेंक दिया। अर्जुन ने शिखण्डी के पीछे खड़ा होकर बाण चलाया और भीष्म धराशायी हो गये। यह इतने भयंकर योद्धा थे कि जब तक कौरवों के सेनाध्यक्ष रहे, पाण्डवों को विजय की आशा न रही। इनके द्वारा पाण्डव सेना का विनाश देखकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृष्ण भी शस्त्र ग्रहण न करने की प्रतिज्ञा भूल कर रथ का पहिया उठा कर इनपर आक्रमण करने के लिये झपटे थे। आजीवन ब्रह्मचारी रहने के कारण इन्हें इच्छा मरण की शक्ति प्राप्त थी। सूर्य के उत्तरायण होने पर इच्छानुसार इन्होंने युद्ध समाप्त हो जाने पर प्राण त्याग किया। प्राण त्याग से पूर्व युधिष्ठिर ने इनसे धर्म और राजनीति का उपदेश ग्रहण किया। भीष्म अत्यन्त रणकुशल, शक्तिशाली योद्धा, नीति धर्म आदि के परम ज्ञाता, महान् त्यागी के रूप में भारतीय जनमानस में प्रतिष्ठित हैं। इनकी दृढ़ प्रतिज्ञा के कारण आज भी किसी भयंकर अचल असाधरण प्रतिज्ञा को भीष्म प्रतिज्ञा कहा जाता है।

म

मंगोलिया—नप, पृ० ९२

चंगेज़, हलाकू, तैमूर आक्रमणकारियों और विजेताओं के कारण—विशेष कर १३वीं शताब्दी में चंगेज़ के विशालसाम्राज्य निर्माण के कारण मंगोलिया महत्त्वपूर्ण स्थान पा गया। लेकिन उस मंगोलिया की सीमाओं का निश्चित ज्ञान नहीं। यह देश मध्य एशिया में था। अब जो देश "मंगोलियन पीपल्स रिपब्लिक" कहलाता है, वह ऊपर से साइबेरिया और नीचे चीन से घिरा है। यह आउटर मंगोलिया कहलाता है, इन्नर मंगोलिया चीन में विलीन हो गया। १६९१ ई० में मंगोलिया चीनी साम्राज्य में मिलाया गया। १९११ में चीनी-क्रान्ति के समय इसने चीन से स्वतंत्र होने की घोषणा की। १९४५ में रूसी सहायता से पूर्ण स्वाधीन हो गया। इस का दक्षिणी भाग गोबी के मरुस्थल के कारण उजाड़ है। ऊँट, घोड़े, भेड़, बकरी यहाँ की प्रमुख सम्पत्ति है। भेड़ सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। क्योंकि यह पीने को दूध, खाने को पनीर और माँस, पहनने को ऊन देती है। अधिकतर निवासी गडरिये और पशुपालक घुमक्कड़ और डेरों में रहने वाले हैं। रूसी कारीगरों के द्वारा यहाँ खेती कराने, उद्योग धंधे आरम्भ करने, नागरिक जीवन की स्थापना करने का प्रयत्न किया जा रहा है। मंगोलिया का उत्तरी भाग आबाद है—अधिकतर नगर उसी भाग में हैं। यूलान-बटोर इसकी राजधानी है।

मण्डन मिश्र—अप, पृ० १७१

इसका समय ६८० से ७२५ वर्ष ईसापश्चात् माना जाता है। कोई इसे कुमारिल भट्ट का शिष्य बताता है, कोई उस का साला। यह जबलपुर के पास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नर्मदा नदी के तट पर स्थित महिष्मती नामक नगरी के निवासी थे। इनका वास्तविक नाम विश्वरूप था; पर शास्त्रार्थ में अजेय होने के कारण इनको मण्डन मिश्र कहा जाता था। कहा जाता है, पहले यह बौद्ध थे। शंकराचार्य से परास्त होकर उन्हीं से संन्यास की दीक्षा ली। संन्यासी बनकर इनका नाम सुरेश्वराचार्य हुआ। वृहदारण्यक उपनिषद् पर इन्होंने तात्पर्यवार्त्तिक भी लिखी। पीछे यह शृंगेरी मठ के अधिपति भी बनाये गये थे। जैमिनी के पूर्वमीमांसा और वेदान्तसूत्र पर इनकी वार्त्तिक और भाष्य प्रसिद्ध हैं। इनके प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं – विधिविवेक, भावनाविवेक, विभ्रमविवेक, मीमांसा-मुकुरमणिका।

महात्मा—नप, पृ० ७८

मोहनदास करमचंद गांधी, महात्मा गांधी, महात्माजी आदि नामों से विख्यात। श्री उत्तमचंद गांधी या ओता गांधी पोरबन्दर के दीवान थे। दिवानी त्यागकर जूनागढ़ आ गये। दो विवाह किये—पहली से चार और दूसरी से दो लड़के। दूसरी पत्नी से दूसरा लड़का हुआ करमचंद या काबा। यह पोरबन्दर राजकोट, बीकानेर के दीवान और राजस्थानी कोर्ट के सदस्य रहे। इन्होंने चार विवाह किए। चौथी पत्नी पुतलीबाई से एक लड़की और तीन लड़के हुए—सबसे छोटे मोहनदास। गांधी जी का जन्म २ अक्टूबर १८६९ को पोरबन्दर में हुआ। ६ वर्ष से १६ वर्ष तक पोरबन्दर में ही शिक्षा प्राप्त करते हुए १८८७ में मेट्रिक पास की। कुछ महीने सांवल दास कॉलिज भावनगर में पढ़ कर वैरिस्ट्री पढ़ने इंगलैण्ड चले गये।

गांधी जी मध्यमवर्ग के विद्यार्थी थे। भूतों, चोरों, साँपों से भयभीत रहने वाले। अत्यन्त संकोची, लजीले, हँसीमज़ाक से भागने वाले। पतले दुबले निर्बल होने और अंग्रेज़ों के समान सबल बनने और उनसे देश को स्वाधीन करने की सामर्थ्य प्राप्त करने की इच्छा से एक मुसलमान मित्र के प्रभाव में आकर पांच-छह बार मास भी खाया, वैष्णव घर में उत्पन्न होने और माँ के धार्मिक प्रभाव के कारण गांधी जी आरम्भ से धार्मिक संस्कारों से सम्पन्न हो गये। इंगलैण्ड जाने से पूर्व माँ के सामने सदा निरामिष रहने का प्रण किया, जो विषमतम परिस्थिति में भी निभाया। भयालु, स्वभाव होने के कारण बचपन से ही राम नाम का आश्रय लिया, जो जीवनभर अवलम्ब बना रहा।

वैरिस्ट्री पास करके कुछ दिन बम्बई पोरबन्दर आदि में वकालत की और फिर एक मुकदमे के सिलसिले में अफ़रीका चले गये। वहीं गांधीजी में नवीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेतृत्व शक्ति, देशभक्ति की प्रज्ज्वलित ज्वाला की चिंगारी, भारतीय दासता और विवशता की चुभीली ग्लानि तथा राष्ट्रीय स्वाधीनता का अदम्य संकल्प जागा। वहाँ से लौट कर वह अनेक राष्ट्रीय नेताओं से मिले और शीघ्र ही सभी नेताओं का ध्यान आकर्षित किया। एक ओर आध्यात्मिक साधना और दूसरी ओर राष्ट्रीय नेतृत्व दोनों ही क्षेत्रों में गाँधी जी तीव्रता से अग्रसर होने लगे। सन् १९०६ में गाँधी जी ने ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया और १९१५ में अहमदाबाद में साबरमती के तट पर सत्याग्रह आश्रम सेवाश्रम खोला। तबसे गाँधीजी सपरिवार एक संत का जीवन व्यतीत करते हुए वहीं रहने लगे। आश्रम में रहकर देशभर को राष्ट्रीय-चेतना देने लगे। अहिंसा, सत्य, सविनय अवज्ञा, सत्याग्रह, कष्टसहिष्णुता, बलिदान, आत्म-संयम आदि से देशभर को दीक्षित करने लगे। १९१८ तक गाँधीजी देश के महान् नेता बन गये और १९२० से तो यह सर्वमान्य नेता, काँग्रेस के एक मात्र अधिनायक हो गये। खिलाफ़त, स्वराज्य, नमक़ सत्याग्रह, पिकेटिंग, विदेशी वस्तु-बहिष्कार, चरखा-प्रचार, पूर्णस्वाधीनता, भारत छोड़ो—सभी आन्दोलन गाँधीजी के नेतृत्व में हुए। अनेक बार जेल गये। आत्मसुधार, राष्ट्रीय एकता, समाज कल्याण के लिये अनेक अनशन किये। १९२४ में हिन्दू मुस्लिम एकता के लिये २१ दिन, २० सितम्बर, १९३२ को हरिजन-सवर्णों की अखण्डता के लिये आमरण, और ९ फरवरी, १९४३ को २१ दिन तक उपवास किये। गाँधी जी के कारण ही नर्मदल वाले कांग्रेस छोड़ भागे। गाँधीजी ने ही कांग्रेस को देशव्यापी शक्ति शाली लोक संघटन का स्वरूप प्रदान किया।

गाँधीजी का प्रभाव देश के हर क्षेत्र में व्याप्त है। धर्म, समाज, अर्थ-शास्त्र, चरित्र-निर्माण, साहित्य, आचार-व्यवहार, संस्कृति आदि सभी क्षेत्र गाँधी जी के ऋणी हैं। अपने युग के सबसे महान् मानव गाँधी जी थे—अपने जीवन में जो काम गाँधीजी ने किया और जितना मान पाया, इतना सम्भवतः इतिहास में किसी व्यक्ति को नहीं मिला। ३० जनवरी, १९४८ को नाथू राम गोडसे ने गाँधी जी को गोली से मार डाला। इनकी मृत्यु पर जार्ज बर्नार्डशा ने कहा था—"बहुत अधिक अच्छा होना भी कितना ख़तरनाक है"। आईंस्टाइन ने कहा था—"आने वाली पीढ़ियाँ कठिनता से यह विश्वास करेंगी कि हाड़माँस के शरीर में ऐसा कोई व्यक्ति धरती पर विचरण करता था"।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानसरोवर—नप, पृ० ९३

तिब्बत में स्थित एक बड़ी झील। कहा जाता है, यह कमलों से भरी रहती है और इसपर अनेक हंस रहते हैं। हिमाच्छित पर्वतों के मध्य होने के कारण इस का जल मोती के समान स्वच्छ है। इसी लिये यह समझा जाने लगा कि यहाँ पर रहने वाले हंस मोती चुगते हैं। मानसरोवर का हमारी संस्कृति और धार्मिक आस्था से भावात्मक संबंध है। अनेक व्यक्ति मानसरोवर की यात्रा करते हैं। मानसरोवर केवल एक झील ही नहीं रह गई है, बल्कि अब इसका प्रतीकात्मक और भावात्मक स्वरूप स्थापित हो गया है। आध्यात्मिक और रहस्यात्मक साधना-क्षेत्र में मन, हृदय या आत्मा का वाचक बन गया है, हंसका अर्थ है परम ज्ञानी, निर्विकार साधक और मोती का अर्थ है निर्मल शुद्ध ज्ञान या आत्मा की आनन्दावस्था। मानसरोवर के तट पर निवास करने वाले हंस, सरोवर में प्रवेश कर गोते लगाकर मोती निकाल कर खाते हैं, अध्यात्म साधक या योगी आत्मा में लीन हो, अन्तर्मुखी ध्यानावस्थित होकर, शुद्ध ज्ञान या निर्विकार आनन्द प्राप्त करता है। कामायनी में प्रसाद ने पद्मावत में जायसी ने भौतिक और आध्यात्मिक तथा सन्तों ने आध्यात्मिक अर्थों में इसका प्रयोग किया है।

मार्लबरो—नप, पृ० १४

ड्यूक आॅफ मार्लबरो का नाम था जाॅन चर्चिल। यह १६५० ईस्वी में जन्मा और १७२२ में मरा। यह इंगलैण्ड का प्रधान सेनापति था, इसने इंगलैण्ड के राजा जेम्स द्वितीय की सेनाओं को त्याग कर आॅरेंज के विलियम का समर्थन किया, जब पार्लियामेण्ट ने १६८८ ईस्वी में विलियम को राजा बनने के लिये निमंत्रित किया। विलियम द्वारा यह मार्लबरो का अर्ल बनाया गया और सेनाध्यक्ष नियुक्त किया गया। विलियम की मृत्यु के बाद जब राजकुमारी एनी इंगलैण्ड की रानी बनी तब इसे इंगलैण्ड तथा योरोपीय क्षेत्रों का कमाण्ड दे दिया गया। स्पेन के सिंहासन के लिए गृहसंघर्ष में इसने अनेक युद्ध जीते। इस युद्ध के बाद इंगलैण्ड में इसका प्रभाव घटता गया। यह अपने पद से हटा दिया गया। इसकी सेवाओं के लिये इसे आॅक्सफोर्डशायर तथा ब्लू में सम्पत्ति प्रदान की गई और १७०५ ईस्वी में इसके लिये ब्लू में एक महल बना दिया गया। इसके चरित्र तथा इरादों की इंगलैण्ड में काफी आलोचना की गई; लेकिन इसकी सैनिक योग्यता पर किसी को सन्देह नहीं हो सकता। यहां यह भी जान लेना आवश्यक है कि यह सर विण्टसन चर्चिल का पूर्व पुरुष था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिस्र—अप, पृ० १७२

अफरीका महाद्वीप का उत्तर-पूर्वी एक देश। इसके उत्तर में भूमध्य सागर और पूर्व में लाल सागर है। नील नदी इसके मैदान को सींचती है। अब यह देश ईजिप्ट कहलाता है। संसार के उन प्राचीन देशों में से है, जिनमें सभ्यता-संस्कृति का उदय हुआ। प्राचीन राजाओं के बनवाये हुए पिरामिड आज भी संसार के महान् आश्चर्यों में गिने जाते हैं। सन १९५८ ईस्वी में ईजिप्ट में क्रान्ति हुई और राजसत्ता समाप्त कर दी गई। जनरल नगीब इसका प्रधान बना। उसे अपदस्थ करके कर्नल नासिर इसके प्रधान बने। और सोरिया भी ईजिप्ट के साथ सम्मिलित होकर अरब गणराज्य वन गया। नील के मुहाने पर स्थित काहिरा अरब गणराज्य की राजधानी है।

मीरा—नप, पृ० ७३

मेड़तिया के राठौर रत्नसिंह की पुत्री, रावदूदाजी की पौत्री और जोधपुर बसाने वाले राव जोधाजी की प्रपौत्री थी। जन्म १५७३ वि०, स्थान चौकड़ी नामक गाँव। विवाह उदयपुर के महाराणा-कुमार भोजराज के साथ हुआ। थोड़े दिन बाद ही विधवा हो गई। मृत्यु द्वारका में संवत १६०३ वि० में। कहते हैं, बाल्यावास्था से यह कृष्णभक्ति में लीन रहती थी। विधवा होने के बाद तो पूर्ण स्वतंत्र हो गई और संतों की संगति और वृन्दावन तथा द्वारका के मंदिरों में कृष्ण प्रेम के भजन गाकर जीवन बिताने लगी। यह प्रसिद्ध भक्तों में गिनी जाती हैं। इसकी भक्ति माधुर्य भाव की है, जिसमें निर्गुण सन्तों की रहस्यात्मकता भी पाई जाती हैं। इनके भक्ति विषयक गीत समस्त हिन्दी क्षेत्र में वहुत प्रेम और तन्मयता से गाये जाते हैं।

मुहम्मद—अप, पृ० १७२

इस्लाम धर्म के प्रवर्तक। जन्म मक्का (अरब) में, सन् ५७० ईस्वी और देहावसान सन् ६३२ ईस्वी में। यह आरम्भ से ईश्वर भक्ति और चिन्तन में लीन रहते थे। मक्के की पहाड़ी गुफा में जाकर साधना किया करते थे। कहते हैं, कुरान शरीफ की अनेक आयतें, इन पर वहीं प्रकट हुईं। यह एक व्यापारी की विधवा हदीसा के यहाँ प्रबंधक या मुनीम थे। इनकी प्रतिभा, कर्तव्य परायणता, प्रबंध पटुता, सादगी और ईमानदारी पर प्रसन्न होकर उसने इनसे विवाह कर लिया। यह विवाह संबंध धर्मप्रचार में भी बड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहायक सिद्ध हुआ, क्योंकि हदीसा का सारा धन मुहम्मद साहब को मिल गया। एक अरबी सरदार अबूबकर की लड़की आयशा से भी इन्होंने विवाह किया। इनकी तीसरी पत्नी का नाम था। मुहम्मद साहब के बाद अबूबकर पहला खलीफ़ा बना। मुहम्मद साहब की एक लड़की फ़ातिमा हुई। इस का विवाह मुहम्मद साहब के भतीजे अली से हुआ, जो चौथा खलीफ़ा बनाया गया।

ज्यों-ज्यों इस्लाम का प्रचार बढ़ता गया, त्यों-त्यों इसका विरोध भी तीव्र होता गया। एक समय ऐसा भी आया, जब मुहम्मद साहब को मक्का त्याग कर मदीना जाना पड़ा। इसी ६२२ ईस्वी से मुसलमानों में हिजरी सन का आरम्भ होता है। सन् ६२९ ईस्वी में यह अपने साथियों समेत फिर मक्का आ गये और धर्म-प्रचार तथा भक्ति-साधना में लीन रहने लगे। धर्म-प्रचार के लिये कई बार इन्होंने युद्ध का नेतृत्व भी किया और घायल हुए। इनकी मृत्यु के बाद खलीफ़ाओं ने इस्लाम-धर्म फैलाने के लिये आस-पास के देशों पर आक्रमण करने आरम्भ कर दिये। दूसरे खलीफ़ा उमर ने दस वर्ष (६३४—४४) में ही सीरिया, मिस्र, ईरान आदि देशों को जीत कर मुसलमान बना लिया। सौ वर्ष के भीतर-भीतर एशिया, अफ़रीका और योरुप के अनेक देशों में इस्लाम स्वीकार कर लिया गया और अनेक देश पूर्णरूप से इस्लामी शासन में आ गये। मुहम्मद साहब के उपदेशों का संकलन कुरान शरीफ़ में है।

मुहम्मद बिन कासिम—अप, पृ० १७३

इसका पूरा नाम इमामुद्दीन मुहम्मद बिन कासिम था। यह ईराक के सूबेदार का भतीजा और दामाद था। सन् ७११ ईस्वी की शरद ऋतु में इसने ६००० घोड़े ६००० ऊँट और ३००० लद्दू पशुओं के साथ सिंध के राजा दाहिर पर आक्रमण किया। इस समय इसकी अवस्था सत्रह वर्ष की थी। आन्तरिक कलह और सेनापति के विश्वासघात के कारण सिंध की राजधानी देवल (कराची) का पतन हो गया। दाहिर युद्ध में मारा गया। उसके पुत्र जयसिंह ने कुछ समय तक दुर्ग की रक्षा की; पर अन्त में वह भी पराजित हुआ और मारा गया। लूट का बहुत-सा धन तथा अनेक स्त्रियाँ हज्जाज (अथवा खलीफ़ा) के पास भेंट के रूप में भेजी गईं। इनमें दाहिर की दो लड़कियाँ सूरज और परमाल भी थीं, जिनके कहने पर कि उन्हें कासिम ने भ्रष्ट कर दिया है, खलीफा ने कासिम को खाल में जीवित सिलवा दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूसा—अप, पृ० १७२

यहूदी या मुसाईमत के प्रवर्तक। कहा जाता है, यह अपनी माता द्वारा नील नदी या किसी तालाब में फेंक दिये गये थे और ईजिप्ट (मिस्र) के तात्कालिक सम्राट की बहन द्वारा पालित-पोषित हुए। बड़ा होने पर इनको मालूम हुआ कि यह किसी यहूदी माता से उत्पन्न हैं। यहूदी सम्प्रदाय, उस समय सम्राट के अत्याचारों से पीड़ित और दास के रूप में जीवन बिता रहा था। इनके हृदय पर इसका गहरा आघात लगा और यह राजमहल त्याग कर भगवत साधना के लिये निकल पड़े। साधना समाप्त होने पर पूर्ण ज्ञान लाभ कर यह पुनः राजधानी में आए। अपनी दैवीशक्ति का प्रदर्शन करके यहूदी-सम्प्रदाय को उसकी दासता से मुक्त कराया। अपने अनुयायियों को लेकर यह लालसागर से पूर्व की धरती पर बस गये। वहीं दूसरे महायुद्ध के बाद इसराइली राज्य स्थापित किया गया है। तेल-अबीब इसकी राजधानी है—यह नगर यहूदियों का प्राचीन तीर्थ स्थान है। मूसा ने धर्म के दसमुख्य सिद्धान्त बनाए थे, जो "टैन कमैण्डमैण्ट्स" [दस-आदेश] कहलाते हैं। मूसाइयों की धर्मपुस्तक हेब्रू भाषा में है। यही भाषा मूसा के प्रचार की भाषा थी। मुसाईधर्म संसार के प्राचीनतम धर्मों में से है। मूसा के सिद्धान्तों का प्रभाव ईसाई और मुसलमान धर्म पर भी पड़ा।

मोतीलाल नेहरू—नप, पृ० ७७

इनके पिता गंगाधर नेहरू ग़दरसे पहले दिल्लीके कोतवाल थे। ग़दर में इनकी हालत बिगड़ गई और यह आगरा आ बसे। वहीं इन की मृत्यु के तीन महीने बाद ६ मई, १८६१ ईस्वी को मोतीलाल का जन्म हुआ। आगरा में अपने चाचा की देख रेख में इनकी शिक्षा हुई। बी० ए० की परीक्षा बीच में ही छोड़ कर इन्होंने वकालतकी परीक्षा सर्वप्रथम स्थान लेकर पास की। कानपुर में तीन वर्ष तक वकालत कर के यह इलाहबाद हाईकोर्ट में वकालत करने लगे। यहाँ आकर इन्हें आशातीत यश और धन प्राप्त हुआ। इनका जीवन बिल्कुल विदेशी और विलासपूर्ण था। कांग्रेस में सम्मिलित होने के बाद अत्यन्त त्यागपूर्ण जीवन बिताया। सन् १९१९ में दिसम्बर के अमृतसर वाले कांग्रेसअधिवेशन के सभापति बने। अनेक बार स्वराज्य और खिलाफ़त आन्दोलन में जेल भी गये। डाक्टर अंसारी की अध्यक्षता में इन्होंने औपनिवेशिक स्वराज्य का एक संविधान भी तैयार किया, जिसे नेहरू-रिपोर्ट कहा जाता है। १९२८ में कांग्रेस के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिवेशन के यह फिर अध्यक्ष चुने गये, जिसमें यह रिपोर्ट स्वीकृत की गई। जवाहरलाल और विजयलक्ष्मी जैसी सन्तानें इन्होंने देश के अर्पित कर दीं। स्वराज्य-आन्दोलन में श्री मोतीलाल नेहरू का योगदान चिरस्मर्णीय रहेगा। कार्याधिक्य के कारण यह रोग शैय्या पर पड़ गये। लखनऊ में ६ फ़रवरी, १९३१ ईस्वी को इनका देहावसान हो गया।

य

योग—अना, पृ० ५८

योग का सामान्य अर्थ—सम्बन्ध, जोड़ना, अवसर, सम्पर्क, मिलाना, नियम विधान आदि। दर्शन-क्षेत्र में आत्मा परमात्मा के सम्बन्ध या मिलने को योग कहा जाता है। परमात्मा-आत्मा का सम्बन्ध स्थापित करने, इनको परस्पर जोड़ने मिलाने के साधन को भी योग कहा जाता है। तब इसका अर्थ होता है मार्ग, प्रणाली, ढंग, प्रयास, युक्ति आदि जैसे भक्तियोग (भक्तिमार्ग) ज्ञान-योग (ज्ञान-मार्ग), कर्मयोग (कर्म-मार्ग)। लेकिन योग का अर्थ महर्षि पतंजलि के योगसूत्र के अनुसार चित्तवृत्ति के निरोध और मोक्षप्राप्ति के साधन के रूप में रूढ़ हो गया है। भक्ति, ज्ञान, कर्म और योग ईश्वर या मोक्षप्राप्ति के साधन हैं। इस योग से तात्पर्य है पतंजलि द्वारा निरूपित योग, जिसका विवेचन योग-सूत्र में हुआ है। इसे राजयोग कहा जाता है। तांत्रिक साधना हठयोग है। हठयोग का सम्बन्ध अधिकतर शरीर-विकास और कायाकल्प से है और राजयोग का मुक्ति या मोक्ष से। जहां दोनों का समन्वय है, वहां हठयोग भी राजयोग का सोपान है। यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि—योग के आठ अंग हैं। यम के पांच अंग हैं—अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य। नियम भी पांच हैं—शोच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान। यम, नियम, आसन, प्राणायाम और प्रत्याहार वहिरंग और धारणा, ध्यान, समाधि अंतरंग साधन हैं। योगदर्शन कपिल-रचित सांख्य का अनुगामी बताया जाता है, केवल 'पुरुषतत्त्व' की उद्भावना पतंजलि की मौलिक कल्पना है। क्लेश, कर्म, विपाक और आशय से पुरुषविशेष ही ईश्वर है। इसलिए योगदर्शन को सेश्वर सांख्य कहा जाता है। भारतीय साधना में योग का इतना महत्त्व है कि सूर जैसे भक्त भी अष्टांग योग को भक्ति का साधन मानते हैं*।

*सूरसागर, १०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तांत्रिक हठयोग का प्रवर्तन हिन्दी में गोरखनाथ के द्वारा हुआ। विश्व-व्यापक महाकुण्डलिनी शक्ति, व्यक्ति में कुण्डलिनी रूप में रहता है। अग्निचक्र इसका निवास है। अग्निचक्र के ऊपर मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहट विशुद्धाख्य, आज्ञा और सहस्रसार चक्र हैं। सहस्रसार को शून्य या कैलाश भी कहते हैं। यहाँ निरन्तर अमृत टपकता रहता है। साधना द्वारा कुण्डलिनी को जगाकर इस चक्र तक ले जाना और अमृत पिलाना योगी का कर्तव्य है इड़ा पिंगला सुषुम्ना आदि ६२ नाड़ियाँ हैं। सुषुम्ना शाम्भवी शक्ति है। इसी के बीच से कुण्डलिनी ऊपर उठती है। उठने से शब्द होता है, जिसे नाद कहते हैं। नाद से प्रकाश होता है, जिसके प्रकट रूप को बिन्दु कहते हैं। कुण्डलिनी को जगाने के लिये धौति, वस्ति, नेति, त्राटक्; नौलि और कपाल-भानि क्रियाओं से शरीर को शुद्ध करना पड़ता है। इस के सिवा आसन, मुद्रा, प्राणायाम, ध्यान और समाधि आदि क्रियाएँ भी करनी पड़ती हैं। यह साधना आत्मा और देह को शुद्ध करती है। हठयोगी आत्मा या मन को शून्य में ले जाता है। वहाँ शिव से उसका एकाकार हो जाता है। एकाकार होने पर मोक्ष हो जाती है।

योगानन्द—अना, पृ० १७७

इनका नाम योगीन्द्र नाथ था। दक्षिणेश्वर के एक बहुत साधारण कट्टर ब्राह्मण परिवार में इनका जन्म हुआ। अपने पिता नवीनचन्द्रराय की सबसे बड़ी संतान थे। इसलिए परिवार इनसे आशा बांधे बैठा था कि पढ़ लिखकर यह घर की आर्थिक अवस्था सुधारने में सहायक होंगे। इसी प्रयास में यह अपने चाचा के पास कानपुर भी गए पर वहाँ नौकरी न मिली तो वापस आ गये। जब हाई स्कूल में पढ़ते थे तो (१८८२ ई० में) रानी रासमणि का बाग देखने गये। वहाँ स्वामी रामकृष्ण का उपदेश सुनने का अवसर मिला। यह धार्मिक वृत्ति के तो बचपन से थे ही, ईश्वर का रूप जानने और उसकी अनुभूति पाने की ओर भी जिज्ञासा बढ़ी। परमहंस के पास आना-जाना बढ़ा। इसी बीच मां-बाप ने इन की इच्छा के विरुद्ध इनका विवाह भी कर दिया। लेकिन इससे भी इनकी गतिविधियों में कोई अन्तर नहीं आया। परमहंस के स्वर्गवास के कुछ दिन पूर्व से यह उनकी सेवा में लग गये और बाद में संन्यासी हो गये और योगानन्द नाम से प्रसिद्ध हुए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

र

रवीन्द्र—अना, पृ ५१; नप, पृ० ७७

इनका जन्म ६ मई, १८६१ ईस्वी को कलकत्ते के अत्यन्त सम्भ्रांत परिवार में हुआ। इनके पिता देवेन्द्रनाथ ब्रह्मसमाजी थे और ज्ञान वैराग्य त्याग आदि के कारण महर्षि कहलाते थे। घर का वातावरण अत्यन्त सांस्कृतिक होने से शैशवावस्था में रवीन्द्रनाथ का कलाबोध, साहित्य-रचना-सामर्थ्य, काव्यानुभूति, स्वतंत्र चिन्तन उदबुद्ध हो चुके थे। इनकी शिक्षा अधिकतर घर पर ही हुई। रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने भारतीय संस्कृति कला और शिक्षा के प्रचारार्थ विश्वभारती शान्तिनिकेतन की स्थापना कलकत्ता से १०-१२ मील दूर बोलपुर में की। १९५१ ई० में इसे विश्वद्यालय बना दिया गया। इन को १९१३ में अपनी पुस्तक "गीतांजलि" पर विश्वविख्यात नोबल पुरस्कार मिला, जिससे इनकी ख्याति विश्वभर में फैल गई। इन्होंने अनेक बार चीन, जापान, रूस, अमरीका, इंगलेण्ड, फ्रांस, ईरान आदि देशों का भ्रमण किया और भारतीय संस्कृति, साहित्य और कला की जानकारी उन देशों को कराई। अपनी काव्यप्रतिभा के कारण यह विश्वकवि कहलाये। इनकी साहित्यिक उपलब्धियों के कारण इन पर लोगों को इतनी श्रद्धा है कि इन्हें गुरुदेव कहने में गौरव अनुभव किया जाता है। भारत का मस्तक इनकी रचनाओं से ऊँचा हुआ है। संसार की प्रत्येक भाषा में इनकी रचनाओं का अनुवाद हुआ। इन्होंने कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, कविता—सभी क्षेत्रों में रचना की; लेकिन कवि के रूप में सर्वोपरि रहे। यह न केवल सहित्य में बल्कि आकार में भी प्राचीन भारतीय ऋषि जैसे लगते थे। सन् १९४१ में श्री रवीन्द्रनाथ का स्वर्गवास हो गया।

राजर्षि, टण्डन – नप, पृ ७७

श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन विख्यात हिन्दी निर्माता तथा राष्ट्र-भक्त थे। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के संस्थापकों में से थे। हिन्दी की हिमायत के कारण कई बार इनका मतभेद अपने कांग्रेसी साथियों से भी हुआ। यह अत्यन्त त्यागी, सिद्धान्त के पक्के, धार्मिक-वृत्ति के आदमी थे। अनेक वर्षों तक उत्तर-प्रदेश विधान-सभा के स्पीकर रहे। अपनी अध्यक्षता के काल में इन्होंने प्रशंसनीय चरित्रवल, पक्षपातहीनता और कठोर अनुशासन का परिचय दिया। स्वाधीनता प्राप्ति के बाद यह पार्लियामेन्ट के सदस्य बने। सन १९४९ ईस्वी में बाबू पुरुषोत्तम दास टण्डन कांग्रेस-अधिवेशन के अध्यक्ष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुने गये। प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू से मतभेद हो जाने के कारण इन्हें अध्यक्ष-पद छोड़ना पड़ा; लेकिन यह अपने अटल सिद्धान्त से न झुके। कुछ दिन रोगी रहने के बाद दिल्ली में इनका स्वर्गवास हो गया।

राजसिंह—परि, पृ० २०२

यह महाराणा अमरसिंह के पुत्र, महाराणा प्रताप के पौत्र, मेवाड़ के महाराणा थे। यह अपने पूर्वजों के समान ही वीर और निर्भय योद्धा, जन्म-भूमि की स्वंतत्रा के रक्षक थे। महाराज जसवंतसिंह की मृत्यु के बाद जब औरंगज़ेब ने मारवाड़ को अपने साम्राज्य में मिलाने के दूषित इरादे से मारवाड़ पर आक्रमण किया तो महाराज राजसिंह ने जोधपुर के राठौरों की सहायता की। मुगल-सेनाओं के भीषण आक्रमण से इन्हें भी चित्तोड़ खाली कर पर्वतों में जाना पड़ा, लेकिन वहाँ से इन्होंने और मारवाड़ी सेना ने इतने भीषण और तीव्र आक्रमण किये कि मुगल सेना के छक्के छूट गये। उनकी भोजन सामग्री रास्ते में ही लूट ली और कितने ही दिन उसे भूखो मरना पड़ा। इनकी सहायता से ही राठौर लगभग तीस वर्ष तक विशाल सेनाओं का सामना करते रहे। राजसिंह और दुर्गादास राठौर के आघातों से औरंगज़ेब को काफ़ी क्षति पहुँची।

राधा—परि, पृ० ८१

कृष्ण-भक्ति-साहित्य में राधा को बरसाना गाँव के गोपराज वृषभानु की पुत्री माना जाता है। इसकी माँ नाम का कीर्ति था। यह कृष्ण की अनन्य प्रेमिका के रूप में चित्रित की गई है। महाभारत, भागवत, हरिवंश, ब्रह्म, विष्णु पुराणों में राधा का उल्लेख नहीं हुआ। भागवत और विष्णु पुराण में कृष्ण-प्रिया किसी गोपी का उल्लेख है। पद्म, मत्स्य, वायु, बाराह पुराणों और नारद-पंचरात्र में राधा का उल्लेख हुआ है—सर्वाधिक विस्तृत चित्रण ब्रह्मवैवर्त पुराण में मिलता है। राधाकृष्ण का सर्व प्रथम उल्लेख हाल या सातवाहन की गाथा-सप्तशती में पाया जाता है। इसके बाद अनेक शिलालेखों ताम्रपत्रों, मंदिरों आदि में राधाकृष्ण का उल्लेख होने लगा। लोकगीतों, संस्कृत साहित्य, धर्म-भावना, दार्शनिक चिन्तन में राधा का जो रूप बिखरा पड़ा था, उसे प्राणवान व्यक्तित्व और आकार मिला जयदेव के गीत-गोविन्द में। राधा परमोज्जवल अम्लान योवन, अद्वितीय सुषमा, अनुपम माधुर्य और उद्दाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वासना-विलास-कामना लेकर आई। निम्बार्क और विष्णुस्वामी ने राधा को दार्शनिक स्वरूप दिया। इसे ब्रह्म की ह्लादिनी शक्ति बताया गया। सत, चित जीवात्मा भी है, आनन्द ही ब्रह्म की बिशेषता है। यह आनन्द-रूप ह्लादिनी शक्ति राधा के ही कारण है। बढ़ते-बढ़ते राधा का महत्त्व इतना बढ़ा कि इसे कृष्ण से भी अधिक महत्त्व दिया जाने लगा और राधावल्लभ सम्प्रदाय में राधा की उपासना ही प्रमुख ठहराई गई। अब राधा का कोई भौतिक या ऐतिहासिक स्वरूप नहीं रह गया है, था भी कभी या नहीं; इसे भी जानने की बात कोई नहीं सोचता—उसका स्वरूप पूर्ण रूप से भावात्मक हो गया है। उल्लास की थिरकन, मुस्कान की सुकुमार स्वर्णकिरण, गदरे यौवन की अम्लान प्रतीक, शरदपूर्णिमा की शीतल रजत-पुलक, संयोगकी अनन्त तृप्ति और वियोग की कातर मूर्च्छना से निर्मित राधा आज भक्तों की मोक्षदुर्लभ आत्माविस्मृति की आलम्बन और आराध्य देवी बनी हुई है। कवियों के लिये सौंदर्य-विलास की प्रतिमा। कला और भक्ति दोनों की आदर्श राधा के समान मुग्धकारी नारी आज तक विश्व में दूसरी नहीं जन्मी।

रामकृष्ण परमहंस—अना, पृ० १७८

देरी (हुगली), बंगाल में एक रामोपासक चट्टोपाध्याय ब्राह्मण परिवार रहता था। इसी परिवार में श्री रामकृष्ण का जन्म हुआ। इनके दादा मानिक राम, पिता खुदीराम और माता श्रीमती चन्द्रमणि या चन्द्रा थी। ये पाँच भाई बहन थे—रामकुमार, रामेश्वर कात्यायनी, रामकृष्ण और सर्वमंगला। देरी के जमीदार ने खुदीराम से किसी के विरूद्ध झूठी गवाही दिलानी चाही। इंकार करने पर इन्हें एक झूठे मुकदमे में फँसा लिया और इनकी सारी सम्पति छीन ली। १८१४ ईस्वी में खुदीराम अपने परिवार को लेकर कामारकुपुर नामक गाँव में आ बसे। यहीं १८ फरवरी, १८३६ ईस्वी को सुबह सवा-पाँच बजे एक बालक का जन्म हुआ, खुदीराम ने इसका नाम गदाधार रखा। यही गदाधर श्री रामकृष्ण परमहंस नाम से विख्यात हुए। खुदीराम की मृत्यु (१८४३ ईस्वी) के बाद सारा भार रामकुमार के ऊपर आ पड़ा। गांव में गुज़ारा न होने पर रामकुमार ने कलकत्ता आकर (१८५० में) एक टोल (विद्यालय) खोला। दो वर्ष बाद गदाधर भी वहाँ आ गये। दक्षिणेश्वर में १८५५ में रानी रासमनी देवी ने काली-मंदिर बनवाया और रामकुमार इसके पुजारी बने। गदाधार ने भी अपने भाई से पूजा-पाठ आदि का विधि-विधान सीख लिया था। पहले वह राधाकांत मंदिर के और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१८५६ में रामकुमार के मरने पर दक्षिणेश्वर के काली-मंदिर के पुजारी बन गये। बचपन से यह वैराग्य की ओर प्रवृत और समाधिस्थ हो जाया करते थे। काला मंदिर के पुजारी बनने के वाद तो इनकी दशा पागलों जैसी होगयी। यह बेसुध तक रहने लगे। इनकी माता ने इन्हें कामारकुपुर बुला लिया और जयरामबाती ग्राम के रामचंद्र मुखोपाध्याय की पंचवर्षीय लड़की शारदामनी देवी से १८५९ ई० में इनका विवाह कर दिया। इस के बाद दो ढ़ाई वर्ष तक घर ही रहे, लेकिन मांकाली का विरह यह न सके; इसलिये फिर दक्षिणेश्वर आ गये। और १८६४ में विधि-वत संन्यास ले लिया। इसके बाद का जीवन एकनिष्ठ साधना में बीता। तान्त्रिक साधना भी इन्होंने की। पर वात्सल्य भाव की उपासना में अधिक लीन हुए। रामकृष्ण जी के भक्ति-लीन, साधनारत, त्यागपूर्ण जीवन का इतना प्रभाव था कि जो इनके परिचय में आता, वह प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। रामकृष्ण परमहंस खान-पान तन-वदन की सुध-वुध भूल घण्टों समाधिलीन हो जाते। कई बार तो दर्शनार्थी इस लीनता की अवस्था को देख आश्चर्य चकित रह जाते थे। रात-दिन की साधना, कठोर तपस्या, भोजन-शयन आदि की उपेक्षा, स्वास्थ के प्रति उदासीनता के कारण स्वास्थ्य गिरता गया। गले में कैंसर होगया और उसी में इनका स्वर्गवास हुआ। श्री परमहंस ने १६ अगस्त १८८६ ईस्वी के रात के दो बजे के लग-भग महासमाधि ले ली। श्री रामकृष्ण परमहंस संसार को अनेक दीन-हीन-जन-सेवक, साधनारत सन्यासी, तपस्वी समाजनिर्माता दे गये।

रामचन्द्र, रघुवीर, राघव—अना, पृ० १५२

कौशल्या के गर्भ से उत्पन्न इक्ष्वाकुवंशी आयोध्या के नरेश महाराज दशरथ के सब से बड़े पुत्र। यह विष्णु के मर्यादापुरुषोत्तम अवतार माने जाते हैं। रामभक्त इन्हें स्वयं रूप ब्रह्मा मानते हैं, जो भक्तोंकी रक्षा तथा दुष्टों के विनाश के लिये मानव रूप में अवतरित हुए। रघुकुल के पुरोहित और गुरू महर्षि वशिष्ठ ने इन्हें शस्त्र और शास्त्र की शिक्षा दी। बाल्यावस्था में यह विश्वामित्र के साथ उनके यज्ञ की रक्षा के लिये गये और ताड़का का वध किया। एक वाण से मारीच को लंका में फेंक दिया और सुबाहु को मार डाला। इसके बाद जनक द्वारा आजोयित धनुषयज्ञ में सम्मिलित हुए और धनुष तोड़ कर सीता का वरण किया। विवाह के कुछ समय बाद ही यह पिता की आज्ञा मान चौदह वर्ष के लिए वनवासी हुए। साथ में सुमित्रा-पुत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लक्ष्मण और इनकी पत्नी सीता भी बन गये। रावण द्वारा सीता हरण होने पर वानरों-रीछों की सेना लेकर लंका पर आक्रमण किया और युद्ध में रावण-कुल का विनाश कर सीता का उद्धार किया। इसके बाद धूमधाम से यह अयोध्या वापस आगये। कुछ दिन राज्य सुख भोगने के बाद अपवाद-भय से सीता को वनवास दिया। वह वाल्मीकि-आश्रम में रहीं। वहीं उनको लव-कुश दो लड़के उत्पन्न हुए। राम द्वारा आयोजित राजसूय यज्ञ के घोड़े को लव-कुश ने पकड़ लिया और उसके रक्षकों को पराजित किया। ईस पर राम वहाँ पहुँचे और सीता को वापस लाना चाहा। कहते हैं, सीता पृथ्वीमें समा गई। लव-कुश राम के साथ अयोध्या आ गये। रामचन्द्र मानवता, धर्म, वीरता, मर्यादापालन के आदर्श हैं। रामराज्य को आदर्श राज्य माना जाता है। राम के राज्य में कहीं रोग, शोक, अभाव, पीड़ा, व्याधि, अकाल, भुखमरी, ईर्ष्या, द्वेष, वैमनस्य, संघर्ष आदि का नाम तक नहीं था—सभी समृद्ध, सम्पन्न, स्वस्थ, विद्वान, शीलवान, धर्मपरायण थे। राम के विषय में वाल्मीकि-रामायण पहला ग्रंथ है। इस के बाद सैकड़ों ग्रंथ लिखे गये; पर तुलसी द्वारा रचित "रामचरितमानस" में राम का शील, सौंदर्य और शक्ति से पूर्ण स्वरूप प्रतिष्ठित हुआ। ब्रह्मरूप में राम इतना व्यापक हुआ कि निर्गुण संतों ने राम को निर्गुण निराकार ब्रह्म के रूप में प्रस्तुत किया। आज राम-नाम करोड़ों व्यक्तियों के दुख-सुख का साथी है।

रामानुज—अप, पृ० १७२

शंकराचार्य द्वारा प्रतिष्ठित अद्वैतवाद के विपरीत विशिष्टाद्वैतवाद की प्रतिष्ठा करने वाले। जिसके अनुसार चिदचिद्विशिष्ट ब्रह्म के अंश ही सारे जगत् के प्राणी हैं, जो उसी से उत्पन्न और उसी में लीन होते हैं। भक्ति द्वारा ही उस अंशी का सामीप्य लाभ होता है। रामानुज ने श्री-सम्प्रदाय की स्थापना की, जिसमें विष्णु या नारायण की उपासना सगुण ब्रह्म के रूप में की जाती है। इनका जन्म हारीत गोत्रीय ब्राह्मण वंश में, भूतपुरी, जिला चंगलपत, मदरास राज्य में, सन् १०१७ ईस्वी में हुआ माना जाता है। १६ वर्ष की अवस्था में इनका विवाह हो गया। कुछ ही दिन बाद पिता की मृत्यु होने पर इन्होंने वैराग्य ले लिया। पूर्णाचार्य इन के दीक्षा-गुरु थे। इन के प्रमुख ग्रंथ हैं—वेदांत सूत्र पर श्री-भाष्य, वेदांत-संग्रह, वेदांत-प्रदीप, वेदांत-सार, गीता-भाष्य। इनके लग-भग ७४ शिष्य प्रसिद्ध हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रावण—अना, पृ० १५२

पुलस्त्य मुनि का नाती, लंका का प्रतापी राजा, सूर्पनखा का भाई। विभीषण इसका सौतेला छोटा भाई था। पूर्व जन्म में यह कैकय देश के राजा सत्यकेतु का पुत्र प्रतापभानु था, कुम्भकरण इसका छोटा भाई अरिमर्दन। इनका मंत्री धर्मरुचि विभीषण बना। ब्राह्मणों के शाप के कारण ये राक्षस हुए। प्रतापभानु और अरिमर्दन ने दिग्विजय की और देश-देशान्तरों के राजाओं को परास्त किया। एक दिन प्रतापभानु शिकार करते हुए एक भयंकर सूअर के पीछे दौड़ा। सूअर भाग कर एक गुफा में घुस गया। प्रतापभानु सघन बन में भटकते-भटकते एक कपट मुनि के आश्रम में पहुँचा। कपट मुनि ने उसे तुरन्त पहचान लिया। यह एक राजा था, जो प्रतापभानु से पराजित होकर कपटमुनि के रूप में यहाँ रह रहा था। उसने अपना नाम एकतनु बताया और कहा कि सृष्टि के आदि में मेरा जन्म हुआ था। प्रतापभानु उसकी बातों में आ गया। उससे ऐसा अनुष्ठान करने की याचना की, जिससे वह सौ कल्प तक निष्कण्टक राज्य करता रहे। कपट मुनि ने कहा, अगर मेरे हाथ से बनाई रसोई ब्राह्मण खालेंगे, तो वे सदा तुम्हारे वश में रहेंगे और ब्राह्मण वश में रहें तो तुम्हें कोई नहीं मार सकता। प्रतापभानु ने सारी योजना मान ली। कालकेतु नामक राक्षस से कपट मुनि ने सारी योजना बतायी। कालकेतु के सौपुत्र, दस भाई और अनेक मित्र प्रतापभानु के हाथ से मारे जा चुके थे। इस लिये दोनों मित्र बने हुए थे। दोनों ने पुराने बैर का बदला लेने का अच्छा अवसर पाया। यह कालकेतु ही था, जिस ने सूअर बन कर प्रतापभानु को भटकाया था। कालकेतु ने अपनी माया से प्रतापभानु को घोड़े समेत उसके महलों में पहुंचा दिया और उसके पुरोहित को उठा लाया। स्वयं पुरोहित बन कर उसने अनेक पशुओं का मांस पकाया और उसमें ब्राह्मणों का मांस मिलाया एक लाख ब्राह्मण सपरिवार निमंत्रित किये गये। जब वे खाने बैठे तो आकाश-वाणी हुई कि तुम्हें ब्राह्मणों का मांस खिलाया जा रहा है। इस पर सब ब्राह्मण उठ खड़े हुए। उन्होंने शाप दिया कि तुम राक्षस रूप में जन्म लो।

रावण ने सभी लोकपालों को परास्त किया। कुबेर को हरा कर उससे पुष्पक विमान छीन लिया। इसके पुत्र मेघनाद ने इन्द्र को हराया। इसके अत्याचारों से तीनों लोकों में त्राहि त्राहि मच गई। कुबेर के एक करोड़ यक्ष लंका में रहते थे। उनको मार भगाया और लंका को इसने अपनी राजधानी बनाया। मन्दोदरी के पिता, रावण के ससुर मयदैत्य ने त्रिकूट पर्वत पर स्थित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्ग की मरम्मत करके उसे एक समृद्धशाली और दुर्गम अजेय दुर्ग के रूप में बदल दिया। इसे वेदों का महान् पंडित और राजनीतिज्ञ बताया जाता है। यह अन्त तक वीरता से लड़ा। कभी राम से सन्धि करने की बात नहीं सोची। अन्त में राम के द्वारा युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुआ।

रूस— नप, पृ० १००

क्षेत्र की दृष्टि से, ८६१५००० वर्ग मील में फैला हुआ, रूस संसार का सबसे बड़ा राष्ट्र है। यूनियन ऑफ सोवियट सोश्लिस्ट रिपब्लिक्स रूस का सरकारी नाम है। संक्षिप्त में इसे यू० एस० एस० आर० (U.S.S.R.) कहा जाता है। यहाँ समाजवादी पंचायती लोकतंत्रीय शासन है।

लेनिन के नेतृत्व में राज्य क्रान्ति हुई और ज़ार की राज्यसत्ता को निर्मूल कर समाजवादी लोकतंत्रीय शासन की स्थापना की गई। लेनिन यहाँ का पहला प्रधान मंत्री बना। २० करोड़ निवासियों का यह देश, एशिया के ४५, योरुप के ४० प्रतिशत और संसार के लगभग सातवें स्थलीय भाग का स्वामी है। निवासियों, भाषाओं, संस्कृतियों, रहन-सहन, प्राकृतिक दशा आदि की दृष्टि से रूस एक आश्चर्यजनक सम्मिश्रण है। विविधता में एकता का बहुत अच्छा आदर्श उपस्थित करता है। इसमें १८५ जातियाँ, १५० से अधिक नेशियल ग्रुप हैं, जो १५० के लगभग भाषाएं और बोलियाँ बोलते हैं। पास-पड़ोस से आकर बसे शिकारी, रेनडीयर पालने वाले की घुमक्कड़ों की संस्कृति से लेकर आधुनिकतम अत्यन्तविकसित कृषि और उद्योगों में व्यस्त लोगों की संस्कृति रूस में पाई जाती है। हिमाच्छित टण्ड्रा, हरियाली से ढके गेहूँ के खेत, उजाड़ रेगिस्तानी क्षेत्र, आधुनिक जीवन की सभी सुखसमृद्धियों, कला, शिक्षा, ज्ञान-विज्ञान आदि के भरपूर विशाल नगर—सभी रूसी विविधता के द्योतक हैं। रूस में १६ लोकतंत्री राज्य हैं और सब की अपनी-अपनी राज्य-भाषाएँ हैं। ज्ञान-विज्ञान में रूस विश्व के प्रमुख देशों में है। उपग्रह आविष्कृत करने और आदमी सहित अन्तरिक्ष में उड़ाने का सर्वप्रथम श्रेय रूस को ही है। यह भी स्मरण रखने की बात है कि रूसी साम्यवाद या शासन चीनी समाजवाद और शासन के समान कट्टर पंथी नहीं, पंचशील और विश्व-शान्ति का यह प्रबल समर्थक है। मास्को सोवियत रूस की राजधानी है। लेनिनग्राड, स्टालिनग्राड, खीव, मोलोटोव, यूफ़ा, चेल्याबिंस्क, ताशकंद, व्लैडीवास्टक आदि यहाँ के प्रसिद्ध नगर हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ल

लक्ष्मण—परि, पृ० २१७

यह महाराज दशरथ की तीसरी रानी सुमित्रा के गर्भ से उत्पन्न, शत्रुघ्न के बड़े भाई थे। कैकेई-पुत्र भरत से छोटे थे। राम के प्रति इनकी एकनिष्ठ भक्ति थी, इसीलिए यह राम के साथ बनवा-सी बने। यह शेषनाग के अवतार माने जाते हैं, इसीलिए इनके स्वभाव में ज्वाला-सी भस्मकारी शक्ति है। अन्याय, अपमान, धृष्टता, अनीति, चुनौती सहना इनके चरित्र के विरूद्ध है—यह वीरता, शक्ति, निर्भयता, स्पष्टवादिता, आक्रोष के प्रतीक हैं। जहां भी अनौचित्य-अनीति देखी, वहीं इनके रक्तबिन्दु चिंगारी बनकर जल उठे। ऐसा एक भी अवसर नहीं आया, जहां अनौचित्य देख कर यह चुप रहे हों। जनक ने "वीर विहीन मही मैं जानी" कह दिया तो यह भड़क उठे। परशुराम ने क्षत्रियों की शान में कुछ कह दिया तो उनको खूब सुनाई, भरत को दलबल सहित आते देखा तो रक्त खोल उठा। सुग्रीव ने लापरवाही दिखाई तो उसे जाकर धमकाया और सीता की सुधि मँगाने में तत्पर किया। और तो और जब सुमंत्र अयोध्या वापस जाने लगे तो यह अपने पिता दशरथ को भी सुनाए बिना न रहे। चौदह वर्ष तक एक तपस्वी के रूप में राम की सेवा की। इनसे सूर्पनखा ने अनुचित प्रेम-प्रस्ताव किया तो उसके नाक-कान काट लिये। इस प्रकार रावण को युद्ध में उतरने की चुनौती दी। इनसे अधिक सेवा-परायण भाई संसार में और कोई नहीं हुआ। रावण-पुत्र इन्द्रजीत मेघनाथ का वध भी लक्ष्मण के हाथों हुआ। इनकी पत्नी उर्मिला ने भी त्याग का अद्वितीय आदर्श उपस्थित किया।

लक्ष्मी—अना, पृ० १६६

समुद्र-मंथन के बाद समुद्र से प्राप्त १४ रत्नों में से एक, विष्णु की पत्नी और धन-सम्पत्ति, ऐश्वर्य-वैभव की अधिष्ठात्री देवी। दीवाली पर धन-सम्पत्ति प्राप्त करने के लिए हिन्दू परिवारों में इसकी पूजा होती है। लाल कमल इसका आसन और उल्लू इसकी सवारी माना जाता है।

व

वररुचि—अप, पृ० १७०

एक प्रसिद्ध वैयाकरण और कवि। अनेक पुस्तकों में विक्रमादित्य की सभा के नौ रत्नों—कालिदास, अमरसिंह, वराहमिहिर, धनवन्तरि, बैताल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भट्ट, घटकर्पर आदि—में भी लिखा मिलता है; लेकिन संवत चलाने वाला विक्रमादित्य तो ऐतिहासिक दृष्टि में कल्पना-कथा मात्र रह गया है। प्रसाद जी ने "चन्द्रगुप्त मौर्य" नाटक की भूमिका में वररुचि को मगध निवासी उपवर्ष का शिष्य, पाणिनि का गुरुभाई, नन्द का मंत्री और पाणिनी के सूत्रों का वार्तिककार— सूत्रों की व्याख्या करने वाला लिखा है। इसका समय ईसा से ३०० से २०० पूर्व तक माना जाता है। लेकिन पाणिनी का समय ५०० से ३०० तक ईसा पूर्व माना जात है, इसलिये ये दोनों समसामयिक नहीं मालूम होते।

वाल्मीकि—नप, पृ० ३१

आदि काव्य रामायण के रचयिता। कहते हैं, यह चाण्डाल जाति के थे और लूटमार किया करते थे। किसी ऋषि के उपदेश से इनको वैराग्य हो गया और शेष जीवन भगवद्भक्ति में बिताने लगे। एक व्याध के द्वारा एक बार क्रौंच-युगल में से एक का वध किये जाने पर इनके हृदय से करुणा की धारा फूट निकली और करुणा के उसी आवेग के साथ विश्व का प्रथम लौकिक छन्द प्रकट हुआ। यह भी कहा जाता है कि दूसरे बनवास-काल में सीता इन्हीं के आश्रम में रही। यहीं लव-कुश का जन्म, पालनपोषण और शिक्षण हुआ। वह श्लोक इस प्रकार है—

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वम गमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौञ्च मिथुनादेकम वधीः काम मोहितम्।

रामायण, बालकाण्ड, २/१८

विक्रमादित्य—अप, पृ० १६९

जनकथा के अनुसार विक्रमादित्य उज्जैन के राजा माने जाते हैं। इन्होंने एक संवत भी चलाया जो ईस्वी संवत से ५७ वर्ष पूर्व आरम्भ होता है। इन की सभा में कालिदास, अमरसिंह, बराहमिहिर, घटपर्कर आदि नौ रत्न माने जाते हैं। लेकिन इन बातों का कोई ऐतिहासिक आधार नहीं है। ऐतिहासिक आधार पर चन्द्रगुप्त द्वितीय को विक्रमादित्य माना जाता है। यह सम्राट समुद्रगुप्त के पुत्र थे। इन्होंने ३८० से ४१३ ईस्वी तक राज्य किया। इनके बड़े भाई सम्राट रामगुप्त ने एक आक्रमणकारी शक सरदार को अपनी पत्नी ध्रुवस्वामिनी को अर्पित कर दिया था। इन्होंने स्त्री-वेश धारण कर उस शक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरदार का उसी के शिविर में वध किया और ध्रुवस्वामिनी को मुक्त किया। इनकी वीरता के कारण रामगुप्त से अधिकार छीनकर सेनापतियों-मंत्रियों ने इन्हें गुप्त-साम्राज्य का सम्राट बनाया। यह भी कहा जाता है कि इन्होंने रामगुप्त का भी वध किया और ध्रुवस्वामिनी से विवाह किया। इनके दुस्साहस-पूर्ण कार्य के लिए इनको साहसांक, शकारि भी कहा जाता है। इन्होंने मालवा और काठियावार से शकों को खदेड़ दिया। इसलिए उज्जैन भी गुप्त-साम्राज्य की दूसरी राजधानी मानी जाती है। गुप्त साम्राज्य इनके द्वारा और भी विस्तृत हुआ। प्रसिद्ध चीनी यात्री फाहियन इन्हीं के राज्य में भारत आया, जिसने इनके साम्राज्य के वैभव, सुख-शान्ति, शक्ति और राज्यप्रासाद की शान और वहाँ से होने वाले दान का बड़ा अच्छा वर्णन किया है। इन्होंने अपने पिता के समान साम्राज्यवर्द्धन और रक्षण के लिये अनेक राजनीतिक विवाह भी किये।

विजयलक्ष्मी—नप, पृ० ७७

श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित मोतीलाल नेहरू और श्रीमती स्वरूप रानी नेहरू की बड़ी पुत्री, पंडित जवाहरलाल नेहरू की छोटी बहन। इन का विवाह श्री रणजीतसिंह पंडित के साथ हुआ था।

इन को चन्द्रलेखा तथा नयनतारा दो लड़कियाँ उत्पन्न हुईं। अपने पिता तथा भाई के साथ इन्हों ने देश-सेवा में भारतीय नारी का उच्चादर्श स्थापित किया—अनेक वार जेल यात्राएं कीं। १९३५ ईस्वी में प्रॉविशियल ऑटोनोमी (प्रांतीय स्वराज्य) प्राप्त होने पर यह उत्तर प्रदेश सरकार की स्वायत्त शासन की मंत्री बनाई गईं। भारत को पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त होने पर रूस में भारतीय राजदूत नियुक्त हुईं। इसके बाद यह इंगलैण्ड में भारतीय हाई कमिश्नर बनाई गईं। यह अमरीका में भारतीय राजदूत भी रहीं। वहाँ से अवकाश प्राप्त कर इन्होंने यूनाईटेड नेशंस के प्रधान-पद पर योग्यतापूर्वक कार्य किया। श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित सुशिक्षित, सुसंस्कृत, राज-नीतिपटु, राष्ट्र-भक्त महिलाओं की प्रथम श्रेणी में आती हैं। विश्व में जितना सम्मान और ख्याति श्रीमती पंडित को प्राप्त हुई, अन्य किसी भारतीय महिला को प्राप्त नहीं हुई।

विभीषण—अना, पृ० १५३

यह रावण का सोतेला छोटा भाई था। पूर्वजन्म में प्रतापभानु का मंत्री धर्मरुचि था। ब्राह्मणों के शाप के कारण यह भी प्रतापभानु और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के साथ राक्षस बना। आरम्भ से ही यह अत्यन्त धार्मिक प्रवृत्ति का था। इसे रामचरितमानस में पक्का रामभक्त बताया गया है। इसने रावण को बहुत समझाया था कि वह राम से क्षमा माँगले और राम को सीता लौटा दे। रावण ने इसकी इस शिक्षा पर इसे लात मार कर लंका से निकाल दिया और यह राम की शरण में आ गया। राम की ओर से रावण के विरुद्ध युद्ध किया। लक्ष्मण को मेघनाद की शक्ति लगने पर इसी ने लंका के राजवैद्य सुखन को लाकर इलाज करने की सलाह दी थी। रावणवध के बाद राम ने इसे ही लंका का राज्य प्रदान किया था। रामभक्तों की दृष्टि में विभीषण भक्त माना जाता है और राजनीति की दृष्टि में देशद्रोही। "घर का भेदी लंका ढावे", मुहावरा विभीषण के चरित्र को देखकर ही बना। राष्ट्रीय विचारों के लोग मीर जाफ़र, जयचन्द और विभीषण को एक ही वर्ग में रखते हैं।

विराध—अना, पृ० १५६

चित्रकूट त्याग कर अत्रि-अनसूया से भेंटकर राम लक्ष्मण सीता वन में जा रहे थे। रास्ते में विराध नामक राक्षस मिला। राम ने सामने आते ही उसे एक बाण से मार डाला। राम के बाण से मरते ही उसने दिव्य शरीर प्राप्त कर लिया। उसे दुखी देखकर राम ने अपने परम धाम को भेज दिया। रामचरितमानस में इतना ही इसका परिचय है—

मिला असुर विराध मग जाता। आवत ही रघुवीर निपाता।
तुरतहि रुचिर रूप तेहि पावा। देखि दुखी निज धाम पठावा।

अरण्यकाण्ड, ४/६

विवेकानन्द—अना, पृ० १०६

सन्यास-पूर्व नाम नरेन्द्रनाथ दत्त। जन्म १२ जनवरी, १८६३ ईस्वी, कलकत्ता में। इनके पिता श्री विश्वनाथ दत्त एक अच्छे वकील थे। माता भुवनेश्वरी देवी अत्यन्त धार्मिक विचारों और दया-द्रवित हृदय वाली महिला थी। माता-पिता दानशीलता के लिए प्रसिद्ध थे। इनके दादा श्री दुर्गाचरण २५ वर्ष की आयु में संन्यासी हो गये थे। ऐसे परिवार में उत्पन्न और पोषित होने के कारण नरेन्द्रनाथ का हृदय और मस्तिष्क विशेष चिन्तन तथा अनुभूति तत्त्वों से निर्मित था। तीक्ष्ण बुद्धि, अद्वितीय स्मरणशक्ति और तत्त्वदर्शी चेतना से समृद्ध नरेन्द्रनाथ ने अपने शिक्षाकाल में ही हर्बर्ट स्पेन्सर, कैण्ट,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शोपिनहार, स्टुअर्ट मिल, हीगल, डार्विन आदि पश्चिमी विद्वानों का सम्पूर्ण अध्ययन कर लिया। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के मैट्रोपोलीटन इंस्टीच्यूट में १८७१ में नरेन्द्रनाथ प्रविष्ट हुए और १८७९ में फर्स्ट क्लास में एंट्रेंस पास की। प्रेसीडेंसी कालिज से १८८१ में एफ० ए० और १८८४ में बी०ए० उत्तीर्ण हुए। १८८१ में दक्षिणेश्वर के मंदिर में श्री रामकृष्ण परमहंस से भेंट हुई। परमहंस से केवल पांच वर्ष सम्बन्ध रहा। इन पांच वर्षों में यह इतने प्रभावित हुए कि उनके शिष्य बन गये। स्वामी जी के स्वर्गवास (१६ अगस्त १८८६) के बाद नरेन्द्रनाथदत्त संन्यास लेकर विवेकानन्द के नाम से विश्वविख्यात हुए। इन्होंने दो बार पश्चिमी देशों की यात्रा की। कलकत्ता से चीन और जापान होते हुए स्वामी जी वैंकोवर (अमरीका) पहुँचे और वहाँ से ट्रेन द्वारा शिकागो। यहाँ ११ सितम्बर १८९३ को होने वाली पार्लियामेण्ट ऑफ़ रिलीजन्स में हिन्दुधर्म का प्रतिनिधित्व किया। दिसम्बर तक अमरीका के बड़े-बड़े नगरों में भाषण दिये। शिकागो की पार्लियामेण्ट ऑफ़ रिलीजन्स में सम्मिलित होने से इन्हें विश्वख्याति प्राप्त हो गई। अमरीका से अक्टूबर १८९५ को इंगलैण्ड गये और लन्दन में भाषण दिये। यहीं मिस मार्गरेट नोबल, जो सिस्टर निवेदिता बनी, इन की शिष्या हो गईं। लन्दन से पैरिस गये और भाषण दिये। ६ दिसम्बर, १८९५ को न्यूयार्क वापस आगये। १५ अप्रेल १८९६ को इंगलैण्ड आये और योरुप के बड़े-बड़े नगरों में भाषण दिये। १६ दिसम्बर को भारत के लिये चल पड़े और २६ जनवरी. १८९७ को मातृभूमि में वापस आगये। दोबारा फिर ३१ अगस्त से २३ अक्तूबर १९०० तक योरुप और अमरीका का भ्रमण किया। इस बार इनके साथ स्वामी तुरीयानन्द और सिस्टर निवेदिता भी थीं। पहली मई को रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। स्वामी विवेकानन्द केवल अध्यात्मवादी सन्यासी ही न थे; बल्कि एक पक्के देशभक्त, सुधारक, समाजसेवक, दीनहीन के सखा, शिक्षाविद, दार्शनिक और कवि भी थे। भोजन के विषय में यह कोई बंधन न मानते थे। गाय और सूअर का माँस भी खा लेते थे। हुक्का भी पीते थे। हाँ, मद्यपान के यह कट्टर विरोधी थे। शक्ति से अधिक कार्य करने के कारण इन को मधुमेह और सांस का रोग हो गया। ४ जुलाई १९०२ को इनका स्वर्गवास हुआ। कहा जाता है, इन्होंने मरने से पूर्व ही अपनी मरण तिथि बतादी थी। स्वामी विवेकानन्द द्वारा स्थापित रामकृष्णमिशन आज देश भर में अन्य धार्मिक और सामाजिक संस्थाओं से सर्वाधिक मानव-सेवा कार्य कर रहा है। स्वामी विवेकानन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिक भारत के निर्माताओं में गिने जाते हैं। धर्म, दर्शन, समाज, शिक्षा, योग आदि पर इनके अनेक ग्रंथ भी प्रसिद्ध हैं।

विष्णु—अर्च, पृ० ७८

पुराणों के अनुसार सृष्टि के रक्षक और पालक। ऋग्वेद में विष्णु का उल्लेख प्रमुख देवता के रूप में नहीं मिलता; बल्कि द्वितीय श्रेणी के देवता के रूप में हुआ है। ऋग्वेद में इसे त्रिविक्रम अर्थात तीन पगों में समस्त विश्व का अतिक्रमण करने वाला बताया गया है। इन पगों की व्याख्या अग्नि, विद्युत, सूर्य प्रकाश या सूर्योदय, सूर्य की स्थिति और सूर्यास्त के रूप में की गई है। इसी के आधार पर वामनावतार की कथा रची गई है। पुराणों के अनुसार विष्णु का निवास क्षीरसागर, शेषनाग इनकी शैया है और लक्ष्मी इनकी पत्नी है। इन की नाभि से कमल उत्पन्न हुआ, जिससे ब्रह्मा का जन्म हुआ, इसलिए विष्णु को पद्मनाभ कहा जाता है। यह सत्वगुण का देवता है। संसार के पालन-पोषण-रक्षण के लिये विष्णु के २४ अवतार होने माने जाते हैं। इनमें दस मुख्य हैं—मत्स्य, कच्छप, वाराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध और कल्कि (अभी होगा)। विष्णु श्यामवर्ण तथा चतुर्भुज हैं। चारों हाथों में शंख, चक्र, गदा, पद्म बताये जाते हैं। शंख का नाम पांचजन्य, चक्र का सुदर्शन, गदा का कौमोदकी, धनुष का शार्ङ्ग तथा तलवार का नाम नंदक है। वैनतेय गरुड़ इनका वाहन है। गंगा की उत्पत्ति इन्हीं के चरणों से हुई है। वैष्णवधर्माचार्यों ने विष्णु को ब्रह्म का रूप दिया। और विष्णु सर्वोच्च देवता के रूप में गृहीत हुआ।

वीर छत्रसाल—परि, पृ० २०३

यह महाराज चम्पतराय बुंदेला के लड़के थे। चम्पतराय का राज्य मुगलों ने हड़प लिया। वीर छत्रसाल ने बुंदेलों की छोटी-मोटी सेना संघटित करके मुगल साम्राज्य पर आक्रमण करने आरम्भ कर दिये। धीरे-धीरे इनकी शक्ति बढ़ती गई और विजय प्राप्त होती गई। इन्होंने पिता के राज्य को ही मुगलों से स्वतंत्र नहीं कर लिया, उसका वर्द्धन भी किया। दक्षिण में महाराज शिवाजी ने जिस प्रकार मुगल-साम्राज्य पर गहरे आघात किये, बुंदेलखण्ड में ऐसे ही महाराज छत्रसाल ने उसकी जड़ें खोखली कीं। इन्होंने अनेक युद्ध लड़े और मुगल सेनाओं के दांत खट्टे कर दिये। शिवाजी के राजकवि भूषण ने इनके विषय में दस घनाक्षरी की "छत्रसाल-दशक"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नामक पुस्तक लिखी, जिसमें इनकी वीरता का वर्णन है। लाल कवि ने "छत्रप्रकाश" में बुंदेलखण्ड की उत्पत्ति, चम्पतराय का पराक्रम और राज्य-स्थापना आदि का वर्णन करने के बाद छत्रसाल की वीरता, मुगलों के साथ हुई लड़ाइयों, विजय, राज्य का उद्धार और विस्तार आदि का वर्णन किया है। कहते हैं; भूषण के काव्य से इतने प्रसन्न हुए थे कि भूषण की पालकी को इन्होंने अपना कंधा लगाया था।

वृन्दाधाम—परि, पृ० ४३

वृन्दावन, मथुरा से सात-आठ मील की दूरी पर एक नगर। यहाँ कृष्ण बंसी बजाया और गाय चराया करते थे। यहाँ की कुंजगलियाँ कृष्ण और गोपियों की क्रीड़ास्थली रही थीं। यह अत्यन्त साफ़-सुथरा और मन्दिरों से भरा छोटा-सा नगर है। रंगजीका मंदिर जिसके आंगन में एक स्वर्ण-स्तम्भ है, अत्यन्त प्रसिद्ध है। गोविन्द जी का मंदिर मध्य-कालीन वास्तुकला का बहुत अच्छा नमूना है। शाहजी का मंदिर भी, जो संगमरमर के लहरदार खम्भों के लिये दर्शनीय है, बहुत प्रसिद्ध है। यह लखनऊ के सेठ बंधुओं ने बनवाया था। ललितमाधुरी और ललितकिशोरी नाम रखकर ये नारीवेश में कृष्णोपासना करते थे।

व्यास—अना, पृ० ३०; नप, पृ० ७०

इन का नाम कृष्ण द्वैपायन है। यही महाभारत, वेदान्त-सूत्र तथा भागवत पुराण के रचयिता माने जाते हैं। धींवर-कन्या सत्यवती और महर्षि पराशर के पुत्र। एक बार पराशर सत्यवती की नाव में बैठ कर गंगा-पार जाने लगे तो वह सत्यवती पर आसक्त हो गये। मार्ग में ही दोनों का काम-सम्बन्ध हुआ। फलस्वरूप व्यासजी का जन्म हुआ। गंगा के बीच एक द्वीप में जन्म लेने तथा रहने के कारण यह द्वैपायन कहलाये। इसी सत्यवती पर शान्तनु मोहित हुए और इससे विवाह किया। इनसे विचित्र वीर्य और चित्रांगद दो पुत्र हुए। यह चित्रांगद नामक गंधर्व से तीन वर्ष तक युद्ध करके मारे गये। इनके बाद इनके छोटे भाई विचित्रवीर्य गद्दी पर बैठे। इन से भी सन्तान न हुई तो दोनों की पत्नियों अम्बालिका और अम्बिका का नियोग व्यास जी से कराया गया, जिनसे पाण्डु और धृतराष्ट्र का जन्म हुआ। एक दासी से भी इनका नियोग हुआ, जिससे विदुर जी का जन्म हुआ। भागवत में व्यास जी विष्णु के अवतार माने गये हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श

शंकर—अप, पृ० १७०

अद्वैतवादी दर्शन के प्रणेता अद्वितीय भारतीय दार्शनिक और तत्त्ववेत्ता। इनका जन्म संवत ७८८ विक्रमी में काहाड़ी ग्राम, मालाबार में नम्बूद्री ब्राह्मणकुल में हुआ। इनके पिता का नाम शिवगुरु और पितामह का नाम विद्याधर था। गोविन्दपाद नामक आचार्य से इन्होंने संन्यास की दीक्षा ली। बौद्ध तथा जैन धर्म का विरोध करते हुए इन्होंने पुनः वैदिक धर्म की प्रतिष्ठा की। अपने युग के सर्वोच्च बौद्ध विद्वान मण्डनमिश्र को इन्होंने शास्त्रार्थ में परास्त किया और उसे शिष्य बनाया। प्रकाण्ड शाक्त भाष्यकार अभिनव.गुप्त को भी इन्होंने परास्त किया। समस्त देश में भ्रमण करके इन्होंने बौद्धधर्म का मूलोच्छेदन किया और वैदिक धर्म का पुनरुद्धार किया। अंत में भगंदर रोग से पीड़ित होकर यह हिमालय की ओर चले गये। इनके उपनिषदों और ब्रह्मसूत्रों पर किये गये भाष्य प्रसिद्ध हैं। कहते हैं, लगभग ३५ वर्ष की आयु में ही इनका देहावसान होगया। बद्रीनाथ, द्वारका, जगन्नाथ-पुरी तथा रामेश्वर में इन्हों ने चार मठों की स्थापना की, जहाँ से समस्त भारत में धर्म प्रचार होता रहे।

शवरी—आरा, पृ० १४

यह एक भील कन्या थी। मतंग ऋषि ने इसकी सेवा से प्रसन्न होकर इसे रामभक्ति का उपदेश और साथ ही आशीर्वाद भी दिया कि वनवास के समय राम के दर्शन होंगे। पंचवटी में सीता चुराई जाने के बाद सीता की खोज करते हुए लक्ष्मण सहित राम शवरी के आश्रम में पधारे। शवरी ने भगवान के साक्षात दर्शन पाकर अपने भाग्य को सराहा। उनके चरणों से लिपट गई। उनके चरण पखारे और उन्हें आसन पर बैठाया। अत्यन्त रसीले औंर स्वादिष्ट कंद मूल फल राम को खाने को दिये। राम ने अत्यन्त प्रेम से वे फल खाये। राम ने शवरी को नवधा भक्ति का उपदेश दिया। इसके बाद उससे सीता के विषय में पूछा। शवरी ने बताया कि आप पंपासर जाइये वहाँ सुग्रीव से आप की मित्रता होगी। सीताका पता भी लग जायगा। सीताहरण की सारी कथा भी शवरी ने राम लक्ष्मण को सुनाई। इसके बाद शवरी ने योगाग्नि प्रज्ज्वलित करके उसमें अपने आपको भस्म कर दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शबरी का नाम प्रसिद्ध भगवद्भक्तों में लिया जाता है। शबरी की कथा राम चरितमानस के अरण्य काण्ड में दोहा ३४ से ३६ तक देखी जा सकती है।

शाइस्त:खान (शायिस्ताख़ाँ)—परि, पृ० १६८

औरंगज़ेब का मामा, जो उसके दूसरे राज्याभिषेक (जुलाई, १६५६) के बाद दक्खिन का सूबेदार नियुक्त हुआ। जनवरी, सन १६६० के अंत में यह औरंगाबाद से शिवाजीं का दमन करने के लिये पूना तथा चाकन की ओर चल पड़ा। ५ अप्रेल, १६६३ ईस्वी को शिवाजी ने शायिस्ताख़ाँ के शिविर पर आक्रमण किया। उसी के शयन कक्ष में, सेविकाओं और अंगरक्षकों की उपस्थिति में शिवाजी ने उसे घायल कर दिया। कहते हैं, शिवाजी एक बारात के रूप में नगर में घुसे और शाइस्ताखाँ पर आक्रमण किया। उसका लड़का मारा गया और शाइस्ताखाँ खिड़की से कूद कर भागा। भागते-भागते शिवाजी के वार से उसके हाथ की उंगलियाँ कट गईं। इस पराजय के कारण उससे दक्खिन की सूबेदारी छीन ली गई। और राजकुमार मुअज्ज़म को दक्खिन की सूबेदारी और युद्ध की बागडोर सौंप दी गई।

शारदानन्द—अना, पृ० १७७

शशिभूषण और शरतचन्द्र चक्रवर्ती आपस में तएरे-चचेरे भाई थे। कलकत्ते के धार्मिक ब्राह्मण परिवार में जन्मे थे। ये दोनों ब्रह्मसमाजी थे। शशिभूषण सन्यास लेने पर स्वामी रामकृष्णानन्द और शरतचन्द्र स्वामी शारदानन्द नाम से प्रसिद्ध हुए। अक्टूबर १८८३ ईस्वी में दक्षिणेश्वर में ब्रह्मसमाज का उत्सव मनाया गया। ये दोनों भाई उसमें सम्मिलित होने के लिये वहाँ गये तो स्वामी रामकृष्ण को अपने भक्तों से बातचीत करते पाया। उनके अमृतमय वार्तालाप जादूभरे व्यवहार और साधनापूर्ण व्यक्तित्व का इन पर बहुत प्रभाव पड़ा। बार-बार उनसे ज्ञान पिपासा शांत करने जाने लगे और थोड़े समय में ही उनके निकटस्थ शिष्यों में हो गये। इनके त्यागपूर्ण तपस्वी जीवन, कठोर साधना, दीनहीन की सेवा-सहायता, जीवदया आदि के कारण परमहंस इनको बहुत प्यार करते थे और क्राइस्ट का मूर्तिमान भक्त कहा करते थे।

शाहजहाँ—परि, पृ० २०४

मुगलवंश का पाँचवाँ सम्राट। जहाँगीर का पुत्र, औरंगज़ेब का पिता। बचपन का नाम खुर्रम था। इसका जन्म ५ जनवरी, १५९२ को लाहौर में,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मारवाड़ के हिन्दू राजा उदयसिंह की पुत्री, जहाँगीर की पत्नी महारानी जगत गोसाई, जोधाबाई या मानमती से हुआ। पालन-पोषण अकबर की निस्सन्तान विधवा रुकइया बेगम ने किया। इसने तीन विवाह किये, पर उल्लेखनीय सभी बच्चे आसफ़खाँ की पुत्री, नूरजहाँ की भतीजी बेगम अर्जुमंद बानू से, (जो मुमताज बेगम कहलाई) उत्पन्न हुए। इनकी संख्या चौदह थी; लेकिन सात जीवित रहे। अपने पिता के विरुद्ध इसने विद्रोह भी किया; पर जहाँगीर के मरने पर ४ फरवरी, १६२८ ईस्वी को आगरा में इसका राज्याभिषेक हुआ और इसने "अबुल मुज़फ़्फ़र शिहाबुद्दीन मुहम्मद साहब किराने सानी" की उपाधि धारण की। शाहजहाँ ने खुसरू, परवेज़ और शहरयार का वध करके राज्य प्राप्त किया था। इसने १६५८ ईस्वी तक राज्य किया। १६५८ में यह औरंगज़ेब द्वारा वन्दी बना लिया गया और बन्दी के रूप में ही १६६६ ईस्वी में आगरा में इसकी मृत्यु हुई। शाहजहाँ अत्यन्त उदार, खर्चीला, वैभवशाली, कलाप्रिय बादशाह था। संगमरमर के भवन बनवाने का इसे बहुत शौक था। आगरा की मोती मस्जिद और मुमताज महल के मरने पर स्मारक-स्वरूप इसने जमुना तट पर आगरा में ताजमहल का निर्माण किया—ताज आज भी अपनी कला और सुन्दरता के लिए विश्वविख्यात है। तख्ते ताऊस (मयूरासन) भी इसने बनवाया। ७ जून, मंगलवार १६३१ ईस्वी को बुरहानपुर में मुमताज की मृत्यु हो गई। सम्राट को इतना आघात लगा कि कई वर्ष तक यह वैरागियों का-सा जीवन बिताता रहा। शाहजहाँ का शासन-काल सुख, शान्ति, समृद्धि, वैभव, विलास और कला-विकास का युग है।

शिवाजी—परि, पृ० १९२

बीजापुर के एक जागीरदार शाहजी और जीजाबाई के पुत्र, जन्म १६२७ और स्वर्गवास ४ अप्रेल, सन १६८० ईस्वी। अपनी माता जीजाबाई और गुरु समर्थ रामदास के प्रेरक उपदेश और प्रोत्साहन से किशोरावस्था से ही इन्होंने मराठों का संगठन और आस-पास के क्षेत्रों पर आक्रमण करने आरम्भ कर दिये थे। १६४६ ईस्वी में बीजापुर से तोर्ण का दुर्ग और आसपास के अनेक प्रदेश जीत लिये। इनके उत्पात को रोकने के लिये इसके पिता शाहजी को बीजापुर ने बन्दी बना लिया, लेकिन १६४९ के अंत में शाहजी मुक्त कर दिया गया। थोड़े ही काल में शिवाजी ने लगभग ३२ दुर्गों पर अधिकार कर लिया। बीजापुरी सेनापति अफ़ज़लखां का वध करके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिवाजी ने अपनी धाक जमा दी। मुगलों के अनेक दुर्ग भी शिवाजी ने अधिकार में कर लिये। अनेक वार उनकी सेना को बुरी तरह लूटा। आक्रमणों से तंग आकर औरंगज़ेब ने जसवंतसिंह और शाइस्ताखाँ को इसका दमन करने के लिये भेजा। पर वे सफल न हो सके। शिवाजी ने रात में शायिस्ताखां के शिविर पर धावा किया। वह खिड़की से कूद कर जान लेकर भागा। अंत में दिलेरखां और जयसिंह ने चार लाख सेना से इस पर आक्रमण किया। जयसिंह के विश्वास दिलाने पर इसने संधि कर ली और औरंगज़ेब के दरबार में उपस्थित हुआ। लेकिन इसका वह स्वागत न हुआ, जिसकी आशा थी। औरंगज़ेब ने इन्हें और इनके पुत्र शम्भाजी को दिल्ली के बाहर जयसिंह के महल में वन्दी के रूप में रखा। एक दिन रोगमुक्त होने की प्रसन्नता में मिठाई बँटवाने के बहाने यह अपने पुत्र सहित एक झावे में बैठकर बाहर निकल आये। प्रयाग, बनारस, आन्ध्रप्रदेश होते हुए फिर दक्षिण में पहुंच गये। इन्होंने अदम्य साहस के साथ मुगल साम्राज्य से लोहा लेना आरम्भ किया और वे सब दुर्ग वापस ले लिये, जो पुरंधर की सन्धि में जयसिंह (मुगलों) को दिये गये थे। १६६४ ईस्वी में रायगढ़ में शिवाजी का राज्याभिषेक बड़ी धूमधाम से हुआ। शिवाजी ने मराठों में एक शक्तिशाली आत्मा जगाई, उन्हें संघटित योद्धा बनाया, वे एक बलशाली राष्ट्र में बदल गये।

महाराज शिवाजी भारत भर में छत्रपति के नाम से विख्यात हैं। यह पहले व्यक्ति हैं; जिन्होंने राष्ट्रीयता के धरातल पर अभियान आरम्भ किया। इन जैसा दुस्साहसी योद्धा, कुशाग्र बुद्धि योजनाकार, कुशल राजनीतिज्ञ, काल-पारखी सेनानायक यदि एक भी राजपूतों के पास हुआ होता तो मुगलसाम्राज्य की जड़ें कभी न जमने पातीं और अगर जम भी गई थीं तो कभी की उखड़ गई होतीं। दुर्दम शक्ति सम्पन्न विशाल मुगल-साम्राज्य से टक्कर लेना और एक सुव्यस्थित सबल राज्य स्थापित करना साधारण सफलता नहीं। वीर रस के हिन्दी कवि भूषण इन्हीं के आश्रित थे। कहते हैं, दुर्गा के मंदिर में भूषण ने जब इन्हें अपना कवित्त 'इन्द्र जिमि जृम्भ पर" सुनाया तो इन्होंने बार-बार सुनाने का अनुरोध किया, प्रत्येक बार एक लाख रुपया दिया। भूषण ने ३२ बार वह कवित्त सुनाया और ३२ लाख रुपया पाया। इनके विषय में "शिवाबावनी" और "शिवराज भूषण" दो पुस्तकें भूषण ने लिखीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब औरंगज़ेब मंदिरों को तुड़वा रहा था, हिन्दूतीर्थों को अपवित्र कर रहा था, हिन्दुओं पर मन-माने अत्याचार कर रहा था; शिवाजी ने कोई मस्जिद नहीं तुड़वाई, कुरानशरीफ़ का अपमान नहीं किया। कोई मुस्लिम स्त्री बन्दी भी बनाई गई तो उसे सुरक्षित उसके घरवालों के पास पहुंचा दिया। प्रतिशोध की भावना से भी शिवाजी ने कोई अनैतिक अमानवी काम नहीं किया।

इन्द्र जिमि जृम्भ पर बाडव सुअम्बपर रावण सदम्भ पर रघुकुल राज हैं।
पौन वारिवाह पर संभु रतिनाह पर ज्यो सहस्रबाहु पर राम द्विज राज हैं।
दावा द्रुमदंड पर चीता मृगझुंड पर भूषणवितुंड पर जैसे मृगराज हैं।
तेज तम-अंस पर कान्ह जिमि कंस पर त्यौं मलेच्छ बंस पर सेर सिवराज हैं।

शेरवानी—नप, पृ० ७७

पूरा नाम था तसद्दुकअहमदखाँ शेरवानी। अलीगढ़ के रहने वाले थे और उन मुसलमान भारत-राष्ट्र-भक्तों में से थे, जो कभी प्रलोभन के तूफ़ान से विचलित न हुए, साम्प्रदायिकता की धारा में न बहे और सदा अडिग देशभक्त बने रहे। राष्ट्रीय आन्दोलन में शेरवानी साहब अनेक बार जेल गये।

स

संयोगिता—अना, पृ० ५९

पृथ्वीराज के सखा सामंत तथा दरबारी कवि चन्दबरदाई कृत "पृथ्वीराज रासो" और अनेक जन-श्रुतियों, लोकगाथाओं आदि के अनुसार संयोगिता कन्नौजनरेश जयचन्द की लड़की थी। जयचन्द और पृथ्वीराज मौसेरे भाई, दिल्ली के महाराज अनंगपाल के धेवते थे। अनंगपाल ने पृथ्वीराज को गोद ले लिया, जिससे साँभर और दिल्ली का शासक बना। इस पर जयचंद और पृथ्वीराज में अनबन रहने लगी। पृथ्वीराज का अपमान करने के लिये संयुक्ता स्वयंवर में पृथ्वीराज को नहीं बुलाया गया। उसकी एक मूर्ति बना कर द्वार पर रख दी गई। संयुक्ता ने उस मूर्ति को वरमाला पहना दी। पृथ्वीराज उसे घोड़े पर चढ़ाकर दिल्ली ले गया। इस युद्ध में पृथ्वीराज के अनेक सामन्त और योद्धा मारे गये। जयचंद ने बदला लेने के लिये शाहबुद्दीन गौरी को भारत पर आक्रमण करने के लिये निमंत्रित किया। इस कथा को इतिहासकार भाट-भिड़ंत मात्र मानते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदानन्द—अ्रना, पृ० १७७

इनका नाम शरतचंद्र गुप्त था। यह हाथरस के स्टेशन-मास्टर थे। सन् १८८८ में स्वामी विवेकानन्द वाराणसी, वृन्दावन आदि का भ्रमण करते हुए हाथरस आये। शरतचंद्र ने इनको भोजन का निमंत्रण देते हुए एक परशियन कविता की पंक्ति कही, जिस का अर्थ था, "ऐ मेरे प्रिय, मैं अपने हृदय के माँस से सर्वाधिक स्वादिष्ट व्यंजन तैयार करूँगा। तब स्वामीजी ने तुरन्त उत्तर दिया, "मेरा प्रिय अपने चन्द्रानन को कलंकित किये आये।" "My beloved must come to me with ashes on his moonface" शरतचंद्र पर स्वामी जी का इतना प्रभाव पड़ा कि इनके सर्वप्रथम शिष्य बने और सदानन्द कहलाये।

सावन—गीतगुंज, पृ० ४४

श्रावण—एक भारतीय महीना। यह घोर वर्षा का समय होता है। चारों ओर हरियाली ही हरियाली दीखती है—आकाश में काली-काली घटाएँ उमड़ती रहती हैं, कभी रिम-झिम तो कभी मूसलाधार वर्षा पड़ती है। इसका समय जुलाई के उत्तरार्ध से अगस्त के पूर्वार्ध तक माना जा सकता है। यह महीना आषाढ़ के बाद और भादो से पहले आता है। सावन की तीज शुक्ला हरियाली 'तीज' या 'तीजो' कहलाती है। इस दिन स्त्रियाँ खूब सज-धज कर घर-घर में झूले-झूलती और सुरीले गीत गाती हैं।

सिंधु (नदी)—नप, पृ० ९४

यह नदी कश्मीर के पर्वतों से निकलती है। पाकिस्तान में बहती हुई अरबसागर में गिरती है। यह २८०० किलोमीटर लम्बी है। बहुत बड़ी गहरी और चौड़ी होने के कारण इसे सिंधु (सागर) कहा जाता है। सिन्धु भारतीय इतिहास में उल्लेखनीय स्थान रखती है। "सिंधु घाटी की सभ्यता" जिसका पता मोयन-जो-दड़ो और हरप्पा की खुदाई में प्राप्त सामग्री से चलता है, विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से है। सिंधु-तट पर ही भारत के राजनीतिक भाग्य का निर्णय करने वाले अनेक युद्ध लड़े गये। पश्चिमी आक्रमणों के मार्ग में यह नदी बाधा का काम भी करती रही है।

सीता—अ्रना, पृ० १५६

मिथिला के महाराज जनक को हल जोतते समय सीता खेत में पड़ी मिली। जनक जी ने इनको पुत्री मान कर पाला। सीता का अर्थ है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हल जोतने से बनी गहरी लकीरें या जोती हुई धरती—हल जोतने से बनी गहरी लकीर में से प्राप्त होने के कारण ही संभवत: इनका नाम 'सीता' रखा गया। भूमिजा इसीलिये इनका नाम पड़ा। जनक-पुत्री होने से यह जानकी विदेह-पुत्री होने से वैदेही कहलाईं। शिवधनुष तोड़ने पर अयोध्यानरेश दशरथ के पुत्र रामचन्द्र से इनका विवाह हुआ। राम के साथ यह भी वन को गईं। वहीं रावण के द्वारा हरण की गईं। सुग्रीव, हनुमान, अंगद, जामवंत, नल-नील आदि बानरों-रीछों की सहायता से राम ने रावण का वध किया और बड़ी धूम-धाम से राम-सीता-लक्ष्मण और रीछ-बानरों की सेना सहित अयोध्या वापस आये। राज्याभिषेक के बाद दुर्मुख नामक धोबी के द्वारा की गई निंदा का समाचार पाकर राम ने सीता को वनवास दिया। वह गर्भावस्था में वाल्मीकि के आश्रम में रहीं। वहीं लव-कुश का जन्म हुआ। अश्वमेध के घोड़े की रक्षक सेनाएँ पराजित होने पर राम वाल्मीकि-आश्रम में आये, तब सीता पृथ्वी में समा गईं—अयोध्या वापस नहीं गईं। राम विष्णु तथा सीता लक्ष्मी की अवतार मानी जाती हैं। राम-भक्ति में राम ही स्वयंरूप ब्रह्म हैं और सीता ब्रह्म की आदि शक्ति। या राम और सीता एक ही अनादि, अनन्त, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, पालक और विनाशक शक्ति के दो रूप हैं।

सुकरात—नप, पृ० १४

सुकरात यूनानी नाम 'सौक्रेटीज़' का अरबी संस्करण है, जो भारत में भी प्रचलित है। इसका जन्म एथेन्स में ४७० बी० सी० में हुआ था। नाक चौड़ी चपटी, आँखें बड़ी और उभरी हुई और कद छोटा होने से यह कुरूप लगता था। वैसे अत्यन्त पुष्ट और बलिष्ट देह वाला मनुष्य था। बचपन से ही इसके हृदय में चिरन्तन सत्य और अक्षय सौंदर्य की तलाश की आकुलता रहती थी। जब यह ध्यान-मग्न होता, तब भीषणतम गर्मी, सर्दी और आसपास की घटनाओं का तनिक भी बोध इसको न रहता था। यह वैरागियों के समान बाज़ारों में घूमता-फिरता और लोगों से पूछता कि क्या तुमने सत्य के दर्शन किये हैं? इसके आत्मज्ञान, साधनापूर्ण जीवन, युक्तियुक्त वार्ता, तत्त्व-बोध और सत्य की उपलब्धि के कारण एथेन्स के अनेक युवक इसके शिष्य हो गये। पुरखों की चली आती हुई विचार-परम्परा में युवक-समाज की आस्था न रही। समाज में नवीन विचार शक्ति जगाने, नवीन सत्य, सौंदर्य और कल्याण के दर्शन कराने के लिये इसे पापी या अधार्मिक घोषित किया गया और तात्कालिक शासन द्वारा इसे मृत्यु दण्ड दिया गया। यह कहा जाता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है कि इसे इसी अपराध में विष पीने का दण्ड दिया गया, जिससे ३.८९ बी. सी. में इसकी मृत्यु हुई। प्लेटो इसी का शिष्य था। मरने से पूर्व प्लेटो ने सुकरात से भेंट की और "मृत्यु के बाद आत्मा की स्थिति" पर बातचीत की। सुकरात ने बताया कि मृत्यु के बाद मैं चिर-सौंदर्य, परम सत्य और अक्षय कल्याण-रूप-भगवान में लीन हो जाऊँगा।

सुग्रीव—अना, पृ० १५३

यह बाली का छोटा भाई था। बाली के भय से अपने साथियों और हनुमान के साथ रिष्यमूक पर्वत पर रहा करता था। एक बार मय दानव के पुत्र मायावी ने आधी रात को बाली को युद्ध के लिये ललकारा। बाली ने उसका पीछा किया। सुग्रीव भी बाली के पीछे-पीछे गया। मायावी भयभीत होकर एक गुफ़ा में जा छिपा। बाली ने सुग्रीव से कहा कि एक पखवारे तक मेरी प्रतीक्षा करना, न लौटूं तो समझ लेना कि मैं मारा गया। एक मास तक प्रतीक्षा करने पर भी बाली न लौटा। तब गुफा से रक्त की धारा चली। सुग्रीव ने समझा कि बाली मारा गया। इस भय से कि मायावी उसे भी न मार दे, सुग्रीव गुफ़ाद्वार पर एक शिला लगा कर भाग आया। मंत्रियों ने उसे पम्पापुर का राजा बना दिया। बाली वापस लौटा तो सुग्रीव को राजा देख आग-बबूला हो गया और उसे खूब मारा-पीटा। सुग्रीव अपने प्राणों के भय से नगर छोड़ कर भाग आया और रिष्यमूक पर्वत पर रहने लगा। शापवश बाली इस पर्वत पर नहीं आ सकता था। सीता हरण के बाद हनुमानजी द्वारा सुग्रीव और राम की मित्रता कराई गई। राम ने जब सुग्रीव की दुख गाथा सुनी तो बाली के वध का प्रण किया। सुग्रीव ने बाली को जा ललकारा। पहले तो सुग्रीव बाली की मार खा कर भागा, पर दूसरी बार जब दोनों का युद्ध हो रहा था, राम ने छिपकर बाली को एक ही बाण से मार डाला। रावण के रथ में आकाश-मार्ग से जाते हुए सीता अपने वस्त्र-आभूषण नीचे फेंक गईं थीं। सुग्रीव ने ये राम को भेंट किये। इनसे सीता की खोज करने में सहायता मिली। सुग्रीव ने अपनी बानरसेना से राम की सहायता की और स्वयं भी सेनापति के रूप में रावण से इसने युद्ध किया। बाली वध के बाद उसका भतीजा अंगद युवराज के रूप मे सुग्रीव के पास ही रहा और तारा (बाली की पत्नी) भी उसे प्राप्त हुई। पम्पापुर का राज्य भी इसे मिला। रावण विजय के बाद राम के साथ यह भी अयोध्या गया। राज्याभिषेक का उत्सव देख, कुछ समय वहां रहकर, पम्पापुर लौट आया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुबाहु—अना, पृ० १५६

यक्ष सुकेतु की पुत्री ताड़का का पुत्र और मारीच का छोटा भाई। यह अपनी माता और भाई के साथ सरयू नदी के किनारे ताड़क वन में रहता और ऋषि-मुनियों को त्रास दिया करता था। इसके उत्पात से तंग आ कर विश्वामित्र अपने यज्ञ-रक्षार्थ राम-लक्ष्मण को अपने आश्रम में लाये। रामचन्द्र ने एक वाण से मारीच को लंका में फेंक दिया और दूसरे वाण से सुबाहु का वध कर दिया।

सुभाषबाबू—नप, पृ० ५६

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक दहकते अग्नि-पिण्ड या जगमगाते-मणि हैं। इनके समान प्रतिभाशाली और निर्भय योद्धा बहुत कम हैं। यह राजनीति में श्री चित्तरंजन दास के योग्य-शिष्य थे। अत्यन्त छोटी आयु में यह आई० सी० एस० बने; पर अपने स्वाधीन स्वभाव और राष्ट्र की पुकार के कारण इन्होंने ब्रिटिश सरकार की नौकरी नहीं की। अपनी योग्यता और जन-प्रियता के कारण बहुत दिन कलकत्ता कार्पोरेशन के मेयर रहे। सन् १९३७ और ३८ ईस्वी में होने वाले कांग्रेस अधिवेशन के लगातार दो बार अध्यक्ष चुने गये—कांग्रेस के भी सबसे अल्पवयस्क अध्यक्ष यही रहे। गाँधीजी की इच्छा के प्रतिकूल भी इनको लगातार दो तार अध्यक्ष चुनना इनकी लोक-प्रियता का परिचायक है। द्वितीय योरुपीय महायुद्ध के दिनों, जब "भारत छोड़ो" आन्दोलन चल रहा था, रोगी होनेके कारण इनको इनकें घर (कलकत्ता) में ही नज़रबन्द रखा गया। शिवाजी के समान यह सहसा वहाँ से भाग निकले। अफ़गानिस्तान होते हुए जापान पहुंचे और पण्डुब्बी द्वारा जर्मनी गये। वहाँ 'नेताजी' की उपाधि धारण की। वहीं एक आस्ट्रीयन महिला से विवाह भी किया, जिससे एक लड़की उत्पन्न हुई। जर्मनी से यह बरमा आये और इण्डियन नेशनल आर्मी का संघटन किया। भारत को स्वाधीन करने की सैनिक-योजना बनाई; पर हीरोशिमा और नागासाकी पर अणुबम गिराये जाने से जापान की पराजय हुई। इसलिये इनकी योजनाएँ कार्यरूप में परिणत न हो सकीं। कहा जाता है, एक वायुयान दुर्घटना में यह स्वर्गवासी हुए। फिर भी यह मानना पड़ेगा कि भारतीय स्वाधीनता प्राप्त करने में सुभाष बाबू की देन महान् है। सुभाष बाबू ने देश में सैनिक संघटन की ज्वाला फूंकी, साथ ही ब्रिटिश कूटनीतिज्ञों को भी इस बात से आतंकित किया कि किसी भी समय भारतीय सेना अंग्रेजों को मार भगाने के लिये संघर्ष में उतर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकती हैं—और यह संघर्ष १८५७ के समान असंघटित और अनियंत्रित नहीं होगा। इसलिये भी निराश होकर अंग्रेज़ों ने दूरदर्शिता से काम लिया और भारत को स्वतंत्रता दे गये। सुभाषचन्द्र बोस का जन्म
और स्वर्गवास   में हुआ।

सुमित्रानन्दन पंत—नप, पृ० ५६

इनका नाम तुलसीदत्त पंत था, पर वह नाम केवल रखने के लिए था। २० मई, १९०० ई० को कौसानी (अलमोड़ा) में इनका जन्म हुआ। इनके पिता का नाम गंगादत्त पंत था। मैट्रिक तक राजकीय हाई स्कूल अल्मोड़ा में शिक्षा पाई और इण्टर किया म्योर सैन्ट्रल कालिज, इलाहाबाद से। इसके बाद पढ़ाई बन्द कर दी। और काव्यसाधना में लग गये। प्रसाद और निराला की तरह यह छायावाद के प्रवर्तक माने जाते हैं। प्रकृति-चित्रण इनकी कविता का प्रमुख विषय है। अनेक कविताओं में उज्ज्वल स्वच्छ प्रेम की भी अभिव्यक्ति हुई है। पंतजी सदा समय के साथ बहे हैं; इसलिए इनकी कविता में प्रगतिवादी, गाँधीवादी, अरविन्द के अध्यात्मवादी तत्त्व मिलते हैं। मुख्यरूप में यह कल्पना और सौंदर्य के कवि हैं। पल्लव, गुंजन, वीणा, ग्रंथि, स्वर्ण-धूलि, स्वर्ण-किरण, युगान्त, ग्राम्या, युगवाणी, लोकायतनं आदि इनकी काव्य-पुस्तकें हैं। एक रूपक "ज्योत्स्ना" भी इन्होंने लिखा। बहुत दिन से पंतजी आकाशवाणी में हिन्दी सलाहकार के रूप में काम कर रहे हैं। इनकी काव्य उपलब्धियों के लिये सरकार से इन्हें पद्मभूषण की उपाधि भी प्राप्त हुई हैं।

सूरज-परिमल—अप, पृ० १७३

सिन्ध के राजा दाहिर की लड़कियाँ। सिन्ध-पतन के बाद लूटमार के धन के साथ इमामुद्दीन मुहम्मद बिनकासिम ने इन दोनों लड़कियों को भी भेंट स्वरूप हज्जाज या खलीफ़ा के पास भेजा था। खलीफ़ा इन्हें पाकर फूला न समाया। इन्होंने खलीफ़ा को बताया कि बिन कासिम ने इन्हें पहले ही भ्रष्ट कर दिया है। इस पर खलीफ़ा बहुत कुपित हुआ और उसने बिनकासिम को मृत्यु-दण्ड दे दिया। इस प्रकार इन राजकुमारियों ने कासिम से अपनी पराजय का प्रतिशोध लिया। कहा जाता है, इन दोनों ने खलीफ़ा के दरबार में ही आत्महत्या कर ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूरदास—नप, पृ० ७३

प्रसिद्ध कृष्णभक्त, ब्रज-भाषा के सर्वश्रेष्ठ कवि और गायक। इन का जन्म संवत १५४० तथा देहावसान संवत १६२० विक्रमी में गोवर्धन की तलहटी में बसे पारसोली ग्राम में हुआ माना जाता है। कहा जाता है, यह आगरा-मथुरा के बीच गऊघाट नामक स्थान पर एक साधु के रूप में रहते तथा शिष्य बनाया करते थे। संवत १५७८ के आस-पास वल्लभाचार्य गऊघाट आये तो सूरदास भी दर्शनार्थ उनके पास पहुंचे। वल्लभाचार्य ने इनकी भक्ति और संगीत पर मुग्ध होकर इन्हें शिष्य बनाया और गोवर्धन पर निर्मित श्रीनाथजी के मन्दिर की कीर्तन-सेवा सौंपी। तब से यह वहीं रहकर कृष्णभक्ति के पद रचते और इन्हें गा कर जीवन व्यतीत करने लगे। इनकी रची तीन पुस्तकें मिलती हैं—सूरसागर, सूरसारावली और साहित्यलहरी। राधाकृष्ण का प्रेम-वर्णन ही सूरदास का विषय है। भागवत का दशमस्कंद स्वतंत्र ढंग पर इन पदों में प्रस्तुत किया गया है। प्रेम की सुविस्तृत, सूक्ष्म, गहन और सांगोपांग व्यंजना जैसी सूरदास के काव्य में हुई, वैसी अन्यत्र दुर्लभ हैं। प्रेम की गोपनीय से गोपनीय और सूक्षमातिसूक्ष घटना और अनुभूति सूर में हैं। भ्रमर-गीत का प्रसंग तो मौलिक उद्भावना है—इसमें नारी-हृदय का अभूतपूर्व चित्रण है ही, सगुणब्रह्म की उपासना की भी अनुभूतिप्रधान प्रतिष्ठा है। संगीत की दृष्टि से भी सूर की देन अद्वितीय है। सीमित क्षेत्र में मानव-अनुभूति का अनन्त विस्तार केवल सूर में ही देखा जा सकता है। यह अपने प्रेमगान में इतने मस्त हुए कि अनेक जगह शृङ्गार की शालीनता का ध्यान भी न रहा। अनेक दृष्टकूट पद भी सूर ने रचे।

सूर्पनखा—परि, पृ० २२३

यह रावण की बहन थी। स्वभाव से पूर्ण स्वतंत्र और उच्छृंखल। आजीवन अविवाहित रही। एक बार दण्डकवन में घूमती हुई यह पंचवटी के पास आ निकली, जहाँ राम-सीता-लक्ष्मण पर्णकुटी बनाकर निवास करते थे। राम का रूप देखकर यह उन पर मोहित हो गई। यौवन में भरी, फूलों से सजी सुन्दरता की प्रतिमा बनी हुई राम के पास आई और उनके सामने विवाह का प्रस्ताव किया। राम ने अपने को विवाहित बताकर लक्ष्मण के पास भेजा। लक्ष्मण ने राम का सेवक होने के कारण विवाह से इन्कार किया। इस पर रुष्ट हो कर इसने भयंकर रूप धारण किया और सीता पर झपटी। अवसर पाकर लक्ष्मण ने इसके नाक-कान काट लिये। रोती चीत्कार करती यह अपने भाइयों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खर और दूषण के पास गई । वे राम लक्ष्मण पर चढ़ दौड़े । दोनों राम के हाथ से मारे गये । इसके बाद यह रावण के पास पहुँची और अपने अपमान का प्रतिशोध लेने के लिये उसे भड़काया । रावण साधु-वेश में आकर सीता को चुरा ले गया । सीता-हरण रावण के समूल विनाश का कारण बना । इस प्रकार सूर्पनखा ही राम-रावण के युद्ध का प्रमुख कारण थी ।

सोश्यलिस्ट—नप, पृ० १८

सोश्यलिस्ट का अर्थ है समाजवादी । समाजवाद एक आर्थिक और सामाजिक दर्शन है । इस शब्द(सोश्यलिज़्म) का सर्वप्रथम प्रयोग सन १८२७ ई० में "ओव्नाइट कोपरेटिव मैगज़ीन" में हुआ । समाजवाद का प्रयोग अनेक अर्थों में किया गया, लेकिन मूल भावना सबमें सहकारिता ही रही । यह एक समष्टि-वादी धारा है—व्यक्तिवाद की यह प्रतिक्रिया है, उसके विरुद्ध और विपरीत है । व्यक्ति या समाज द्वारा निर्मित विषमताएँ निर्मूल करना, समाज को नये आदर्शों पर प्रतिष्ठित करना, उन आदर्शोंको क्रियात्मक-रूप देना समाजवादका मूल-सिद्धान्त है । यह केवल एक व्यवस्था-विशेष नहीं है, बल्कि एक सम्पूर्ण अखण्ड जीवन-प्रणाली है । समाजवाद का आधुनिक तात्त्विक या दार्शनिक रूप एंगेल्स (१८२०–१८९५ ई०) तथा मार्क्स (१८१८–१८८३ ई०) और लेनिन (१८७०–१९२४ ई०) द्वारा प्रतिष्ठित किया गया । इसके मुख्य सिद्धान्त हैं—(१) समाज का विकास संघर्षों से होता है । (२) संघर्ष वर्गों के बीच होते हैं, वर्गों का विभाजन आर्थिक आधार पर होता है । (३) वर्ग संघर्षों से उत्पादन प्रणाली निर्मित होती है—सामाजिक परिवर्तन के साथ उत्पादन-प्रणाली भी परिवर्तित होती है । इससे नयी आर्थिक व्यवस्था का उदय होता है । (४) नवीन आर्थिक परिवर्तन के कारण साहित्य, कला, दर्शन और विज्ञान में परिवर्तन होता है । (५) नयी आर्थिक प्रणाली पहले विकसित होती है, बाद में वह प्रतिक्रियावादी हो जाती है और सामाजिक विकास में बाधक होती है । ये परिवर्तन पहले मात्रात्मक होते हैं, आगे चलकर गुणात्मक हो हो जाते हैं । गुणात्मक परिवर्तन के बाद ही नवीन आर्थिक प्रणाली आती है । (६) मात्रात्मक परिवर्तन आमूलपरिवर्तन की कड़ी है, गुणात्मक परिवर्तन ही आमूल-परिवर्तन है—लेनिन और स्तालिन के अनुसार क्रान्ति गुणात्मक परिवर्तन का साधन है । (७) वर्तमान पूंजीवादी समाज में मज़दूर संघटन ही गुणात्मक परिवर्तन ला सकता है । समाजवाद का सिद्धान्त है "हर एक व्यक्ति से उसकी योग्यता के अनुसार काम लेना चाहिये और उसके काम के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुसार पारिश्रमिक देना चाहिए"। साम्यवाद के अनुसार हर एक से उसकी योग्यता के अनुसार काम लेना और आवश्यकता के अनुसार पारिश्रमिक देना चाहिएं। समाजवाद और साम्यवाद में एक अन्तर यह भी है कि समाजवादी क्रान्ति द्वारा सर्वहारा वर्ग राज्य-शासन का अधिनायकत्व प्राप्त करेगा और इसके बाद धीरे-धीरे राज्य का विलय हो जायेगा। राज्यहीन समाज ही सही अर्थों में साम्यवादी समाज कहलायेगा। एक वाक्य में यों कहा जा सकता है "समाजवाद साम्यवाद की भूमिका है"। श्रम, सम्पत्ति शासन पर व्यक्ति या कुछ व्यक्तियों का नहीं, सम्पूर्ण समाज का अधिकार, समाज द्वारा इनका संचालन तथा समाज में इन का सही वितरण समाजवाद कहा जा सकता है।

स्वरूप—नप, पृ० ७७

श्रीमती स्वरूपरानी नेहरू, पंडित मोतीलाल नेहरू की धर्मपत्नी और पंडित जवाहरलाल नेहरू, विजयलक्ष्मी पंडित तथा कृष्णा हथीसिंह की माता। इन्होंने अपने पति और पुत्र-पुत्रियों के साथ देश-सेवा में जीवन बिताया और सत्याग्रह आन्दोलन में कई बार जेल-यात्रा भी की।

स्वीटजरलैण्ड—नप, पृ० ६६

दक्षिण में इटली, उत्तर में पश्चिमी जर्मनी, पश्चिम में फ्रांस और पूर्व में आस्ट्रिया से घिरा हुआ देश। इसकी जनसंख्या १६५० ईस्वी में ४७१४६६२ थी। इस का क्षेत्रफल १५६४४ वर्गमील है। इस में चार सरकारी भाषाएँ हैं—जर्मन ७३ प्रतिशत (मध्य और उत्तर भाग में) फ्रैंच २१ प्रतिशत (दक्षिण पश्चिम भाग में), इटैलियन ५ प्रतिशत (आल्प्स के ढलाखु भाग में) और रोमांस १ प्रतिशत (दक्षिण भाग में) निवासियों द्वारा बोली जाती है। यहाँ के निवासी ५८ प्रतिशत प्रोटेस्टेण्ट, ४१ प्रतिशत कैथोलिक्स ईसाई और १ प्रतिशत अन्य धर्मावलम्बी हैं। घड़ियाँ और इंजीनियरिंग के औज़ार बनाने, पनीर, दूध, मक्खन का काम यहाँ के प्रमुख व्यवसाय हैं। विश्व के पर्यटकों द्वारा भी यहां के लोगों की जीविका चलती है। स्वास्थ्य सुधार के लिये भी अनेक धनी लोग यहाँ आते रहते हैं। स्वास्थ्यवर्द्धक जलवायु और प्राकृतिक सौंदर्य के लिये इसे 'योरुप का कश्मीर' कहा जा सकता है। चार भाषाओं के होते हुए भी यह एक राष्ट्र है। जीवनस्तर और आय की दृष्टि से यह देश संसार के अत्यन्त सम्पन्न देशों में से है। बर्न इसकी राजधानी है। जनेवा २०-२२ वर्ष तक राष्ट्रसंघ (लीग ऑफ़ नेशंस) का केन्द्र होने के कारण विश्व-प्रसिद्ध नगर है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एल्प्स और जूरा पर्वतों ने स्विट्ज़रलैण्ड की क्रमशः ६० और ११ प्रतिशत भूमि घेर रखी है। २६ प्रतिशत मध्य पठारी भाग में आता है, पर ७० प्रतिशत जनता इसी क्षेत्र में बसी है।

हनुमद्धारा– तुल, पृ० ३३

चित्रकूट में बहने वाला एक झरना—छोटा-सा जलप्रपात। यहाँ हनुमान्जी की एक मूर्ति स्थापित है, जिस पर झरना गिरता रहता है। यहाँ मज्जन, स्नान आदि करना पुण्यलाभ माना जाता है।

हनुमान—अना, पृ० १५७

अंजना के गर्भ से उत्पन्न पवन के पुत्र। प्राचीन साहित्य में यह बन्दर के रूप में वर्णित हैं। यह बाल-ब्रह्मचारी और अतुलित बलशाली माने गये हैं। इसीलिए इनका नाम महावीर भी है। मारुत-पुत्र होने से मारुति भी कहलाते हैं। हनुमान भी रामभक्ति के आदर्श हैं। अपने बड़े भाई बाली से हार कर जब सुग्रीव किष्किंधा पर्वत पर रहता था, तब हनुमान जी भी उसके साथ रहते थे। हनुमान जी ब्राह्मण-वेश धारण कर राम-लक्ष्मण का परिचय लेने राम के पास आये थे। इन्होंने ही राम तथा सुग्रीव की मित्रता कराई। सीता का समाचार लाये, लंका-दहन किया, मेघनाथ की शक्ति लगने पर लक्ष्मण के लिये संजीवनी बूटी लाये। रावण-विध्वंस के बाद यह राम-लक्ष्मण-सीता के साथ अयोध्या आये और आजीवन राम की सेवा में समर्पित हो गये। अश्वमेघ के घोड़े की रक्षा करते हुए लव और कुश से यह पराजित हुए और बन्दी बना लिए गये थे। कहा जाता है, महाभारत के युद्ध में हनुमान जी अर्जुन के रथ की ध्वजा सँभाले रहते थे। हिन्दुओं में यह शक्ति के प्रतीक माने जाते हैं और कुश्ती लड़ने वाले पहलवान बहुधा इनकी उपासना करते हैं। हनुमान की "हू" उत्साहवर्द्धन, शक्तिसंचार, भयनिवारण का साधन समझी जाती है। हनुमान की स्तुति में गोस्वामी तुलसीदास ने "हनुमान-चालीसा" नाम की लघु पुस्तिका लिखी है, जो इनके भक्तों में गायी जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संदर्भिका (क)

निराला-काव्य-साहित्य

१.	अनामिका	चतुर्थ संस्करण १९६३	भारती-भण्डार, प्रयाग
२.	परिमल	नवं संस्करण १९६३	गंगा-पुस्तकमाला, लखनऊ
३.	गीतिका	प्रथम संस्करण १९३६	भारती-भण्डार, प्रयाग
४.	अर्चना	प्रथम संस्करण १९५०	कलामन्दिर, दारागंज, प्रयाग
५.	तुलसीदास	अष्टम संस्करण २०१३ वि०.	भारती-भण्डार, प्रयाग
६.	गीतगुंज	प्रथम संस्करण २०११ वि०, १९५४ ईस्वी	हिन्दी-प्रचारक पुस्तक-माला, काशी
७.	नये पत्ते	प्रथम संस्करण १९४६	हिन्दुस्तानी पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद
८.	कविश्री	प्रथम संस्करण २०१२ वि०, १९५५ ईस्वी	साहित्यसदन, चिरगाँव, झाँसी
९.	अपरा	तृतीय संस्करण २०१३ वि०,	साहित्य-संसद, प्रयाग
१०.	कुकुरमुत्ता		
११.	बेला	संस्करण १९६२	निरुपमा प्रकाशन, प्रयाग
१२.	अणिमा		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संदर्भिका (ख)

१.	आत्मकथा	:	मोहनदास करमचन्द गाँधी सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली
२.	गीता	:	गीता प्रेस, गोरखपुर
३.	दशम् ग्रंथ	:	गुरु गोबिन्दसिंह
४.	प्रामाणिक हिन्दी कोश सं० २००८ वि०	:	रामचन्द्र वर्मा साहित्य-रत्न-माला-कार्यालय, बनारस
५.	बृहत हिन्दी कोश सं० २००९ वि०	:	कालिकाप्रसाद, राजवल्लभ सहाय, मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव : ज्ञान मण्डल, बनारस
६.	भागवत पुराण	:	गीता प्रेस, गोरखपुर
७.	भूषण-ग्रंथावली	:	भूषण
८	मेरी कहानी	:	जवाहरलाल नेहरू सस्ता-साहित्य-मण्डल, नई दिल्ली
९.	रामचरितमानस सं० २०११	:	गोस्वामी तुलसीदास गीता प्रेस, गोरखपुर
१०.	वाल्मीकीय रामायण	:	गीता प्रेस, गोरखपुर
११.	हिन्दी कथा-कोश	:	हिन्दुस्तानी ऐकेडैमी, प्रयाग
१२.	हिन्दी साहित्य कोश सं० २०१५ वि०	: :	धीरेन्द्र वर्मा ज्ञान मण्डल, बनारस
१३.	हिन्दी साहित्य का इतिहास सं० २००८	: :	रामचन्द्र शुक्ल काशी-नागरी-प्रचारिणी-सभा, बनारस,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संदर्भिका (ग)

1.	A Short History of Muslim Rule in India. 1939	Dr. Ishwari Parsad, Indian Press, Allahabad.
2.	A Short History of Indian National Congress 1959	M.V. Rama Rao, S. Chand & Co., Delhi
3.	A History of India 1961	Micheal Edwardes, Asia Publishing House Bombay
4.	Advanced History of India	A.C. Majumdar, H.C. Raychaudhari, Kali Kinkar Datta
5.	History of the World	W.N. Weech, Asia Publishing House, Bombay.
6.	History of the Dharm Sastra Vol. V, Part II	P.V. Kane, Bhandarkar Research Institute, Poona
7.	India and Pakistan A General and Regional Geography 1957	O.H.K. Spate, Mathuen and Co. Ltd., London.
8.	Life of Sri Ramakrishna	Adwait Ashrama, Calcutta.
9.	Shri Chaitanya Mahaprabhu	Dr. Sambedananda Das, Sree Gaudiya Matha, Madras.
10.	Studies in the Geography of Ancient and Medieval India.	D.C. Sirkar, Moti Lal Banarsidas, Banaras.
11.	World Geography 1962	Otis W. Freeman, John W. Moris, Mc. Grow-Hill Co., Newyork.

पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

852/Coml :—1100 Books—2-6-68—K.U. Press, Kurukshetra.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

G.K.V. Library
STOCK VERIFY
2020

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

COMPILED

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar